CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE Grant 2

Jangamwadi Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ग.2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalg

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ज्ञान-तरंगिणी

□ संरक्षक –

प्रधानाचार्य श्री उमाशंकर राय

□ सम्पादक–

डॉ० अनिल कुमार 'आंजनेय'

□ सम्पादक मंडल –

श्री रमाशंकर राय

श्री गोपाल प्रसाद

श्री ओम प्रकाश गुप्त

श्री मो० सोहराव

□ छात्र संपादक–

श्री अभय कुमार—दशम् ब

श्री त्रिभुवनारायण राय—दशम् 'अ'

श्री सच्चिदानन्द दूबे—नवम् 'ब'

भूमिहार ब्राह्मण उच्च विद्यालय

बक्सर (भोजपुर)

1981-82

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दो शब्द प्राचार्य के

भूमिहार ब्राह्मण उच्च विद्यालय वर्ष १९४५ में अपने वर्त्तमान स्वरूप के अस्तित्व में आया। वैसे इसकी स्थापना १२ दिसम्बर, १९२९ ई० में मध्य विद्यालय के रूप में हुई, जबकि 'रावी' नदी के तट पर भारत के प्रथम प्रधान मंत्री स्व० जवाहरलाल नेहरू ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष के आसन से लोकमान्य तिलक की उस अमरवाणी "स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है और हम उसे लेकर रहेंगे' की पुनरावृत्ति की। तत्कालीन स्वायत्त शासन मंत्री (बिहार एवं उड़ीसा) श्री गणेशदत्त के कर कमलों द्वारा इस विद्यालय का शिलान्यास हुआ। इस विद्यालय के जन्मदाता प्रधानाध्यापक श्री शिव कुमार ठाकुर जी हुए जिनके अथक प्रयास एवं दृढ़ संकल्प से इसने शैक्षणिक-जगत् में अपना स्वतंत्र स्थान निरूपित किया। इसके जन्म, संवर्द्धन, पोषण एवं विकास में श्री अम्बिका प्रसाद ठाकुर, अध्यक्ष एवं स्व० श्री राजेश्वर पाण्डेय सचिव, विद्यालय प्रबन्ध समिति का महत्त्वपूर्ण स्थान है। समिति के अन्यान्य सदस्यों, विद्यालय परिवार के शिक्षकों एवं शिक्षकेतर कर्मचारियों ने अपने सक्रिय मनोयोगपूर्ण सहयोग से इसे पुष्पित एवं पल्लवित किया।

पर इस विद्यालय का चरमोत्कर्ष शैक्षणिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से सेवामुक्त प्राचार्य श्री अंगद प्रसाद राय के निर्देशन में सम्पन्न हो सका। इन्होंने १९६० में इस विद्यालय का कार्यभार ग्रहण किया। वे विगत २० वर्षों तक इसके निर्माण एवं प्रगति में अबाध गति से सचेष्ट एवं सक्रिय रहे। सरकारी आदेश (शिक्षा-विभाग) के परिणामस्वरूप उन्होंने दिनांक १-१०-८० को अवकाश ग्रहण किया। विद्यालय भवन, क्रीड़ांगन, परीक्षाफल, शिक्षकमण्डल एवं छात्र संख्या सभी दृष्टि से श्री राय के प्रधानाचार्य—काल में विद्यालय की उपलब्धियाँ सराहनीय एवं स्तुत्य रहीं।

अक्तूबर एवं नवम्बर दो माह का जीवन विद्यालय का संक्रमणकाल रहा। संक्रमणकाल बड़ा ही बोझिल एवं दुखदायी रहता है। पर श्री शिव शंकर राय ने प्रभारी प्रधानाचार्य के रूप में इस दुर्वह बोझ का सफलतापूर्वक संवहन किया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

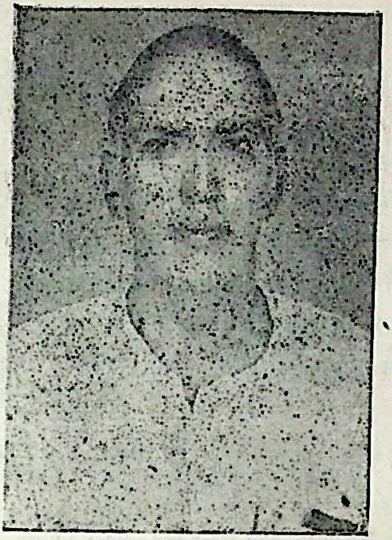

हमारे प्राचार्य

११ दिसम्बर, ८० को मैंने उच्च विद्यालय, पुलिया (भोजपुर) से स्थानान्तरित होकर इस विद्यालय के प्रधान के पद को संभाला। वर्तमान समय में विद्यालय परिवार में प्रधानाचार्य को लेकर २७ अध्यापकों का एक शिक्षक-मण्डल है। स्नातकोतर शिक्षकों की सख्या १५ है जो विभिन्न विषयों की उपाधियों से विभूषित हैं। हमारे यहाँ एक वरिष्ठ एव योग्यतम अध्यापक डा० अनिल कुमार राय 'आंजनेय' हैं जो एम० ए० पी० एच० डी० हैं। यह विद्यालय के लिये गौरव की बात है। सभी शिक्षक योग्य, अनुभवी एवं कर्मठ है। सहायकों की संख्या तीन है और आदेशपाल कुल छव हैं। विगत वर्षों से छात्रों की संख्या जिल के सभी उच्च विद्यालयों से अधिक रही है। विगत वर्ष ११७० थी। इस वर्ष लगभग १३०० है।

भगवान शिव से यही प्रार्थना है कि यह विद्यालय अपने प्राचीन गौरव एवं परम्परा का पालन करते हुये भविष्य में उत्तरोत्तर प्रगति की ओर अबाध गति से बढ़ता रहे।

—उमा शंकर राय
प्रधानाचार्य

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हमारा विद्यालय-परिवार

१ श्री उमाशंकर राय, एम० ए०, बी० एच०, बी० एड० (प्राचार्य)
२ श्री शिवशंकर राय, एम० ए०, बी० एड०
३ श्री रमाशंकर राय, एम० ए० (द्वय), बी० एड०
४ श्री सिद्धनाथ ठाकुर, एम० ए०, एम० एड०
५ श्री रामसूरत तिवारी, एम० ए०, बी० एड०
६ डॉ० अनिल कुमार 'आंजनेय', (१) एम० ए० (प्रा० भा० इतिहास संस्कृति एव पुरातत्व)
(२) एम० ए० (हिन्दी साहित्य)' बी० एड० पी-एच० डी०
७ श्री गोपाल प्रसाद—बी० एस-सी०, बी एड०
८ ,, गणेश उपाध्याय—बी० ए०, डिप० पी० एड०
९ ,, शिवबहादुर पाण्डेय—एम० ए०, बी० एड०
१० ,, राजेन्द्र शर्मा—आचार्य
११ ,, बशीरूद्दीन अहमद—फाजिल
१२ ,, तारकेश्वर राय - बी० एस सी०, बी० एड०
१३ ,, रामलखन सिंह—बी० एस-सी०, एम० ए०, बी० एड०
१४ ,, शेषनाथ राय—बी० एस-सी० (आनर्स), बी० एड०
१५ ,, विश्वामित्र पाण्डेय - बी० एस-सी०, बी० एड०
१६ ,, विभूति नारायण राय—बी० एस-सी० (जीवविज्ञान) डिप० इन एड०
१७ ,, ओम प्रकाश गुप्त—एम० ए०, बी० एड०
१८ ,, मो० सोहराब—एम० ए० (उर्दू), बी० एड०
१९ ,, लल्लन राय—ए० ए०, बी० एड०
२० ,, कमला कान्त राय—एम० ए०, बी० एड०
२१ ,, धनराज प्रसाद—बी० ए०, बी० एड०
२२ ,, रमेश शर्मा—एम० ए०, बी० एड०
२३ ,, उमांशरण शर्मा—बी० एस-सी० (जीव विज्ञान), बी० एड०
२४ ,, रामेश्वर सिंह—एम० एस-सी०, बी० एड०
२५ ,, विश्वनाथ दूबे—बी० ए०, बी० एड०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

२६ श्री रामप्रकाश वर्मा—एम० ए०, बी० एड०

२७ ,, मदन मोहन राय—बी० ए०, बी० एड०

लिपिक वर्ग

२८ ,, ललितेश्वर राय, बी० ए० लिपिक

२९ ,, अनन्त प्रसाद, बी० ए० सी० टी० ,,

३० ,, रमाशंकर ठाकुर, बी० ए० ,,

चतुर्थवर्गीय कर्मचारी

३१ ,, वैजनाथ चौबे, आदेशपाल

३२ ,, बासु राम, ,,

३३ ,, धर्मदेव यादव, ,,

३४ ,, धनेसर प्रसाद ,,

३५ ,, दीनानाथ प्रसाद ,,

३६ ,, शम्भुनाथ ,,

स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है।

—तिलक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

—— शुभकामनायें ——

गंगा शरण सिंह
अध्यक्ष,
अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ,
नई दिल्ली-2

फोन 50265 (पटना)
12, राजेन्द्र नगर,
पटना-800016
दिनांक-13.6.79

प्रिय आञ्जनेय जी,

स्वर्गीय लोकमान्य तिलक के जन्म दिवस पर स्मारिका का प्रकाशन एक बहुत उपयोगी, अनुकरणीय और आवश्यक कार्य है जिसका आयोजन आपने किया है।

लोकमान्य हमारे देश के ही नहीं संसार के महान व्यक्तियों में हैं। उनकी विद्वता उनकी राष्ट्रभक्ति, उनका त्याग, उनकी लगन शाश्वत प्रेरणा के स्रोत है। अभी उनके जीनव और उनकी कृत्तियों पर पूरा प्रकाश नहीं डाला जा सका है। देश और संसार को उनके संबन्ध में जितनी जानकारी होनी चाहिए वह नहीं है। हमारे देश के इतिहास के वे एक ज्वलन्त, कर्मठ और प्रकाशमान अध्याय आधार-स्तम्भ हैं जिन्हें सदा स्मरण किया जाना चाहिए। विद्वत्ता, त्याग, बहादुरी और बलिदान के प्रतीक के रूप में वे सदा याद किये जायेंगे। उनका चरित्र जिस अद्भुत प्रेरणा का स्रोत है वह कभी सूखने वाला नहीं है। उनकी स्मृति में आपका यह आयोजन एक राष्ट्रीय आवश्यकता की पूर्ति की तरफ एक सही कदम है। स्वर्गीय लोकमान्य की स्मृति में श्रद्धाञ्जलि अर्पित कर आपके सद् प्रयत्न की सफलता के लिए कामना और प्रार्थना करता हूँ। आप अपने प्रयत्न में सफल हों और प्रेरणा के इस उद्गम और स्रोत को निरन्तर अविच्छिन्न रूप से प्रवाहित होने में आपका सक्रिय योगदान फलदायक हो यही हृदय से चाहता हूँ।

विनीत
—गंगा शरण सिंह

डा० अनिल कुमार आञ्जनेय,
ग्राम —उजियार,
डाकखाना —कोरंटाडीह,
जिला—बलिया

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कुमार विमल

अध्यक्ष, लोक सेवा आयोग,
बिहार, पटना।

दूरभाषः ५२९४४

९६, एम० आइ० जी० एच०,
लोहियानगर, कंकड़बाग,
पटना-२०.

प्रिय महोदय,

आपका पत्र मिला। धन्यवाद।

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि विद्यालय की ओर से लोकमान्य तिलक की 123वीं जन्म-तिथि के अवसर पर एक सुन्दर स्मारिका प्रकाशित की जा रही है।

लोकमान्य तिलक भारतीय नव-जागरण के सूत्रधार और ओजस्वी प्रवक्ता थे। उन्होंने भक्ति-कातर कर्म-विमुख भारतीय जीवन-दर्शन को अनिरुद्ध कर्म-योग की ओर बढ़ने के लिए प्रेरित किया था।

स्वतंत्रता को मनुष्य का जन्म-सिद्ध अधिकार मानने वाले लोकमान्य तिलक आज भी हमारे लिये सार्थक हैं और आज के सम्पूर्ण सन्दर्भ से जुड़े हुए हैं। ऐसे महापुरुष के प्रति इस युग की कृतज्ञता प्रकट करने के लिए आप जो कार्य करने जा रहे हैं. वह निश्चय ही स्तुत्य है।

भवदीय
डा० कुमार विमल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

केशरी मराठा ग्रन्थ माला
५६८, नारायणपेठ, पुणे-३०

टेलिफोन :
५७२७७/५७२७८

॥ श्री ॥

डॉ० अनिल कुमार 'आंजनेय'
मु० उजियार पो० कोरंटाडीह
जि० बालिया (उ० प्र०)
PIN. 27750।

दि० ४ जून, १९७९

सादर प्रणाम

आपका पत्र मिला। आप लोकमान्य तिलक स्मारिका का प्रकाशन कर 'रहे हैं ये पढ़कर खुशी हुई। इस पत्र के साथ 'लो० तिलक जन्मशताब्दि विशेषांक' की एक प्रति भेज रहा हूँ। इसमें कई अन्य विद्वानों के निबंध छपे हुए हैं! आप इसका इस्तेमाल अवश्य करें।

इसी तरह इस पत्र के साथ —

(१) 'केसरी' के पहले अंक का फोटो,

(२) लो० तिलक के ३ फोटो,

(३) तिलक घराने की वंशवृक्ष की प्रति,

भेज रहा हूँ। आप इसका भी अवश्य इस्तेमाल करना।

आपका अंक प्रकाशित होने के बाद प्रति भेजने की कृपा करें। पत्र मिलते ही जवाब देना।

आपका

प्र० ग० फनसालकर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विश्वविद्यालय सेवा आयोग विहार,

पटना

आचार्य कपिल जी,
अध्यक्ष,

दूरभाष कार्यालय २३३-९८
दि०—१९। ६। ७९

बन्धुवर,

सादर नमस्कार

कृपा बनाए रखिए। यदि संभव हुआ तो सेवा में तिलक जी महाराज पर कुछ लिखकर भी भेज सकूँगा। यों कुछ लिखने के लिए मन की निश्चिन्तता की अपेक्षा तो रहती ही है।

तिलक विशेषांक प्रकाशन का अनुष्ठान सफल हो —

इस कामना के साथ मैं

आपका
कपिल

प्रिय अनिल कुमार जी

आपके दो पत्र मिले जिनमें आपने मुझ से अनुरोध किया था कि मैं आपको तिलक के राजनीतिक विचारों पर एक निबन्ध दूँ जिसे आप लोग अपनी स्मारिका में निकालना चाहते हैं। मैं समय पर पत्रों का जवाब नहीं दे सका, इसका बुरा नहीं मानियेगा। मैं बहुत शीघ्र एक निबंध तैयार कर भेजने का प्रयास करूँगा। मारकण्डेय ने भी इस सम्बन्ध में मुझसे कहा है। आपके महाविद्यालय की उन्नति में मेरी बड़ी अभिरुचि है और मैं यथोचित सहायता करते रहने में मैं अपना सौभाग्य मानुँगा। मुझे सूचना मिली है कि आप सभी महाविद्यालय की स्थापना में प्रयत्नशील हैं। ईश्वर आपलोगों के प्रयत्न को सफल बनायें यही मेरी कामना है।

आपका
हरिद्वार राय

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तरंग ज्ञान तरंगिणी की

अजी संपादक जी महाराज ।

जय हो 'ज्ञान तरंगिणी' की ।

विद्या से बुद्धि होती है, और बुद्धि से ज्ञान प्राप्त होता है । आपका विद्यालय ज्ञान-लोक है । विद्यार्थियों की अध्ययन-तपस्या का उद्देश्य ज्ञान की प्राप्ति ही है । अतः इस पत्रिका का नाम "ज्ञान-तरंगिणी" जो रक्खा गया है, इसकी बराबरी करने वाला कोई अन्य नाम जँचता ही नहीं । 'ज्ञान तरंगिणी' नाम सदा अजर-अमर रहेगा ।

ज्ञान की तरंगें हों जिसमें वह है ज्ञान तरंगिणी । श्री विश्वामित्र आश्रम (बक्सर) जो श्रीराम-लक्ष्मण के चरणों की धूलि से पवित्र है, उस बक्सर के उन्नतिशील विद्यालय (भू० ब्रा० उ० वि०) से यह परम सौभाग्यशालिनी पत्रिका प्रकाशित हो रही है। "योगक्षेमवहाम्यहम्" के अभयदाता श्रीराम सदृश्य जिसके संरक्षक एवं विद्वान श्री अगद प्रसाद राय जी हैं । रामदूत आंजनेय जी के अपार पराक्रम से यह ज्ञानतरंगिणी पत्रिका प्रकाशिता है । क्यों न उन्नतिशील होकर देश-विदेश की दृष्टि मे आदर पायेगी ?

निकटवर्ती सुदूर-वर्ती मेधावी कवियों, साहित्यकारों, पत्रकारों, छात्रों शिक्षकों, आलोचकों की लेखनी के अंकन से तथा वाराणसी, पाटलीपुत्र जैसे उच्च नगरों के मुद्रणालयों से मुद्रित-प्रकाशित होने से यह पत्रिका चमत्कारिणी होती जा रही है ।

स्वर्गीय 'श्री दिनकर अंक' प्रकाशित कर यह पत्रिका परमोज्जला हो गयी है। अब स्वर्गीय श्रद्धेय श्री लोकमान्य बालगंगाधर तिलक का विशेषांक प्रकाशित कर मणि-कांचन योग को प्राप्त कर गयी ।

अनन्तश्री विभूषित बालगंगाधर तिलक जी का भारत ऋणी है, और रहेगा । वे देवतुल्य, महापंडित, अनेक भाषाविद् ज्ञान राशि स्वरूप थे । जिन्होंने देश को स्वतंत्र करने के लिए आजन्म कठोर कारावास को सहन किया । वे स्वयं वसुदेव जी बनकर अपने मंत्र रूपी मोहन को पैदा करके मोहनदास कर्मचन्द गान्धी को अपना कार्य सुपुर्द करके परलोकगामी हुए ।

"स्वतंत्रता हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है, और इसे हम लेकर ही दम लेंगे ।' यह उनका उद्घोष था । यह उनका आत्मबल था ।

जीवन भर इसके लिए वे लगे रहे । इस प्रकार हम देखते हैं कि स्वतंत्रता-प्राप्ति के बीज-वपन करने वाले 'तिलक' जी ही हैं ।

धन्य हैं संरक्षक जी, और संपादक जी, जो चुन-चुन कर ज्ञान-तरंगिणी में महाज्ञानियों की नानाविध तरंगों को उठाते जा रहे हैं ।

"जय हो ज्ञान-तरंगिणी की ।"

भवदीय —

नारायण दत्त द्विवेदी
विशारद, साहित्य शास्त्री, साहित्याचार्य
अध्यापक — हिन्दी संस्कृत
सेवा मुक्त-शिक्षक—भू० ब्रा० उ० वि० (बक्सर)

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अनुक्रम

दो शब्द प्राचार्य के — श्री उमाशंकर राय २

विद्यालय परिवार ...

शुभकामना के पत्र

एक देवोपम राष्ट्रार्पित जीवन / श्री अंगद प्रसाद राय .. १५

आमंत्रित रचनायें

१ बाल गंगाधर तिलक : आधुनिक भारत के निर्माता
श्री राज गोपालाचारी १७

२ पेशानी पै जिसके शोभे तिलक
डॉ० विवेकी राय १९

३ तिलक : एक दैदीप्यमान महान् व्यक्तित्व
श्री वृन्दावन दास ... २५

४ लोकमान्य तिलक — जीवन-झाँकी
डॉ० राजेश्वर प्रसाद चतुर्वेदी ३२

५ तिलक की परम्परा
डॉ० युगेश्वर ... ३६

६ लोकमान्य तिलक : कृतित्व और जीवन-दर्शन
आचार्य डॉ० विश्वनाथ प्रसाद वर्मा ३९

७ लोकमान्य तिलक राष्ट्रपिता थे
आचार्य कुलदीप नारायण 'झड़प' ४६

८ उग्र राष्ट्रीयता के जनक बाल गंगाधर तिलक
डॉ० शिवमंगल राय ५२

९ बाल गंगाधर तिलक : एक सच्चे राष्ट्रनायक
श्री रमाशंकर राय ५९

१० महान पत्रकार तिलक
श्री रवीन्द्र सनातन ६४

११ महान लोकशिक्षक : लोकमान्य तिलक
डॉ० परमानन्द पाण्डेय ६८

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१२ तिलक का सामाजिक दर्शन
डॉ० रेणुका देवी ... ७२
१३ महान कर्मयोगी तिलक
डॉ० सूर्य नारायण द्विवेदी ... ७५
१४ विद्वान तिलक
श्री गौरीशंकर राय ... ७९
१५ लोकमान्य तिलक का गहन पाण्डित्य
डॉ० श्यामसुन्दर वादल ८१
१६ लोकमान्य तिलक की साहित्य सेवा
डॉ० प्रभाकर मांचवे ... ८६
१७ लोकमान्य तिलक
श्री जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी ९१
१८ कर्मयोगी तिलक
डॉ० त्रिलोकी नाथ व्रजवाल ९३
१९ अमर कर्मवीर तिलक
श्री कुमार कुणाल ९६
२० लोकमान्य तिलक और कर्मयोग रहस्य
आचार्य अवधेश दयाल १००
२१ तिलक का कर्मयोग शास्त्र
श्री आनन्द शंकर माधवन १०९
२२ लोकमान्य तिलक का गीता-रहस्य
डॉ० विश्वनाथ प्रसाद वर्मा ११७
२३ गीतारहस्य
प्रो० रंजन सूरिदेव ... १२२
२४ तिलक का गीता-रहस्य
डॉ० जनार्दन उपाध्याय ... १२५
२५ बुद्धियोग के प्रतीक-तिलक
डॉ० गोवर्धन नाथ शुक्ल १२९
२६ लोकमान्य तिलक और शिक्षा का स्वरूप
श्री राजवल्लभ सिंह १३१
२७ लोकमान्य तिकल
स्व० लालबहादुर शास्त्री ... १४२

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

२८ लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक
पं० युगलकिशोर चतुर्वेदी १४७
२९ तिलक का राजनीतिक जीवन : एक खुला ग्रन्थ
श्री मो० ग० तपस्वी १५१
३० महात्मा तिलक और साधु-प्रसंग
प्रो० ब्रजकिशोर ... १५७
३१ लोकमान्य तिलक की जन्म कुण्डली १६७
३२ जीवन के पूर्वार्द्ध मुख्य स्थल ... १६७
३३ लोकमान्य तिलक का वंशवृक्ष ... १६८

कवितायें

३४ लोकमान्य शिवतिलक महात्मा महामना हे
प्राध्यापक अंचल १६९
३५ लोकमान्य तिलक के प्रति /
श्री रामजी राय ... १७१
३६ तिलक / श्री रामेश्वर पाण्डेय ... १७३
३७ लोकमान्य तिलक के प्रति /
श्री रामेश्वर प्रसाद सिन्हा १७४
३८ नजरानए अकीदत / परवाज भोजपुरी ... १७६
३९ लोकमान्य स्मृतिः / श्री शिवदत्त शर्मा चतुर्वेदः १७८
४० सरधाञ्जलि / डाँ० कमला प्रसाद मिश्र 'विप्र' ... १८०
४१ केसरी / श्री शालिग्राम द्विवेदी १८०
४२ पावन स्मृति / श्री अनन्त प्रसाद १८१
४३ श्रद्धाञ्जलि / श्री गोपाल प्रसाद १८२
४४ आह्वान / श्री शिवशंकर राय १८३
४५ भारत का लाल / श्री सिद्धेश्वर नाथ उपाध्याय १८३
४६ लोकमान्य बालगंगाधर तिलक /
श्री रामेश्वर प्रसाद सिन्हा १८४
४७ हस्ताक्षर अमर / श्री गणेश उपाध्याय १८५
४८ आवें हम तिलक को तिलक करें /
श्री अयोध्या चौधरी 'अवधेश' ... १८६

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

—विविध निबन्धादि—

४९ भारतीय संस्कृति के पोषक तिलक जी
श्री जगदीश नारायण राय १८७

५० तिलक एक महान योद्धा
श्री विजय कुमार पाण्डेय १९१

५१ लोकमान्य तिलक (एकांकी)
श्री हनुमान प्रसाद सिंह १९४

५२ लोकमान्यः बालगंगाधर तिलकः
आचार्य ओम प्रकाश गुप्तः ... १९८

५३ हम भूल गए हैं / तिलक २००

५४ हमारा दुर्भाग्य है / तिलक २००

५५ लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक
श्री नारायणदत्त द्विवेदी .. २०१

५६ लोकमान्य तिलक / श्री शिवबहादुर पाण्डेय २०३

५७ एक उग्रवादी नेता के रूप में तिलक का योगदान
श्री ओम प्रकाश राय ... २११

५८ शिक्षाप्रेमी लोकमान्य / कुमार तिलक ... २१५

५९ लोकमान्य तिलक एक स्वतंत्र योद्धा / श्री सुजित कुमार ... २२४

६० लोकमान्य बालगंगाधर तिलक / राजीव रंजन प्रसाद २२६

६१ भारत के निर्माता / अशोक कुमार २२८

६२ लोकमान्य तिलक का राजनीतिक स्वरूप
श्री राजेश कुमार सिंह ... २३१

६३ लोकमान्यः बालगंगाधर तिलकः
पं० श्री जगदीश शर्मा २३५

६४ वैदिक काल और लोकमान्य तिलक के विचार २४०

६५ प्रकाशपुञ्ज व्यक्तित्व / राम गोपाल ... २४८

६६ श्रद्धा सुमन / आचार्य कुलदीप नारायण 'झड़प' ... २४९

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भूतपूर्व प्राचार्य की कलम से

एक देवोपम राष्ट्रार्पित जीवन

□ श्री अंगद प्रसाद राय

एम० ए० (हिन्दी, अँग्रेजी), डिप० इन० एड०,

व्यक्ति अपने व्यक्तित्व से अमर बनता है। पूज्य एवम् आराध्य होता है। व्यक्तित्व के प्रस्फुटन एवं प्रसारण के लिए संस्कार आधारभूत तत्व है। संस्कार हीन व्यक्तित्व की कल्पना नहीं की जा सकती। संस्कार मात्र पारिवारिक, सामाजिक परिवेश से परिवेष्ठित नहीं अपितु आत्मशक्ति एवम् आत्मचिंतन की गहराई के अथाह तल तक समाविष्ट है। व्यक्ति पुष्प है तो व्यक्तित्व उसका सौरभ। सौरभ का संवहन सामान्यतः समीर पर निर्भर है। परन्तु कुछ व्यक्तित्व के सौरभ पवन की गति पर गतिशील न हो, चिर मानस के शून्य पथ पर भी विकीर्ण हैं। ऐसे व्यक्तित्व के व्यक्ति युगपुरुष के रूप में काल और परिस्थिति के निर्बन्ध रूप में समय-समय पर अवतरित होते हैं। तिलक ऐसे ही युगपुरुष थे।

जिस मिट्टी ने तिलक को जन्म दिया, पाला, पोषा, उसकी अपनी नैसर्गिक विशिष्टता है, गरिमा है। यह राष्ट्र की ही मिट्टी नहीं महाराष्ट्र की कल्पना करने वाली मिट्टी है। देखें इसका स्वप्न कब चरितार्थ होता है। इसी महाराष्ट्र में एक साथ ही सत, तपस्वी, ज्ञानी, वीरपुरुष एवं बलिदानी पैदा हुए हैं। समर्थगुरु रामदास, ज्ञानेश्वर, एकनाथ, नामदेव, शिवाजी, रानाडे, गोखले जैसी विभूतियों का आविर्भाव यहीं हुआ था। पठारों और पहाड़ियों से वेष्टित भूमि प्रेरणा देती है, ऊपर की ओर चलने की; वीरों में साहस का संचार करती है, कवियों को कल्पना की उड़ान देती है और साधकों तथा तपस्वियों को इसकी गुफाओं में चिंतन करने की ओर संकेत करती है इस भूमि से विराटता की ओर बढ़ने का संकेत मिलता है। गणेश चतुर्थी का पावन पर्व आज भी "गणानामत्वं गणपति" का मंत्र उच्चरित करता है। गणेश में ब्रह्मा, विष्णु, महेश तीनों तत्वों सत-रज-तम का समावेश है। यहीं नहीं देश के द्वादश ज्योतिर्लिंगों में पाँच इसी भूमि में हैं। कहना नहीं होगा बाल गंगाधर ने इस भूमि में जन्म लेकर यहाँ के दिव्य आलोक को चतुर्दिक बिखेरा। कैसे ?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

निकाला तिलक ने ही और उखाड़ फेंका उस जादुई प्रभाव को जिसे दूर करने में सर्वथा असमर्थ थे नरमदलीय नेता। सचमुच वास्तविक रूप से इसे अपनी उन्नति की योजनाओं के अनुरूप बनाकर महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया उनलोगों ने शायद इसलिए कि वे इसे समझते थे अवश्यंभावी। औपनिवेशिक सरकार का निर्माण सबसे बड़ा उद्देश्य था भारतीय नरमदलीय राजनीतिज्ञों का और इसके प्रबल विरोधी थे तिलक। इसके विरुद्ध लड़ना था उन्हें। इन नरमदलीय नेताओं का जुल्म तिलक पर अंग्रेज शासकों से किसी भी अंश में कम न था और तिलक का राजनीतिक विपक्ष बढ़ता ही रहा काफी वर्षों तक। किन्तु सन् १९१० ई० को भूला नहीं जा सकता जब ऐसाप्रतीत होने लगा कि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में शामिल हो जाएंगे तिलक अपनाकर समझौता की नीति को। लगभग यही समय था वह जब महात्मा गाँधी आए राजनीतिक मंच पर। ज्योंही असहयोग की धुंधली छाया के आसार प्रतीत होने लगे, तिलक चल बसे और उनकी मृत्यु के साथ ही समाप्त हो गयी उनकी राजनीतिक पाठशाला भी।

लोक इच्छा की शक्ति पर ही निर्भर थे तिलक। जब वे राजनीतिक मंच पर आए सारे आन्दोलन सृजित थे पाश्चात्य शिक्षा के योगदान से और अस्पष्ट थी जनता की तस्वीर भी। आम जनता की तस्वीर को सामने लाने वाला वह व्यक्तित्व था लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक का ही। इधर लोक शक्ति को अच्छी तरह समझने वाले अंग्रेज अनुभव करने लगे थे आगामी संकट का। यही कारण था कि अंग्रेजों ने हर सम्भव प्रयास किया तिलक को नरम दलीय राजनीतिज्ञों से अलग करने का और सफलता भी हासिल हुई उन्हें। कट्टरपंथी राजनीतिज्ञ एवं पदाधिकारी संगठित हो गये लोकमान्य का सामाजिक वहिष्कार करने के लिए। गाँधी जी के आगमन के साथ ही एक नये तरीके को अपनाया अंग्रेजों ने, जिसने प्रस्तुत किया मौलिक और अचम्भित कर देने वाली परिस्थितियाँ और अंततः विजय प्राप्त की उनपर।

लेकिन लोकमान्य के तीस वर्ष की लोक इच्छा को भारतीय राजनीति के प्राङ्गण में लाने के कार्य में वहुतेरे अन्यान्य दार्शनिकों के विचारों के भाग्य का हिस्सेदार सावित हुआ—असहयोग। गाँधी जी के कार्यों को सम्भव और आसान बनाया —तिलक के कार्यों ने। यह सच है कि वह पद्धति जिसे गाँधी जी ने अपनाई, लोगों को उनकी इच्छा के अनुरूप कार्य करने और विजय प्राप्त करने के योग्य बनायी, किन्तु आम जनता में आजादी की वुनियाद डाली थी लोकमान्य ने ही।

(युलिस्ट्रेटेड वीकली, १२ अगस्त १९५६ पृ०-२२-२३ से अनूदित और सम्पादकाचार्य पं० बनारसी दास चतुर्वेदी जी के सौजन्य से प्राप्त)

☐

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पेशानी पै जिसके शोभे तिलक

☐ डा० विवेकी राय

कहते हैं, बालगंगाधर तिलक किसी व्यक्ति का नहीं, एक ज्वलन्त विचारधारा ा नाम है। इसमें निहित विचार का केन्द्र बिन्दु है, "स्वराज्य हमारा जन्म सिद्ध धिकार है और उसे हम लेकर रहेंगे।" बीसवीं शताब्दी की शुरुआत के साथ ठा यह विचारोद्घोष न केवल भारत अपितु तत्कालीन तीसरी दुनिया के मुक्ति-ामी आफ्रोएशियायी राष्ट्रों की स्वराज्य-साधना का बीजमंत्र बन गया। षण साम्राज्यवादी बाधाओं के रहते पादाक्रान्त, भयग्रस्त और सिकुड़ा-सिकुड़ा ह पराधीन राष्ट्र कैसे तन कर खड़ा हो गया, क्या जादू हो गया; सोचते हैं तो ाता है, सचमुच इसके पीछे कोई प्रबल मंत्र-शक्ति थी जिसके द्रष्टा ने सन् १८८० १९२० ई० तक का एक युग बनाया और उत्तरोत्तर उत्कर्ष पर पहुँचते अपने लीस वर्षीय सार्वजनिक जीवन में व्यक्ति को जमीन से विचार के ऊँचे आकाश क उठ जाने का एक अप्रतिम आदर्श उपस्थित किया। लोकमानस में वह भारत ता के ललाट के तिलक के रूप में स्मरण किया गया।

स्वतंत्रता संग्राम के दौरान अक्सर हम एक गीत सुनते रहे, 'मेरी जाँ न हे, मेरा सर न रहे, सामान रहे न ये साज रहे। फकत हिन्द मेरा आजाद रहे, री माता के सर पर ताज रहे।' इस गीत में एक जगह आता है—

पेशानी पै जिसके शोभे तिलक,
औ गोद में गाँधी विराज रहे।'

निस्सन्देह भारत-भाल का यह तिलक अप्रतिम है, अद्वितीय है। धोती, कुर्ता, ट्टा और देशी जूते वाले इस सांस्कृतिक राजनीतिज्ञ का जन्म (सन् १८५६) ीब घराने में होना जैसे सांकेतिक है; उसी प्रकार बचपन में दुर्बल शरीर होना ा व्यायाम करके बाद में सुगठित सशक्त हो जाना भी प्रतीकात्मक है। जैसे ीब और दुर्बल भारत का ही एक और अवतार हुआ, परशुरामावतार। भार्गव शुराम के कोंकण प्रदेश में बाल गंगाधर के जन्म की सार्थकता भी सटीक है। तब न हिंसा-अहिंसा का नहीं, शत्रुओं के संहार का था। गगनभेदी हुंकृति के साथ जागता है, देश की आत्मशक्ति जागती है और सम्पूर्ण राष्ट्र की जाग्रत आत्म-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शक्ति का प्रतीक हो जाता है एक मराठा नर-केशरी !'—कोटि-कोटि भयग्रस्त लोगों उठो और जागो। देखो अब जगता है गुफा में सोया केशरी और गंगा-जमुना के हरितांचल को निविड़ कान्तार बना रौंदने वाले इन सफेद हाथियों के समूह को विनष्ट कर देता है।

तिलक का 'केशरी' १८८१ ई० में निकलता है तो गहरे आत्म सन्तोष के साथ लोग उसके मोटो के मर्म में उतरते हैं—

'स्वामी कुन्जर वृन्द के इस घने कान्तार के भीतर—
रे, एक क्षण भी न तू ठहरना उन्माद में आकर।'

क्यों मद से अन्धे बने हाथियों के समूह के नायक को इस निविड़ अरण्य-भूमि में एक क्षण के लिए भी नहीं रुकना चाहिए! कविराज जगन्नाथ के मोटो रूप में प्रयुक्त उस संस्कृत श्लोक में आगे रहस्योद्‌घाटन होता है—'ये हाथी हैं, इस भ्रम से जिसने अति तेज नाखूनों से अति प्रचण्ड पत्थरों के ढेर को फोड़ डाला है, वह सिंहों का राजा पर्वत की गुफा में सो रहा है।'

यह मात्र संयोग की बात नहीं थी कि एक वर्ष की आयु वाले दुधमुँहे और निर्विकल्प मनस् बालगंगाधर ने भारतीय स्वाधीनता के प्रथम संग्राम (१८५७) को देखा था तथा भारतीय शौर्य की आँच को जो हवा की तरंगों में घुलकर जाने-अनजाने तमाम भारतवासियों को छूकर खलबला रही थी, चेतना के स्तर पर आत्मसात किया था। काल पुरुष की इस व्यवस्था में भावी स्वाधीनता संग्राम के लिए युग-पुरुष को, जो जन्म ले चुका है, अदम्य साहसशीलता के संस्कार प्रदान करने का आभास मिलता है। सचमुच तिलक जी तमतमाते सूरज की तरह उग रहे थे, भारतीय ओज-तेज और पौरुष के पुंज की तरह। 'गरम दल' जैसी कोई चीज क्या बनानी पड़ी थी? सूरज को क्या गरम बनाना पड़ता है? किसी के स्वभाव को जब कोई संज्ञा प्रदान की जाती है तो शब्द-समूह मात्र काम चलाऊ होते हैं। उसके चतुर्दिक भावरूप में और भी अनेक युगीन तत्त्व लिपटे हुए होते हैं।

युग-पुरुषों को किसी युग विशेष की कुल माँग के निचोड़ के संदर्भ में रेखांकित किये जाने की परम्परा है। तिलक गाँधी और नेहरू के तीन युग एक दूसरे से सर्वथा भिन्न माँगों वाले थे। बेशक, तिलक के युग की मानसिक बनावट में अहिंसा के तत्त्व वैसे अपेक्षित नहीं थे। फिर भी उसे हिंसा के रूप में रेखांकित नहीं किया जा सकता। पराधीनता की तीव्र अनुभूति की वह पहली लहर थी जिसकी सहज उग्रता को अस्वीकार करना कठिन था। 'गीता रहस्य' में तिलक जी ने 'ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम्' के अर्थ को 'शठं शाठ्यं समाचरेत्'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

की नीति के लगभग निकट पहुँचाया या कभी 'आततायीन्मायान्तं हन्यादेवविचारयेन' जैसे नीति वाक्यों को 'केशरी' में प्रस्तुत किया तो उसे समझना होगा, उसके पीछे वाले युगीन दबावों को समझना होगा।

वास्तव में इस सादगीपूर्ण और प्रदर्शन रहित राज-नीतिज्ञ को, पत्रकार, चिन्तक, और लेखक को, शिक्षाविद और भविष्यद्रष्टा को, विद्वान शोधकर्त्ता को तथा भारतीय राष्ट्रीयता के जनक अथवा 'विद्रोह के पिता' को अभी पूरी-पूरी तरह पहचाना जाना शेष है। उनका समुचित मूल्यांकन स्वराज्य प्राप्ति के बाद होता, परन्तु इस अवधि में सम्पूर्ण राष्ट्र सत्ता संघर्ष के ऐसे पागलपन में उलझ गया कि सबकुछ विसर गया। त्याग-तपस्या की उस पावन परम्परा का अब उसे स्मरण भी नहीं रहा। क्या आश्चर्य कि तपस्वियों के तप को अब अफवाहों और राजनीतिक उद्देश्य-प्रेरित मिथ्या धारणाओं की लाइन पर व्याख्यायित किया जाने लगा। तिलक जी के बारे में भी एक प्रचार-प्रभावित ऐसी धारणा कुछ क्षेत्रों में जमी है कि वे उग्रपंथी अथवा आतंकवादी क्रान्तिकारियों के ही नहीं, राजनीतिक हत्या या डकैती करने वालों के भी पोषक थे। वास्तव में तिलक जी का कुल दोष इतना ही था कि वे एक निर्भीक पत्रकार थे और पत्रकारिता के दायित्व को बिना किसी दबाव के निभाते थे। कहते हैं गाँधी जीने क्रांतिकारियों को जब 'बिगड़े दिमाग' वाला पागल कहा था तो 'केशरी' में उसकी बहुत तीखी प्रतिक्रिया प्रकाशित हुई थी। तब हवा में एक कविता गूंजती हुई तैर रही थी—

'इन्हीं बिगड़े दिमागों में भरे—
खुशियों के लच्छे हैं।
हमें पागल ही रहने दो,
कि हम पागल ही अच्छे हैं।।

इसी प्रकार निर्भीक-निष्पक्ष पत्रकारिता के चलते आरंभ में लोगों ने उन्हें मुसलिम विरोधी भी समझ लिया था। उन्हें तब पुनरुद्धारवादी और ब्राह्मण व्यवस्था का स्वप्नद्रष्टा भी कहा गया। कहने की आवश्यकता नहीं कि इन सब के पीछे अंग्रेजों का प्रबल प्रचार-तन्त्र था जो सतत सक्रिय था। सन् १८९३, ९४ और ९५ में कई-कई बार पूना और बम्बई में अंग्रेजों ने साम्प्रदायिक दंगे कराये। इन दंगों को लक्ष्य कर तिलक जी ने १० सितम्बर १८९५ के 'केशरी' में एक टिप्पणी लिखी। उसमें मुसलमानों से अपील की गयी कि वे लड़ाने वालों को समझें और हर मसजिद के पास हर समय संगीत बन्द कर देने जैसे रुख पर पुनर्विचार करें। इस प्रकार की टिप्पणियों का अर्थ बहुत तोड़-मरोड़ कर लिया जाना मिथ्यापवाद का कारण था। किन्तु एक सजग-सचेत और निडर पत्रकार जो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शताब्दियों के दबे-कुचले दलित लोगों में प्राण फूंकने के लिए कृतसंकल्प है, सोद्दे
प्रचारित विरोधों से कैसे प्रभावित होता ? वह समर्पित भाव से आगे बढ़ता गया
भारत में सामाजिक, राजनीतिक और शिक्षा सम्बन्धी सुधारों के जिन उद्देश्यों
लेकर 'केशरी' का प्रकाशन हुआ उनमें तिलक जी को महान सफलता मिली
उनका मत था कि राजनीतिक सुधार के बिना सामाजिक सुधार कठिन है औ
इसलिए उनकी मूल दृष्टि राजनीति पर थी। उनका आदर्श कर्मयोग था जं
राजनीति रहित नहीं था। संन्यास को मोटे रूप में वे पलायन कहते हैं। वेदा
के सन्दर्भ में हिन्दुत्व को उन्होंने उत्कट कर्म-निष्ठा मूलक नूतन दर्शन प्रदान किया
गीता के कर्मयोग शास्त्र को प्रवृत्तिवादी संघर्षशीलता के रूप में प्रस्तुत किया जान
एक बहुत भारी विचारक्रांति है। समाज में रह कर उससे चतुर्दिक छाये का
घेरे से यदि संघर्ष नही किया तो फिर जीवन धारा का और दूसरा उद्देश्य क्या है

खोये भारतीय आत्म सम्मान के इस उद्धारकर्ता द्वारा दो शर्तें उपस्थि
की जाती हैं। देशवासी निडर हों, पहली शर्त्त। वे संगठित हों, दूसरी शर्त तथ
वे इन दो शर्त्तों के साथ दासता के विरूद्ध संघर्ष में उतरें। सन् १९१०-११
मांडले जेल में पड़े-पड़े 'गीता रहस्य' जैसे वृहदाकार गंभीरग्रंथ लिखकर तिल
जी ने धर्म के ऐसे व्यावहारिक रूप को प्रस्तुत किया जो देशवासियों को किंकर्तव्य
विमूढ़ावस्था से निकाल कर उन्हें योग्य और निर्भीक बना युद्ध में उतार देता है
गीता धर्मक्षेत्र की नहीं राजनीति क्षेत्र की प्रेरक पुस्तक बन जाती है। लोगों
द्वन्द्वातीत निर्णयिक बुद्धि का आह्वान सुनायी पड़ने लगता है : अरे देखो देशवासि
तुम देह नहीं अजर-अमर आत्मा हो। आत्मा को कौन मार सकता है ? स
'स्वराज्य' में स्थित अमृत-पुत्र को कौन दास बना सकता है। लो, स्वतंत्रता
संबल कर्मयोग, किन्तु कोरा मंचोपदेश नहीं!' समूचे देश ने देखा, आह्वान के स
उसमें उनके वैयक्तिक जीवन की मूल्यवान आहूति पड़ती है। तीन-तीन बार रा
द्रोह के मुकदमे में कठिन सजा होती है। हर सजा जैसे उस सेनानी के
अग्नि-परीक्षा होती है। वह उत्तरोत्तर निखरता जाता है।

सन् १८९७ में पहला राजद्रोह का मुकदमा इसलिए खड़ा होता है
'केशरी' द्वारा सरकार के इस कुचक्र का पर्दाफास हो जाता है कि वह फूट डाल
दोनों जातियों को लड़ाती है। डेढ़ वर्ष की इस बड़ी कैद में रोमांचक मंत्रणाओं
बीच से गुजरना पड़ता है। दूसरा १९०८ का राजद्रोह का मुकदमा चलत
केशरी में प्रकाशित उस टिप्पणी के कारण जिसमें क्रांतिकारियों के उग्र दमन
विरोध और उसके प्रति रोष प्रकट किया जाता है। ५२ वर्ष के इस युवा
योगी को जब छः साल का कालापानी होता है और मांडले जेल की चार-पाँच
चौड़ी-लम्बी कोठरी में लोहे की खाट पर रहना होता है तो उसके विरोध में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देश में जो हड़ताल और जनान्दोलन का प्रसार होता है उससे देश के जाग्रत होने का पहला प्रबल आभास होता है। कितनी कठिन तपस्या से गुजरकर देश को जगाया उन महात्माओं ने! कालापानी की सजा भोगकर बाहर आने के दो ही वर्ष बाद फिर तीसरा राजद्रोह का मुकदमा साठ साल की उमर में, दिवंगत होने के तीन-चार वर्ष पूर्व और इस बार मामला होम रूल' का होता है। होमरूल के विरोध को लेकर सारे देश में तूफानी दौड़ा; इंगलैंड तक झपटा, हिल गया था अंग्रेजी राज। गाँधी जी के रंगमंच पर आते-आते तक स्वाधीनता संग्राम की बहुत ही कड़ी, ठोस और चट्टानी पृष्ठभूमि निर्मित हो चुकी होती है! यह पृष्ठभूमि एक ऐतिहासिक सत्य है जिस पर महात्मा गाँधी की अहिंसा प्रतिष्ठित होती है।

कहते हैं, तिलक जी भारतीय राजनीतिक के सत्य हैं, गाँधी जी शिव हैं और जवाहर लाल सुन्दर। सत्य कटु होता है, साथ ही बहुत दीप्त भी। वह बहुत कठोर और अझुकनशील होता है। शिव की प्रकृति कुछ और है। उसमें सत्य सहित मंगल – साधना के अनेक अनुग्र मोड़ हैं और व्यापकत्व है। उद्देश्य विशेष के लिए योजित सत्य आगे चलकर शिव के संकल्पों के अनुरूप अपने को ढालता है और दोनों अविरोध रूप से एक मंजिल तय कर अपने विशिष्ट उत्तराधिकारी सुन्दर तक पहुँचते हैं। सुन्दर अन्तिम मंजिल है। वही स्वराज्य है। तिलक जी के उत्तराधिकारी गाँधी जी (सन् १९२०-४७) और गाँधी जी के जवाहर लाल (सन् ४७-६३)। शायद जवाहर लाल शतप्रतिशत सही-सटीक उत्तराधिकारी नहीं सिद्ध हुए। उनके भटकते भारतीय स्वराज्य भटक गया। परराज्य बना रह गया। गाँधी जी ने तिलक जी से जो कुछ लिया उसे अपने राजनीतिक साँचे में ढाला जरूर, परन्तु उसकी मूल प्रवृत्ति को सुरक्षित रखा। तो, कैसी थी और क्या थी वह विरोधधर्मी मूलप्रवृत्ति जिसे महात्मा गाँधी को तिलक जी की देन के रूप में हम रेखांकित करते हैं? इतिहास साक्षी है कि लगानबन्दी, नशाबन्दी, स्वदेशी, सरकारी नौकरियों का बहिष्कार, समाज-सेवा के बहुमुखी आयाम, शिक्षा सुधार और संगठनात्मक समाज-सुधार आदि का सूत्रपात तिलक जी ने किया, और महात्मा गाँधी ने उसे व्यापक रूप प्रदान किया। इसके अतिरिक्त निर्भीक और अचूक प्रभावी पत्रकारिता की एक मानक प्रवृत्ति है जिसे महात्मा गाँधी ने सीधे तिलक जी से लिया। तब पत्रकारिता सत्य की कसौटी बन दमकती थी। तिलक जी के सत्य का सूरज 'केशरी' के रूप में इसीलिए शाश्वत अभिनन्दनी [illegible] स्वयं भारतीय स्वराज्य-[illegible] के उज्वल आदर्श के रूप में चिरप्रतिष्ठित होकर आज भी अनेकमुखी प्रेरणाओं के स्रोत हैं।

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain: Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तिलक : एक दैदीप्यमान महान् व्यक्तित्व

□ श्री वृन्दावन दास
बी० ए०, एल् ० एल् ० बी०, साहित्यवारिधि

बलवन्तराय गंगाधर तिलक का जन्म कोंकण प्रान्त के रत्नागिरि में सदोव गोरे के घर पर २३ जुलाई, १८५६ को हुआ। उनकी माता का नाम पार्वती बाई था। वे अपने मापा-पिता की चौथी सन्तान थे। तिलक से बड़ी उनकी तीन बहिनें थीं। उनके पिता का नाम गंगाधर रामचन्द्र तिलक था। वे एक योग्य अध्यापक थे और विद्यार्थीगण उनका बहुत आदर करते थे। उन्होंने व्याकरण और त्रिकोणमिति पर कुछ पुस्तकें लिखीं जो प्रकाशित भी हो गई थीं। पिता गंगाधर रामचन्द्र तिलक बड़े कर्मठ व्यक्ति थे।

तिलक का नाम पहिले 'केशव' रखा गया; परन्तु बचपन में छोटा नाम पुकारने का 'बाल' था वही सर्वाधिक प्रचलित हुआ। वही उनके नाम के साथ जुड़कर बाल गंगाधर तिलक हो गया।

पिता जी इन्हें बचपन से ही संस्कृत के श्लोक याद कराया करते थे। १८६ में जब यह पांच वर्ष के थे पाठशाला में भर्ती कराये गये। पिता जी घर पर भी इनकी पढ़ाई पर ध्यान देते रहते थे। ८ वर्ष की अवस्था में यज्ञोपवीत हो गया। दस वर्ष की अवस्था में 'बाल' पिता के साथ पूना आये और वहाँ उन्होंने सिटी स्कूल में प्रवेश प्राप्त किया। इसी साल इनकी माता का देहान्त हो गया। बाल्यकाल से ही इनकी बुद्धि बड़ी तीव्र थी और दस वर्ष की अवस्था तक इन्होंने भिन्न तक गणित, शब्दरूपावली, समासचक्र, अमरकोश और ब्रह्मकर्म का बहुत-सा भाग सीख लिया था जिसकी स्मरण करने योग्य बहुत-सी सामग्री इन्होंने कण्ठस्थ भी कर ली थी।

चतुराई के साथ इनके स्वभाव में कुछ हठीलापन भी था। यह बचपन से आत्मविश्वास के धनी थे। जिस हिसाब को यह तुरन्त मुँहजुबानी बता देते उसे कागज पर लिखने की आवश्यकता भी न समझते थे। इस पर इनकी अध्यापक से चखचख हो जाती थी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१८७२ में जब ये १६ वर्ष के थे इन्होंने मैट्रिक परीक्षा पास कर ली और इसी वर्ष इनके पिता का देहान्त हो गया। इसी वर्ष इन्होंने पूना के डैकन कालेज में प्रवेश प्राप्त किया। चार वर्ष अध्ययन करने के बाद १८७६ में उन्होंने बी० ए० आनर्स की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। १८७९ में कानून की परीक्षा बम्बई विश्वविद्यालय से पास की।

तिलक से पूर्व महाराष्ट्र की आत्मा पर जिन दो महानुभावों का प्रभाव था वे थे—श्री महादेव गोविन्द रानाडे और श्री विष्णुशास्त्री चिपलूणकर। प्रतिभा, राजनैतिक ज्ञान और स्वदेशप्रेम की दृष्टि से रानाडे उस समय प्रान्तीय नहीं अखिल भारतीय ख्याति के नेता बन गये थे। रानाडे ने केवल राजनीतिक जागृति के लिए ही आन्दोलन नहीं किया, अपितु समाज सुधार की दिशा में भी उन्होंने अनवरत प्रयास किया। उनका यह दृढ़ विचार था कि भारतीय जनता की सामाजिक स्थिति में सुधार लाया जाना चाहिए। उनकी राय में उसके बिना राजनीतिक उद्धार भी सम्भव नहीं था। वे विधवा विवाह, प्रार्थना समाज और धार्मिक सहिष्णुता के कट्टर पक्षपाती थे। रानाडे राष्ट्रीय महासभा के संस्थापकों में से थे।

इसी प्रकार श्री चिपलूणकर ने विद्यार्थी समाज में बड़ा काम किया। उन्होने नौकरी छोड़ दी और आमूलचूल देश सेवा के कार्यों में लग गये। इन दो कर्मठ व्यक्तियों के अतिरिक्त सर्वश्री दादा भाई नौरोजी, फिरोज शाह मेहता, तैलंग भण्डारकर आदि महानुभावों का महाराष्ट्र की युवापीढ़ी पर बड़ा प्रभाव पड़ा।

सार्वजनिक जीवन का प्रारम्भ

अध्ययन काल में ही तिलक के सामने यह प्रश्न उपस्थित हुआ कि विद्यार्थी जीवन के उपरान्त उन्हें क्या करना चाहिये। उस काल में आगरकर उनके मुख्य साथी थे। दोनों मित्रों ने सचेष्ट विचार-विमर्श के उपरान्त निश्चय किया कि उन्हें सर्वांगीण शिक्षा के क्षेत्र से अपने सार्वजनिक जीवन का शुभारम्भ करना चाहिए। यह मध्यम मार्ग था और दोनों की ही इस पर रुचि थी। इस निर्णय के फलस्वरूप १ जनवरी, सन् १८८० को १९ बालकों को लेकर स्कूल खोल दिया गया। अध्यापकों के रूप में श्री चिपलूणकर और तिलक ने कार्यारम्भ कर दिया। आगरकर एक वर्ष बाद इन दोनों महाशयों के साथ सम्मिलित हुए। इन लोगों के साथ एम० एन० जोशी तथा अन्य जनसेवी शिक्षकों ने कन्धे से कन्धा भिड़ाकर शिक्षा के काम में अपना विशिष्ट योगदान किया जिसके परिणामस्वरूप एक महान उपलब्धि दृष्टिगोचर होने लगी। स्कूल बड़ी तीव्र गति से आगे बढ़ने लगा और केवल तीन महिनों

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में विद्यार्थियों की संख्या ५०० हो गई। स्कूल ने ४, ५ वर्षों में बड़ी उन्नति की। उसमें मैट्रिक तक पढ़ाई होने लगी और विद्यार्थियों की संख्या एक हजार से भी ऊपर हो गई। मैट्रिक में स्कूल के परीक्षा फल में ८१ प्रतिशत विद्यार्थी उत्तीर्ण घोषित हुए।

२४ अक्तूबर, १८८४ को डैकन एज्यूकेशन सुसाइटी की स्थापना हुई। तिलक इसके आजीवन सदस्य बने। २ जनवरी, सन् १८८५ को नये भवन की नींव रखी गई और सात वर्ष के उपरान्त ११ जनवरी; १८९२ को बम्बई के गवर्नर लार्ड हैरिस द्वारा दूसरी जगह नींव रखी गई। इस कालेज में पढ़कर महाराष्ट्र के जो विद्यार्थी निकले उनमें अनगिनत देशभक्त और समाज सेवक बने।

तिलक और आगरकर ने जिन उदात्त भावनाओं से प्रेरित होकर इस संस्था की स्थापना की थी वे विफल होने लगी। कतिपय कार्यकर्ताओं का ध्येय केवल आजीविका प्राप्त करना था, जबकि तिलक राष्ट्रीय भावना से प्रेरित होकर अल्प वेतन के सहारे काम करने के पक्षपाती थे। संस्था के आजीवन सदस्यों में कार्यशैली और उपलब्ध सुविधाओं के विषय में मतभेद होने लगे। जब मतभेद बहुत बढ़ गये तो ४ अक्टूबर, सन् १८९० को तिलक उससे त्यागपत्र देकर पृथक हो गये।

'केशरी' और 'मराठा' पत्रों का प्रकाशन

१८८१ में 'केसरी' मराठी में और 'मराठा' अंग्रेजी में निकाला जाने लगा। तिलक और आगरकर दोनों का मत था कि शिक्षा के काम के साथ समाचार पत्र का प्रकाशन जनसेवा का मुख्य साधन है। 'केशरी' के संपादक आगरकर हुए और 'मराठा' के तिलक। दोनों पत्रों पर स्कूल के मुख्य कार्यकर्त्ताओं का सम्मिलित स्वामित्व समझा जाता था। केसरी में साहित्यिक लेख चिपलूणकर लिखते, अर्थशास्त्र और सामाजिक विषयों पर आगरकर और धर्मशास्त्र, राजनीति और कानून सम्बन्धी लेख तिलक लिखते थे। आगरकर के लेखों में सुधारक की भावना से सोचने की प्रवृत्ति, निस्पृहता और भावुकता प्रत्यक्ष दिखाई देती थी। तेजस्विता, प्राचीनता के प्रति आकर्षण और अतीव उत्साह तिलक की मुख्य विशेषताएं थीं तिलक के लेख राजनीतिक सुधार की आकांक्षाओं से भी ओत-प्रोत होते थे।

१८८१ के अन्त में कोल्हापुर के सम्बन्ध में केसरी और मराठा में कुछ लेख छपे। इन पर वहाँ के दीवान श्री बर्वे ने मुकदमा चलाया। यह मामला थोड़े दिन प्रेसीडैन्सी मजिस्ट्रेट की अदालत में चलकर सैशन सुपुर्द कर दिया गया। दो हजार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के मुचलके और एक-एक हजार की दो जमानतों पर तिलक और आगरकर छोड़े गये। इस सारहीन मामले में मित्रों के आग्रह पर तिलक और आगरकर ने वर्वे से माफी भी माँग ली। फिर भी वर्वे ने मुकदमा न उठाया और परिणाम स्वरूप दोनों को चार-चार महिने की सजा हो गई। जेल में अच्छे व्यवहार के कारण सजा में छूट मिल गई और दोनों मित्र १०१ दिन में डोंगरी जेल से छूट गये। "डोंगरी जेल में १०१ दिन" नामक अपनी पुस्तक में आगरकर ने जेल जीवन का वर्णन किया है। इस अवधि म तिलक का २४ पौण्ड और आगरकर का १६ पौण्ड वजन कम हो गया।

इस सजा से तिलक और आगरकर के प्रति जनता में श्रद्धा की भावना बढ़ गई। यह उनके भावी राजनीतिक जीवन में सहायक हुई। २६ अक्टूबर, १८८२ को जब दोनों जेल से छूटे तो जेल पर हजारों आदमियों की भीड़ स्वागतार्थ इकट्ठी हो गई थी। इसके बाद आगरकर और तिलक में समाचार पत्रों की नीति के सम्बन्ध में मतभेद शुरू हो गये। पारस्परिक मैत्री भाव के कारण दोनों ने बहुत दिनों तक निभाया, परन्तु कुछ समय बाद आगरकर पृथक हो गये तथा मराठी और केशरी का संपादन पूर्ण रूप से तिलक के हाथ में आ गया।

अक्टूबर, १८८८ में श्री गोखले की सहायता से आगरकर ने 'सुधारक' नाम का दूसरा पत्र निकाला। आगरकर मराठी और गोखले अंग्रेजी में लिखा करते थे। गोखले का अंग्रेजी भाषा पर असाधारण अधिकार था, अतः पत्र बहुत अच्छा निकला।

इस अवसर पर क्राफर्ड प्रकरण ने राजनीति को झकझोर दिया। क्राफर्ड साहिब रत्नागिरि के कमिश्नर थे। वे भारतीयों से बहुत मेल रखते थे, कोंकणी मराठी ऐसे बोलते थे जैसे कोई किसान बोल रहा हो। उनके बंगले पर हुड़दंग होती, शराब उड़ती और अंग्रेज स्त्रियाँ भी आती थीं। उनके व्यक्तिगत जीवन में जहाँ भलमनसाहत थी वहाँ रसिकता और मोदप्रियता भी। उनको संध्याएँ मित्रों और स्त्रियों में व्यतीत करने का व्यसन-सा हो गया और परिणामस्वरूप उनका जीवन बड़ा खर्चीला हो गया था। वे खर्चे को निबाहने के लिए रिश्वत लेने लग गये। परिणामस्वरूप अपयश हुआ और शिकायतें हुईं। जाँच करने के लिए कमीशन बैठा। उनको सेवा-निरस्त करके इंगलैण्ड भेज दिया गया। इस विषय में तिलक ने जो 'केसरी' और 'मराठा' में निर्भीक होकर तथ्य प्रस्तुत किये उससे वे जनता के विश्वासभाजन बन गए।

१८९७ में भयंकर न्यूमोनिक प्लेग फैला। इसमें भयंकर जन हानि हुई। प्लेग को रोकने आदि के लिए जो व्यवस्था सरकार की ओर से की गई वह दोषपूर्ण

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

थी। गोरे लोग निरीक्षण और नियन्त्रण के बहाने घोर अत्याचार कर रहे थे। चाहे जिसको आज्ञा के उलंघन में जेल में ठूँस दिया जाता। लोग प्लेग और शासन दोनों से भयत्रस्त हो गये थे। तिलक ने सैनिकों के अत्याचार पर खूब लिखा। गोरे लोग घरों को धुलवाने आदि के बहाने घरों में घुस जाते, वहाँ घरेलू चीजों को उड़ा देते तथा नाना प्रकार के अत्याचार करते फिरते थे। ऐसी भी अफवाहें फैली कि गोरे लोग घरों को धुलवाते समय स्त्रियों से छेड़छाड़ करते तथा सामान की चोरी कर लेते थे। इन झूठी-सच्ची अफवाहों के दौरान चाफेकर नामी एक व्यक्ति ने प्लेग कमेटी के अध्यक्ष श्री रैण्ड को रात्रि में गवर्नमेन्ट हाउस से लौटते समय गोली से उड़ा दिया। चाफेकर हत्या करके गायब हो गया। बहुत समय बाद वह ढूँढ़ निकाला गया। उसको गिरफ्तार करके फाँसी दी गई। रैण्ड की हत्या ने हिन्दुस्तान में सनसनी फैला दी। सरकार की धारणा यह बनी कि यह काण्ड 'केसरी' के लेखों से फैलाई गई उत्तेजना के कारण हुआ है। 'केसरी' पर मुकदमा चलाया गया और जस्टिस स्ट्राची की अदालत से तिलक को १८ महिने के कारावास की सजा हुई। इस मुकदमे से देश भर में और खास तौर से बंगाल में सनसनी फैल गई।

१८९२ में उन्होंने एक लेख लिख कर लन्दन की प्राच्य परिषद में भेजा था जो वहाँ के विवरण में प्रकाशित हुआ। इसमें उन्होंने अग्रहायण से वर्ष गणना की प्रथा के आधार पर वेदकाल का निर्णय किया था और उसे कम से कम चार से पांच हजार वर्ष ईसा के पूर्व का सिद्ध किया था। पीछे यही निबन्ध ओरायन के नाम से पुस्तकाकार प्रकाशित हुआ। इस निबन्ध का पश्चिम के विद्वानों पर बड़ा प्रभाव पड़ा। प्रोफेसर मैक्समूलर तो बहुत ही प्रभावित हुए। उन्होंने कई विद्वानों के साथ महारानी विक्टोरिया से प्रार्थना की कि ऐसे विद्वान को जेल में सड़ाना उचित नहीं। बम्बई काउंसिल में भी यह मामला पेश हुआ और वहाँ तिलक को छोड़ने का निश्चय हुआ। तदनुसार एक वर्ष की सजा भोगने के बाद ६ दिसम्बर सन् १८९८ को वे कुछ शर्तों के साथ छोड़ दिये गये।

इस सजा के कारण तिलक की जनता में लोकप्रियता बहुत बढ़ गई। जेल से छूटने पर जनता ने अपूर्व स्वागत किया। देवालयों में रोशनी की गई। कैद से छूटने पर दस हजार से भी अधिक लोग उनके दर्शनार्थ उनके निवास स्थान पर पहुँचे। देश-विदेशों से हजारों पत्र उनके स्वागत-अभिनन्दन स्वरूप प्राप्त हुए।

ताई महाराज उनके मित्र थे। उन्होंने अपनी रियासत का तिलक को भावी मालिक घोषित कर दिया। ताई महाराज की युवा विधवा पत्नी तिलक के शत्रुओं के चंगुल में फँस गई और उसने तिलक पर जाली दस्तावेज बनाने, उस पर अमल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

करने तथा झूठी गवाही देने आदि का आरोप लगाया। मुकदमा दायर हुआ। डेढ़ वर्ष में करीव १२५ पेशियाँ हुईं। सरकार ने इस मुकदमे में ६०, ७० हजार रुपया खर्च किया। हाईकोर्ट से तिलक निर्दोष सिद्ध हुए। यह मुकदमा किसी न किसी रूप में बीस वर्ष तक चलता रहा था और इसमें तिलक को वहुत परेशानी उठानी पड़ी।

वंगभंग लार्ड कर्जन के काल में हुआ। उससे भारत का एक भाग अत्यन्त प्रभावित हुआ और जगह-जगह दंगे हुए। तिलक के दो लेख जिनके शीर्षक थे (१) देश का दुर्दैव, और (२) ये उपाय टिकाऊ नहीं— अंग्रेजों की निगाह में खटके और उन पर मुकदमा चलाया गया। तिलक ने अपनी पैरवी खुद की। उस समय जो वहस स्वयं उन्होंने की चार दिन तक चली। उनके कानूनी ज्ञान को देखकर उभय पक्ष के वकील दंग रह गये। ९ सदस्यों की जूरी में ७ यूरोपियन और २ भारतीय थे। जूरी ने वहुमत से तिलक को दोषी पाया। उस समय तिलक ने कहा, "जूरी ने यद्यपि मेरे विरुद्ध राय प्रकट कर दी है, परन्तु मेरी अन्तरात्मा कहती है कि मैं निर्दोष हूँ। मानवीय शक्ति से दैवी शक्ति अधिक प्रवल है। वही मनुष्य मात्र तथा राष्ट्रों की भवितव्यता का संचालन करती है और कदाचित ईश्वरीय संकेत ऐसा ही है कि मेरे स्वतन्त्र रहने की अपेक्षा मेरे कारागार में रहने और कष्ट भोगने में ही मेरा अंगीकृत कार्य आगे वढ़े।" फैसले के अनुसार तिलक को ६ वर्ष का निर्वासन और एक हजार रुपमा जुर्माना हुआ। इस समय जनता में वहुत उत्तेजना फैली। तिलक जनता के हृदयहार वन चुके थे, जगह-जगह विरोध में दंगे हुए।

माण्डले जेल में लकड़ी का एक कटघरा वनाया गया। तिलक को उसी में रखा गया। कटघरा कभी-कभी वरसात में चूता भी था। तिलक निर्भय भाव से वहाँ रहे। जेल में उन्होंने चार-पाँच सौ ग्रन्थों का अध्ययन-चिन्तन किया। उसी के आधार पर उन्होंने अपना अमर ग्रन्थ 'गीता रहस्य' लिखा जिसमें निष्काम भाव से लोक संग्रह और लोक कल्याण का कार्य करने के मत का प्रवर्तन किया गया है।

आत्मोन्नति के निमित्त प्रयास करने के स्थान पर तिलक अपने को देशसेवा में लगाना अधिक उपयुक्त समझते थे। उन्होंने ऐसा करके दिखा भी दिया। एक वार उनके एक मित्र ने उनसे कहा कि उनकी प्रतिभा ऐतिहासिक अन्वेषन के काम में प्रयुक्त हो तो उससे विश्व का भला हो सकता है। इस पर तिलक ने जो मार्मिक उद्गार प्रकट किये वे उनके समग्र जीवन की गतिविधियों के परिचायक थे। उन्होंने कहा, "भारतमाता वाँझ नहीं है। स्वराज्य होने पर मुझ जैसे हजारों पंडित पैदा हो जाँयगे। आज तो देश की पुकार पर दौड़ पड़ने की जरूरत है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आज तो प्रत्येक भारतीय का यही कर्तव्य है कि वह अपनी बुद्धि, शक्ति और सर्वस्व स्वराज के लिए अपर्वण कर दे।" तिलक ने जो कहा था उसे करके दिखा दिया।

सन् १९०८ से १९१४ तक तिलक जेल में रहे। इस अवधि में परिस्थिति बदल चुकी थी और देश में काफी जागृति हो गई थी। नेताओं और कार्यकर्त्ताओं की संख्या में अपार वृद्धि हो चुकी थी। अब लोगों की आँखें खुल चुकी थीं। लोकमान्य तिलक के छूटने पर जनता में आनन्द छा गया और उसमें कुछ करने का उत्साह द्विगुणित हो गया। विश्व महायुद्ध का आरम्भ था। एक ओर तो लोकमान्य ने युवकों से सेना में भरती होने को कहा और दूसरी ओर होमरूल लीग की स्थापना की। १९१६ में उन्होंने भ्रमण करके देश की सुप्त शक्ति को जगाने का अभियान किया। अब उनके व्याख्यान प्रभावकारी और जोशीले होते थे। उन्होंने कहा, 'स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है, हम उसे लेकर रहेंगे।" यह वाक्य देश के स्वाभिमान का प्रतीक बन गया।

इस अवसर पर बेलगाँव में जो भाषण उन्होंने दिया उस पर उन्हें राजद्रोह के अभियोग में फँसाया गया। पूना के जिला मजिस्ट्रेट के यहाँ २०,२० हजार की दो जमानतें दाखिल करने का मुकदमा चलाया गया। यह स्वराज्य आन्दोलन को धराशायी करने का प्रयास था। हाईकोर्ट ने नीचे की अदालत का फैसला रद्द कर दिया और तिलक निर्दोष सिद्ध हुए। हाईकोर्ट ने कहा कि तिलक ने अपने भाषणों में स्वराज्य माँगा है और कहा है कि भारतीय शासन में भारतीयों का ही हाथ होगा। यह न तो कानून के प्रतिकूल है और न इसमें कोई राजद्रोह है। इस निर्णय से स्वराज्य आन्दोलन वैध सिद्ध हुआ और उसे बल मिला। अधिक से अधिक लोग उस आन्दोलन में सम्मिलित होने लगे। १९०६ में लखनऊ में कांग्रेस का अधिवेशन हुआ। उसमें दोनों दल एक हो गये। राष्ट्रीय दल मजबूत होकर आगे बढ़ने लगा।

सरवैलैनटाइन शिरोज नामी अंग्रेज ने Indian unrest शीर्षक एक पुस्तक प्रकाशित की। उसने तिलक को इस अशान्ति का मुख्य नेता बताया। शिरोज ने यह भी कहा कि तिलक, उनका दल और उनका आन्दोलन राजद्रोहात्मक और अत्याचारमूलक है। उसका उद्देश्य ब्रिटिश शासन को भारत से उखाड़ फेंकने का है। शिरोल के प्रचार से भारत के राष्ट्रीय दल के प्रति भ्रान्ति फैलने की आशंका थी। उसके निराकरण के लिए तिलक ने शिरोज पर मान-हानि का दावा किया। यह दावा इंगलैण्ड में दायर हुआ। जज ने इसमें इंगलैण्ड की प्रतिष्ठा को आँच आने की सम्भावना का ख्याल करके मुकदमे को खारिज कर दिया। मुकदमे से निवृत्त होकर तिलक ने इंगलैण्ड में अनेक व्याख्यान दिये और वे भारत के पक्ष में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वहाँ के जनमत को आकर्षित करने लगे। इनके प्रयासों से वहाँ का मजदूर दल भारत के स्वतन्त्रता आन्दोलन के प्रति सहानुभूति रखने लगा।

जब लोकमान्य तिलक इंगलैण्ड में ही थे उनकी साठवीं वर्षगाँठ भारत में मनाई गई और एक महिने से भी कम समय में उन्हें एक लाख की थैली भेंट करने की योजना बनाई गई। लोकमान्य ने इसको स्वीकार तो कर लिया, परन्तु तत्काल ही उसे होमरूल लीग को देने के लिए राष्ट्र को ही अर्पित कर दिया।

सतत कार्यों में लगे रहने और विश्राम न मिलने के कारण लोकमान्य का शरीर क्षीण होता जा रहा था। १९२० के जून में एक मुकदमे के सिलसिले में वे बम्बई आये। यहाँ पर उन्हें थकान से ज्वर हो गया। यह ज्वर कभी उतर जाता, लेकिन फिर चढ़ जाता था। वात व्याधि भी सताने लगी। कुछ ही दिनों में अचेतन अवस्था भी होने लगी और ऐसा प्रतीत होने लगा कि अन्त सन्निकट है। ३१ जुलाई, १९२० की रात के ०२ बजकर ४० मिनट पर राष्ट्र के इस महान कर्णधार ने इहलीला संवरण की। लाखों लोगों ने आँसू बहाये। पाँच लाख लोगों की भीड़ शवयात्रा में थी।

इस जाज्वल्यमान व्यक्तित्व की महिमा का वर्णन लेखनी की सामर्थ्य से बाहर है। एक ही स्थान पर मानवीय गुणों का ऐसा दिव्योपम समाहार अचिन्त्य है। ब्राह्मण के शरीर में क्षत्रिय तेज से समान्वित यह महान विभूति हिन्दुओं को ही नहीं अपितु समस्त मानव जाति की अखण्ड प्रेरणा का स्रोत बनी रहेगी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लोकमान्य तिलक-जीवन झाँकी

□ डॉ० राजेश्वर प्रसाद चतुर्वेदी, डी० लिट०
प्राचार्य ए० के० कॉलेज, शिकोहाबाद

जीवन परिचय—भारत का बच्चा-बच्चा जानता है कि श्री बाल गंगाधर तिलक ने ही "स्वराज्य हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है"—का नारा बुलन्द करके भारत में स्वतन्त्रता का मन्त्र फूंका था। श्री अरविन्द घोष ने लोकमान्य के विषय में ठीक ही लिखा है कि—"भारत की राजनीति में उनका स्थान स्वयंसिद्ध है। उनके बढ़ते हुए प्रभुत्व को देखकर शत्रु मन में काँपते थे और उनके बढ़ते हुए प्रभाव को वे अपने लिए अशुभ और अहितकर समझते थे।"

लोकमान्य तिलक उन दो-तीन राष्ट्र-निर्माताओं में हैं जिन्हें हम भारतवासी अपनी स्वतन्त्रता और राष्ट्रीय महत्त्वाकांक्षाओं के साकार अवतार रूप में देखते हैं। इनके रूप में हम देखते हैं अपने राष्ट्र के सामूहिक प्रयासों की झाँकी और करते हैं परमात्मा द्वारा प्रेषित अपने राष्ट्र नायक के दर्शन। तिलक का जीवन, तिलक का व्यक्तित्व, तिलक का कर्त्तृत्व, तिलक का कृतित्व—सबने मिलकर तिलक को तिलक बनाया। हम भारतवासी उन्हें आजतक भारतभाल के तिलक के रूप में ही स्वीकार करते हैं। तिलक के जीवन-काल में एक कवि ने लिखा था—

जीवन तन्त्री के तार तिलक
मृदु मुरली के झंकार तिलक
भारत नौका पतवार तिलक
उद्गार तिलक, अवतार तिलक।

लोकमान्य तिलक का जन्म २३ जुलाई, सन् १८५६ को कोंकण प्रांत में रत्नागिरि में हुआ था। आपकी माता का नाम पार्वती बाई और आपके पिता का नाम श्री गंगाधर रामचन्द्र तिलक था। आपका राशि का नाम बलवन्त राव था। महाराष्ट्र में प्रचलित प्रथा के अनुसार नाम के साथ पिता का नाम जोड़कर उनका पूरा नाम था बलवन्तराव गंगाधर तिलक। बचपन में घर वाले बलवन्त राव को 'बाल' कहकर पुकारने लगे और आगे चल कर यही नाम प्रचलित हुआ। इस प्रकार हमारे चरितनायक का नामकरण हुआ - बाल गंगाधर तिलक।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वाल गंगाधर तिलक कैसे तेजस्वी, यशस्वी एवं प्रतिभाशाली व्यक्ति थे, इनकी जन्मकुण्डली इसका स्वयं प्रमाण है—

५	शु. सू. ४	श. बु. ३	२
के ६	मं ७	१	रा. गु. च १२
८	९	१०	११

शके १७७८ आषाढ़ मासे कृष्ण पक्षे तिथौ ६ भौम वासरे घ० २१ प २५ उत्तरा भाद्रपक्ष नक्षत्रे घ० ४ प० ३३ सूर्योदयाल्लगंत घ. २ प० ५

वाल गंगाधर के पिता जी एक सामान्य अध्यापक थे। फलतः हमारे चरितनायक का जीवन मूलतः अध्ययन का जीवन था। सन् १८६१ में ये प्रथम वार पाठशाला में भर्ती हुए। इनको प्रारम्भिक शिक्षा देने वाले सौभाग्यशाली गुरुदेव का नाम श्री पिकाजो कृष्ण पटवर्द्धन था। वलवन्तराव एक परिश्रमी एवं मेधावी छात्र थे। इन्होंने कई वार डवल प्रमोशन प्राप्त किया। परन्तु इस कारण इनमें कुछ अभिमान आ गया और ये अपने अध्यापकों की अवज्ञा करने लगे। इस कारण इनको एक वार स्कूल भी छोड़ना पड़ा। सन् १८७२ में वाल ने पूना के सिटी हाई स्कूल से मैट्रिक की परीक्षा पास की। तदुपरांत आपने सन् १८७६ में डेकन कालेज पूना से बी. ए. की परीक्षा पास की। सन् १८७९ में वम्वई विश्वविद्यालय से एल. एल. बी (वकालत) की परीक्षा पास की।

यहाँ दो वातों का उल्लेख कर देना आवश्यक है। वाल के माता-पिता का स्वर्गवास वाल्यावस्था में ही हो गया—उस समय उनकी अवस्था क्रमशः १० और १५ वर्ष थी। दूसरी वात यह है कि प्रचलित प्रथा के अनुसार वाल का विवाह १५ वर्ष की ही अवस्था में हो गया था। इस समय चरित नायक हाई स्कूल के विद्यार्थी थे। आपकी पत्नी का नाम ताई वाई उर्फ सत्यभामा था।

लगभग एक वर्ष की वीमारी से संघर्ष करने के वाद ३१ जुलाई, सन् १९२० को रात के १२ वजकर ४० मिनट पर राष्ट्र का यह कर्णधार चिरनिद्रा में निमग्न हो गया।

अन्तिम क्षणों में वाल के एक मित्र ने गीता के श्रीकृष्ण के चित्र की ओर उनका ध्यान आकृष्ट करके पूछा था कि "यह क्या है?" थोड़ी देर तक चित्र की

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ओर टकटकी लगाए रहने के उपरांत उन्होंने कहा कि—"यह श्रीकृष्ण का चित्र है। इनके चरित्र का अनुकरण सबको करना चाहिए।"—यही मानो देश-वासियों के लिए उनका अंतिम संदेश था।

'लोकमान्य' की मृत्यु का समाचार पाकर समस्त देश शोक के सागर में निमग्न हो गया। स्वयं महात्मा गांधी ने अधीर होकर ये उद्गार प्रकट किए थे—"मेरा सबसे बड़ा आधार चला गया।"

सार्वजनिक जीवन—लोकमान्य का सार्वजनिक जीवन बहुमुखी था और उनके रोम-रोम में समाज-सेवा की भावना व्याप्त थी। तिलक ने शिक्षा-क्षेत्र के माध्यम से सार्वजनिक जीवन में प्रवेश किया। शिक्षा के क्षेत्र से वह पत्रकारिता के क्षेत्र में गये और उन्होंने 'मराठा' एवं 'केसरी' अखबार निकाले। पत्रकारिता के क्षेत्र से वह समाज-सेवा के क्षेत्र में आए और वहाँ से राजनीति के क्षेत्र में पहुँचे। कहने की आवश्यकता नहीं है कि दक्षिण शिक्षा समिति और फर्ग्यूसन कालेज, बम्बई की स्थापना उन्हीं के प्रयासों के फल थे।

अपने राष्ट्रीय विचारों की उन्मुक्त अभिव्यक्ति के कारण तिलक को तीन बार जेल-यात्रा करनी पड़ी थी। अंतिम यात्रा सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। यह जेल-यात्रा थी उनके ऊपर चलाए गए राजद्रोह के मुकदमे की परिणति।

मराठी पत्र 'काल' के सम्पादक पराँजपे के विरुद्ध राजद्रोह का मुकदमा चलाया गया। श्री तिलक उनकी सहायता करने के विचार से बम्बई गए। वहीं बम्बई में उनको गिरफ्तार कर लिया गया। यह २४ जून, सन् १९०८ की बात है। उनके लेखों 'देव दुर्दैव' तथा "ये उपाय टिकाऊ नहीं" को राजद्रोहात्मक घोषित कर दिया गया और तदनुसार इनको गिरफ्तार करके इनके ऊपर राजद्रोह का मुकदमा चलाया गया। फैसले के अनुसार तिलक को ६ वर्ष का देश-निर्वासन और एक हजार रुपया जुर्माने की सजा हुई। इनको पहले कुछ दिनों तक साबरमती जेल में और फिर माण्डले की जेल में रखा गया। पूरे छः वर्ष बाद सन् १९१४ में तिलक महाराज जेल से छूटकर आए।

यहाँ हम एक बात बता दें। श्री तिलक कांग्रेस के उग्रवादी यानी गर्मदल के नेता थे। उन्हीं दिनों सन् १९०५ में बंग-भंग आंदोलन चला था। बंग-भंग आन्दोलन हमारा प्रथम राष्ट्रीय आन्दोलन था और उसमें देश ने सर्वस्व बाजी पर लगा दिया था। उस आन्दोलन के तीन स्तम्भ थे—लाल, बाल, और पाल यानी लाला लाजपत राय, बाल गंगाधर तिलक और विपिन चन्द पाल। विदेशी के बहिष्कार की कहानी यहीं से आरम्भ होती है। तिलक के राजनीतिक जीवन की कहानी बहुत ही रोचक तथा प्रेरणाप्रद है। इस संदर्भ में हम केवल इतना ही कहना चाहते

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हैं कि राजनीति के जिस स्वरूप के द्वारा हम स्वतन्त्र हुए हैं, उसके प्रवर्त्तक स्वर्गीय लोकमान्य वाल गंगाधर तिलक जी ही थे।

कृतित्व—भारतीय संस्कृति एवं इतिहास के उद्धार के लिए श्री तिलक ने कई पुस्तकों का प्रणयन किया। इनमें तीन पुस्तकें विशेष प्रसिद्ध हैं—'ओरायन', 'आर्कटिक होम इन दी वेद्ज' तथा 'गीतारहस्य'। गीतारहस्य श्रीमद् भगवद्गीता पर अत्यन्त महत्त्वपूर्ण भाष्य है। इस पुस्तक ने तिलक को अमर कर दिया है। विद्वानों ने अपनी शक्ति और बुद्धि के अनुसार मुक्तकण्ठ से इसकी प्रशंसा की है। हम तो यहाँ तक कह सकते हैं कि गीता-रहस्य के कारण गीता के प्रचार-प्रसार को बहुत बल मिला है।

लोकमान्य क्यों ? लोकमान्य के व्यक्तित्व में ब्राह्मणत्व और क्षत्रियत्व का सुखद एवं अद्‌भुत समन्वय था। एक ओर उनमें जहाँ क्षत्रियोचित साहस एवं तेज था, वहाँ दूसरी ओर उनमें हमें ब्राह्मणोचित त्याग, तपस्या, क्षमा, विद्या-व्यसन आदि की सात्त्विकी वृत्तियों के दर्शन होते हैं।

तिलक के जीवन-व्यवहार एवं जीवन-दर्शन में आदर्श और यथार्थ का सुन्दर समन्वय था। आदर्श और यथार्थ का समन्वय ही तिलक के जीवन का कर्म-सौन्दर्य था। महात्मा गांधी अपेक्षाकृत अधिक आदर्शवादी थे। बस, गांधी जी के साथ तिलक के मतभेद का मूल कारण यही था।

श्री तिलक एक उद्‌भट विद्वान, व्यावहारिक राजनीतिज्ञ, निस्पृह कर्मयोगी और देशहित की चिन्ता में सदैव निमग्न रहने वाले महान देश-भक्त नेता थे। उनकी समानता केवल उन्हीं के साथ की जा सकती है। नवजीवन में प्रकाशित गांधी जी का यह वक्तव्य द्रष्टव्य है—"लोकमान्य तो एक ही थे। लोगों ने तिलक महाराज को जो पदवी, जो उच्च आसन दिया था, वह राजाओं के दिए खिताबों से लाख गुना कीमती था। × × × लोकमान्य तिलक मरकर भी हमें जीवन का मन्त्र सिखा गए हैं।"

वम्बई में ऐतिहासिक गवेषणा करने वालों की सभा में श्री तिलक ने दो विषयों—'वाल्डियन संस्कृति' तथा 'भारतीय एवं ईरानी सभ्यता में साम्य' पर बहुत ही प्रभावशाली व्याख्यान दिए थे। उनसे प्रभावित होकर सभा के अध्यक्ष ने श्री तिलक से कुछ इस प्रकार की बात कही थी कि "आप जैसे प्रतिभाशाली व्यक्ति को ऐतिहासिक अन्वेषण करके अपने आपको अमर बनाना चाहिए—आप राजनीति की दल-दल में क्यों आ पड़े हैं ?" इस पर श्री तिलक का चेहरा तमतमा उठा था। उनका ओजपूर्ण उत्तर था कि "भारतमाता बाँझ नहीं हैं। स्वराज्य हो जाने पर मुझ जैसे हजारों पंडित पैदा हो जाएंगे। आज प्रत्येक भारतीय का यही कर्त्तव्य है कि वह अपनी बुद्धि, शक्ति और सर्वस्व स्वराज्य के लिए अर्पण कर दे।"

पूज्य महात्मा गांधी के शब्दों में "उन्होंने निस्संदेह स्वराज्य की अवधि कई वर्ष कम कर दी थी।" इसी कारण वह लोकमान्य थे और हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तिलक की परम्परा

□ डा० युगेश्वर

लेनिन के बारे में कहा जाता है कि वे अनेक आयामों के व्यक्ति थे। एक साथ ही वे विचारक, विद्वान, लेखक, राजनीतिज्ञ; कुटनीतिज्ञ, प्रशासक, रूढ़िभंजक और रचनात्मक राजपुरुष थे। उनमें ज्ञान और कर्म का अद्भूत समन्वय था।* तिलक में ये सारी विशेषताएँ मौजूद थीं। हाँ, वे कूटनीतिज्ञ और प्रशासक थे इसकी परख नहीं हो सकी। क्योंकि लेनिन के समान उन्हें सत्ता में आने का अवसर नहीं मिला। किंतु लेनिन से कुछ बातें उनमें अतरिक्त थीं। ये हैं—सेवा की भावना। वे समाज सुधारक के साथ ही उच्चकोटि के लोक सेवक थे। दूसरी बात यह कि लेनिन तिलक जैसे शास्त्राध्येता नहीं थे। तिलक का गीता-रहस्य उच्चकोटि के भाष्यकारों की परम्परा में आता है। गीता-रहस्य शंकराचार्य की भाष्य-परम्परा में अध्ययन की एक महत्त्वपूर्ण कड़ी है। लेनिन से एक और बात मिलती है। सबकुछ के बावजूद तिलक साधन की पवित्रता में पूर्ण विश्वास नहीं करते थे। इस संम्बन्ध में मतभेद हैं किन्तु एक बात स्पष्ट है कि तिलक गांधी जैसी साधन-पवित्रता नहीं मानते थे। गाँधीजी साधन को भी साध्य जैसा पवित्र मानते हैं। उनके विचारों में अपवित्रता के लिए कोई स्थान नहीं है। फिर भी तिलक को कभी हिंसा,जाल या फरेब का सहारा नहीं लेना-पड़ा जबकि लेनिन ने हिंसा का खुलकर प्रयोग किया। लेनिन वर्ग मानव को साथ लेकर चलना चाहते थे। केवल सर्वहारा। सर्वहारा भी अपूर्ण है। उसे प्रशिक्षित बौद्धिकों के निर्देश में चलना होगा। तिलक संपूर्ण मानवता का कल्याण चाहते थे। वे संपूर्ण शोपण और विशिष्टता के विरोधी थे। सत्ता में नहीं आने के कारण हम तिलक की बहुत-सी खूवियों से अपरिचित रह गये। लेनिन के समान तिलक भारत के एक मात्र नेता नहीं बन सके। यह स्थान आगे चलकर गाँधी को मिला, किंतु अपने जीवनकाल में तिलक का देश की राजनीति पर एकमात्र नेता जैसा प्रभाव था।

तिलक भारती मेधा और सामाजिक स्थिति के उस युग के सबसे महत्त्वपूर्ण व्यक्ति थे। उनका व्यक्तित्व विराट था। उनमें जबर्दस्त दूरदर्शिता थी। उन्होंने भारतीय राजनीति में ज्ञान और कर्म का गहरा समन्वय किया था। उनके बाद शास्त्र और राजनीति का संबंध टूट-सा गया। आज तो वह बिलकुल टूट गया है। आज

* लेनिन थ्रू इण्डियन आइज—ले० के० पी० एस० मेनन।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

का राजनीतिज्ञ शास्त्रज्ञ नहीं है। भारतीय राजनीति में मुख्यतः तीन प्रकार के लोग रहे हैं। वकील, अध्यापक और पत्रकार। तिलक वकालत पास करके भी वकील कभी नहीं बने। राजनीति में मुख्य प्रभाव वकीलों का था। वकील बुनियादी तौर पर अंग्रेजी न्यायालयों के लिए तैयार किए जाते थे। अतः उन्होंने देश में एक खास ढंग की बौद्धिकता का विकाश किया। तिलक की बौद्धिक परम्परा आगे चलकर रुक गई। आज देश गहराई तक जाने के लिए तैयार नहीं है। तिलक ने भारतीय स्वतंत्रता की घोषणा की। 'स्वतंत्रता हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है।' यहाँ हमारा का अर्थ भारतवासी और मनुष्य मात्र दोनों से है। तिलक की इस घोषणा के पीछे उदार, आध्यात्मिक और जाग्रत भारत का स्वर था। इस मंत्र का देश पर व्यापक प्रभाव पड़ा। शास्त्र से जुड़ने के कारण तिलक समस्याओं को शास्त्र के भीतर भी देखते थे। इस स्थान पर गाँधी जी समस्याओं का मानवी और सहज हल पर अधिक जोर देने लगे। तिलक ने शायद कहीं पुराने शास्त्रों को अस्वीकार किया हो। गाँधी ने स्पष्ट घोषणा की कि वे अमानवीय शास्त्रों को शास्त्र मानने के लिए तैयार नहीं हैं। चाहे वे भगवान के मुँह से ही क्यों नहीं कहे गए हों। गाँधी तिलक की अपेक्षा आधुनिकता के अधिक नजदीक थे। यद्यपि मानवी करुणा में तो गाँधी इस युग के अकेले व्यक्ति थे। अहिंसा और सत्याग्रह जैसी चीजें तिलक के लिए हथियार थीं। गाँधी के लिए जीवन प्रणाली; जीवन। तिलक अधिकतर बातों में गाँधी के अगुआ थे। उदाहरण के लिए तिलक को स्वदेशी में पूर्ण विश्वास था। हिन्दू मुस्लिम एकता में विश्वास के बावजूद तिलक कुछ समस्याओं को गाँधी जैसी दृष्टि से नहीं देख सके। गाँधी ने पूरी सामाजिक राजनीतिक और आर्थिक व्यवस्था की नींव रखी। तिलक ने स्वतंत्रता की बात की थी। गाँधी आत्मनिर्भर स्वतंत्र मानव के लिए परेशान थे।

तिलक नैतिक समाज बनाना चाहते थे। जिसका आधार भारतीय अध्यात्म हो। गाँधी की सम्पूर्ण रचना का आधार आध्यात्मिक है। इन दोनों व्यक्तियों की राजनीति का सांस्कृतिक और आध्यात्मिक पक्ष प्रबल था। नेहरु ने राजनीति से अध्यात्म को बाहर कर दिया। शायद इसका कारण पश्चिमी भूतवाद है। गाँधी के बाद राजनीतिक स्तर पर लोहिया ने अध्यात्म का मेल करना चाहा। किंतु यह काम हो न सका। शायद वे इसके उपयुक्त पात्र नहीं थे। शायद देश पर पश्चिमी भूत का प्रभाव अधिक पड़ गया था। आगे कोशिशें जारी रहेगीं। किंतु उनके लिए जैसी तैयारी चाहिए उसका अभाव है। आज की राजनीति में तो सामान्य नैतिक मूल्य भी खोजने पर शायद ही मिलें।

आज राजनीति बिल्कुल बदली है। तिलक के गुणों में एक गुण राजनीतिक होने का था। आज के राजनीतिज्ञ केवल एक गुण रखते हैं। वे मात्र राजनीति के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विशेषज्ञ हैं। यहाँ तक कि कूटनीति भी उन्होंने दूसरों के मत्थे डाल रखी है। (विशेषकर विदेशों में) कूटनीतिज्ञता उनके अफसर देखते हैं। राजनीतिज्ञ मात्र नीतियाँ बनाते हैं। तिलक और गांधी का युग प्रायः विशेषीकरणवाला नहीं था। न तो राजनीति कमाने का धंधा थी। उस समय राजनीति में खोना पड़ता था। कमाई केवल मनःतोष थी। लोक-सेवा थी। आगे चलकर अरविंद जैसे लोग शुद्ध आध्यात्मिक और योगी हो गए। शेष शुद्ध राजनीतिज्ञ। धर्म का काम समाप्त हो गया। सामाजिक सुधारों को छोड़ दिया गया। शिक्षा मात्र विश्वविद्यालयों के अधीन कर दी गई। यों कि तिलक और गांधी के बाद व्यक्तित्व का विखंडन हो गया।

तिलक की परंपरा कहती है कि राष्ट्रनेता को बहु आयामी होना चाहिए। हम इन नेताओं को भूल रहे हैं। एक आयामी राजनीतिज्ञ को तिलक बेमानी लगें तो आश्चर्य नहीं। तिलक का गीता, गणित और ज्योतिष में गहरा प्रवेश था। शायद ये तीनों राजनीति के प्रत्यक्ष अंग नहीं हैं। आज की राजनीति इनका उपयोग विशेषज्ञों द्वारा करती है। खुद का ज्ञान सीमित रखने में ही आनंद अनुभव करती है। फलतः आज की राजनीति में न शास्त्राध्ययन है, न अंतःप्रज्ञा। अंत में निराला की कविता याद आती है—

'कैसी शिक्षा? कैसे विराम पर आए।'

तिलक की शुरूआत किस रूप में बदल गयी?

—काशी विद्यापीठ, वाराणसी

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लोकमान्य तिलक कृतित्व और जीवन-दर्शन

□ आचार्य डा० विश्वनाथ प्रसाद वर्मा
अध्यक्ष, राजनीति-विज्ञान-विभाग,
पटना विश्वविद्यालय, पटना।

अपने चालीस वर्ष के सार्वजनिक जीवन में (१८८०-१९२०) लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने अपनी शक्तियों का विविध प्रकार के कार्यों के लिए प्रयोग किया।* एक शिक्षाशास्त्री के रूप में उन्होंने पूना न्यू इंगलिश स्कूल, डेकन एजूकेशन सोसाइटी तथा फर्ग्युशन कॉलेज की स्थापना में महत्त्वपूर्ण योग दिया। स्वदेशी आन्दोलन के दिनों में समर्थ विद्यालय स्थापित करने में उनका प्रमुख हाथ था। पूना के मद्यनिषेध सम्बन्धी कार्यों के वे महान समर्थक थे। १८९४ में जब सरकार ने वी० एस० वापट पर आपराधिक मुकदमा चलाकर उन्हें दण्ड देने की धमकी दी, तो तिलक उनकी सहायता के लिए दौड़ पड़े। १८८९ में जब आर्थर क्राफर्ड के विरुद्ध मामलतदारों का पक्ष लेने वाला कोई नहीं था, उस समय वे उनकी रक्षा के लिए पहुँच गये। यदि कहीं आर्थिक अन्याय होता दिखायी देता तो वे तुरन्त उसके विरुद्ध संघर्ष करने के लिए तैयार हो जाते थे। १८९६ के दुर्भिक्ष के दिनों में उन्होंने जनता को अपने अधिकारों के विषय में जाग्रत करने के लिए महत्त्वपूर्ण काम किया। उन्होंने उत्कट उत्साह के साथ स्वदेशी का समर्थन किया। कांग्रेस के मंच से उन्होंने स्थायी प्रबन्ध, वित्तीय विकेन्द्रीकरण आदि अनेक आर्थिक विषयों पर प्रस्ताव प्रस्तुत किये। एक राजनीतिक नेता के रूप में उन्होंने कांग्रेस के कार्यकलाप में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की। अपने "केसरी" तथा "मराठा" नामक दो पत्रों तथा शिवाजी और गणपति उत्सवों के द्वारा उन्होंने जनता में देशभक्ति की भावना

---

*. बाल गंगाधर तिलक का जन्म २३ जुलाई, १८५६ को हुआ था और १ अगस्त, १९२० को उनका देहान्त हुआ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

फूँक दी तथा उसमें अपने राजनीतिक अधिकारों के लिए संघर्ष करने की प्रवृत्ति उत्पन्न की। १९१६ में स्थापित उनकी होम रूल लीग ने देश को स्वराज के लि तैयार किया। अपनी इंगलैंड की यात्रा के दौरान (१९१८-१९१९) उन्होंने भार के राष्ट्रवादी आन्दोलन तथा ब्रिटिश लेबर पार्टी के बीच मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध स्थापि करने में महत्त्वपूर्ण योग दिया। इस प्रकार हम देखते हैं कि तिलक का जीवन विवि प्रकार के प्रगतिशील कार्यों की कहानी है। वे शक्तिशाली व्यक्ति तथा नेता थे औ जिस किसी काम में उन्होंने अपनी शक्ति लगायी उस पर अपना गम्भीर प्रभा छोड़ा। वे अपने सहकर्मियों की तुलना में महानता के कहीं अधिक ऊँचे शिखर प पहुँच गये थे। महाराष्ट्र के लोकजीवन में और १९१५ के उपरान्त सम्पूर्ण भार में उनका स्थान प्रमुख था। उनकी मेधा बड़ी कुशाग्र थी। वे सरकार की योजना तथा कुटिल चालों को भलीभाँति समझते थे और उनका उन्होंने बिना हिचकिचा के भण्डाफोड़ किया। वे ऋग्वेद, वेदान्त, महाभारत, गीता तथा कांट और ग्रीन दर्शन के प्रकाण्ड पण्डित थे। भारतीय इतिहास तथा अर्थशास्त्र का भी उन्हें अच्छ ज्ञान था। किन्तु जीवन में उनकी सबसे बड़ी पूँजी उनका नैतिक चरित्र था उनकी वाणी में झंकृत कर देनेवाला ओज और पटुता नहीं थी, किन्तु अन्य नेता की तुलना में उनका व्यक्तित्व इतना ऊँचा था कि उनके सामने वे सब बौने लग थे। उन्हें अपने पिता से वैयक्तिक गरिमा तथा आत्म-सम्मान की उत्कट भाव उत्तराधिकार में मिली थी। उनके मन में अपनी तथा देश की स्वतंत्रता की बलव उत्कण्ठा थी। भय उन्हें छू तक नहीं गया था। विपदाएँ उन्हें आतंकित नहीं सकती थीं, बल्कि विषम परिस्थितियों में उनका शूरत्व और भी अधिक देदीप्यम होने लगता था। भयंकर और विनाशकारी विपदाओं के मुकाबले में दुर्दमनी साहस तथा दुर्धर्ष आशावाद उनके चरित्र का सार था। सतत शारीरिक त मानसिक परिश्रम, अनेक कष्टों तथा दीर्घकालीन कारावास के कारण उनका शर दुर्बल हो गया था; किन्तु उस क्षीण शरीर में वज्रवत् कठोर आत्मा विराजमान जो किसी सांसारिक शक्ति के समक्ष झुक नहीं सकती थी। उन्हें आत्मा के अमर में दृढ़ विश्वास था। कभी कभी कहा जाता है कि उनके स्वभाव में सत्तावाद त दुराग्रह का पुट था। किन्तु उनके व्यवहार में जो यदाकदा सत्तावादी झलक दिखा देती थी वह वास्तव में उनके अपने सिद्धान्तों में अडिग विश्वास का प्रतीक थ उनके चरित्र में हमें जो दृढ़ता, आत्मत्याग की उच्च भावना, पैगम्बर का सा उत्स और श्रेष्ठ राजनीतिक उल्लास देखने को मिलता है, उसका मूल स्रोत उनकी नै तथा आध्यात्मिक विकास के नियमों में अडिग आस्था थी। उनमें उद्देश्य की दृढ़ इच्छा-शक्ति की अनमनीयता, चट्टान के सदृश दृढ़ संकल्प तथा कष्टों को अंगीक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

करने की आडम्बरहीन तत्परता आदि जो अनेक गुण थे, उन सबके मूल में उनकी जीवन के ध्येय के प्रति अडिग भक्ति थी। अपने जीवन-काल में जिन विविध संघर्षों और विवादों में उन्हें उलझना पड़ा, उन सबमें उनका सबसे बड़ा सहायक उनका अपना ही निर्दोष तथा निष्कलंक वैयक्तिक चरित्र था। उन्होंने अपने जीवन के चालीस वर्ष बिना किसी निजी लाभ की आकांक्षा के देश की सेवा में अर्पित कर दिये। एक उत्साही सैनिक की भाँति उन्होंने जीवन्त तथा शक्तिशाली भारतीय राष्ट्रीयवाद की नींव का निर्माण करने के लिए सतत प्रयत्न किया। संघर्ष के दौरान जब भारी और विपत्तियों का प्रकोप हुआ तो कभी-कभी ऐसा लगा कि दूसरे लोग हथियार डालकर युद्ध-क्षेत्र से भाग खड़े हुए या धराशायी हो गये, किन्तु तिलक महात्मा युधिष्ठिर की भाँति अकेले ही स्वाधीनता के पथ पर आगे बढ़ते गये। उन्हें जीवन में इतने अधिक कष्टों, विपत्तियों और अन्यायों का सामना करना पड़ा था कि यदि उनके स्वभाव में कटुता और निराशा आ जाती तो आश्चर्य की बात न होती। सरकार ने प्रतिशोध की भावना से उन्हें अन्यायपूर्ण तथा बर्बर दण्ड दिये। उन्हें अनेक भारी व्यक्तिगत दुःख भोगने पड़े और स्वजनों का वियोग सहना पड़ा। किन्तु इस सबके बावजूद उन्हें कभी सार्वजनिक जीवन से उपराम नहीं हुआ, और न वे कभी निराशावाद से अभिभूत होकर बौद्धिक अन्तर्मुखी ही बने। प्राचीन युग के महान ऋषियों की भाँति उन्होंने सबकुछ आश्चर्यजनक अविचलता के साथ सहन कर लिया। कभी-कभी कहा जाता है कि तिलक बड़े ही कठोर थे। इस अर्थ में वे सचमुच कठोर थे कि अपने सिद्धान्तों के सम्बन्ध में वे कभी किसी से समझौता करने के लिए तैयार नहीं थे. किन्तु उनका हृदय बहुत ही कोमल तथा दयालु था।

महाराष्ट्र तिलक का कार्यक्षेत्र था।* यद्यपि आधुनिक महाराष्ट्र में देशभक्ति का बीज चिपलूणकर ने ही बो दिया था, किन्तु उस प्रदेश में शक्तिशाली तथा शूरत्वप्रधान राष्ट्रवाद के संस्थापक वास्तव में तिलक ही थे। "केसरी" के माध्यम से उन्होंने लगभग चालीस वर्ष तक प्राकृतिक अधिकारों, राजनीतिक स्वतंत्रता और न्याय का सन्देश घर-घर पहुँचाया। उन्होंने महाराष्ट्र की जनता को संगठित और सामूहिक स्वावलम्बन का मूल्य समझाया। १८९७ में प्लेग की महामारी के दौरान तिलक ने अपने जीवन को जोखिम में डालकर पूना के लोगों की सेवा की। नगर में उनकी उपस्थिति से ही निवासियों को ऐसी सान्त्वना मिलती थी मानो कोई देवदूत उनकी सहायता के लिए आ गया हो। गणपति तथा शिवाजी उत्सवों ने

* तिलक ७ अगस्त १८९७ तक बम्बई विधान-परिषद के सदस्य रहे थे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महाराष्ट्र की जनता में एक नवीन प्रकार की देशभक्ति की भावना जाग्रत की, उनमें नवजीवन का संचार किया और अपने राजनीतिक अधिकारों के संघर्ष की क्षमता उत्पन्न की। शिवाजी का राजतंत्र स्वराज कहलाता था। तिलक ने उसी स्वराज्य की भावना को पुनर्जीवित किया। महाराष्ट्र के इतिहास में तिलक एक प्रचण्ड शक्ति थे, स्वराज्य के संग्राम में वे अभेद्य चट्टान के सदृश थे। "केसरी" का महाराष्ट्र की राजनीति पर तीस वर्षों से भी अधिक तक आधिपत्य रहा। महाराष्ट्र की जनता तिलक के मन्तव्य तथा उनके सन्देश को भलीभांति समझती थी। अनेक लोगों के लिए तो उनका वचन सर्वोच्च कानून था। महाराष्ट्र के निवासी तिलक को एक अजेय योद्धा तथा भारत में ब्रिटिश शासन का दुर्धर्ष शत्रु मानते थे। १८८२ में तिलक को कोल्हापुर मानहानि के मुकदमे में और १८९७-९८ में उन पर लगाये गये राजद्रोह के प्रथम आरोप में कारावास का दण्ड दिया गया। १९०८ से १९१४ तक छह वर्ष के लिए उन्हें मांडले की जेल में रखा गया। इस सबने उन्हें जनता का प्रेमपात्र बना दिया था। तिलक को महाराष्ट्र के इतिहास में श्रेष्ठतम अमर विभूति के रूप में स्मरण किया जायगा।

प्रारम्भ में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में तिलक ने एक आन्दोलनकारी का काम किया। वे चाहते थे कि कांग्रेस की जड़ें जनता के जीवन में व्याप्त हों। १९०५ से वे नये दल के माने हुए नेता बन गये। बंगाल तथा महाराष्ट्र में राजनीति के नये सम्प्रदाय की रचना उनकी महत्त्वपूर्ण उपलब्धि थी। जब अन्य नेता ब्रिटेन की सहानुभूति और समर्थन की याचना कर रहे थे, उस समय तिलक ने स्वावलम्बन और स्वसहायता का पाठ पढ़ाया। उन्होंने कांग्रेस में अतिवादी राष्ट्रवाद की भावनाओं को प्रविष्ट किया। उस समय तक कांग्रेस मुख्यतः मध्य वर्ग का संगठन थी। तिलक ने निम्न मध्य वर्ग को और कुछ हद तक साधारण जनता को भी कांग्रेस में लाने का प्रयत्न किया। १९१६ से १९२० तक उन्होंने होम रूल लीग का प्रचार करके कांग्रेस के कार्य को आगे बढ़ाया। अप्रैल १९२० में उन्होंने लोकतंत्रीय दल की स्थापना की। इस दल के द्वारा वे कांग्रेस में नियमित रूप से चुनाव-प्रचार की पद्धति को समाविष्ट करना चाहते थे। १९१७ में २७ नवम्बर के दिन उन्होंने दिल्ली में मोटेग्यू से भेंट की। १९१८ में वे सर्वसम्मति से कांग्रेस के अध्यक्ष चुन लिये गये। किन्तु उन दिनों वे वेलेंटाइन शिरोल* के साथ मुकदमे में उलझे हुए थे,

---

* तिलक वेलेंटाइन शिरोल के विरुद्ध मानहानि का मुकदमा हार गये थे। शिरोल ने अपनी पुस्तक The Indian Unrest में तिलक को बदनाम करने का प्रयत्न किया था।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

और सिलसिले में उन्हें इंगलैंड जाना था। अतः वे अध्यक्ष पद को स्वीकार न कर सके। १९१६ की लखनऊ कांग्रेस से १९१९ की अमृतसर कांग्रेस तक वे कांग्रेस के महानतम नेता थे। सभी लोग इस आशा में थे कि वे विशेष कलकत्ता कांग्रेस के जो सितम्बर १९२० में होने वाली थी, अध्यक्ष पद पर आसीन होंगे, किन्तु इसी बीच अपरिपक्वावस्था में वे इस संसार से चल बसे। तिलक ने सचमुच कांग्रेस का रूपान्तरण कर दिया, और उसे एक सुदृढ़ नौकरशाही विरोधी मोर्चे में परिवर्तित कर दिया।

तिलक का स्थान भारतीय राष्ट्र के महानतम निर्माताओं में है। इस रूप में उन्होंने अमर कीर्ति प्राप्त की है। १८९६-९७ में ही वे स्वराज्य की बात करने लगे थे, और १९०७ में ही उन्होंने होम रूल का उल्लेख किया था। वे हिन्दी को भारत की राष्ट्रभाषा मानते थे। कांग्रेस लोकतंत्रीय दल के घोषणा-पत्र में उन्होंने रेलमार्गों के राष्ट्रीयकरण के सिद्धान्त को स्वीकार किया, और राजनीति को धर्मनिरपेक्षता के आधार पर खड़ा करने के आदर्श को मान्यता दी। उन्होंने भारतीय श्रमिक आन्दोलन के राजनीतिक महत्त्व को स्वीकार करके बुद्धिमानी तथा दूरदर्शिता का परिचय दिया। उन्होंने जनता को स्वाधीनता की भावना से उत्प्रेरित किया और उसे अपनी शक्ति को पहचानने के लिए ललकारा। वे राष्ट्र को स्वाधीन जीवन की आकांक्षा के मूर्तरूप थे। उनके बाद स्वराज्य के आदर्श को साक्षात्कृत करना थोड़े-से समय की बात थी। जब अधिकतर लोग मौन थे, बल्कि विदेशी शासन की नियामतों की प्रशंसा कर रहे थे, उस समय तिलक ने एक पैगम्बर के रूप में देश को राष्ट्रीय भवितव्यता का सन्देश सुनाया। उन्होंने जनता को जगाया और उसने उन्हें अपना उद्धारक और अपना तारनहार समझा। यही कारण था कि उनके जीवन के अन्तिम दिनों में महाराष्ट्र के लोग तो उन्हें लगभग देवता समझकर पूजने लगे थे। राष्ट्र की सेवा के लिए उन्होंने अपनी कठोर उद्देश्यपरायणता तथा दृढ़ संकल्प को जनता को जगाने तथा उसे राष्ट्रीयता के साँचे में ढालने के काम में लगा दिया। इस कार्य में उन्हें अपमान तथा बम्बई सरकार द्वारा दी गयी कारागार की यातनाओं को सहन करना पड़ा। अपने चरित्र-बल के कारण वे प्लासी के युद्ध के बाद भारत में ब्रिटिश शासन के सर्वाधिक कृतसंकल्प शत्रु सिद्ध हुए। वे केवल एक आन्दोलनकारी ही नहीं थे, वे एक राजमर्मज्ञ भी थे, और उनके जीवन का सबसे बड़ा काम यह था कि उन्होंने शक्तिशाली भारतीय राष्ट्र की नींव का निर्माण किया। तिलक एक महान राजनीतिज्ञ भी थे, व्यापक, उत्साहपूर्ण, शुद्ध तथा उत्कृष्ट कोटि की देशभक्ति उनके चरित्र का मुख्य तत्व थी। भारतवासियों में देशभक्ति की आत्मचेतना जाग्रत करना तिलक के जीवन का मुख्य ध्येय था। किन्तु वे केवल आक्रामक राष्ट्रवाद के सन्देश-वाहक नहीं थे। वे एक महान नेता भी थे। उन्होंने अपने विचारों को ठोस कार्य के रूप में साक्षात्कृत करने का भी प्रयत्न किया। इसलिए केवल एक राजनीतिक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बुद्धिवादी नहीं बने रहे, बल्कि वे उच्चकोटि के व्यवहारकुशल राजमर्मज्ञ भी राजमर्मज्ञ के रूप में वे व्यवहार कुशल, दूरदर्शी तथा बुद्धिमान थे। राजनीतिक की वास्तविकता की उन्हें अच्छी परख थी। दल के सभी सदस्यों के लिए निरपेक्ष शर्त थी कि बहुसंख्यकों के निर्णय का दृढ़ता के साथ पालन किया जा इस प्रकार वे एक महान लोकतंत्रवादी थे। वक्ता तथा लेखक के रूप में तिलक सफलता मनमोहक शब्दावली के संवेगात्मक प्रभाव और भाषा की तड़क-भड़क आकर्षण पर निर्भर नहीं थी। वे सीधी-सादी, स्पष्ट, नपी-तुली तथा तर्कपूर्ण का प्रयोग करते थे और यही उनकी सफलता का रहस्य था। तिलक के आलोचकों ने उन्हें जनोत्तेजक (उत्तेजक भाषणों द्वारा जनता की कुत्सित भावना को उभाड़ने वाला) कहा है। किन्तु जनोत्तेजक में संवेगात्मक तथा आलंका भाषा द्वारा प्रभाव डालने की जो प्रवृत्ति होती है उससे तिलक नितान्त अछूते उनके भाषण तथा रचनाएँ कठोरत: तर्कपूर्ण हैं, और वे इस बात की द्योतक कि उन्हें गणित की जो शिक्षा मिली थी उसका उन पर गहरा प्रभाव था। ति ने कभी कुत्सित भावनाओं को उभाड़ने का प्रयत्न नहीं किया, वे सदैव आवेश कठोर तथ्यों का सहारा लिया करते थे। उनके हृदय में जनता के लिए सच्चा था, और इसलिए वे हर व्यक्ति से हर समय मिलने के लिए तैयार रहते थे। स्पष्ट है कि वे जनोत्तेजक नहीं थे। वे लोकतंत्रवादियों के सिरमौर थे और उ अपने देशवासियों से प्रेम किया और उन्हें राजनीतिक स्वतंत्रता का मूल्य समझा उनकी राजनीतिक कल्पना स्पष्ट थी और उसे साक्षात्कृत करने के लिए उ अविचल भाव से कार्य किया, इसीलिए वे आंग्ल-भारतीय नौकरशाही के लिए बड़ा खतरा बन गये थे। नेता के रूप में उनमें विलक्षण वैयक्तिक आकर्षण था, जि उन्हें लगभग चमत्कारी पुरुष बना दिया था। वर्षों तक निरन्तर परिश्रम करते त मातृभूमि के लिए घोर कष्ट सहने के कारण उनका व्यक्तित्व एक विशेष प्रकार गम्भीरता और ओज से देदीप्यमान होने लगा था। इसलिए भारतीय युवकों के में उनके लिए गहरा सम्मान तथा प्रशंसा की भावना थी। उनके व्यापक तथा अ पाण्डित्य ने उनके वैयक्तिक आकर्षण को और भी अधिक गरिमा प्रदान कर दी उनमें प्रबल नैतिक चेतना थी। अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए उन्होंने कभी अनुचित उपायों के प्रयोग की अनुमति नहीं दी। १९१८ में उन्होंने बम्बई में कांग्रेस के विशेष अधिवेशन का अध्यक्ष होना अस्वीकार कर दिया। इस प्र तिलक अनेक दृष्टि से एक अद्भुत विभूति हैं। उनकी स्मृति अनेक पीढ़ियों भारतवासियों को तथा विश्व भर के स्वतंत्रता प्रेमियों को अनुप्राणित करती रहे स्वराज्य के महासेनानी के रूप में उन्होंने देश को यह मंत्र दिया : "स्व भारतवासियों का जन्मसिद्ध अधिकार है।" भारत में राजनीतिक चेतना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रने तथा उसकी मुक्ति के कार्य में तिलक का योगदान बहुत भारी है। अपने सतत चार तथा कार्यों के द्वारा उन्होंने देश में प्रचण्ड असन्तोष की ज्वाला प्रज्वलित कर , और शक्तिशाली साम्राज्यवादी नौकरशाही के दुर्ग के विरुद्ध संघर्ष में वे सचमुच मालय सिद्ध हुए। लोकमान्य तिलक और महात्मा गान्धी आधुनिक भारत की दो हानतम राजनीतिक विभूतियाँ हुई हैं और जनता उन दोनों को ही पूजती है। न्तु यदि गान्धी मुझे ईसा, ताल्सताय, थूरो, रामकृष्ण तथा भारतीय इतिहास के न्य सन्तों का स्मरण दिलाते हैं, तो तिलक का नाम सुनकर मुझे मूसा, लूथर, ताप, शिवाजी, दयानन्द और विवेकानन्द का स्मरण हो आता है।

एक प्रकाण्ड पण्डित तथा मराठी साहित्य की विभूति के रूप में भी तिलक कीर्ति अमर है। उन्होंने मराठी में एक ओजपूर्ण तथा सशक्त गद्यशैली का निर्माण या। उनकी कुछ महत्त्वपूर्ण साहित्यिक रचनाएँ "केसरी" के अंकों में प्रकाशित ईं। स्पेंसर, महाभारत तथा शिवाजी की जन्मतिथि पर उनके निबन्धों का आज महत्त्व है। भारत-विद्या-विशारद के रूप में उन्होंने तीन प्रसिद्ध ग्रन्थों का प्रणयन या : "द ओरायन", "द आर्कटिक होम इन द वेदज्" और "वैदिक क्रोनोलॉजी ड वेदांग ज्योतिष"। जबकि पाश्चात्य भारत-विशारद वेदों की तिथि ईसवी पूर्व तीय सहस्राब्दी में निश्चित कर रहे थे, उस समय तिलक ने एक नया मत प्रतिपादित या। ज्योतिष सम्बन्धी जानकारी के आधार पर उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि ों के कुछ मंत्र ४५०० ई० पू० के अथवा उससे भी पुराने हैं। अपने अनुसंधान लिए कुंजी उन्हें गीता के इस श्लोक में मिली : "मासानां मार्गशीर्षोऽहमृतूनां सुमाकरः।" (महीनों में मैं मार्गशीर्ष और ऋतुओं में वसन्त हूँ।) तिलक और बटने ही ऐसे भारत-विद्या-विशारद हुए हैं जिन्होंने वेदों की ऐतिहासिक प्राचीनता निर्णय करने के लिए ज्योतिष सम्बन्धी जानकारी का प्रयोग किया है। यद्यपि धिकतर यूरोपीय विद्वान उनसे सहमत नहीं हैं, किन्तु कुछ भारतीय विद्वानों को लक के "द ओरायन" में प्रतिपादित मत में सत्यांश प्रतीत होता है। "द आर्कटिक म" अपेक्षाकृत बड़ा ग्रन्थ है। इसमें तिलक ने तुलनात्मक भाषा-विज्ञान, इतिहास था धर्म के आधार से सिद्ध करने का प्रयत्न किया है कि आर्य जाति का आदि देश तरी ध्रुव-प्रदेश था। जबकि आर्यों के आदि निवास-स्थान के सम्बन्ध में इतने मत —मध्य एशिया, दक्षिणी रूस, कार्पेथियन पर्वतमाला, तिब्बत, कौकेशस— उस य एक विद्वान उत्तरी ध्रुव-प्रदेश का पक्ष ले, यह सचमुच बड़ी ही मनोरंजक बात । दुर्भाग्यवश तिलक के निष्कर्षों के भूवैज्ञानिक आधार कुछ हिल गये हैं और के मत को सामान्यतः स्वीकार नहीं किया जाता। फिर भी ये दोनों ग्रन्थ विद्या अनेक शाखाओं में उनके पाण्डित्य के चिर स्मारक हैं। इनसे उनकी मेधा की लिकता प्रकट होती है। साथ ही हमें यह भी नहीं भूलना चाहिए कि ये अनुसंधान रावास के अपरिहार्य अवकाश के समय में किये गये थे। इसलिए एक प्राच्य-विद्या-शारद के रूप में तिलक के सम्बन्ध में हमारा मत यह है कि यद्यपि उनके निष्कर्ष धुनिक वैदिक पाण्डित्य की कसौटी पर खरे नहीं उतरते, फिर भी इससे उनका ण्डित्य मलिन नहीं पड़ता।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लोकमान्य तिलक राष्ट्र-पिता थे

□ आचार्य कुलदीप नारायण 'झड़प'

सच कहा जाय तो लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ही ऐसे महापुरुष जिन्होंने सर्वप्रथम समग्ररूप से भारतीयों में राष्ट्रीयता-चेतना जगाई थी। प्रथम उन्होंने यह उद्घोष किया कि 'स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है' उस युग में जब कि राष्ट्रीय-कांग्रेस के मंच पर भी सरकार से अनुनय-विनय चाटुकारिता के ही प्रस्ताव पास किये जाते थे, लोकमान्य तिलक द्वारा कथित उद्‌ बड़े साहस और जीवट का काम था। वे सत्य को घुमा-फिरा कर कहना न जानते थे। बड़े ही निर्भीक और स्पष्ट-वक्ता थे। राष्ट्रीयता की भावना तो उ अंग-अंग में भरी थी उनके सारे काम राष्ट्रीय-चेतना से ओत-प्रोत होते थे। वे व्यक्ति नहीं, समग्र भारतीय-भावना के मूर्त्त रूप थे। वे जो कुछ सोचते-समझ और करते थे, उसका केन्द्र विन्दु एक व्यक्ति या संकीर्ण क्षेत्र नहीं, बल्कि पूरा होता था।

वे असाधारण व्यक्तित्व के महापुरुष थे। चाहे जिस ओर से दृष्टि डा उस ओर से ही वे असाधारण थे—असाधारण विद्वान्, असाधारण-विचार असाधारण अध्यापक, असाधारण समाज-निष्ठ, असाधारण-सम्पादक, असाधा संगठन कर्त्ता और असाधारण सुदृढ़ कार्यकर्त्ता। उनमें भारत और भारतीय-संस्कृ के प्रति असीम निष्ठा थी, वे राष्ट्रीय चरित्र के असाधारण निर्माता थे। किसी के सौभाग्य से उनके जैसा प्रतिभा-सम्पन्न महापुरुष उत्पन्न होता है, युगों तक प्रती के बाद—विरले।

अपने महान् राष्ट्रीय चरित्र के कारण ही उन्हें सदा उलझनों का साम करना पड़ा और कष्ट उठाना पड़ा, पर वे धैर्य-पूर्वक सारी समस्याओं को सुलझ रहे, दृढ़तापूर्वक सबका जवाब देते रहे और शान्तिपूर्वक कष्टों को सहते हुए अ कर्त्तव्य पथ पर अग्रसर होते रहे। वे श्रीमद् भगवद्गीता के कर्म-योग के उपासक इसलिए कोई भी बाधा तथा कठिनाई उन्हें अपने पथ से विचलित नहीं कर सक थी। वे अनुपम आदर्श पुरुष थे।

महाराष्ट्र के कोंकण-प्रदेश में "रत्नागिरि" नामक एक जिला है, जो रत्नों को उत्पन्न करने के कारण सचमुच अपने नाम को सार्थक करता है। यहाँ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चित्त-पावन ब्राह्मणों की बस्ती है, जिनके विषय में प्रसिद्ध है कि इनके पूर्वजों में अपनी शक्ति का आधान कर भगवान् परशुराम ने उन्हें वहाँ बसाया था। वहाँ उन्होंने तपस्या की और उस क्षेत्र का नाम अपनी माता काङ्क्षणा (रेणुका) के नाम पर प्रसिद्ध कर, उसे ब्राह्मणों को दे डाला। आज भी इस तपो-पूत उर्वर भूमि के निवासी 'चित्त-पावन' ब्राह्मण भगवान् परशुराम के आदर्श का अनुगमन करते हैं। उनका सिद्धान्त है—

'अग्रतश्चतुरोवेदाः पृष्ठतः सशरंधनुः।
इदं ब्राह्मं, इदं क्षात्रं शापादपि शरादपि ।।'

वे जैसे भारतीय संस्कृति के प्रति निष्ठावान् विविध विषयों के प्रकाण्ड-पण्डित होते हैं, वैसे ही अस्त्र-शस्त्र-संचालन तथा राजनीति में निपुण मनस्वी वीर भी होते हैं। सागर और सह्याद्रि की मध्य-पट्टी में निवास करने के फलस्वरूप उनका हृदय सागर की भाँति अगाध और सुविस्तृत तथा विचारशील और व्यक्तित्व सहृचाद्रि जैसा ऊँचा होता है। उनके गुणों पर विचार करके ही तो उनको 'चित्पावन' या 'चित्त-पावन' कहा गया जिसका अर्थ होना है—चित् (विवेक, ज्ञान, बुद्धि, प्रतिभा हृदय, मन, जीवात्मा, ब्रह्म) या चित्त (विचार, मनोयोग, इच्छा, उद्देश्य, मन, हृदय, मुक्ति, प्रतिभा, विचारशक्ति) को पावन (पवित्र, विशुद्ध, पाप से छुड़ानेवाला) करने वाला होता है। पेशवा लोग चित्पावन ही थे। शासक वर्ग का और भू-स्वामी ब्राह्मण होने के कारण चित्पावन-ब्राह्मण उत्तर-भारत के भूमिहार ब्राह्मणों ही जैसे हैं। सन् १९१६ में वाराणसी में भाषण देते हुए, लोकमान्य तिलक ने कहा था कि मैं उसी ब्राह्मण जाति का हूँ, जिसमें महाराजा वनारस हैं। चित्पावनों की कई कुल-परम्पराएँ बिहार में भूमिहार-ब्राह्मणों से मिली हुई हैं, जैसे—अथर्व (कौडिन्य) भटाने (भट्टनायक, विष्णुवृद्ध), चित्पवनिया आदि। भूमिहार का अर्थ भी (भूमि + हार = भूषण) भूमि-भूषण या (भूमि + हार = वाला) भू-स्वामी अथवा (भू = नाना, मि = सन्देह, ह—हरण करनेवाला) नाना सन्देहों को दूर करने वाला विवेकी विद्वान् होता है। अतः यह स्पष्ट है कि ये दोनों वर्ग मूलतः एक हैं।

ऐसी ही महान्-ब्राह्मण-वंश-परम्परा में २३ जुलाई, सन् १८५६ ई० को लोकमान्य का जन्म हुआ था। वे एक वर्ष के भी नहीं हुए थे कि सन् १८५७ के स्वतंत्रता संग्राम की आग देश में भड़क उठी। इस प्रकार, स्वातंत्र्य-चेतना मानो उनके जीवन की घुट्टी बनकर मिली। उन्होंने जब से होश संभाला प्रायः वैसे ही वातावरण में जीते-जागते और पलते रहे। उनके पितामह संस्कृत-भाषा के विद्वान् एवं संस्कृति-निष्ठ देश-भक्त पुरुष थे। वे पेशवाओं की कीर्ति-कथा, झाँसी की रानी लक्ष्मी बाई और तात्याटोपे की वीरता की कहानियाँ उन्हें सुनाया करते। फल-स्वरूप उनके मन में राष्ट्र-प्रेम का जो अंकुरण बाल्यावस्था में हुआ, वह दिनानुदिन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विकसित होता और बढ़ता रहा। सांस्कृतिक-चेतना, प्रतिभा और विद्वत्ता उनकी पैतृक सम्पत्ति थी। उनकी माता पूजा-पाठ औह धार्मिक अनुष्ठान में लगी रहती थीं। पिता अध्यापक थे तथा संस्कृत-साहित्य और गणित के विद्वान् थे। ये सारी बातें उनको विरासत में मिलीं। बाल्यावस्था से ही उनकी बुद्धि तीव्र थी। एक बार उनके पिता बाणभट्ट की कादम्बरी का सस्वर पाठ कर रहे थे, जो उन्हें बहुत अच्छा लगा, अस्तु उन्होंने पिता जी से उक्त पुस्तक माँगी। पिता जी ने उन्हें गणित का एक प्रश्न देकर कहा कि यदि तुम इसे हल कर दो तो पुस्तक तुम्हें दे दूँगा। उन्होंने प्रश्न को हल कर दिया और पुस्तक लेली। उनकी बुद्धि के चमत्कार को देखकर माता पिता बहुत प्रसन्न हुए। उनके पिता बड़े मनोयोग से उन्हें पढ़ाते और पुरस्कार दे-देकर उनका हौसला बढ़ाते थे। वे गणित में इतनी प्रखर-बुद्धि के थे कि कक्षा में दिये गए प्रश्नों का उत्तर चट-पट मौखिक ही बताकर अध्यापकों को आश्चर्य-चकित कर देते थे। सुदृढ़ विचार के स्वाभिमानी और मनस्वी ऐसे थे कि एक बार इनकी कक्षा के किसी लड़के ने कमरे में मूँगफली खाकर छिलका इधर-उधर डाल दिये थे। जब मास्टर साहब आये तो उन्होंने छिलका बिखेरनेवाले का नाम पूछा, किन्तु किसी लड़के ने बताया नहीं। तब क्रुद्ध होकर वे सभी लड़कों को खड़ा कराकर क्रमशः बेंत से पीटने लगे। जब तिलक की बारी आई तो उन्होंने कहा कि जब मैंने छिलका नहीं गिराया है तो मार भी नहीं खा सकता और वे घर चले आये। सत्य के पथ पर कभी न झुकना उनका स्वभाव था, जो उनके जीवन में सदा देखा गया।

उनकी बाल्यावस्था का नाम बलवन्त राय था, किन्तु प्यार से लोग 'बाल' कहकर पुकारते थे। बाद में वही उनका नाम बन गया। उनके पिता का नाम गंगाधर राव था। दक्षिण में अपने नाम के साथ पिता का नाम संयुक्त करने का नियम है, इसी से उन्हें 'बाल गंगाधर' कहते हैं। 'राव' आस्पद वैसा ही है, जैसे उत्तर-भारत में 'राय।' 'तिलक' की उपाधि उनके पूर्वज को पेशवा द्वारा प्राप्त हुई थी। पाँच वर्ष की अवस्था में वे पाठशाला भेजे गए और आठ वर्ष की अवस्था में उनका यज्ञोपवीत संस्कार सम्पन्न हुआ। जब वे दस वर्ष के हुए, उनकी माता स्वर्ग सिधार गईं। सोलह वर्ष की अवस्था में पिता ने भी साथ छोड़ दिया, किन्तु इसके पूर्व उन्होंने बाल का विवाह बल्लाल बाल की कन्या तापीबाई से कर दिया था। पिता का देहान्त होने पर अपने छोटे भाई और भतीजों के पढ़ाने का भार भी इन्हें वहन करना पड़ा। इनकी सगी बहिनें तीन थीं। अपने विवाह काल में दहेज मांगने के लिए कहने पर उन्होंने कुछ पुस्तकें माँगी थीं, जिससे उनके निर्लोभ सन्तुष्ट-चित्त और विद्या-व्यसनी होने की स्पष्ट झलक मिलती है। कहावत है — 'होनहार बिरवान

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के होत चीकने पात।' वे न किसी प्रकार का नशा करते थे और न धूम्र-पान। नजाकत उन्हें पसन्द न थी। नियमित रूप से कसरत कर उन्होंने अपने शरीर को स्वस्थ और सुपुष्ट बना लिया था। वे घंटों तैर सकते थे और साँस रोकर देर तक डुबुकी भी लगा सकते थे। उनका भोजन सादा और स्वास्थ्यकर होता था—रोटी, दूध, मक्खन, साग-सब्जी और फल परंपरा के अनुसार स्नान और पूजा-पाठ करने के पश्चात् रेशमी-वस्त्र पहनकर भोजन करते थे। उन्होंने सन् १८७२ में मैट्रिक, सन् १८७७ में बी० ए० और सन् १८७९ में एल० एफ० बी० की परीक्षा उत्तीर्ण की और तत्पश्चात् प्रसिद्ध समाज-सुधारक गोपाल गणेश आगरकर तथा विष्णुशास्त्री चिपलूणकर के साथ सामाजिक कामों में जुट गए। इन तीनों के प्रयत्न से १८७९ ई० में पूना में 'न्यू इंगलिश स्कूल' की स्थापना की गई, जिसका संचालन और अध्यापन कार्य शास्त्री जी और तिलक करते थे। सन् १८८१ में 'मराठा' तथा 'केसरी' का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। महाराष्ट्र ही नहीं, सारे भारत का जनमत तैयार करने में इन पत्रों का बड़ा महत्त्व है। उन्होंने संस्कृत-साहित्य, वैदिक-साहित्य, पाश्चात्य दर्शन और गणित-ज्योतिष का गहरा अध्ययन किया। इनके 'ओरायन' नामक ग्रंथ की ख्याति यूरोप तक पहुँची और वह सारे संसार के विद्वानों की चर्चा का विषय बन गया। 'गीता-रहस्य' उनकी दूसरी महत्त्वपूर्ण पुस्तक है, जिसे उन्होंने मांडले-जेल में लिखा था। 'सादा भोजन उच्च विचार' ही नहीं वेश-भूषा में भी वे सादगी पसन्द थे—लाल पगड़ी, अँगरखा, धोती, चादर और पैरों में दक्षिणी जूता धारण करते थे।

उनके ऊपर कई बार मान-हानि के मुकदमे चले और सजा भी हुई, परन्तु अपने पत्रों द्वारा सत्य का भंडाफोड़ करने से कभी विरत नहीं हुए। गाँधी जी ने जिन आन्दोलनों का सूत्रपात और संचालन किया, उनकी भूमिका तिलक जी ने तैयार की थी, जैसे—नशाबन्दी, स्वदेशी आन्दोलन, नमक सत्याग्रह और देश की आजादी के लिए आन्दोलन तथा अपने राजनीतिक अधिकारों की माँग। इसी से वे 'भारतीय अशान्ति के जन्मदाता' कहे जाते हैं। समाज में राष्ट्रीय भावना भरने और जनमत तैयार कर विदेशी शासन का जुआ भारत के कंधे से उतार फेंकने के लिए ही उन्होंने गणपति उत्सव (१८९३ ई०) और शिवाजी उत्सव (सन् १८९६ ई०) का प्रारम्भ किया था। उन्होंने संस्कृति के आश्रय से राष्ट्रीय चरित्र का निर्माण किया। वे अपने समय से बहुत आगे थे। उनकी दूरदर्शिता और सूझ-बूझ सदा याद की जायगी।

वे सन् १८८५ में कांग्रेस में आए, किन्तु उनका विचार उग्रवादी था, इसलिये नरम दल वालों से उनकी कभी पटी नहीं और इसी कारण सन् १९०९ की सूरत कांग्रेस में बड़ा विवाद उठ पड़ा था और सभासम्पन्न नहीं हो सकी थी। यद्यपि वे उस

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

समय नेतृत्व की दृष्टि से सारे भारत पर छा रहे थे। उस समय उनके दो साथी थे, जिनका विचार उनसे पूर्ण तरह मिलता था, वे थे—विपिनचन्द्रपाल और लाला लाजपत राय। बाल लाल पाल की यह त्रिमूर्त्ति प्रसिद्ध है। उस समय गांधी जी गोखले के समर्थक नरम दली थे। तिलक से सरकार बहुत नाराज थी, इसलिए कई बार राजद्रोह के मुकदमे चले और सजायें भी हुईं। अंतिम चरणों में ६ वर्ष की सजा देकर मांडले भेज दिया गया। वहीं उन्होंने गीता रहस्य की रचना की थी। वंग भंग के आन्दोलन के क्रम में तिलक जी ने देशव्यापी दौरा कर स्वदेशी वस्तुओं के प्रति प्रेम जगाया था। वे अंग्रेजी अंग्रेजियत और विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार कर एक राष्ट्रीय भाषा और लिपि का प्रचार और स्वदेशी आचरण तथा वस्तुओं के उपयोग के लिए कृतसंकल्प थे। वाराणसी में उन्होंने कहा था कि देवनागरी राष्ट्रभाषा हिन्दी की तरह राष्ट्रीय लिपि है। एक लिपि राष्ट्रीय आन्दोलन का अभिन्न अंग है। हमें समस्त भारत के लिए एक ही भाषा बनानी चाहिए। यदि राष्ट्र को संगठित करना है तो इसके लिए राष्ट्रभाषा से बड़ी शक्ति अन्य नहीं हो सकती।" राष्ट्रीय शिक्षा को भी वे आवश्यक मानते थे।

६ वर्ष की सजा काट कर वे ८ जून, १९१४ को मांडले जेल से मुक्त कर दिये गए और १० जून की आधी रात को पूना पहुंचा दिये गये। २० जून को उनके सम्मान में सभा हुई। इसके बाद फिर उन्होंने धुंआधार प्रचार प्रारंभ कर दिया। सरकार चौकन्नी थी, फिर भी उन्होंने बेलगाँव में २८ अप्रैल, १९१६ को 'होम रूल लीग' की स्थापना की, जिसका उद्देश्य था—स्वशासन की माँग। उनका कहना था कि देश का शासन-सूत्र देशवासियों के हाथ में होना चाहिए। उसी वर्ष २३ जुलाई को उनकी ६० वीं वर्षगाँठ पर जनता की ओर से उन्हें एक लाख रुपये की थैली दी गई। जनता ने किसी दूसरे नेता का इतना सम्मान नहीं किया था। सरकार उनसे भय खाती थी पर जनता के वे लोकमान्य थे। उसने उन्हें लोकमान्य कह कर पुकारा। आज भी वे लोकमान्य हैं और भारतीय जनता की दृष्टि में सदा ही लोकमान्य बने रहेंगे। होम रूल आन्दोलन के देशव्यापी प्रचार से सरकार घबड़ा गई थी। उसकी शाखा लन्दन में भी स्थापित की गई थी। श्रीमती एनीबेसेन्ट ने भी इस आन्दोलन को आगे बढ़ाया था। वे प्रदर्शन और सम्मान के भूखे न थे, उनका एकमात्र अभीष्ट था—स्वराज्य।'

प्रथम योरोपीय महायुद्ध के समय गांधीजी और एनीबेसेन्ट ब्रिटिश सेना के लिए भारतीय रंगरूटों की भर्ती के समर्थक थे, किन्तु तिलक ब्रिटिश सरकार द्वारा भारतीयों को बिना अधिकार दिये किसी प्रकार की सहायता के विरोधी थे। उनका कहना था कि 'हम उस भारत की रक्षा के लिये क्यों आगे आयें, जिसमें हमें कोई अधिकार नहीं और हमारे साथ गुलामों जैसा व्यवहार होता है।" उनका यह कथन कितना सच था, यह गाँधीजी और दूसरे नेताओं को बाद में सूझा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भारत सरकार तिलक के प्रभाव से परिचित थी। भारतमंत्री मांटेग्यू तिलक को भारत का सबसे अधिक शक्तिशाली पुरुष कहते थे। सन् १९१६ के लखनऊ कांग्रेस में उनका प्रभाव देखा गया, जबकि नरमदली नेताओं ने उनकी बात मान ली और मुसलिम लीग ने भी समझौता कर लिया। उस समय वे जनता के एकमात्र नेता थे। लखनऊ के जुलूस में जनता ने उनकी सवारी को स्वय खींचकर सम्मान दिया था। सन् १९१८ में होने वाले कांग्रेस अधिवेशन के वे अध्यक्ष चुने गये थे, परन्तु उनके इंगलैंड में रहने के कारण उसकी अध्यक्षता मालवीय ने की। वे जब १९१९ में भारत लौटे तो उनका शानदार स्वागत और सम्मान हुआ।

वे शिरोल नामक अंग्रेज पर मानहानि का मुकद्मा करने के ही लिए लन्दन गये थे। इसी बीच जालियाँवाला बाग का नृशंस हत्याकाण्ड हुआ, जिसके लिए वे बहुत खिन्न थे। अमृतसर कांग्रेस में उन्होंने स्पष्ट कहा था —'हम अपना संघर्ष जारी रखेंगे। अमृतसर में तिलक की अमोघशक्ति के समक्ष सब नेता नतमस्तक थे। उनकी सहनशक्ति, दृढ़ता और लगन को देखकर स्वागताध्यक्ष स्वामी श्रद्धानन्द ने कहा था —"देश का कौन सिपाही है जो हर तूफान को सहने वाले अपने सेनापति तिलक की आज्ञा शिरोधार्य न करेगा।" उस समय वे भारतीय जनता के अकेला नायक और जनमानस पर अधिकार करने वाले जननेता थे, किन्तु अमृतसर कांग्रेस के बाद वे रोगग्रस्त और दुर्बल हो गये और पहली अगस्त सन् १९२० को भगवान ने उन्हें अपने यहाँ बुला लिया। उस मनहूस दिन को अपने प्रतिभा-प्रकाशन से संसार को चकित करने वाला वह महापुरुष अस्त हो गया, यद्यपि उनका आदर्श जीवन अक्षय-दीपस्तंभ की भाँति आज भी हमारा पथ-प्रदर्शन कर रहा है और आगे भी करता रहेगा। उनकी त्याग वृति धन्य थी —वे महान लोक सेवक थे ओर आधुनिक भारत के निर्माता थे। उनका उद्देश्य एकमात्र राजनीतिक नहीं वरंच राजा राममोहन राय, स्वामी दयानन्द और स्वामी विवेकानन्द की भाँति सांस्कृतिक भी था। बिना सांस्कृतिक चेतना के राजनीति वैसे ही विनाशक है जैसे भादो में अनियंत्रित गंगा की बाढ़! जैसी कि आज की स्थिति है। ऐसी स्थिति में स्वराज्य के प्रथम मंत्रद्रष्टा ऋषि लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक की याद बरबस आ जाती है और हम एकबार फिर उनकी ओर आशा भरी दृष्टि से देखने लगते हैं। काश! वे फिर उत्तर आते!

'अब हैं वे तरुवर कहाँ, जिनकी छाँह गँभीर।
बागन में अब देखिये, सेंहुड़ करज करीर॥'

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उग्र राष्ट्रीयता के जनक बाल गंगाधर तिलक

□ डॉ० शिव मंगल राय

राष्ट्रीयता बाल गंगाधर तिलक को अठारहवीं शताब्दी के इतिहास प्रसि[द्ध] महाराष्ट्र के पेशवाओं से संस्कार रूप में मिली थी और उसके सम्यक् विकास [के] लिए जिस परिवेश की आवश्यकता थी, उसके सृजन का आरम्भ सन् १८५७ [की] महान क्रान्ति ने कर दी। उस क्रान्ति ने जहाँ कम्पनी के शासन का अन्त किय[ा] वहीं राष्ट्र-प्रेमियों को सन्देश दिया कि कोई भी विदेशी सरकार उनके हितों [के] विपरीत आचरण कर स्वयं को दीर्घ काल तक अस्तित्व में नहीं बनाये रख सकती।

सन् १८५७ की महान क्रान्ति ने जिस प्रभावी संक्रमण-अवस्था की शुरुआ[त] की, उसमें एक ओर अँग्रेजी सरकार अपनी चालबाजियों और कुटिल-नीतियों [से] देश-वासियों को परतंत्रता की बेड़ियों में और भी अधिक कठोरता के साथ क[सने] लगी, तो दूसरी ओर कई शक्तियाँ प्रच्छन्न रूप में ही सही परस्पर मिल-जुल [कर] ऐसे परिवेश का सृजन करने लगीं जो देशवासियों को राष्ट्रीयता से ओत-प्रो[त] करने लगे। राजनैतिक एकता सबकी समस्याओं को समान रूप में प्रस्तुत क[रने] लगी तो यातायात और संवाद-वाहन के बढ़ते हुए साधन लोगों को परस्पर मिल[ने-] जुलने और अंग्रेजी भाषा के माध्यम से विचार-विमर्श का अवसर प्रदान करने लगे। मैजिनी, रूसो, वाल्टेयर, मैकाले, मिल, मिल्टन, स्पेन्सर और बर्क आदि की रचना[एँ] स्वतन्त्रता के मर्म का बोध और उसकी व्यापक उपयोगिता का ज्ञान कराने ल[गीं] तो राजा राममोहन राय, मैक्समूलर, मानियर, हरप्रसाद शास्त्री, दयानन्द सरस्[वती] और विवेकानन्द के कृत्य भारत के अतीत के गौरव को पूर्ण प्रभा के साथ प्रका[शित] कर उसकी उपलब्धि की ललक पैदा करने लगे। जन्म (सन् १८५६) से बाल गंगाधर तिलक जाने अथवा अनजाने ऐसे अनुकूल परिवेश का लाभ उ[ठाने] और अपनी जन्म-जात राष्ट्रीयता को वांछित उत्कर्ष देने लगे। अपने मनोरथ [की] सिद्धि के लिए मराठी, संस्कृत, हिन्दी और अंग्रेजी का गहन अध्ययन करने ल[गे।] चौबीस वर्ष की आयु होते-होते वे राष्ट्र की समस्याओं के मूल को समझने में [स]क्षम होकर अंग्रेजी सरकार से निपटने को प्रस्तुत होने लगे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सन् १८८० से बाल गंगाधर तिलक ने सार्वजनिक जीवन में प्रवेश किया। बालकों में तर्क और विज्ञान की शक्ति के विकास के लिए 'न्यू इंगलिश स्कूल' की स्थापना की और किशोरों-तरुणों को राष्ट्र-भक्ति से ओत-प्रोत करने के उद्देश्य से मराठी भाषा में दैनिक 'केसरी' और अंग्रेजी भाषा में साप्ताहिक 'मराठा' का सम्पादन-प्रकाशन आरम्भ किया। युवकों में आत्म-विश्वास और आत्म-बल भरने के उद्देश्य से अखाड़ों और लाठी क्लबों की स्थापना की। गणपति-उत्सव के माध्यम से तरुणों को साहसी, निर्भीक और बलिदानी बनाने का सक्रिय उपक्रम किया। उनके इन प्रयत्नों की प्रतिक्रिया में महाराष्ट्र 'स्वराज्य' के लिए प्रस्तुत होने लगा और बाल गंगाधर तिलक एक लोकमान्य नेता के रूप में उभरने लगे।

अपने सार्वजनिक जीवन के आरम्भिक सात-आठ वर्षों में बाल गंगाधर तिलक ने अनुभव किया कि भारतीय स्वराज्य की तैयारी के लिए महाराष्ट्र का मंच अति लघु है। इसके लिए एक राष्ट्रीय मंच की आवश्यकता है। चिन्तन के इस क्रम में उनका ध्यान अखिल भारतीय कांग्रेस की ओर गया, जिसने अपने जन्म (सन् १८८५) के बाद के आरम्भिक तीन-चार वर्षों में ही अपना राष्ट्रीय मंच बना लिया था। सन् १८८७ तक उसे सरकार का सहयोग भी मिला, किन्तु बाद में उसके प्रति सरकार का दृष्टिकोण बदलने लगा। सन् १८८८ में लार्ड डफरिन ने एक भोज के अवसर पर कह भी दिया कि 'अब कांग्रेस का झुकाव राज-द्रोह की ओर हो गया है।' उसकी इस आशंका का मूल कारण देश में कांग्रेस के माध्यम से राष्ट्रीय भावना का द्रुत उत्कर्ष था। फिर भी 'स्वराज्य' कांग्रेस का लक्ष्य नहीं बन पाया था। उसका उद्देश्य तो मात्र वैधानिक सीमाओं के भीतर रहकर ही भारतीयों के राजनैतिक अधिकारों की मांग करना था। उसके ही लिए प्रस्ताव पारित करना अथवा आवश्यकतानुसार प्रतिनिधि-मण्डल भेजना था। यह सब-कुछ जानकर भी बाल गंगाधर तिलक ने कांग्रेस के राष्ट्रीय मंच का उपयोग हित-कारी समझा। और, १८८९ में कांग्रेस में सम्मिलित होकर उसके अधिवेशन में भाषण देते हुए पूर्ण आत्म-विश्वास के साथ घोषित किया कि "स्वतन्त्रता हमारा जन्म-सिद्ध अधिकार है और हम उसे लेकर रहेंगे।" यद्यपि कांग्रेस ने इस आशय का कोई प्रस्ताव पारित नहीं किया और न 'स्वराज्य' को अपना लक्ष्य ही बनाया, फिर भी अधिवेशन में सम्मिलित तरुणों पर इस उद्घोष की व्यापक प्रतिक्रिया हुई और अंग्रेजी सरकार ने सन् १८९० में सरकारी अधिकारियों को आदेश दे दिया कि वे कांग्रेस के साथ किसी प्रकार का संबंध न रखें, उसकी सभाओं में दर्शक के रूप में भी भाग न लें। स्पष्ट है कि सरकार कांग्रेस से भयभीत होने लगी। और, दूसरी ओर तिलक से प्रभावित कांग्रेसी भी सरकार की आलोचना करने लगे। किन्तु कांग्रेस तब भी 'स्वराज्य' को अपना लक्ष्य घोषित न कर सकी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सन् १८९२ में ब्रिटेन के शासक-तन्त्र पर अनुदार-दल का कब्जा हो गया और उसका वह आधिपत्य सन् १९०५ तक बना रहा। उस दल की नीति उग्र साम्राज्यवादी थी। उस अवधि के वायसराय लार्ड लैंसडाउन, लार्ड एल्गिन और लार्ड कर्जन उस नीति को क्रियात्मक रूप देने को कटिबद्ध निकले। इस प्रकार परिवेश ऐसा बना जिसमें सरकार भारतीयों को पूर्णतः कुचल डालने का उपक्रम करने लगी। सन् १८९२ में कौंसिल-सुधार-अधिनियम पारित किया गया इससे कांग्रेस के उदारवादी नेता भी क्षुब्ध हो गये। सन् १८९३ के कांग्रेस अधिवेशन में गोखले जैसे उदारवादी नेता ने उक्त अधिनियम पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि "विधान-परिषद् के विषय में जो कानून बनाये गये हैं, उन कानूनों ने तो सुधार-योजना का उद्देश्य ही नष्ट कर दिया है।" सरकार के इस कदम से बाल गंगाधर तिलक और उनके समान दृष्टिकोण वाले नेताओं की उग्र राष्ट्रीयता प्रभावी ढंग से मुखर हो उठी। लाला लाजपत राय ने स्पष्ट रूप से कह दिय कि "भारतीयों को अब भिखारी बने रहने से ही सन्तोष नहीं करना चाहिए और ना उन्हें अंग्रेजों की कृपा पाने के लिए ही गिड़गिड़ाना चाहिए।"

राष्ट्रीय भावना को उग्र बनाने के उद्देश्य से बाल गंगाधर तिलक ने भारत में प्रथम बार सन् १८९५ में 'जयन्ती-समारोह' का आयोजन किया। वह जयन्ती उस महाराज शिवाजी की थी, जिन्होंने अति सीमित साधनों के होते हुए भी महा-शक्तिशाली मुगल सम्राट औरंगजेब का छक्का छुड़ा कर अपनी उदात्त-उग्र राष्ट्रीयता का अश्रुतपूर्व परिचय प्रस्तुत कर दिया था। उस जयन्ती के आयोजन में तिलक का उद्देश्य युवकों को शिवाजी के कार्यों से प्रेरित कर स्वराज्य के निमित्त अंग्रेजी सरकार से मोर्चा लेने को प्रस्तुत करना था। उस अवसर पर जुलूस निकाले गये लाठी-बाजी के प्रदर्शन किये और राजनीतिक भाषण दिये गये।

सन् १८९६-९७ में भयंकर अकाल पड़ा, जिससे लगभग दो करोड़ भारती बुरी तरह से प्रभावित हुए। लाखों लोग अकाल मृत्यु के शिकार हुए। वैसे ही अवसर पर प्लेग का भी भयंकर प्रकोप हो गया। लोग मरने और घर छोड़कर जंगलों की ओर भागने लगे। बाल गंगाधर तिलक ने इस दैवी आपदाओं के आरम्भ होते ही सरकार से सहायता का आग्रह करना शुरू किया और सरकार ने सहायता-कार्य किया भी; किन्तु वे कार्य आवश्यकता की तुलना में इतने कम कि लोगों में सरकार के विरुद्ध असन्तोष और आक्रोश में वृद्धि होने लगी। तिलक सरकार की इतनी कटु और प्रखर आलोचना करने लगे कि उसे बाध्य होकर स १८९७ में उन्हें (तिलक को) अठारह महीने के कठोर कारावास का दण्ड देना पड़ा अवधि की पूर्णता के छः मास पूर्व कारा से मुक्त होने के बाद बाल गंगाधर तिलक ने पुनः अपना अभियान तेज कर दिया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सन् १९०४ के आरम्भ में ही लार्ड कर्जन ने बंगाल-विभाजन का निर्णय कर इसकी सूचना भारत-मंत्री के पास फरवरी में इंगलैंड भेज दी। सम्पूर्ण बंगाल इस निर्णय की सूचना से भड़क उठा। सभाओं का आयोजन कर निर्णय का विरोध करने लगा; किन्तु सरकार पर जब इससे सम्बन्धित प्रस्तावों और प्रदर्शनों का कोई प्रभाव न पड़ा, तो १७ अगस्त, १९०५ को कलकत्ता के 'टाउन-हाल' में एक सभा की गई और उसमें ब्रिटिश वस्तुओं के वहिष्कार की प्रक्रिया को तब तक गतिशील बनाये रखने का निर्णय किया गया जब तक अंग्रेजी सरकार बंगाल-विभाजन की योजना को पूर्णतः रद्द न कर दे। किन्तु, इस निर्णय का भी सरकार पर कोई असर नहीं हुआ। उल्टे, १६ अक्तूबर, १९०५ को विभाजन की घोषणा सरकारी तौर पर कर दी गई। और, उस घोषणा के प्रतिवाद में उसी दिन सम्पूर्ण बंगाल में 'भूख-हड़ताल' मनाई गई। सारे देश में 'शोक-दिवस' का आयोजन किया गया। शहरों की सड़कें वन्दे-मातरम् के नारों और वीरतापूर्ण गीतों से गूंज गईं। ब्रिटिश वस्तुओं का वहिष्कार किया जाने लगा। स्वदेशी-आन्दोलन तेज होने लगा। सन् १९०५ और १९०६ के कांग्रेस अधिवेशनों में 'वहिष्कार' और 'स्वदेशी आन्दोलन' का समर्थन किया गया। आन्दोलन शनैः-शनैः राष्ट्रीय स्वरूप और उग्र रूप धारण करने लगा। इसको नियंत्रित करने में सरकारी नौकरशाही के छक्के छूटने लगे। उग्र साम्राज्यवादी सरकार को आक्रोश में दमन-नीति का आश्रय लेना पड़ा। मराठी दैनिक 'केसरी' में सरकार की उस दमन-नीति की इतनी प्रखर आलोचनाएँ छपने लगीं कि महाराष्ट्र के दो युवकों ने राष्ट्रीय-भावना के चरम उन्मेष में मि० रेड और लेफ्टिनेण्ट अर्स्ट को गोली मार दी। बाल गंगाधर तिलक पर हत्या का अभियोग लगाया गया; किन्तु बम्बई की न्यायपालिका ने उन्हें अभियोग मुक्त कर दिया।

अंग्रेजी सरकार की दमन-नीति ने कांग्रेस की आन्तरिक स्थिति को प्रभावित किया। सन् १८९० में कांग्रेस में जो दो दल बनने लगे थे, सरकार की दमन-नीति के कारण परस्पर प्रतिद्वन्द्वी के रूप में उभरने लगे। एक दल के गोपाल कृष्ण गोखले आदि नेता अब भी वैधानिक आन्दोलनों में ही विश्वास करते थे, जब कि दूसरे दल के नेता बाल गंगाधर तिलक स्पष्ट रूप में कहने लगे कि 'राजनीतिक अधिकारों की प्राप्ति के लिए संघर्ष करना पडता है। × × × हमारी निश्चित धारणा है कि ये अधिकार सबल दबाव से ही प्राप्त हो सकते हैं।" कांग्रेस के इस अन्तः संघर्ष को टालने तथा उसे टूटने से बचाने के लिए दादाभाई नौरोजी ने सन् १९०६ के अधिवेशन में अध्यक्ष पद से घोषित किया कि "स्वराज्य हमारा जन्म-सिद्ध अधिकार है और उसे प्राप्त करना ही कांग्रेस का लक्ष्य है।" इस घोषणा से संघर्ष कुछ काल के लिए टला, किन्तु 'स्वराज्य' शब्द के अर्थ को लेकर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दोनों दलों — नरम दल और गरम दल— में पुनः संघर्ष शुरू हो गया। सन् १९०७ के कांग्रेस अधिवेशन मे दोनों दलों में खुली टक्कर हुई और बाल गंगाधर तिलक अपने समर्थकों के साथ कांग्रेस से अलग हो सुसंगठित रूप में 'स्वराज्य' की उपलब्धि के लिए प्रयत्न करने लगे। अरविन्द घोष और विपिन चन्द्र पाल भी खुलकर उनका सहयोग करने लगे।

जिस समय कांग्रेस में आन्तरिक संघर्ष चल रहा था, बंगाल में आतंकवादी संगठन बन रहे थे। ये आतंकवादी पश्चिमी उपायों का अवलम्बन कर बमों और पिस्तौलों के उपयोग से राजनीतिक हत्याओं की योजना बना रहे थे। आन्तरिक विद्रोह और सेना में असन्तोष फैला कर सरकार को उलटने का उपक्रम कर रहे थे। वीरेन्द्र कुमार घोष और भूपेन्द्र दत्त 'युगान्तर' और 'सन्ध्या' नामक पत्रों का सन् १९०६ मे प्रकाशन आरम्भ कर उनके माध्यम से क्रान्ति को उग्र और व्यापक बनाने का कार्य करने लगे। वहाँ के क्रान्तिकारी 'अनुशीलन समिति' और उसकी पांच सौ शाखाओं के माध्यम से सरकार को आतंकित करने का कार्यक्रम अपनाने लगे। आयोजना के अनुसार ६ दिसम्बर, १९०७ को मिदनापुर के समीप उस रेलगाड़ी को पटरी पर से उतार दिया गया, जिसमें गवर्नर यात्रा कर रहे थे। २३ दिसम्बर को ढाका के मजिस्ट्रेट को गोली मार दी गई। यह आतंकवादी आन्दोलन देखते ही देखते पंजाब और महाराष्ट्र तक पहुँच गया। सरकार आतंकवादियों से घबड़ाने, सभाओं और जुलूसों पर प्रतिबन्ध लगाने और छापेखानों पर नियंत्रण करने लगी। बाल गगाधर तिलक के पत्रों में सरकारी कदमों की प्रखर आलोचनाएं छपने लगीं। इसी से अप्रसन्न होकर सरकार ने सन् १९०८ में उन्हें गिरफ्तार कर छः वर्षों के लिए मांडले जेल भेज दिया। उसी निर्वासित बन्दी-जीवन में बाल गंगाधर तिलक ने 'गीता-रहस्य' और 'दि आर्कटिक होम ऑफ दि वेदाज' की रचना कर अपने व्यक्तित्व एवं प्रभाव को व्यापक बनाया।

सन् १९०७ में गरम दल वालों के कांग्रेस से अलग हो जाने के बाद अंग्रेज सरकार भारत की आन्तरिक स्थिति और प्रथम विश्व-युद्ध के आसन्न संकट को दृष्टि में रख एक ओर उग्रवादी कांग्रेस नेताओं तथा आतंकवादियों के आन्दोलन का निर्ममतापूर्वक दमन करने और दूसरी ओर कांग्रेस के साथ जिस पर उस समय गरम दल का वर्चस्व था और जो सरकार के घोर अमानुषिक अत्याचारों को देख कर भी वैधानिक अधिकारों की सीमा में ही कार्य कर रही थी; सौहार्द्र पूर्ण व्यवहार करने लगी। फलस्वरूप सन् १९१४ आते-आते उग्र और आतंकवादी आन्दोलन इतने शिथिल हो गये कि सरकार बहुलांश में निश्चित होकर भारत से भी सैनिक सहायता यूरोप भेजने लगी। स्वतन्त्रता को जन्म-सिद्ध अधिकार मानने वाले

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आयरिश महिला श्रीमती एनी बेसेण्ट जो उन दिनों 'थियोसोफिकल सोसाइटी' के माध्यम से भारत में कार्य कर रही थीं, स्थिति के भयंकर अनौचित्य और उसकी प्रतिक्रिया में 'मानवता' पर होनेवाले प्रचण्ड प्रहार को दृष्टि में रख कांग्रेस में सम्मिलित हो भारतीयों की स्वतन्त्रता के लिए संघर्ष करने लगीं। ऐसे ही अवसर पर बाल गंगाधर तिलक मांडले जेल से मुक्त होकर भारत आये और श्रीमती एनी बेसेण्ट के आग्रह पर सन् १९१५ में कांग्रेस में पुनः सम्मिलित हो गये। इस प्रकार लगभग आठ वर्ष बाद नरम और गरम, दोनों दल संगठित होकर स्वराज्य के लिए संघर्ष करने लगे। सन् १९१६ में कांग्रेस का नेतृत्व गरम दल के हाथ में आया। उसी वर्ष 'होम रूल लीग' की स्थापना कर बाल गंगाधर तिलक और एनी बेसेण्ट भारतीयों के लिए गृह-शासन के अधिकार की मांग करने लगे। सारे देश का दौरा और विभिन्न स्थानों पर होम रूल समितियों की स्थापना करने लगे। दोनों नेताओं के अथक प्रयत्नों से आन्दोलन मात्र एक वर्ष में देशव्यापी हो गया। जन-जीवन में नवीन स्फूर्ति आ गई। पंजाब और दिल्ली में आन्दोलन उग्र हो गया। सरकार ने घबड़ाकर दोनों नेताओं के कार्यों तथा तिलक के पजाब और दिल्ली में प्रवेश पर प्रतिबन्ध लगा दिया। एनी बेसेण्ट को नजरबन्द कर दिया। इसकी प्रतिक्रिया में आन्दोलन ने और भी अधिक उग्र रूप धारण कर लिया। थोड़े ही दिनों बाद सरकार को विवश होकर एनी बेसेण्ट को कारा से मुक्त कर देना पड़ा।

२० अगस्त, १९१७ को भारत-मंत्री मांटेग्यू ने भारतीय शासन में भारतवासियों के सम्पर्क में उत्तरोत्तर वृद्धि के उपायों पर भारतीय नेताओं से मंत्रणा करने के लिए स्वयं भारत आने की आकांक्षा व्यक्त कर आन्दोलन की उग्रता को अल्प काल के लिए ही सही, शान्त कर लिया। उसी वर्ष नवम्बर में वह भारत आया भी और बाल गंगाधर तिलक आदि नेताओं ने उसका स्वागत भी किया, किन्तु उसका कोई अनुकूल परिणाम नहीं निकला। उल्टे, २१ मार्च, १९१९ को 'रौलट एक्ट' बना जिसके अनुसार बिना मुकदमा चलाए किसी भी व्यक्ति को बन्दी बनाया जा सकता था। बाल गंगाधर तिलक, एनी बेसेण्ट तथा कांग्रेस के अन्यान्य नेताओं पर इसकी गम्भीर प्रतिक्रिया हुई। परिणामस्वरूप, २९ मार्च, १९१९ को सारे देश में हड़ताल और उपवास का निश्चय किया गया। दिल्ली में सत्याग्रह और प्रदर्शन किया गया। सरकार ने प्रदर्शनकारियों पर गोली-वर्षा की। दिल्ली और पंजाब में आन्दोलन को उग्र होते देख वहाँ के प्रवेश पर प्रतिबन्ध लगा दिया। फिर भी १३ अप्रैल, १९१९ को अमृतसर के जालियाँवाला बाग में एक सभा हुई और उसमें हजारों लोगों ने भाग लिया। जालिम डायर ने सभा में उपस्थित लोगों पर अन्धाधुन्ध गोलियों की बौछार करा दी। लगभग

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चार सौ व्यक्ति मरे और बारह सौ व्यक्ति गम्भीर रूप से घायल हुए। इतने पर भी सरकार का गुस्सा शान्त नहीं हुआ। दो दिन बाद पंजाब के पाँच जिलों को सैनिक शासन के हवाले कर दिया गया। लोगों को भयग्रस्त करने के लिए अमृतसर में जल और विद्युत की आपूर्त्ति रोक दी गई। किसानों की भीड़ों पर भी गोलियाँ चलाई गईं। इसकी प्रतिक्रिया में कांग्रेस का सन् १९१८ तक का केवल शिक्षितों तक सीमित आंदोलन जन-आंदोलन के रूप में परिणत हो गया। गाँधीजी जैसे राजभक्त भी राजद्रोही बन गये। बाल गंगाधर तिलक की उग्र राष्ट्रीयता ने कांग्रेस के माध्यम से जन-सामान्य की उग राष्ट्रीयता का स्वरूप गहण कर लिया। स्पष्ट है कि सन् १९२० में दिवंगत होनेवाले उग्र राष्ट्रीयता के जनक, उन्नायक और अग्रदूत श्री तिलक ने अपने कार्यों और अपनी आलोचनाओं से यह सिद्ध कर दिया कि भारतीय राष्ट्रीयता को अब कोई भी शक्ति दबा नहीं सकती।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाल गंगाधर तिलक : एक सच्चे राष्ट्रनायक

□ श्री रमाशंकर राय
एम० ए० (द्वय), बी० एड०

बाल गंगाधर तिलक का जन्म महाराष्ट्र के रत्नागिरि जिले में एक छोटे-से गाँव चिखल में २३ जुलाई, १८५३ ई० को हुआ था। इनके पिता पं० गंगाधर रामचन्द्र तिलक पहले एक साधारण शिक्षक थे, किन्तु बाद में उन्नति करके विद्यालय उप-निरीक्षक बन गये थे। बाल गंगाधर बचपन से ही अत्यन्त मेधावी थे। अध्यापक पिता से बालक तिलक ने थोड़े ही समय में बहुत कुछ सीखा। अभी इनकी शिक्षा अधूरी ही थी कि पिता उन्हें सर्वथा अकेला छोड़कर चल बसे। पिता की मृत्यु के समय तिलक दसवीं की परीक्षा दे रहे थे और माता तो उन्हें बहुत पहले ही, जब ये दस ही वर्ष के थे, अपनी स्नेहिल छाया से वंचित कर चुकी थीं। गणित और संस्कृत के अध्ययन में उनकी विशेष रुचि थी। संस्कृत की अनेक पुस्तकें इन्होंने बचपन में ही कण्ठस्थ कर ली थी। चरित्र की दृढ़ता, जो इनके जीवन का आजीवन संकल्प रही, इनके बालकाल में भी स्पष्ट दिखाई पड़ती थी।

तिलक का विवाह १४ वर्ष की आयु में ही हो गया था। उस समय तक ये महाविद्यालय में पढ़ रहे थे। तिलक की पत्नी उनकी अपेक्षा कहीं अधिक हृष्ट-पुष्ट थीं। इसीसे इनके मित्रों ने इन पर ताने कसने शुरु किये। उस समय तक तिलक का शरीर काफी कमजोर था। बाद में अपने दृढ़ संकल्प द्वारा व्यायाम करके अपने शरीर को खूब हृष्ट-पुष्ट बनाया और उसके बाद से उनका यह शरीर अत्यन्त आकर्षक बन गया। तिलक ने १८७६ ई० में बी० ए० और १८७९ ई० में एल० एल० बी० की परीक्षा उत्तीर्ण की। शिक्षा-काल में ही अपने मित्र आगरकर से मिलकर यह संकल्प लिया था कि सरकारी नौकरी नहीं करेंगे और जैसे भी संभव हो देश-सेवा में अपना जीवन लगा देंगे। देश-सेवा के लिए सर्वप्रथम शिक्षा प्रसार की आवश्यकता थी, अतः दोनों ने मिलकर एक स्वतन्त्र विद्यालय खोला, जो बाद में बहुत फला-फूला।

तिलक में दूरदर्शिता का बाहुल्य था। जनता में राष्ट्रीय विचारों के प्रचार-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रसार और नव-जागरण लाने के लिए लोकमान्य तिलक ने पत्रों का प्रकाशन प्रारं किया। १८८१ ई० में उन्होंने "केसरी" नामक पत्र का प्रकाशन प्रारंभ किया, यह पत्र मराठी भाषा में था अतः केवल महाराष्ट्र प्रदेश में ही लोकप्रिय हो सकता था, इसीलिये इस विचार से कि अन्य प्रान्तों तक नये विचारों का प्रसार हो सके 'मरहठा' नामक एक और पत्र अंगरेजी में निकालना प्रारंभ किया। इन पत्रों स्वतन्त्रता की आवाज जन-जन तक पहुँचाने में तिलक को आशातीत सफलता मिली। कुछ ही दिनों वाद इन पत्रों में कोल्हापुर राज्य में अंगरेजों के एजेण्ट द्वार वहाँ के राजा के प्रति किये गये कठोरतापूर्ण व्यवहार के संबंध मे कुछ लेख छपे इन लेखों के कारण तिलक और आगरकर पर मुकदमा चलाया गया और उन्हें चार-चार महीने की सजा हो गई। इससे ये दोनों बहुत शीघ्र सारे महाराष्ट्र प्रसिद्ध और लोकप्रिय हो गये। यह तिलक की पहली जेल-यात्रा थी।

महाराष्ट्र में पड़े भयंकर दुर्भिक्ष द्वारा १८९६ ई० में तिलक ने अपने समाचार पत्रों द्वारा पीड़ित जनता की पुकार सरकार के कानों तक पहुँचाने का प्रयत्न किया। सरकार इस पर भी मौन रही पर तिलक ने अपने पत्रों में सरकार की कठोर आलोचना की। उन्हीं दिनों पूना में भयंकर बीमारी फैलनी शुरु हुई एक ओर तो जनता दुर्भिक्ष और प्लेग के कारण असह्य कष्ट पा रही थी, दूसरी ओर सरकार ने विक्टोरिया की हीरक-जयन्ती-समारोह मनाना प्रारम्भ किया इससे जनता में अत्यन्त क्षोभ फैल गया। दामोदर चापेकर ने रैण्ड नामक एक अंगरेज अफसर पर गोली चला दी परन्तु उसके न पकड़े जाने के कारण इसका वदला तिलक से लिया गया। रैण्ड की मृत्यु के वाद सरकार ने पूना में जो अन्ध धुन्ध दमन और अत्याचार किये, उनका तिलक ने अपने पत्रों में डटकर विरोध किया था। इस पर सरकार ने इन्हें राजद्रोह के अभियोग में गिरफ्तार कर लि और डेढ़ वर्ष के कठोर कारावास का दण्ड दिया।

लोकमान्य तिलक "औरियन" नामक एक पुस्तक प्रकाशित करवा चुके थे इसमें वेदों के काल के सम्बन्ध में अत्यन्त विद्वत्तापूर्ण ढंग से विचार व्यक्त कि गया था। इस पुस्तक से उनकी ख्याति विदेशों तक फैल गई। जब तिलक कठोर कारावास की सजा दी गई, तो विदेशी विद्वानों ने अंगरेजी सरकार से अनुरो किया कि इतने बड़े विद्वान के साथ सामान्य अपराधियों का-सा व्यवहार न कि जाये। सरकार ने इस शर्त्त पर छोड़ना स्वीकार किया कि भविष्य में राष्ट्र-द्रोह फैलाने का वचन दें। किन्तु, तिलक ने ऐसा वचन देकर छुटने के वजाय जेल यंत्रणाएँ सहना अधिक पसन्द किया। एक साल की सजा भुगतने के बाद सरकार ने उन्हें छोड़ दिया, सारे देश में खुशियाँ मनाई गई क्योंकि उस दिन दिवाली थी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रामचन्द्रजी की मूर्त्ति की पूजा के साथ-साथ तिलक के चित्रों पर भी मालायें चढ़ाकर अपनी श्रद्धा प्रकट की। जेल-यातना का तिलक के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ा। आज की तरह उन दिनों के जेल परिष्कृत न थे, इसी कारण उनका वजन ११ किलो कम हो गया था।

परन्तु तिलक का मनोवल इतना ऊँचा था कि वे अंगरेजों के इस दमनात्मक अत्याचार से डिगे नहीं, पीछे पैर भी न रखा वरन् पूरे मनोयोग से कांग्रेस के कार्य-क्रमों में सक्रिय रूप से भाग लेने लगे। वे कांग्रेस को देश की राजनीतिक संस्था समझते थे किन्तु नरमदलीय नेताओं के साथ उनका बहुत मतभेद था। तिलक गरमदलीय विचार के थे। तिलक यह समझते थे कि नरमदलीय नेता स्वराज्य का भीख मांगकर सारे राष्ट्र को अपमानित-सा कर रहे हैं। दूसरी तरफ नरमदलीय नेताओं को यह भय था कि तिलक के हाथ में पड़ने से कांग्रेस एक राष्ट्रद्रोही संस्था घोषित कर दी जाएगी। इसीलिये १९०६ में जब तिलक का नाम कांग्रेस के अध्यक्ष पद के लिए प्रस्तावित किया गया तो नरमदलीय नेताओं ने जमकर विरोध किया। दोनों दलों में संघर्ष बढ़ता ही गया और दोनों का साथ मिलकर देशहित में कार्य करना प्रायः असम्भव हो गया। नरम दल का प्रभाव देश में कम हो गया और गरम दल के शीर्ष होने के कारण तिलक नवयुवकों और देश के कोटि-कोटि नागरिकों के मन और प्राणों में बस गये।

सुयोग भी ऐसा था कि अनेक आतंकवादी युवकों ने वंग-भंग को लेकर अँगरेज अफसरों पर गोलियों और बमों को फेंककर अपना असन्तोष प्रकट किया था। खुदीराम वोस का घोर आतंक उन दिनों छाया था किन्तु सरकार उन्हें पकड़ने में असफल रही और अपना क्रोध गरमदलीय कांग्रेसी नेताओं को गिरफ्तार कर निकाला। पिल्लमई को दस वर्ष की कड़ी कैद की सजा दी गई, तिलक अपने विरुद्ध लगे राजद्रोह के मुकदमे की पैरवी स्वयं कर रहे थे, किन्तु उन्हें भी छः वर्ष के कालापानी की सजा दी गई। तिलक की सजा सुनते ही सारे देश में मातम छा गया। विद्यालय, महाविद्यालय, दुकानें आदि बन्द रहीं। देश के इतिहास में यह पहली राजनीतिक हड़ताल थी। देश की सभी पत्र पत्रिकाओं में सरकार का जम-कर विरोध हुआ, किन्तु उसने बड़ी क्रूरता और कठोरता से उसे कुचल दिया। तिलक को माण्डले जेल में रखा गया और सामान्य कैदियों की तरह कठोरतापूर्वक व्यवहार किया। अपने इस लम्बे एकान्तवास में तिलक ने अध्ययन और लेखन का कार्य करते हुये विताया और अपना प्रसिद्ध ग्रंथ "गीता-रहस्य" जेल की कोठरी में ही लिखा।

इनकी पत्नी का स्वर्गवास इनके जेल के समय ही हो गया, यह इनके लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एक बड़ा आघात था। वर्मा की जलवायु तथा जेल-जीवन की कठोर यातना के कारण तिलक का स्वास्थ्य गिरने लगा था परन्तु सरकार इन्हें सजा के पहले छोड़ने को तैयार न थी किन्तु १६ जून १९१४ के ऐतिहासिक कारावासीय जीवन का अन्त हुआ। यह कठोर जेल-यात्रा इनके विचारों में कोई परिवर्तन न ला सकी। ये उतने ही गरमदलीय वने रहे। परन्तु नरम और गरम दल का यह संघर्ष इन्हें प्रिय न लगा और श्रीमती एनी वेसेन्ट के साथ मिलकर एक 'होम-रूल-लीग' की स्थापना की। इस नई संस्था के संगठन को लेकर तिलक ने कई प्रान्तों का दौरा किया। गाँधी से पूर्व ही तिलक ने स्वशासन के लिये जनता को ललकारा और तैयार किया। भारत सचिव श्री मांटेग्यू ने अपनी डायरी में लिखा था—"संभवतः इस समय भारत में सबसे शक्तिशाली तिलक हैं।"

एक अंगरेजी पत्रकार वैलेनराइन शिरोल ने तिलक पर अनेक निराधार आक्षेप किये थे, तिलक ने इंगलैण्ड जाकर शिरोल पर मानहानि का दावा किया किन्तु फैसला तिलक के विपक्ष में रहा। इंगलैण्ड में रहते हुये तिलक ने स्वाधीनता के लिये वहाँ के संसद सदस्यों में अधिक प्रचार किया। प्रथम विश्वयुद्ध के बाद भारत में अंगरेज सरकार के दमन का समाचार पाकर तिलक स्वदेश लौट आये। इस समय तक इनकी आयु ६४ वर्ष हो चुकी थी। ३१ जुलाई, १९२० के दिन छोटी-सी वीमारी के वाद सम्पूर्ण देश तिलक की मृत्यु का दुखद समाचार पाकर शोकाकुल हो गया।

बम्बई में समुद्र के किनारे चौपाटी पर तिलक की अन्त्येष्टि बड़ी धूमधाम से हुई। मूसलाधार वर्षा में भी लगभग तीन लाख व्यक्ति इस अन्त्येष्टि में उपस्थित थे। महात्मा गाँधी और पंडित नेहरू भी अन्तिम दर्शन के लिए वम्बई पहुँचे और गाँधी ने अर्थी में कन्धा देकर अपना स्नेह प्रकट किया। तिलक एक उच्च कोटि के विद्वान थे। उन्होंने तीन पुस्तकें लिखीं 'औरियन', 'आर्कटिक होम इन द वेदाज' और 'गीता-रहस्य'। एक राजनीतिक नेता के रूप में तिलक ने देश को एक नई दिशा दी, उसके लक्ष्य को स्पष्ट किया और स्वतन्त्रता आन्दोलन को गति प्रदान की। काँग्रेस को जीवन, चेतना और जागृति दी तथा नई शक्ति से सींचा। तिलक "स्वतन्त्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है और उसे हम लेकर ही रहेंगे" का उद्घोष कर युग-युग तक अपनी अमिट निशानी छोड़ भारतीयों को उत्प्रेरित कर गये हैं।

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक वास्तव में भारत के लिये स्वतन्त्रता की ज्योति जलाने वाले वह स्फुल्लिंग थे, जिसकी ज्योति युगों तक उन्हें विस्मृत नहीं होने देगी। यदि तिलक का आविर्भाव स्वतन्त्रता के यद्ध की प्रारम्भिक परिस्थितियों

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

को सुदृढ़ बनाकर स्वदेशी आन्दोलन को उग्रतर करने के लिये न हुआ होता तो स्वतन्त्रता की मंजिल सम्भवतः इतनी निकट न होती। तिलक ने एक साथ देशवासियों में नैतिकता, स्वदेशानुराग, त्याग, तत्परता और देशहित में सर्वस्व बलिदान कर देने की ओजस्विता भर दी। तिलक ने स्वयं को स्वार्थ और परिवार के हितों से दूर रखकर स्वदेश और गुलामी की बेड़ियों को काटने के लिये घर, परिवार, स्त्री, पुत्रादि तथा धन का बलिदान कर दिया। तिलक जितने दिन जीवित रहे शान, आन और बान की हिमाकत पर रहे और अंग्रेजी सरकार की छड़ को झकझोड़ देने में समर्थ रहे।

हमें लोकमान्य तिलक ऐसे महापुरुषों का नामोल्लेख करने में मस्तक गर्व से ऊँचा होता है, सीना तन जाता है और अंग-अंग में गर्म रक्त प्रवाहित होने लगता है। प्रत्येक भारतीय का जन-मानस यह सोचने के लिये विवश हो जाता है कि तिलक, विवेकानन्द तथा गोखले जैसे सपूतों ने भारत की धरती पर अवतीर्ण होकर मातृऋण से अपने को मुक्त किया तथा यशः शरीर निर्वाण को प्राप्त किया। तिलक गांधी के अग्रज थे और स्वतन्त्रता की लड़ाई को वहाँ लाकर छोड़ गये जहाँ से उनके प्राप्ति की मंजिल पूर्णतः आसान हो गई। हम धन्य हैं और निहाल हो उठते हैं, जब तिलक की पावन स्मृति मन और प्राण को तन्मयता से उनके प्रति श्रद्धालु बना देती है। धन्य हैं तिलक और उन्हें पाकर यह भारत की धरती तथा देशवासी भी धन्य हैं।

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महान् पत्रकार तिलक

□ श्री रवीन्द्र सनातन

गाँधी जी ने जिन्हें अजेय सागर कहा था, रौलट कमेटी ने जिन्हें सर्वा अधिक भयावह व्यक्ति घोषित किया था और जनता 'लोकमान्य' और 'महाराष्ट्र केसरी' कहकर जिन पर गर्व करती है उन बाल गंगाधर तिलक के राजनीतिक कार्यों और दार्शनिक विचारों से तो लोग परिचित हैं पर बहुत कम लोग इस सत्य से परिचित हैं कि तिलक सर्वप्रथम पत्रकार थे और उसके बाद कुछ और।

उत्तर प्रदेशीय सरकार ने दो वर्ष तक तिलक जयन्ती समारोह धूम-धाम से मनाया था। इनका जन्म २३ जुलाई, १८५६ को महाराष्ट्र परिवार में हुआ था। परिवार से इन्हें यदि कुछ मिला तो वह था—स्वाभिमानी पिता रामचन्द्र गंगाधर राव का स्वाभिमान। हाई स्कूल की परीक्षा पास करते ही तिलक की अग्नि-परीक्षा शुरू हुई।

उस समय महाराष्ट्र में ठोस समाज सुधारकों की कमी नहीं थी। तिलक ने चिपलूणकर जी को वचन दिया था कि वे स्कूल खोलेंगे और उसी में पढ़ायेंगे। अतः बी० ए० और एल० एल० बी० की डिग्री प्राप्त करके भी तिलक ने वकालत न कर १ जनवरी १८८० ई० को १८ विद्यार्थियों को लेकर स्कूल खोलना अधिक श्रेयस्कर समझा। इनकी अटूट साधना यहीं से आरंभ हुई और चिपलूणकर जी की मृत्यु से भी इनका साहस नहीं टूटा। चार वर्षों में ही विद्यार्थियों की संख्या १००० हो गई।

स्कूल खोलने के एक वर्ष बाद ही तिलक और उनके सहयोगी आगरकर तथा चिपलूणकर ने 'मराठा' (अंग्रेजी) और 'केसरी' (मराठी) नामक दो साप्ताहिक पत्रों का प्रकाशन आरम्भ किया। पराधीन देश के उस दूषित वातावरण में इन पत्रों ने सजग प्रहरी का कार्य किया और अनेक यातनाओं को हँसते-हँसते झेला। 'केसरी' द्वारा उनके राष्ट्रीय विचार गाँव-गाँव फैले और लगभग ५० वर्ष तक निरन्तर कष्ट झेलते हुए भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के लिये उन्होंने एक विशाल क्षेत्र तैयार कर दिया था।

'केसरी' के लेखों के कारण तिलक को बार-बार संकट में पड़ना पड़ा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उनके संबंध में चलाये गये मुकदमों ने स्वयं ही राष्ट्रीयता के प्रचार का अच्छा कार्य किया। बड़ौदा और कोल्हापुर के राज्यों के दीवानों के कुप्रबन्ध की कड़ी आलोचना 'केसरी' में हुई। कोल्हापुर के दीवान ने 'केसरी' पर मुकदमा चला दिया। तिलक ने सारा उत्तरदायित्व अपने ऊपर ले लिया जिसके लिये उन्हें सजा भी हो गई। पत्रकारिता ने उन्हें जेल से प्रथम बार परिचित कराया।

कुछ भी लिखते समय, तर्क करते समय, जानकर अपनी सजा कराते समय और विवाद बढ़ाते समय तिलक की दृष्टि सदा एक लक्ष्य की ओर रहती थी और वह लक्ष्य था—भारतीय जनता के सम्मुख अंग्रेजी राज्य का सच्चा चित्र प्रस्तुत करना और जनता को जाग्रत करना। उसी से वे यह जानते हुए भी कि सफलता नहीं मिलेगी, सन् १९१८ में सर वैलेन्टाइन शिरोल पर मानहानि का मुकदमा चलाने इंगलैंड गये। वैलेन्टाइन ने अपनी पुस्तक 'इंडियन अनरेस्ट' में तिलक पर अपमानजनक आक्षेप किया था। उसमें तिलक असफल रहे पर सच्ची सफलता उन्हें इस रूप में मिली कि जनता को अंग्रेजों का सच्चा रूप ज्ञात हो गया। 'होम रूल' की मांग करते समय स्वराज्य को अपना जन्मसिद्ध अधिकार बताते समय सर्वदा ही तिलक ने जन-भावनाओं का प्रतिनिधित्व किया। अंग्रेज भी तिलक को खूब पहचानते थे। भारत सचिव माण्टेग्यू ने अपनी डायरी में लिखा था—"संभवतः इस समय भारत में सबसे अधिक शक्तिशाली तिलक ही हैं।"

प्रचलित गणपति उत्सव को इन्होंने नया रूप दिया। शिवाजी उत्सव तो राष्ट्रीय परमाणुओं को एक सूत्र में बांधने का अच्छा माध्यम सिद्ध हुआ। इन उत्सवों के आयोजन और संचालन ने अंग्रेजों को यह प्रचार करने का अवसर दिया कि तिलक मुसलमानों के दुश्मन हैं। इन आरापों का उत्तर तिलक ने २४ जून, १९०५ के 'मराठा' में दिया। "वीरपूजा मानव का स्वाभाविक गुण है। शिवाजी समारोह मुसलमानों की भावनाओं को टेस पहुंचाने के लिये नहीं है। पूजा व्यक्ति की नहीं, उसकी भावनाओं की होती है। हिन्दू और मुसलमान दोनों एक नाव पर सवार हैं। दोनों पराधीन! हमें मिलकर विदेशी शासन को हटाना है। क्या हम दोनों ही ऐसे अवसर पर शिवाजी के जीवन से प्रेरणा नहीं ग्रहण कर सकते? व्यक्तिगत रूप से मुझे कोई आपत्ति न होगी यदि अकबर या अन्य किसी वीर के सम्मान में उत्सव किया जाय। जैसे मुसलमानों के त्योहार में हिन्दू शामिल होते हैं, शिवाजी के उत्सव में मुसलमान भी सम्मिलित हो सकते हैं ···· ···· क्या ब्रिटेन में नेल्सन और फ्रांस में नेपोलियन की पूजा पर दोनों में से कोई प्रतिबन्ध लगा सका है? फिर क्या कारण है कि ये गोरे और अधगोरे लेखक शिवाजी समारोह के प्रश्न पर भारत के हिन्दुओं और मुसलमानों में भेद डालना चाहते हैं?"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सन् १८९७ का वर्ष अकाल और प्लेग के लिये बदनाम है। २२ जून, १८९७ को चापेकर बन्धुओं द्वारा रैंड तथा सेंडहर्स्ट की जो हत्या की गई, जनता ने उसका स्वागत मौन रह कर किया। क्रांतिकारियों और आतंकवाद को उभाड़ने का दोषारोपण तिलक पर किया गया। अकाल और प्लेग की स्थिति में भी लगान वसूली के लिये लोगों पर अत्याचार हो रहे थे। उस समय तिलक ने 'केसरी' में लिखा— "यदि तुम्हारे पास सरकार को देने के लिये धन है तो अवश्य दो। लेकिन यदि नहीं है तो क्या तुम अपना माल असबाब केवल इसलिये बेच डालोगे कि छोटे-मोटे सरकारी अमलों का कोप-भाजन न होना पड़े? मृत्यु सम्मुख देखकर भी क्या तुममें तनिक-सा साहस नहीं जागता?" उस समय गोरे सिपाही घरों में घुसकर स्त्री-बच्चों की जाँच करते और वर्तन तक उठा ले जाते थे।

रैंड की हत्या के बाद 'केसरी' के लेख के कारण तिलक को राजद्रोह में पकड़ा गया। उस समय राजद्रोह की सक्षिप्त परिभाषा यही थी कि सरकार को जो कुछ भी असुविधाजनक दीख पड़े वही राजद्रोह है। तिलक से कहा गया कि कह दें कि लेख उनके लिखे नहीं हैं। पर तिलक का सीधा उत्तर था—"जीवन में ऐसे क्षण भी आते हैं जब अपने ऊपर हमारा अपना अधिकार नहीं रह जाता, वरन् अपने साथियों के प्रतिनिधि के रूप में आचरण करना पड़ता है। न्यायालय ने उन्हें डेढ़ साल के कारावास का दण्ड दिया।

जिस समय सन् १८९९ में इन्होंने सेंडहर्स्ट की निन्दा का प्रस्ताव रखा, उस समय कांग्रेस की स्थिति यह थी कि उस प्रस्ताव के विरोध में सभापति रमेशचन्द्र दत्त त्यागपत्र देने को तैयार हो गये। तिलक जरा भी निराश नहीं हुए। गांधी जी ने उनके विषय में ठीक ही लिखा था —"...उनका उद्देश्य स्वराज्य था जो प्रत्येक भारतीय का जन्मसिद्ध अधिकार है और उसे वह लेकर ही रहेगा।" तिलक अपने समय से भी आगे चलने वाले व्यक्ति थे। तिलक के विचारों के कारण सरकार काफी डर गयी थी और अवसर ढूंढ़ रही थी।

सन् १९०८ में 'सेडीशस मीटिंग्स ऐक्ट' और 'इंडियन न्यूजपेपर्स ऐक्ट' का पास होना लिखने की स्वतंत्रता छीनने का एक वैधानिक बहाना था। 'केसरी' में कुछ लेखों के कारण तिलक पर मुकदमा चलाया गया और उन्हें ६ वर्ष की कैद और १००० रुपये जुर्माने का दंड मिला। इस अवसर पर अदालत में तिलक ने कहा— "इस संसार के ऊपर भी एक शक्ति है जिसके इशारे पर यहाँ समस्त व्यापार चलते हैं। संभव है, उनकी यही इच्छा है कि जिस काम को मैंने थोड़ा उठाया है वह मेरे स्वतंत्र रहने की अपेक्षा मेरे कष्ट सहन से ही अधिक फूले-फले।' पत्रकारिता के पवित्र कर्तव्य का पुरस्कार भयानक मिला और सरकार के विरुद्ध देश भर में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हड़तालें हुईं, विद्यार्थियों ने विद्यालयों को छोड़ दिया और बंबई के मिल-मजदूर भी ६ दिन तक हड़ताल किये रहे।

मांडले जेल में ही इनका "गीता रहस्य' तैयार हुआ और सन् १९१५ में प्रकाशित हुआ। तिलक 'गीता सुगीता कर्त्तव्या किमन्यैः शास्त्रविस्तरैः' के समर्थक थे। वे स्वयं अनासक्त कर्मयोग के उपासक थे। वे वही लिखते तथा कहते थे जो वे थे। यही कारण है कि 'गीता रहस्य' पुस्तक ने राष्ट्रीयता को सुरक्षित रखने में बड़ी सहायता की और इतनी लोकप्रिय हुई कि एक सप्ताह में ही उसकी ५००० प्रतियां बिक गयीं।

पुनः ७ मई, १९१६ को उन पर उनके तीन भाषणों के कारण मुकदमा चला। उसमें हाईकोर्ट ने नीचे की अदालत के निर्णय को उलट दिया। इससे जनता में तिलक के प्रति प्यार और श्रद्धा की ऐसी भावना उमड़ उठी कि उनके ६१वें जन्म दिवस पर उन्हें सारे देश का सम्मान मिला और एक लाख रुपये की थैली अर्पित की गई। एक सच्चे पत्रकार के इस सौभाग्य से बड़े-बड़े देवता भी ईर्ष्या कर सकते हैं।

तिलक महान लेखक होने के साथ ठोस विचारक भी थे। खिलाफत के समय उन्होंने कहा था कि मेरे विचार से मुसलमानों को स्वयं आगे बढ़ना चाहिये और हिन्दुओं को चाहिये कि वे उनके निश्चय का साथ दें। महायुद्ध में सरकार को बिना शर्त सहायता देने के पक्ष में गांधी जी थे। तिलक का कथन था कि यदि सरकार हमें स्वराज देने का वादा करे तो हम सहायता कर सकते हैं। युद्ध समाप्त होते ही रौलट ऐक्ट, पंजाब हत्याकांड, जलियाँवाला बाग कांड आदि हमें पुरस्कार स्वरूप मिले और सिद्ध हो गया कि तिलक की नीति यथार्थवादी थी।

तिलक का प्रभाव उत्तर प्रदेश की पत्रकारिता पर भी बहुत स्पष्ट पड़ा। उसका वर्णन करना यहाँ अभीष्ट नहीं। अभी कुछ दिनों पूर्व स्व० अंगूरिया जी से सम्बन्धित कुछ लेखों को देखा था। उसमें एक स्थल पर मेरे एक मित्र पत्रकार ने लिखा था कि १५ वर्षों पूर्व संवाददाता का कार्य आजकल की तरह रोब गांठने और अधिकारियों तथा नेताओं के साथ चाय पीने का नहीं था, बल्कि तलवार की धार पर चलने के समान था। स्पष्ट है कि तिलक के समय और भी भीषण स्थिति रही होगी। तिलक ने आग की लपटों में होकर मार्ग तय किया और वह भी हँसते हुए, अडिग विश्वास के साथ।

अब तो तिलक का त्याग, तिलक की निष्ठा, उनका गहन पांडित्य और सुदृढ़ धर्मनिष्ठा सब कुछ पत्रकार जगत् के लिये पुरातत्व की बातें हो गयी हैं और कहानी मात्र प्रतीत होती हैं। विश्वास है, हम सभी उनके पवित्र जीवन से कुछ प्रेरणा ग्रहण करेंगे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महान लोकशिक्षक : लोकमान्य तिलक

□ डॉ० परमानन्द पाण्डेय

इस पुण्यभूमि पर समय-समय ऐसे महात्माओं का अवतार होता रहा है जो अपने लिए नहीं, बल्कि समाज, राष्ट्र और विश्व के लिए जीवन-धारण करते हैं। पुण्यश्लोक लोकमान्य तिलक ऐसे ही ऋषिकल्प महात्मा थे। उनमें विद्वत्ता, राष्ट्रीयता एवं अध्यात्म का अद्‌भुत समन्वय था। उन्होंने सर्वात्मना अपने को राष्ट्र के लिए समर्पित कर दिया था। कहना न होगा कि वे आजीवन अपनी बौद्धिक चेतना, त्याग-तपस्या, और राष्ट्र-भावना द्वारा राष्ट्र का समुचित मार्ग-दर्शन करते रहे।

बचपन में ही वे इतने मेधावी थे कि सहज ही अनुमान किया जा सकता था कि उनकी सारी विद्या पूर्वार्जित थी। उन्होंने १२ वर्ष की अवस्था में ही आग्रहपूर्वक पिता से आज्ञा प्राप्त कर बाणभट्ट की कादम्बरी जैसे ग्रन्थ का आद्योपान्त अध्ययन किया था। इससे पता चलता है कि संस्कृत-साहित्य में उनकी कितनी अभिरुचि थी। इतना ही नहीं, स्कूल में पढ़ते समय ही उन्होंने संस्कृत में सुन्दर श्लोकों की रचना कर अपनी कवित्व-शक्ति का परिचय दिया था। कालेज में जाने पर उनकी काव्य-प्रतिभा और अधिक विकसित हुई, फलस्वरूप उन्होंने, "मातृ-विलाप" नामक उत्तम काव्य की रचना कर अपने सहपाठियों के अतिरिक्त विद्वान् प्राध्यापकों की भी विपुल प्रशंसा अर्जित की। 'मातृ-विलाप" काव्य के निम्न-लिखित श्लोकों से उनके विलक्षण काव्य-शिल्प का परिचय मिलता है—

पितरौ प्रथमं ततः सुतो हननस्य क्रम एष भो विधे।
तनयः प्रथमं कथं त्वया मम नीतः प्रतिकूलचारिणा ।।

न भवान् भवनाद् बहिर्गतोऽनुमतिं प्राप्य कदापिनो मम।
अधुना परिहाय मां कथं सुत नापृच्छय दिवं प्रयास्यसि ।।

यह एक असामान्य बात थी कि साहित्य और गणित में भी इनकी समान गति थी। अपने कालेज के प्राध्यापकों और छात्रों में वे अपने गणित-ज्ञान के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विख्यात हो गये थे। डेकन कॉलेज में प्रथम वर्ष की परीक्षा में उत्तीर्ण होने के बाद अंगरेजी के अध्ययन के लिए आप एलफिन्स्टन कॉलेज, बम्बई चले गये। वहाँ अंगरेजी के सुप्रसिद्ध कवि वर्ड्स्वर्थ के पौत्र प्रो० वर्ड्स्वर्थ अंगरेजी के तथा प्रो० हृथार्नवेट गणित के प्राध्यापक थे। प्रो० हृथार्नवेट से जब कोई विद्यार्थी गणित का कठिन प्रश्न पूछता, तब वे उसे तिलक के पास भेज दिया करते थे।

किन्तु एलफिन्स्टन कालेज में तिलक का मन नहीं लगा और वे पुनः डेकन कॉलेज में आ गये। यहाँ गणित के अतिरिक्त खगोलशास्त्र के अध्ययन की ओर उनकी अभिरुचि हुई। अतः गणित और खगोलशास्त्र के प्रसिद्ध विद्वान प्राध्यापक प्रो० छत्रे से उन्होंने खगोलशास्त्र का प्रायौगिक अध्ययन किया और इस विषय में भी उन्होंने पारगामिता प्राप्त की थी। गणित और खगोलशास्त्र में उनकी विलक्षण मेधा को देखकर प्रो० छत्रे अत्यन्त प्रभावित थे। कहा जाता है कि अन्तिम अवस्था में जब छात्र-समुदाय ने प्रो० छत्रे से पूछा कि आपके बाद खगोल-विद्या का क्या होगा, इस पर उन्होंने उत्तर दिया कि यदि तिलक चाहेगा, तो बहुत कुछ कर सकेगा। तिलक की असाधारण प्रतिभा पर उनको पूर्ण विश्वास था।

डेकन कालेज में वकालत पढ़ते समय एक एम० ए० के छात्र श्रीगोपाल गणेश आगरकर से तिलकजी की मैत्री हो गई। वास्तव में, यहीं से उनका राष्ट्रीय जीवन शुरू होता है। आगरकर भी उन्हीं की तरह विद्याव्यसनी और राष्ट्रीय विचारधारा के व्यक्ति थे। इसलिए दोनों में अभिन्नता होना स्वाभाविक था। दोनों का जीवन राष्ट्रार्पित था। अपने देश के उद्धार के लिए दोनों में एक प्रकार की बेचैनी थी। दोनों का मत था कि जबतक आमलोगों को शिक्षित नहीं किया जायगा, देश का उद्धार असम्भव है। किन्तु, उस समय की शिक्षा अधिक व्ययसाध्य होने के कारण सर्वसुलभ नहीं थी। उसी समय दोनों मित्रों ने अनुभव किया कि देश में ऐसी शिक्षण संस्थाओं की आवश्यकता है, जो कम खर्च में ठोस और उपयोगी शिक्षा दे सकें। ऐसा सोचकर दोनों ने अपनी धारणा के अनुरूप एक विद्यालय खोलने का दृढ़ संकल्प किया। इस कार्य में उनको न्यायमूर्त्ति रानाडे का भी समुचित मार्ग-दर्शन मिला।

संयोगवश, इसी समय प्रसिद्ध राष्ट्रवादी विष्णु शास्त्री चिपलुणकर ने सरकारी नौकरी से पदत्याग कर दिया था। चिपलुणकर मराठी-साहित्य के सुख्यात विद्वान और लेखक थे। ये सन् १८७४ ई० से ही स्वदेश, स्वभाषा और स्व-संस्कृति की सेवा के उद्देश्य से "निबन्ध-माला" नामक मासिक पत्रिका का सम्पादन कर रहे थे। ये भी एक स्कूल चलाना चाह रहे थे, जिसमें देश के बालकों को उपयोगी शिक्षा दी जा सके। तिलक और आगरकर ने मिलकर विचार-विमर्श किया। फलस्वरूप सन् १९०० ई० की पहली जनवरी को पूर्व संकल्पित स्कूल खोला गया,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जिसका नाम "न्यू इंगलिश स्कूल" रखा गया। स्कूल का उद्देश्य था—देश-वासियों को अनुकूल शिक्षा मिले, उन्हें भारतीय संस्कृति एवं देश की वर्त्तमान स्थिति की जानकारी हो, शिक्षा का माध्यम मातृभाषा हो तथा साहबी रीति-नीति एवं वेश भूषा का परित्याग किया जाय। संस्कृत के सुप्रसिद्ध विद्वान् एवं कोशकार श्री वामन शिवराम आप्टे भी इस स्कूल में आ गये, इसके अतिरिक्त और भी योग्य शिक्षकों की सेवा स्कूल को प्राप्त थी। तिलक स्वयं गणित पढ़ाते थे। यह स्कूल काफी लोकप्रिय हो गया और कुछ ही वर्षों में इसकी छात्र-संख्या हजार तक पहुँच गई। प्रथम वर्ष में ही, इसकी मैट्रिक परीक्षा का फल ७५ प्रतिशत तथा दूसरे वर्ष ८६ प्रतिशत हो गया। स्कूल की अद्भुत सफलता देखकर तत्कालीन शिक्षा-आयोग के अध्यक्ष सर विलियम हंटर ने कहा था—"......सारे हिन्दुस्तान में इसकी वरा-वरी करने वाला एक भी स्कूल देखने में नहीं आया।......दूसरे देशों से तुलना करने पर भी इसी का नम्बर ऊपर आयगा।" इस विद्यालय के माध्यम से वास्तव में देश के वालकों को राष्ट्रीयता एवं स्वावलम्बन की शिक्षा मिलती थी। केवल अंगरेजी हुकुमत को चलाने के लिए मुलाजिमों को पैदा करना इसका उद्देश्य नहीं था। इस तथ्य को स्वीकारते हुए प्रो० वर्डस्वर्थ ने कहा था—"सुशिक्षित लोग सरकारी नोकरी की अपेक्षा न रखकर तमाम व्यवसायों में स्वावलम्बन के आधार पर उच्च-स्थान और कीर्त्ति प्राप्त करें, इससे उदार भावना और क्या हो सकती है? भारत के भावी इतिहास पर ऐसी भावना का स्थायी परिणाम हुए विना नहीं रह सकता।" इस प्रकार इस स्कूल की स्थापना तिलक, विष्णु शास्त्री और आगरकर ने की थी, किन्तु इसकी व्यवस्था और प्रगति का सारा भार मुख्यतः तिलक और माधवराव नामजोशी पर था।

इसके वाद कालेज खोलने का निश्चय किया गया और अर्थसंग्रह का भार उक्त दोनों महानुभावों को सौंपा गया। इन लोगों ने महाराष्ट्र की देशी रियासतों से चन्दा करके ५० हजार रुपये संग्रहित किये और वम्बई के तत्कालीन गर्वनर के नाम पर "फरग्यूसन कालेज" की स्थापना हुई। सन् १८८४ ई० की जनवरी में इसमें प्रथम वर्ष, इण्टरमीडिएट की पढ़ाई विधिवत् शुरु कर दी गई। यह शिक्षा संस्था भी अपने-आप में अद्वितीय थी। "मण्डल" की योजना के अनुसार सम्पूर्ण महाराष्ट्र में खुलने वाले नये स्कूलों के लिए शिक्षकों तथा कार्यकर्त्ताओं को तैयार करना भी इसका मुख्य उद्देश्य था।

इस प्रकार, हम देखते हैं कि लोकमान्य तिलक तथा इनके मित्रों ने स्कूल कालेज खोलकर देशवासियों को उपयोगी राष्ट्रीय शिक्षा देने का प्रबन्ध किया और वे स्वयं भी शिक्षक का कार्य करते रहे। किन्तु, स्कूल-कॉलेजों में तो केवल निश्चित वय के विद्यार्थियों को ही शिक्षा दी जा सकती है। इस आयु सीमा के वाद लोगों

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

को भी राष्ट्रीयता, संस्कृति, देश की वर्तमान स्थिति आदि की शिक्षा दिये बिना देश का उद्धार सम्भव नहीं। फलतः न्यू इंगलिश स्कूल की स्थापना के बाद युवक तिलक और इनके साथियों ने लोकशिक्षा के सशक्त माध्यम के रूप में अंग्रेजी में "मराठा" और मराठी में "केसरी" नामक पत्र निकालने का निश्चय किया। इन दोनों पत्रों का विज्ञापन "नेटिव ओपिनियन" नामक पत्र में प्रकाशित किया गया था, जिसमें स्वतन्त्र विचारधारा और निर्भीक पत्रकारिता की स्पष्ट घोषणा की गयी थी।

"मराठा" और 'केशरी" के द्वारा देश की जो सेवा की गई, वह सर्वविदित और चिरस्मरणीय है। '.मराठा" और "केसरी" के सम्पादक के रूप में लोकमान्य तिलक ने विविध विषयों पर अनेक लेख लिखकर भारतीय जनता को राष्ट्रीयता एवं स्वावलम्वन की शिक्षा देने का पुनीत कार्य किया।

इसके अतिरिक्त सुप्रसिद्ध "गीता रहस्य" टीका लिखकर समस्त मानवजाति को कर्मयोगशास्त्र की शिक्षा देकर उन्होंने बताया कि "गीता में ज्ञानमूलक भक्ति प्रधान कर्मयोग का ही प्रतिपादन किया गया है जिससे कि कर्म करने पर भी पाप नहीं लगता और अन्त में उसी से मोक्ष मिलता है। उन्होंने स्पष्ट रूप में कहा कि गीता निवृत्ति प्रधान नहीं, कर्म प्रधान है। प्रस्तावना में उन्होंने बताया कि सच्चा धर्म और कर्त्तव्य का तात्त्विक दृष्टि से उपदेश देने के लिए ही गीता की रचना हुई। इस प्रकार, उन्होंने कर्मयोगशास्त्र की शिक्षा देकर देशवासियों को कर्म की ओर प्रवृत्त किया।

उन्होंने "ओरायन" नामक अनुसन्धानपूर्ण ग्रंथ लिखकर विदेशी विद्वानों के मतों का खण्डन करते हुए वेदों का रचना-काल ईस्वी सन् के ४००० वर्ष पूर्व सिद्ध किया। 'आर्कटिक होम इन द वेदाज' नामक ग्रन्थ के द्वारा उन्होंने यह प्रमाणित किया कि मूल रूप से आर्य उत्तरी ध्रुव के समीपस्थ प्रदेश के निवासी थे।

इतना ही नहीं लोकमान्य तिलक ने देशवासियों को स्वराज्य की शिक्षा देते हुए बताया कि स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। स्मरणीय है, उस जमाने में "लाल", "बाल", "पाल' (लाला लाजपतराय, बाल गंगाधर तिलक और विपिनचन्द्र पाल) गरम दल के नेता थे और वे अपना स्वराज्य का अधिकार लड़कर लेना चाहते थे। उनका मत था कि भीख माँगने से स्वराज्य नहीं मिलता। उन्होंने उग्र रूप से स्वतन्त्रता आन्दोलन में सक्रिय भाग लिया और कठिन कारावास की सजा भी पायी, किन्तु अंगरेजों के सामने कभी झुके नहीं। उसी समय अंगरेजी हुकुमत की नींव हील गयी थी। किन्तु, देश का दुर्भाग्य था कि सन् १९२० ई० में इस महान् नेता का निधन हो गया और देश का नेतृत्व "नरम दल" के नेताओं के हाथ में चला गया।

इस प्रकार, हम पाते हैं कि महात्मा लोकमान्य तिलक एक महान् एवं आदर्श लोकशिक्षक थे। आज राष्ट्र के निर्माण के लिए ऐसे ही महान् और आदर्श चरित्र का अध्ययन एवं आचरण अपेक्षित है। ☐

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तिलक का सामाजिक दर्शन

□ डॉ० रेणुका देवी

बाल गंगाधर तिलक भारत के सच्चे राष्ट्रवादी नेता थे। उनका सामाजि दर्शन, राजनीतिक दर्शन, धार्मिक दर्शन भारतीय परम्परा की उपज है। प्रसि अँग्रेज विचारक वेलेन टाइन शिरोल ने तिलक के सम्बन्ध में कहा है कि ति सम्प्रदाय चिन्तना में राजनीतिक अतिवाद और सामाजिक परम्परावाद का गठब करते चलने वाले उग्रवादी व्यक्तित्व थे। वेलेनटाइन शिरोल की इस धार को अनेक आलोचक एवं इतिहासकार दोहराते रहे हैं। तिलक ने अपने सामाजि दर्शन की चिन्तना में यह स्पष्ट कर दिया है कि पाश्चात्य आधार पर सामाजि परिवर्तन नहीं होना चाहिए। परिवर्तन का आधार भारतीयकरण है। यह न होना चाहिए कि भारत के सामाजिक परिवर्तन में पाश्चात्य की नकल की जा इसी से तिलक शुद्ध भारतीयकरण के पक्षपाती थे। भारतीयकरण से उनका अभि था देशी मन से सामाजिक परिवर्तन की कामना। उनका स्पष्ट मत है कि पाश्च जगत की नकल के आधार पर परिवर्तन ठीक नहीं है। तिलक कभी भी हर प्र के परिवर्तन के विरूद्ध नहीं रहे हैं। हाँ! इतना अवश्य था कि परिवर्तन के सं में वे दो तथ्यों पर विशेष ध्यान देते थे—

(१) परिवर्तन का आधार पाश्चात्यीकरण नहीं होना चाहिए।

(२) सर्व प्रथम सामाजिक परिवर्तन की अपेक्षा राजनीतिक परिव अपेक्षित है।

यही कारण है कि तिलक के सामाजिक दर्शन में सामाजिक परिवर्तन अपेक्षा सर्वप्रथम राजनीतिक मुक्ति को प्राथमिकता दी गई है। उनकी यह धार थी कि यदि ब्रिटिश नौकरशाही से मुक्त होना है तो सबसे आवश्यक यह है व्यक्ति भारत की सामाजिक एवं धार्मिक एकता को अक्षुण्ण रखे। सामाजिक सु सामाजिक विघटन के हेतु होते हैं। अतः विघटन की प्रवृत्तियों को प्रोत्साहित क वाले समाज सुधार ठीक नहीं है। उनकी दृष्टि में यह था कि सामाजिक प्र राजनीतिक मुक्ति की कसौटी नहीं हो सकती।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तिलक को सामाजिक एवं धार्मिक सुधार में विदेशी नौकरशाही का हस्तक्षेप पसन्द नहीं था, क्योंकि विदेशी नौकरशाही शक्ति के केन्द्रीकरण पर आधारित थी। उसकी कार्य प्रणाली एक प्रकार से यांत्रिक, अस्वाभाविक और पुराने ढंग की थी।

तिलक ने दो प्रस्तावनाएं निरूपित की हैं—

(१) तिलक सामाजिक सुधार को प्राथमिकता देने के विपक्ष में थे, क्योंकि उनका कहना था कि समय की मांग है कि सभी शक्तियों को केन्द्रित होकर राजनीतिक मुक्ति के लिए जुट जाना चाहिए। राजनीतिक मुक्ति होने पर स्वतः समाज सुधार हो जायेगा।

(२) जो भी सामाजिक सुधार अपेक्षित हैं उसका क्रम धीरे-धीरे और शिक्षा के माध्यम से होना चाहिए। तिलक समाज की अवयवी प्रकृति में विश्वास करते थे। तिलक इससे क्षुब्ध थे कि भारतीय परिषद्, जहाँ निर्वाचित सदस्यों का बहुमत नहीं है, समाज सुधार का काम कर रही है।

तिलक ने अपनी सामाजिक चिन्तना में स्पृश्यता की प्रथा के विपरीत थे। उन्होंने गणेशोत्सव में बड़ी जाति के सदस्यों के साथ छोटी जाति के सदस्यों को मूर्त्ति लेकर चलने की मान्यता दी थी। उनकी घोषणा थी कि स्पृश्यता का अन्त होना चाहिए। सभी भारतवासी एक हैं इसलिए स्पृश्यता को किसी भी नैतिक एवं आध्यात्मिक आधार पर उचित नहीं ठहराया जा सकता। उनका यह कथन था कि "अगर ईश्वर भी स्पृश्यता को सहन करने लगे तो मैं ऐसे ईश्वर को कदापि मान्यता न दूंगा।"

तिलक परम्परावादी थे पर उन्होंने अपने को बदलती परिस्थिति के अनुरूप ढाला भी। वे विभिन्न जातियों में विवाह के विरूद्ध थे, परन्तु उनका यह कभी भी मत नहीं था कि एक ही जाति की विभिन्न उपशाखाओं में विवाह न किया जाय। उनका यह मत था कि विधवा विवाह शास्त्रीयता से ठीक नहीं है पर दूसरी तरफ वे यह भी कहते थे कि अगर ऐसे विवाह होते हैं तो उन्हें जाति से च्युत नहीं माना जाना चाहिए। तिलक लोकतन्त्रवादी थे और जनता द्वारा अपना अनुगमन कराना चाहते थे। तिलक युरोपीयकरण की प्रवृत्तियों के विरूद्ध परम्परागत सामाजिक, धार्मिक व्यवस्था के पक्षपाती थे। वे जनशक्ति में विश्वास करते थे। इसलिए उनकी स्थापना में समाज का हर प्राणी महत्त्वपूर्ण है। सामान्यजन को देश की राजनीतिक क्रान्ति के लिए नकारा नहीं जा सकता। उन्होंने पूर्णतया हिंसा का विरोध नहीं किया। यद्यपि वे हिंसा का प्रचार नहीं कर रहे थे। फिर भी अहिंसा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उनका मूलमंत्र नहीं था। तिलक ने अपने सामाजिक दर्शन में कर्म की साधना पर बल दिया है। उनकी दृष्टि में ज्ञान उतना महत्त्वपूर्ण नहीं है जितना कर्म है। ज्ञान निष्क्रिय है और कर्म ही जीवन का आधार है।

तिलक अद्वैतवादी होकर भी द्वैतवाद को मान्यता देने वाले थे। सामान्य जनता वेदान्त दर्शन को नहीं समझ सकती। अतः उन्होंने जनता के स्वर के अनुरूप अनेक प्रतीकों की सृजना की है। उन्होंने धर्म के प्रति सम्मान एवं श्रद्धा की दृष्टि से व्यक्तिगत ईश्वर को मान्यता दी है।

बाल गंगाधर तिलक भारत के एक तेजस्वी राष्ट्रनेता थे। इनका विरोध उदारवादी नेताओं से रहा, इसका कारण था कि वे भारतीयकरण के पक्षपाती थे। उन्होंने स्पष्ट कहा था कि जब तक पाश्चात्य की नकल नहीं छोड़ दी जाती तब तक स्वतन्त्रता नहीं मिल सकती। विदेशी शक्तियों से मुक्ति के लिए अपना पथ बनाना होगा। जिसका आधार विदेश नहीं भारत होना चाहिए। इस प्रकार लोकमान्य तिलक का सामाजिक दर्शन भारतीयता के पुनरुत्थान एवं भारतीय संस्कृति के पुनर्जागरण से निःसृत एक आदर्श सामाजिक दर्शन है।

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महान कर्मयोगी तिलक

□ डॉ० सूर्यनारायण द्विवेदी
साहित्याचार्य, काव्यतीर्थ, एम० ए०, पी० एच० डी, डी० लिट्०,
प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी-५

परिवर्त्तनशील मानव विश्व ने भी समय-समय पर ऐसी अमृत सन्तानों को न्म दिया है, जिन्होंने अपनी अप्रतिम मेधा, अनुपम त्याग और विशिष्ट सेवाओं के ारा इस जाति के कल्याणकारी उत्थान में योग दिया है। ऐसी प्रज्ञाएं किसी भी ाष्ट्र को कभी कभी ही प्राप्त होती हैं जिनका जीवन अत्यन्त संघर्षमय किन्तु जिनकी तना असमोर्ध्वगामिनी होती है। उन्नीसवीं शताब्दी के भारतीय आकाश के मृत-ज्योति-कलश लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक राष्ट्र की ऐसी ही अमृत-सन्तति , जिनका जीवन, जिनका चिन्तन प्रवाह, जिनका शील सबकुछ अप्रतिम रहा, द्वितीय रहा।

मध्य भारत के महाराष्ट्र प्रदेश में २३ जुलाई, १८५६ को अवतरित होने ला बालक अपने स्वभाव और कार्य प्रवाह की विशिष्टता के कारण सर्व लोकमान्य यति तक पहुंच जायेगा, इसका कुछ-कुछ अनुमान उनके माता-पिता और रिसर के लोगों को तिलक की छोटी अवस्था में ही होने लगा था। तिलक बाल्य-ाल में भी स्वभाव से अनमनीय निश्चयगामिनी प्रज्ञा के धनी और आस्थाशील ार्यपद्धति के विशेष पक्षपाती देखे गये। इन तीनों गुणों ने इन्हें जीवन के चरम त्कर्ष तक पहुंचाया। इतना सब कुछ होते हुए भी तिलक में अपने इन गुणों के ति अभिमान की मात्रा थोड़ी भी नहीं थी। इतना अवश्य था कि वे स्वभाव से ोमल और संवेदनशील थे। राष्ट्र, राष्ट्रीय संस्कृति, राष्ट्रीय समाज और राष्ट्रीय तना के प्रति उनमें इतना अधिक आदर था कि वे इसके विपरीत जिसे भी पाते से साहसपूर्वक उस रास्ते से हट जाने को बाध्य कर देते। यही कारण था कि त्कालीन गोरी चमड़ी वाले शासकों के प्रति जहां गोविन्द रानाडे जैसे लोगों में मनीय नीति के प्रति पक्षपात देखा गया, तिलक ने कहीं भी ऐसी स्थितियों से न्धि नहीं की। इसीलिए लगातार अंग्रेजों एवं अपने समसामयिक कुछ लोगों से ेक्षा पाने पर भी वे वही करते गए, जो उनकी दृष्टि में ठीक था। अर्थात् राष्ट्र

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

की स्वाधीनता की चिन्ता, हिन्दू जाति की अप्रतिम सांस्कृतिक धरोहर ज्ञान-शि की रक्षा एवं अन्याय से सन्धि न करने की साधना। तिलक आश्चर्यजनक रूप सफल रहे।

तिलक ने अपना व्यावहारिक जीवन एक स्कूल अध्यापक के रूप में किया। संस्था थी न्यू इंगलिश स्कूल। चार वर्षों में ही जो संस्था महाराष्ट्र में प्रथम स्थान पा सकी। यह बहुत छोटी अवधि है काल की, किन्तु समय में भी लोकमान्य ने अपना विशिष्ट अध्यापक का जो आदर्श सामने रखा, अप्रतिम था, अनुकरणीय था। अर्थात् त्याग, तपस्या, निरालस्य, कर्त्तव्यनि अशान्त भाव, छात्रों की कल्याण चिन्ता, स्पष्टवादिता, सहज शिक्षा आदि के अध्ययन अध्यापन का कल्याणकारी स्वरूप का ध्यान। लोकमान्य ने इनके अपने परिवार के विकट आर्थिक संकट को भी नजरअन्दाज करते हुए जिस अध्यापन कार्य सम्हाला, बहुतों के लिए स्पृहणीय एवं ईर्ष्या का विषय था।

लोकमान्य ने यद्यपि अध्यापकीय जीवन को प्रारम्भ में अपनाया, पर राष्ट्र का भविष्य किसी और दिशा की ओर चलने को प्रेरित कर रहा था। थी भारतीय समाज एवं राष्ट्र के उपेक्षित वर्तमान एवं भविष्य की चिन्ता। कार्य उन्होंने एक ओर मराठा एवं केसरी नामक पत्रों के सम्पादन से शुरू और दूसरी ओर गणपति एवं शिवा उत्सव जैसे सामाजिक-धार्मिक जागृति के पर्वों की शुरुआत करके। पत्रों के द्वारा अपनी बात जन-जन तक पहुंचाने सुविधा के कारण अपनी जाति की सांस्कृतिक और सामाजिक गतिविधियों की सामयिक स्थिति के अनुरूप सही दिशा में प्रेरित करने का जहाँ उन्हें माध्यम वहीं दूसरी ओर उसने उन्हें निर्भीकता, न्यायनिष्ठा, कर्त्तव्यपरायणता भी दी, आगे चलकर न केवल उनके राजनीतिक संघर्ष के क्षणों में उन्हें स्वर्णप्रभा की प्रकाशित करता रहता अपितु अत्यन्त कठिन क्षणों में उन्हें आन्तरिक बल भी था, जिसके कारण अत्यन्त संकटपूर्ण घड़ियाँ भी उन्हें तोड़ नहीं पाईं। पत्रक रूप में लोकमान्य तिलक ने जहाँ १८८१ से ही लगातार पवित्र सम्मान पाया। सामाजिक स्तर पर उनका सेवा-साहस बढ़ता रहा। जिसकी गति मृत्यु के तक भी अवरुद्ध नहीं थी। मराठा एवं केशरी जैसे पत्रों का द्वार यद्यपि बहुत ही समाप्त हो गया किन्तु उसकी निर्भीकता एवं निष्पक्षता ने पत्र विश्व न्यायपूर्ण कीर्तिमान पाया। गणपति एवं शिवाजी उत्सव तो आज भी महाराष्ट्र बंगाल में नयी चेतना की दिशा में प्रेरणा देने वाले उत्सव माने जा रहे हैं।

समाज सेवा से जुड़ने का मूल कारण था—लोकमान्य के समय में गोरी सर द्वारा जन जीवन की घोर उपेक्षा। प्लेग हो या अकाल, हैजा हो या मह

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

-ग्रहाँ के लोगों को चूहों की तरह मरते देखने में उन्हें सुख मिलता। उनकी हाँ में हाँ मिलाने वाले भारतीय न कुछ कह पाते और न कुछ कर पाते। लोकमान्य का ध्यान जब इधर गया, उन्होंने तत्काल अपने पत्रों एवं कार्यों के द्वारा इन सामाजिक दायित्वों के प्रति लोगों में भावना जागृत की एवं आगे चलकर बहुत कुछ किया और कराया। संवेदनशील समाज सुधारक के रूप में लोकमान्य के इस रूप ने उन्हें जन भावना के और समीप ला दिया।

समाज एवं जाति की सेवा में लगे लोकमान्य की चेतना इतनी समाजोन्मुख हो गई थी कि परिवार के संरक्षण के प्रति उपेक्षा स्वाभाविक थी। मित्रों एवं शुभचिन्तकों की सम्मति से उन्हें कुछ दिनों के लिए एडवोकेट के रूप में भी काम करना पड़ा, जहाँ अपनी नैतिक न्यायिक एवं अलोलुप भावना के कारण उन्होंने जो भी मुकदमें लिए, सफल रहे। अक्कल कोट का केश, नमक वार या बाल एवं विधवा विवाह के सम्बन्ध में जो भी मुकदमें सामने आए लोकमान्य की दूरदर्शिता न्यायसंगतता, विवेक एवं महान भावना ने प्रति स्थल पर उन्हें सम्मान दिलाया। हिन्दू हो या मुसलमान लोकमान्य ने विना किसी भी भाव के अपने मुवक्किलों के हित की चिन्ता का ध्यान तो रखा पर न्यायपूर्वक ही। कोर्ट जैसे अत्यन्त पंकिल क्षेत्र में भी लोकमान्य वेदाग निकले।

लोकमान्य का जीवन यहीं नहीं रुका। वास्तव में इन सब बातों से बड़ी-बड़ी उस समय उपस्थित हुई जब राष्ट्रीय कांग्रेस से उन्हें राष्ट्रीय कल्याण के लिए जुड़ना पड़ा। जैसा कि प्रसिद्ध है—काँग्रेस की १८८५ में स्थापना के जल्द ही बाद उसमें दो प्रकार की प्रवृत्तियाँ दीखने को मिलतीं और वे थीं—नरम एवं गरम दल। नरम दल समझौतावादी था, अतएव अंग्रेज शासकों का समय-समय पर समर्थक था, पर गरम दल अपने देश में अपनी स्वाधीनता को अपना जन्मसिद्ध अधिकार मानता था और समझौता जैसी किसी भी चाल का विरोधी था। लोकमान्य इस दूसरी चेतना से सम्वद्ध ही न थे अपितु इस भावना के सबसे बड़े उद्घोपक भी थे। अंग्रेज शासकों को लोकमान्य से जो लगातार और हर मोर्चे पर मुँह की खानी पड़ती उसका कारण लोकमान्य में निहित ऐसी ही ऊर्जा थी जो धधकती यज्ञाग्नि की तरह प्रतिक्षण प्रज्वलित एवं दुर्दमनीय रही। इसमें सन्देह नहीं कि इसके कारण लोकमान्य को वार-वार गोरे शासकों के कोप का भाजन होने के फलस्वरूप वार-वार जेल की हवा खानी पड़ती थी। झूठे केसों का सामना करना पड़ता था फिर भी वे अडिग, अटूट और अप्रमेय राष्ट्रीय नेता के रूप में अन्त तक प्रकाश स्तम्भ की तरह बने रहे। राजनीति उनका स्वभाव न था पर उनके शील के विविध रूपों में वह भी एक अवश्य था जिसने भारत राष्ट्र को नयी प्रेरणा, नया जीवन, नयी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कार्य पद्धति अवश्य दी। महात्मा गांधी जैसे लोग बाद में जिस पथ पर ही चल स्वतन्त्रता प्राप्ति में सफल हो पाए। लोकमान्य निश्चय ही भारतीय राष्ट्रीय चे के १९वीं सदी के ज्योतिकलश थे।

समाज एवं राजनीति से ऊपर उठकर भी लोकमान्य बाल गंगाधर ति के भीतर एक ऐसी अन्त: सलिला लगातार प्रवाहित रही, जिससे विश्व एकबा चमत्कृत रह गया था और वह थी उनकी आध्यात्मिक साधना। इतिहास, साहि दर्शन, ज्योतिष एवं ज्ञान-विज्ञान के आलोक में अपनी अप्रतिम मेधा द्वारा तिलक ने जो आध्यात्मिक क्रान्ति सामने लायी, वह आज भी उतनी ही सम्मान है। वैदिक वांग्मय पर मराठी में लिखा उनका 'ओरायन', गीता पर कर्मप्र भाष्य इसके वे उत्कृष्टतम प्रमाण हैं जो बड़े श्रम एवं चिन्तन के बाद लिखे गये थे वैदिक वांग्मय की ऐतिहासिक सूझबूझ की दृष्टि से व्याख्या तो उस समय इत महत्त्वपूर्ण लगी कि मैक्समूलर जैसे विद्वान ने भी लोकमान्य की मेधा को अप्रति करार दिया। गीता पर कर्मयोग रहस्य-गीता रहस्य तो अप्रमेय है ही। कर्मय लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक का भाष्य जो ठहरा। जिसने जीवन का प्रति अनासक्त एवं वीरत्वपूर्ण चित्त से लोककल्याणार्थ कार्य करते हुए अपनी संसार य को सम्पूर्ति दी।

एक अगस्त, १९२० का वह दिन भारतीय राष्ट्रीय चेतना को तह से हि देने वाला सिद्ध हुआ, राष्ट्रवादी, महान नेता, आदर्श अध्यापक, सफल सम सुधारक; न्याय विधिवेत्ता, कर्मयोगी और सबसे अधिक भारतीय धर्म, समाज संस्कृति के साथ ही परम्परित अध्यात्म चेतना के सुचेता महान पुरुष अनासक्त से अनिवर्तन का पथ स्वीकारा। क्योंकि उसने राष्ट्रीय व्यक्ति एवं समष्टि चे को नैतिक, न्यायिक, आदर्श, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक सन्देश पूरी आस्था साथ समर्पित कर दिये थे जिनके सन्देशवाहक के रूप में वह आया था। इस प्र अप्रतिम और माननीय राष्ट्रनेता, आलोक सामान्य चिन्तक, आदर्श शिक्षक, निर्भ एवं निष्पक्ष पत्रकार, संवेदनशील एवं शीलवान समाज सुधारक, परिस्थिति विकटताओं में भी पर्वत की तरह अडिग, प्रवीण न्यायवेत्ता और प्रामाणिक इति एवं दर्शन का महान चिन्तक, राष्ट्रीय स्वाधीनता के लिए सब कुछ देकर चला निर्विकार। सब कुछ तो कालक्रमों से पुस्तकों एवं स्मृतियों में हो सकता है है पर उनकी वह अपनी वाणी युग-युग तक स्वाधीनता के इच्छुक राष्ट्रों का जागरणमंत्र बनी रहेगी, जिसे उन्होंने दिया अपने देशवासियों को, पर वास्तव मानव सम्पूर्ण जाति को भी—

"स्वतन्त्रता हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है।"

भारत की इस अमृत सन्तान का पुण्य स्मरण विश्व के लिए मंगलमय हो।

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विद्वान तिलक

□ श्री गौरीशंकर राय

(संसद सदस्य)

डॉ॰ राधाकृष्णन ने कहा है कि लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने अपने जीवन के सबसे अच्छे दिनों को राजनीति में लगा दिया, जिसके लिये वे बने नहीं थे। वे स्वभाव से एक विद्वान थे और राजनीतिक मात्र आवश्यकता के लिये। विदेशी सत्ता के विरुद्ध उन्होंने जिस बेचैनी तथा निर्भीकता के साथ अनवरत् युद्ध किया उसके कारण वर्तमान भारतीय इतिहास के निर्माण में उनका अद्वितीय स्थान बना। राजनीति की इस व्यस्तता में उनके ऊपर एक अवकाश थोप दिया गया। सन् १९०८ में वे मांडले जेल में भेजे गये जहाँ वे करीब छः साल रहे। इस समय स्वस्थ न रहते हुये भी उन्होंने उस समय का अधिकतम सदुपयोग किया। उस अवधि में उन्हें बाहरी दुनिया से कोई सम्पर्क नहीं रहा। कोई समाचार पत्र उन्हें नहीं मिलता था। केवल घर के पत्र जो उन्हें महीने में एक बार मिलते थे और वे एक बार भेजते थे। यही बाहरी दुनिया के साथ उनका सम्पर्क था।

उनकी सजा साधारण कैद में बदल गयी। फलस्वरूप उन्हें तत्कालीन विधि तथा राजनीति की पुस्तकें तो नहीं मिलीं लेकिन प्राचीन ग्रन्थ मिल गये। स्याही और कलम भी उपलब्ध हो गयी। तिलक जी का विचार था कि गीता, महाभारत, वेदान्त और ऋग्वेद के अध्ययन के लिये जर्मन विद्वानों का अध्ययन आवश्यक है। उन्होंने जर्मन भाषा पढ़ना प्रारम्भ किया और १९१० में जर्मन का अध्ययन शुरु किया था। उन्होंने २-९-१९१० को घर के लिये लिखे गये अपने पत्र में लिखा है कि मैंने जर्मन विद्वान वेबर की जर्मन भाषा में लिखी पुस्तकें पढ़ता हूँ। एक घण्टे में केवल पांच पेज पढ़ता हूँ लेकिन यह मेरे लिये बड़ा ही आनन्ददायी अनुभव है।" उन्होंने इसी प्रकार फ्रेंच पढ़ा। बौद्ध साहित्य पढ़ने के लिये उन्होंने पाली का अध्ययन किया। जेल में इस अध्यवसाय तथा परिश्रम के साथ उनका मस्तिष्क असाधारण विषयों की ओर लगा रहा। कारागार की दीवारों के भीतर की इस खोज के फलस्वरूप वे मानव ज्ञान भंडार में उल्लेखनीय वृद्धि करने में समर्थ हुये। यही नहीं उन्होंने खोज तथा आलोचना की परम्परा में एक मूलभूत परिवर्तन भी किया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"राजनीति एक ऐसी नायिका है कि नायक उसका प्रतिस्पर्द्धी ढूँढ़ पाये यह सम्भव नहीं।" यह एक कहावत है लेकिन तिलकजी ने राजनीति की सबसे अगली कतार में रहते हुये भी दुनिया में 'गीता रहस्य' के रूप में एक अनुपम भेंट दी। उनके बारे में कहा जाता है कि वे तब सबसे अधिक प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहते थे, जब अपनी किताबों के बीच होते थे।

संस्कृत तथा गणित के अध्ययन की उनकी विशेष भूख थी। गीता रहस्य के अतिरिक्त सांख्य दर्शन पर उनके लेख अपना एक स्थान रखते हैं। आर्य संस्कृति और वेद की प्राचीनता के सम्बन्ध में तिलक ने पाश्चात्य विद्वानों को चुनौती दी और अपने पक्ष में जो अकाट्य तर्क तथा प्रमाण प्रस्तुत किये, उससे पाश्चात्य विद्वान बड़े ही प्रभावित हुये। पाश्चात्य विद्वानों ने वेदों को अधिक से अधिक ईसा से अढ़ाई हजार वर्ष पहले का माना लेकिन तिलकजी ने सप्रमाण यह सिद्ध कर दिया कि ऋगवेद ईसा से चार हजार वर्ष पहले का है और आर्य संस्कृति ईसा से छः हजार वर्ष से भी अधिक पुरानी थी।

तिलक जी के लेखों की अमेरिका तथा ब्रिटेन के विद्वानों ने काफी प्रशंसा की है। मैक्समूलर जेकोबी तथा वेबर ने तिलकजी की अपनी नवीनता को विशेष पसंद किया है। उन्होंने वेदों तथा आर्य संस्कृति की प्राचीनता के जो प्रमाण दिये हैं, वे केवल भारतीय ही नहीं हैं, बल्कि पारसी तथा ग्रीक लोगों की परम्परा से भी सम्बद्ध हैं। तिलकजी ने बाद के अपने वेदान्त तथा ज्योतिष सम्बन्धी लेखों को अंग्रेजी में लिखा। इस कारण दुनिया के बाहरी लोगों को भी उनकी ओर आकृष्ट होने का अवसर मिला।

गीता के भाष्य में तिलकजी न तो अन्ध-परम्परावादी थे और न पाश्चात्य तथा भारतीय विद्वानों के पीछे चलने वाले, बल्कि उनका विश्लेषण अपना और मौलिक था। दूसरे भाष्यकारों से उनका सबसे बड़ा मतभेद यह था कि साधारणतः मान्यता प्राप्त विद्वान जैसे शंकर और रामानुज मानते हैं कि मुक्तात्मा को कर्म की आवश्यकता नहीं, वह एक पूर्णता की स्थिति है। लेकिन तिलक का यह मत है कि मुक्तात्मा को अवश्य कर्म करना चाहिये। अमुक्त आत्मा के कर्म में लोभ, मोह, घृणा आदि सम्मिलित हैं, तथा फल का लोभ होता है किन्तु मुक्तात्मा आध्यात्मिक उद्देश्य के लिये निष्काम भाव से कर्म करती है।

—४, डा० राजेन्द्र प्रसाद
नई दिल्ली-११०००१

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लोकमान्य तिलक का गहन पाण्डित्य

□ साहित्य-वाचस्पति डा० श्याम सुन्दर बादल
सा० महो०, पी-एच० डी० ।

वालो लालश्च पालश्च समुष्ण-संधीयास्त्रयः ।
स्वातन्त्र्य-रण-नेतारो बभूवुः क्रान्तिकारिणः ।।

स्वतन्त्रता-संग्राम के बाल गंगाधर तिलक के समकालीन नेताओं में दो दल थे—एक गरम-दल तथा दूसरा नरम-दल । गरमदलीय नेताओं में बाल, लाल और पाल नाम से प्रसिद्ध—(१) लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक (२) लाला लाजपत राय और (३) विपिनचन्द्र पाल, भारतीय स्वतन्त्रता-संग्राम के ऐसे अमर रत्न एवं सतत स्मरणीय वीर पुरुष हैं, जिनसे राष्ट्रपिता स्व० बापू को राष्ट्र-भक्ति की प्रेरणाएँ मिलती रही हैं । इस वीरत्रयी में लोकमान्य तिलक अग्रगण्य रहे हैं एवं गहन पाण्डित्य की दृष्टि से भी उनका प्रमुख स्थान रहा है । यहाँ उनके गहन-पाण्डित्य के परिप्रेक्ष्य में ही उनके व्यक्तित्व पर विचार किया जा रहा है ।

दक्षिण भारत के महाराष्ट्र प्रान्त के अन्तर्गत कोंकण जनपद में रत्नागिरि जिले के चिक्कल नामक ग्राम में सोमवार, २३ जुलाई, सन् १८५६ ई० में (वि० संवत् १९१३ के आषाढ़ मास में) बाल गंगाधर 'तिलक' का जन्म हुआ था। 'तिलक' आपकी वंश-परम्परा की उपाधि थी । आपके पिताजी श्री गंगाधर रामचंद्र 'तिलक' एवं पार्वती बाई आपकी माताजी थीं । पिताजी संस्कृत के विद्वान थे अतः संस्कृत साहित्य के उच्च अध्ययन में रुचि आपको अपने पिताजी से उत्तराधिकार के रूप में प्राप्त हुई थी । इनका वास्तविक नाम बलवन्त राव था, 'बाल' इसी का लघु रूप है एवं व्यक्ति के नाम के साथ पिता का नाम जुड़ना प्रान्तीय परम्परा है ।

दस वर्ष की आयु में जब ये प्रारम्भिक पाठशाला के ही छात्र थे—इनकी माताजी दिवंगत हो गई थीं । तदनन्तर पिताजी इन्हें अध्ययनार्थ पूना ले आए । वहां के डेकन कॉलेज से सन् १८७६ ई० में इन्होंने बी० ए० परीक्षा उत्तीर्ण की । सन् १८७९ ई० में बम्बई विश्वविद्यालय से एल० एल० बी० की परीक्षा उत्तीर्ण की थी । तदन्तर वे अन्य युवकों की भाँति आत्म-सुखोपभोग के लिए नौकरियों के जाल में नहीं फँसे और न ही वकालत ही की । आपने तो अंग्रेजों की गुलामी से राष्ट्र को मुक्ति दिलाने के लिए समाज को जागृत करने में ही आत्म-समर्पण कर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दिया। १ जनवरी, सन् १८८० को आपने एक स्वतन्त्र विद्यालय की स्थापना की। आगे चलकर इन्होंने कई शिक्षण-संस्थाओं की स्थापना की थी। धार्मिक सामाजिक एवं राजनैतिक विचारों के आदान-प्रदान के लिए पत्र ही एकमात्र उत्कृष्ट साधन हैं, अतः सन् १८८१ ई० में आपने मराठा भाषा में 'केशरी' एवं अंग्रेजी में 'मराठा' नामक पत्रों का प्रकाशन आरम्भ किया था।

लोकमान्य ने राजनैतिक क्षेत्र में जितनी प्रसिद्धि प्राप्त की थी उतने ही भारतीय संस्कृति के उन्नयन एवं साहित्यिक-संवर्द्धना के क्षेत्र में भी विख्यात थे। 'गणपति-उत्सव' एवं 'शिवाजी-जयन्ती' मनाने की परम्परा का श्रीगणेश उन्होंने ही किया था। सन् १८८९ ई० में कांग्रेस अधिवेशन में जाकर उन्होंने पाण्डित्यपूर्ण एवं ओजस्वी भाषण देकर सर्वप्रथम हमलोगों के कानों में "स्वतन्त्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है" का मंत्र फूंका था। अपने पाण्डित्य के बल पर ही १८९५ ई० में आप वम्बई विश्वविद्यालय की धारा-सभा के सदस्य चुने गए। तदनन्तर वम्बई प्रान्तीय कौंसिल के मन्त्री-पद पर नियुक्त होकर उन्होंने पांच वर्षों तक बड़ी लगन से कार्य किया। आपका कार्यकाल वहुत ही महत्वपूर्ण एवं प्रशंसनीय रहा। यह सब आपके पाण्डित्य का प्रभाव था।

आपके गहन-पाण्डित्य का विदेशी विद्वानों पर भी वड़ा प्रभाव पड़ा था। सन् १८९६ ई० में जव आप गिरफ्तार किए गए एवं जेल की यातनाओं के कारण अस्वस्थ हो गए तो मैक्समूलर, सर विलियम हन्टर, विलियम केन एवं दादाभाई नौरोजी के प्रयास से ही एक वर्ष पश्चात् जेल से रिहा कर दिये गए थे, एवं रिहाई पर जनता द्वारा अपने लोकप्रिय नेता का हार्दिक अभिनन्दन किया गया था।

तत्कालीन लार्ड डफरिन हिन्दू-मुसलमानों को लड़ाकर अंग्रेजी राज्य की जड़ें और गहरी करना चाहता था, अतः 'शिवाजी-जयन्ती' मनाए जाने पर उसने मुसलमानों को भड़काकर कई जगह हिन्दू-मुस्लिम दंगे करा दिए। इस पर जब 'केसरी' पत्र द्वारा जव तिलक ने वास्तविकता पर प्रकाश डाला तो अली-बन्धुओं ने मुक्त कण्ठ से यह स्वीकार किया था कि—"राजनीति में तिलक ही हमारे गुरु हैं।" इस प्रकार मुस्लिम समाज भी उनके गहन-पाण्डित्य से प्रभावित हो गया था। सन् १९०६ ई० में कांग्रेस के कलकत्ता-अधिवेशन में तिलक ने स्वदेशी वस्तुओं के उपयोग पर अपने विचार व्यक्त किए थे। कांग्रेस-संस्था पर उनकी वड़ी आस्था थी। कभी-कभी मतभेद हो जाने पर भी उनका कथन था कि—"कांग्रेस सभी की संस्था है उसमें जनता की आवाज ही प्रमुख होनी चाहिए।"

खुदीराम वोस के वम-काण्ड से दो अंग्रेज महिलाएं मर गईं थीं जिस पर 'पायोनियर' पत्र ने लिखा था कि—"आगे यदि एक भी अंग्रेज की हत्या हो तो हिन्दुस्तानियों को फाँसी दी जाय।" अंग्रेजों का दमन-चक्र चला, जिससे ग

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दल के नेता 'बाल', 'लाल' और 'पाल' अत्यन्त उद्विग्न हो उठे। लोकमान्य ने तो सरकार की दमन-नीति की कटु आलोचना करते हुए लिखा था कि—"यद्यपि बम चलाना बहुत बुरा काम है, पर इसके मूल में सरकार की दमन-नीति ही कार्य कर रही है।" १३ जुलाई, १९०८ ई० में तिलक पर मुकदमा चलाया गया। इसमें उन्होंने स्वयं अपनी वकालत की थी। लगातार चार दिन तक अपने पक्ष का समर्थन करते रहे। अन्त में उन्हें छः वर्ष का देश निर्वसन दे दिया गया, जिसे उन्होंने ईश्वरेच्छा समझकर शिरोधार्य किया। मांडले की कालकोठरी के यातना-पूर्ण वन्दी-जीवन में अपनी प्रतिभा एवं गहन-पाण्डित्य के बल पर ही उन्होंने 'गीता-रहस्य' एवं 'आर्कटिक होम आफ दि वेदाज' जैसे उच्च कोटि के ग्रन्थ लिखे थे। सन् १९१४ ई० में लोकमान्य माण्डले से मुक्त कर पूना पहुँचाए गए थे, जहाँ उनको जनता द्वारा हार्दिक श्रद्धाञ्जलि अर्पित की गई थी।

तिलक महोदय ने सन् १८९३ ई० में भी एक शोधपूर्ण-ग्रन्थ 'ओरायन' लिखा था। इस ग्रन्थ के पाठकों को आपके गणित-ज्योतिष-सम्बन्धी ज्ञान का विशेष परिचय मिलता है। इस ग्रन्थ की तत्कालीन पाश्चात्य विद्वानों—मैक्समूलर, जकोवी आदि ने भी मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की थी। इसी के बाद उपर्युक्त 'Arctic Home of the Vedas' की रचना की गई थी। अध्ययन एवं लेखन की दृष्टि से कारागार-वास उनके लिए वरदान सिद्ध हुआ। कारागार में ही उन्होंने ऋग्वेद का अध्ययन पूर्ण किया था। जेल से छूट कर उन्होंने कांग्रेस के गरम-दल और नरम-दल में एकता के प्रयास आरम्भ किए थे। अन्त में विलियम वेडर वर्न एवं श्रीमती एनी वेसेन्ट के प्रयास से सन् १९१५ ई० में दोनों दलों में एकता स्थापित हो गई थी। लोकमान्य ने २३ अप्रैल सन् १९१६ ई० को होम रूल लीग की स्थापना की थी। एनी वेसेन्ट ने भी इसके प्रचार और प्रसार में बड़ा योग दिया था। सन् १९१६ ई० के कांग्रेस के लखनऊ अधिवेशन में लोकमान्य उपस्थित हुए थे। इसमें सुरेन्द्रनाथ बनर्जी, रास बिहारी घोष, लोकमान्य तिलक एवं जिन्ना साहब एक ही आसन पर सुशोभित दिखाई दिए थे। इस अवसर पर लोकमान्य ने जो प्रशंसनीय वक्तृता दी थी उसमें उनके गहन पाण्डित्य की अद्भुत अभिव्यक्ति हुई थी।

लोकमान्य की साठवीं वर्षगांठ पर जनता द्वारा उन्हें एक लक्ष मुद्राओं की थैली भेंट की गई थी, जो उन्होंने राष्ट्र के लिए समर्पित कर दी थी।

ब्रिटिश सरकार सन् १९१७ ई० से ही आपसे बड़ी सशंक एवं सतर्क रहती थी। उन्हें पंजाब जाने की मनाही थी। सन् १९१८ ई० में प्रकाशित मांटेग्यू चेम्सफोर्ड योजना पर भारतीय लोकमत व्यक्त करने हेतु होम-रूल-लीग की ओर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

से भी एक डेपूटेशन भेजने का निर्णय किया गया था, जिसके सदस्य लोकमान्य ति… और श्रीमती एनी वेसेन्ट निर्वाचित किए गए थे। उनका मत था कि "इसमें …न नहीं कि इस योजना से कोई अधिक लाभ न होगा, फिर भी जो कुछ इससे … जाए उसका लाभ उठा लेना चाहिए और कौंसिल में जाकर अपने अधिकारों… बढ़ाने के लिए प्रयत्न करना चाहिए।"

सन् १९१५ में नरम-दल और गरम-दल में एकता के पूर्व नरम-दल… नेता श्री गोखले का निधन हुआ था, तो इन्होंने उनकी अर्थी में अपना … लगाया एवं उनकी मृत्यु को राष्ट्र की अपूरणीय क्षति बतलाया था।

लोकमान्य तिलक सन् १९१९ ई० में जब बीमार होकर इंगलैण्ड से … रहे थे तभी अमृतसर में अत्याचारी 'डायर' का जलियाँवाला बाँग का हत्या… हो चुका था। इस अवसर पर तिलक महोदय ने स्वराज्य की भावना को जन… में भरने का अथक प्रयास किया एवं राष्ट्रपिता स्व० बापू के …त्कालीन असह… एवं सत्याग्रह आन्दोलन में पूर्ण सहयोग दिया था। राजनैतिक क्षेत्र में तिलक… गाँधीजी पर बहुत प्रभाव पड़ा था। वे सदैव लोकमान्य से विचार-विमर्श … करते थे। तिलक की ही प्रेरणा से पूज्य बापू ने होम-रूल-लीग के सभापति… को सुशोभित किया था। ३१ जुलाई, सन् १९२० ई० को शनिवार के … सरदार-गृह बम्बई में उन्होंने महात्मा गाँधी की उपस्थिति में महाप्रयाण किया। लाखों लोगों ने उनके शव पर श्रद्धा के सुमन चढ़ाए थे एवं 'लोकमान्य तिलक … जय' के नारों से आकाश-मण्डल गूँज उठा था। इस अवसर पर लाला ला… राय ने अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा था कि —

"तिलक उन्नीसवीं सदी के सर्व प्रमुख भारतीय विद्वान् थे। उन्होंने ही … में स्वतंत्रता की विचारधारा पैदा की। यदि भारत में कोई सच्चा स्वराज्य… था तो वे एकमात्र तिलक ही थे।"

लोकमान्य तिलक के निम्न ग्रंथ उनके गहन-पाण्डित्य के प्रत्यक्ष प्रमाण हैं —

१. वेदकाल का निर्णय (The Orion)।
२. वेदों का मूल स्थान (The Arctic Home of the Vedas)।
३. वेदों का काल निर्णय (Vedic Chronology [Incomplete…
४. गीता रहस्य या कर्मयोग-शास्त्र, गीता पर एक नवीन …
   (मराठी भाषा में)।

'गीता' को तिलक ने नैतिक सत्य का नूतन प्रतिपादन दिया। डा० सर्व… राधाकृष्णन ने लिखा है कि "तिलक की साहित्यिक कृति बेकार राजनीतिज्ञ… रूढ़िगत मन बहलाव नहीं थी। साधारणतः पेशेवर राजनीतिज्ञ सफल लेखक…

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

न पाते, किन्तु तिलक की स्वाभाविक रुचि ही प्राचीन और अर्वाचीन अध्ययन की ओर है। इसलिए उनकी कृतियों में नौसिखिए का सामान्य ढंग नहीं वरन् प्रशिक्षित विद्वान् का ठोस ज्ञान और तीक्ष्ण दृष्टि दोनों मिलते हैं।" गीता-रहस्य चमुच एक गौरवग्रन्थ है।

तिलक का पाण्डित्य सरल सुबोध किन्तु तर्कों की भाषा में बोलता था। वे क अच्छे गणितज्ञ थे अतः अपनी बातों को नपी-तुली साफ भाषा में कहने का उनका पना स्वाभाविक ढंग था। दस वर्षों की मिहनत के बाद १८९८ में 'दि आर्कटिक म इन दि वेदाज' ग्रन्थ लिखा गया किन्तु अपने निष्कर्षों के बारे में पूर्णतः विश्वस्त जाने के बाद ही १९०३ में तिलक ने उसे प्रकाशित कराया। बोस्टन विश्वद्यालय के अध्यक्ष डा० वारेन ने उस ग्रन्थ पर लिखा: "एक लेख में लेखक के र्कों का संक्षिप्त विवरण देना असम्भव है। इतना ही कहना काफी होगा कि मेरे ही से जितने प्रमाण और तर्क इस पुस्तक में मौजूद हैं, उतने किसी भी भारतीयानी विद्वान् ने आजतक अपने निष्कर्ष की पुष्टि में नहीं दिए। पूरी पुस्तक में तिहासिक व वैज्ञानिक अनुसन्धान के सिद्धान्तों व खोज प्रणाली का पूरा पालन या गया है।...जो इस पुस्तक को तथा श्री जान ओ' नील की 'दि नाइट ऑव दि तिड्म' को अच्छी तरह पढ़ लेगा, फिर उसके सामने यह प्रश्न कभी नहीं आएगा आर्यों का प्राचीन निवास कहाँ था ?"

मैक्समुलर के मत से "तिलक उद्भट विद्वान हैं और उनकी आत्मा प्राचीन के मन्दिर में रहना और बातों से अधिक श्रेयस्कर मानती है।"

जब एक विचार-गोष्ठी में उनके एक विद्वतापूर्ण शोध-व्याख्यान को सुनकर विदेशी विद्वान ने टिप्पणी की कि 'आप जैसे अद्भुत् विद्वान् को तो अपना समय ल लेखन में लगाना चाहिए; राजनीति में कहाँ फँस गए हैं!' तो तिलक सिंह तरह बिफर पड़े थे—'भारत भूमि बाँझ नहीं है। स्वराज्य के बाद हजारों तिलक हो जायेंगे लेखन के लिए। स्वतंत्रता प्राप्ति अभी प्रथम कर्त्तव्य है।" तिलक शप्रेम के कारण ही विद्वतापूर्ण लेखन को दर किनार कर दिया।

'गीता रहस्य' का श्री माधवराव जी सप्रे ने हिन्दी में अनुवाद किया। ग्रंथ की रचना सन् १९१०-११ में हुई थी। नौ सौ पृष्ठों का यह ग्रंथ गहन-ज्ञान से पूर्ण। इसके हिन्दी अनुवाद का लेखन और प्रकाशन जुलाई सन् १९१५ से जून सन् १९१६ में पूर्ण हुआ था। यही ग्रंथ है, जिससे संसार से विरक्त उदासीन संन्यासियों तक को कर्त्तव्य कर्मों को करने की प्रेरणा मिलती है। गहन तत्त्व-ज्ञान पर कुछ निदर्शन देकर प्रकाश डालता इस छोटे से लेख में संभव है। पाठक स्वयं इसका अध्ययन कर आनन्दानुभूति प्राप्त कर लोकमान्य के डत्य से अवगत हों। हिन्दी में ही नहीं 'गीता रहस्य' के अनुवाद तो गुजराती, ड़ी, तेलगू, बंगला, तमिल एवं अंग्रेजी आदि कई भाषाओं में हुए हैं। इस र यह ग्रंथ-रत्न विश्व-विख्यात हो गया है एवं लोकमान्य को उनकी इस महत्ती ने अमर बना दिया है। ऐसे गहन-पाण्डित्यपूर्ण एवं स्वतंत्रता संग्राम के प्रथम के नेताओं में अग्रगण्य पुरुष-रत्न लोकमान्य के प्रति लेखक अपनी हार्दिक ञ्जलि समर्पित करता है। □

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लोकमान्य तिलक की साहित्य-सेवा

□ डा० प्रभाकर मा

पं० बनारसीदास चतुर्वेदी हिन्दी साहित्य के एक पुराण पुरुष हैं, बात टालना मेरे लिए कठिन है। उनके आदेश और आग्रह पर लोकमान्य गंगाधर तिलक की साहित्यिक महत्ता पर ये पंक्तियाँ लिखी जा रही हैं। १९५६ में 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान' में तिलक महाराज के इतिहास और क्षेत्र में योगदान पर लेख लिखा था। उनके जेल से छूटने पर तब उनके सम वेरामजी मलाबारी आदि ने क्या कहा था और केरल में कैसे हर्षोल्लास इस विषय पर एक लेख 'केरल कोकिल' नामक मराठी पत्रिका का मेरे उसका अनुवाद मैंने मलयालम 'मातृभूमि' के एक अंक में १९५७-५८ में प्र कराया था। अनेक बार तिलक पर बोलना-लिखना पड़ा—देश में और भी। मेरी पुस्तक 'आधुनिक भारतीय विचारक' (प्रकाशक—विहार हिन्दी अकादमी) में तिलक पर एक पूरा अध्याय है। गत वर्ष १ अगस्त को आका दिल्ली से महापुरुषों के कारावास में किये गये नव ग्रंथ प्रणयन पर, तिलक हुए 'गीतारहस्य' पर और मांडले जेल में उनके जीवन पर मैं राष्ट्रीय वार्ता दे चुका हूँ। आज पुनः वही चर्चा सही। हमारे शास्त्रों में कहा गया परमात्मा का नाम जितनी बार लिया जाये, जिह्वा थकती नहीं। हृदय करण ही होता है। महापुरुषों में दैवी अंश होता है। उनके महत् आदर्श चिन्तन स्मरण भी उसी तरह स्फूर्तिदायक होता है। एक मराठी राष्ट्रीय लिखा है कि "तेरी महिमा गाने के लिए मेरे शब्द रूपी बुद्बुद काफी तुम्हारा गुणगान तो भविष्य में तोपों की सलामी से होगा।"

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक के जीवन की रेखाएँ संक्षेप में भारत के ललामभूत इस बालक ने कोंकण के एक साधारण मध्यमवर्गीय में १८५६ में जन्म लिया। प्रचलित जनरीति के अनुसार प्राथमिक, मा ऊँची शिक्षा ली। गणित और इतिहास उनके प्रिय विषय थे। डेक्कन कॉ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

से १८७७ में बी० ए० और १८७९ में एल. एल. बी. की परीक्षाएँ पास कीं। अभी भी पूना में उनका वह कमरा सुरक्षित रखा गया है, जहाँ वे बोर्डिंग में पढ़ते थे। उनके पिता की ही तरह संस्कृत और गणित तिलक के प्रिय विषय थे। गणित में वे एम. ए. नहीं हो सके। उस परीक्षा में वे फेल हुए और दुबारा वह परीक्षा नहीं दे पाये। वे कहा करते थे—यदि मुझे राजनीति से फुरसत मिले तो मैं गणित का अध्ययन-अध्यापन करूँगा। महाराष्ट्र के पुनर्जागरण के सभी नेता बड़े जहीन थे, विज्ञान प्रेमी थे। गोपाल कृष्ण गोखले की गणित तो सारे भारत में प्रसिद्ध थी। आगरकर और रानाडे भी समाजशास्त्र और इतिहास के बहुत अच्छे विद्वान् थे।

कानून की परीक्षा पास करते समय तिलक ने हिंदू धर्म शास्त्र का गहरा अध्ययन किया। आगे उनके परंपरावादी चिन्तन के लिए वह बहुत लाभदायक सिद्ध हुआ। १८८० में चिपलूणकर जो 'न्यू इंगलिश स्कूल' पूना में शुरू किया था उसमें वे पढ़ाने लगे। १८८५ में वे फर्ग्युसन कालेज में पढ़ाने लगे। उनकी इच्छा थी-सारा जीवन विद्यार्जन और विद्या-दान में देना। पर वे यह संकल्प पूरा नहीं कर सके। अपने सहयोगियों से उनका झगड़ा हुआ और १८९० में उन्होंने 'केसरी' (मराठी) और 'मराठा' (अंग्रेजी) इन दो पत्रों का चालकत्व, संपादकत्व उन्होंने अपने हाथों में लिया। १८८२ में ही आगरकर के साथ १०१ दिन डोंगरी जेल में उन्हें जाना पड़ा—कोल्हापुर प्रकरण में उन्होंने सरकार के विरोध में लिखा था।

१८८८-८९ में क्राफर्ड प्रकरण में सरकार ने जिसे धोखा दिया था ऐसे मामलेदार (तहसीलदार) की मदद के लिए वे आगे बढ़े। १८९१ में संपति-वय 'बिल' में. अपने संस्कृत ज्ञान को पूरी बाजी पर लगाकर वे भांडार जैसे महान् विद्वान् से जूझ पड़े—सार्वजनिक वाद-विवाद, लेखों-प्रतिलेखों से पत्र-पत्रिकाओं में चलाने की परंपरा महाराष्ट्रीय साहित्य में पुरानी है। मुसलमान के हाथ का भात खाने के आक्षेप के मामले में आगरकर को 'बोलना व्यर्थ हुआ' ऐसा महसूस करा दिया। १८९४ में बड़ौदा राज्य के मामले में बापट को बचाने में उन्होंने अपनी पूरी शक्ति और कानूनी ज्ञान का उपयोग किया। इस प्रकार से सामाजिक-राजनैतिक क्षेत्र में इतना काम होते हुए भी, १८९३ में वेदकाल निर्णय के बारे में उन्होंने 'ओरायन' जैसा ग्रंथ लिखा जिसकी मैक्समुल्लर जैसे जर्मन पंडितों ने प्रशंसा की। इतिहास के ज्ञान में ज्योतिष-गणित की विचार पद्धति और तर्क-मीमांसा प्रयुक्त करने वाले वे प्रथम भारतीय मनीषी थे।

१८९३-९४ में बंबई में हिंदू-मुसलमानों का दंगा हुआ। तिलक ने हिन्दुओं की संघशक्ति बढ़ाने के लिए १८९४ में गणेशोत्सव को सार्वजनिक राष्ट्रीय रूप

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दिया। १८९५ में रायगढ़ पर छत्रपति शिवाजी की समाधि का जीर्णोद्धार कराया १८९६ से शिवाजी उत्सव प्रतिवर्ष मनाने का उपक्रम शुरू किया। रवीन्द्रनाथ ठाकु ने भी 'शिवाजी-उत्सव' कविता बाँग्ला में लिखी। १८९४ में बंबई विद्यापीठ सीनेट पर और १८९५ में पूना नगरपालिका और बंबई जिले की विधान सभा में चुने गये। '८९६-९७ में महामारी और अकालपीड़ित जनता की सब तरह से से में वे जुट गये। अपने पत्र में उन्होंने सरकार की कठोर आलोचना की। प्लेग रो के लिए सरकार ने बड़े अत्याचार किये। पूना में जनसाधारण की धार्मिक भा नाओं को दुखाया। उसी समय रैंड का खून हुआ। तिलक पर राजद्रोह का मुक चलाया गया और १८९६-९७ में उन्हें बिना किसी कारण से सश्रम कारावास सजा हुई। पं० मैक्समुल्लर ने उन्हें छुड़ाने के लिए ब्रिटिश सरकार को लिख जेल में उन्हें पढ़ने के लिए मैक्समुल्लर ने उन्हें अपने 'ऋग्वेद' की एक प्रति भेजी

१८९९ में जेल से छूटने पर तिलक ने शुद्ध शास्त्रीय पंचांग बनाने का का हाथ में लिया। उसी साल 'केसरी' में संत ज्ञानेश्वर 'दो नहीं एक ही थे' भिंगारकर की लेखमाला उन्होंने प्रकाशित कराई। १९०१ में सिंहगढ़ पर जा वे रहे। और 'दि आर्कटिक होम इन् दि वेदाज' नामक ग्रंथ के अंतिम दो अध्य छोड़कर उन्होंने उसे पूरा किया। यह ग्रंथ उन्होंने १९०३ में पूरा किया। १९ से १९०४ में वे 'ताई महाराज' के दत्तक के मामले में आवश्यक कानूनी झगड़े पड़े और बहुत ताप-संताप उन्हें सहना पड़ा। एकबार इस मामले में उनके हा में हथकड़ियाँ भी डाली गईं। ढाई बरस तक यह मामला चला। अंत में तिल तर्कों की ही विजय हुई।

१९०१ में नागपुर में 'भगवद्गीता' पर व्याख्यान देकर अपने लिखे 'गी रहस्य' का सिद्धान्त प्रथम प्रतिपादित किया। १९०५ में बंग-भंग के विरोध 'केसरी' में जोर से सरकार की आलोचना की। स्वदेशी, स्वराज्य, परदेशी व का बहिष्कार (बायकाट) और राष्ट्रीय शिक्षण का चार-सूत्री कार्यक्रम तिल घोषित किया। १९०८ में उनपर राजद्रोह का मुकदमा चलाकर उन्हें छह बरस सजा देकर देश निष्कासित करके मंडाले भेज दिया। यहीं पर उन्होंने जन-मान्य विश्वविख्यात ग्रंथ 'गीता-रहस्य' लिखा। १८९५ से वे कांग्रेस में कार्य करते थे। मंडाले से छूटने पर उन्होंने अपने 'गरम दल' का संघटन कर १९१६ में कांग्रेस में प्रवेश किया। 'होमरूल' के आंदोलन को बड़ी गति दी। १९१ वैलेंटाइन चिरोल ने 'दि इंडियन अनरेस्ट' पुस्तक में तिलक के बारे में जो बद का मजमून लिखा, उसके विरोध में वे विलायत तक 'केस' चलाने गये। उस हार गये। चिरोल को 'केस' का सारा खर्चा देना पड़ा। १९२० में मांटेग्यू चेम्स

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सुधार का फायदा उठाने के लिए 'कांग्रेस डेमाक्रेटिक पक्ष' की स्थापना की। पर १ अगस्त १९२० को बंवई में उनकी मृत्यु हुई।

तिलक के इस जीवन से यह पता चलता है कि उनकी प्रकृति और स्वभाव दो दिशाओं में सक्रिय था। वैदिक शोध और गीता के दर्शन में एक ओर उनका मन रमता था, उसी तरह से राजनैतिक क्षेत्र में उग्र राष्ट्रीयता के वे समर्थक भी बने। उनके तीन ग्रंथ 'ओरायन' (वेदकालनिर्णय), 'आर्टिक होम इन दि वेदाज' (उत्तर ध्रुव के पास आर्यों की वस्ती के प्रमाण) और 'गीतारहस्य' एक तरह से 'प्रस्थानत्रयी' की तरह भारतीय इतिहास मीमांसा और दार्शनिक चिंता के आधार बने। चाणक्य की राजनीति से प्रभावित उनके अनेक राजनैतिक लेख, 'केसरी' का उनका सपादन और उसके लिए एक तरह का सरकारी रोद और सजा सहन करने का साहस उनके चरित्र का दूसरा पहलू था।

मैक्समुल्लर ने ईसापूर्व १२०० वेदों का समय निश्चित किया था। डा० हौ ने २४०० ईसा पूर्व तक कहा। तिलक ने 'ओरायन' में सिद्ध किया कि यह काल ४००० ईसा पूर्व तक पहुँचता है। और उसे ज्योतिष शास्त्र का आधार दिया। इसका अर्थ यह हुआ कि भारतीय संस्कृति मिस्री, चीनी या खाल्डियन (सुमेरी बाबिलोनी) संस्कृति से भी पुरानी हैं यह उन्होंने सिद्ध किया! 'आर्टिक होम' ग्रंथ में आर्य उत्तर ध्रुव के पास रहते थे, यह नया सिद्धांत उन्होंने प्रतिपादित किया। यहाँ इतिहास की सहायता के लिए वे भूगर्भशास्त्र का साक्ष्य देते हैं। न. चिं. केलकर ने इन दो ग्रंथों के बारे में लिखा है कि 'इस ग्रंथद्वय में तिलक ने पश्चिमी संस्कृति पर पूर्व की सस्कृति की विजय सिद्ध की'।

उनका सबसे महत्त्वपूर्ण ग्रंथ है 'गीतारहस्य या कर्मयोगशास्त्र'। तिलक ने स्वयम् लिखा है : "सर्वभूतरत बनकर स्वार्थ का परार्थ में लय करना, इस आत्मौपम्य बुद्धि से फलाशारहित कर्म करना भक्ति योग से श्रेष्ठ है यह गीता का प्रतिपाद्य है। लोककल्याण या परोपकार की उपपत्ति, इतने सुन्दर ढंग से पश्चिम के दार्शनिक केवल आधिभौतिक मार्ग से जैसे लगाते हैं लगाई ही नहीं जा सकती। इसलिए गीता का कर्मयोग पश्चिम के कर्मयोग से श्रेष्ठ है।" तिलक के जीवनी लेखक न० चिं० केलकर ने 'गीतारहस्य' की विशेषता यह बताई है कि उसने पहिले मराठी में पश्चिम के या यूरोप के दर्शन का ऐसा तुलनात्मक विचार किसी लेखक ने नहीं किया था और उसकी भाषा अत्यन्त प्रसादपूर्ण और सर्वसाधारण की समझ में आनेवाली है। तिलक इस ग्रंथ के लेखन में केवल पांडित्य प्रदर्शन नहीं करते। उनका उद्देश्य राष्ट्र को प्रेरणा देनी थी।

तिलक के तीन और निबन्ध मराठी में महत्त्व के हैं: (१) खाल्डियन संस्कृति और भारतीय वेद, (२) छूटी हुई सांख्यकारिका, (३) वेदांगज्योतिष। तिलक किन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विषयों पर ग्रंथ लिखना चाहते थे, उनकी एक सूची नं० चिं० केलकर ने दी है। वह इस प्रकार से है; इनमें से केवल आठवाँ वे लिख सके :

(१) हिंदू धर्म का इतिहास
(२) हिंदू-राष्ट्रधर्म
(३) रामायण, महाभारत पूर्व भारत का इतिहास
(४) शांकर-दर्शन (अद्वैत)
(५) प्रांतिक राज्यव्यवस्था
(६) हिंदू लॉ (कानून)
(७) इनफिनिटेसियल कैल्क्युलस (गणित)
(८) भगवद्गीतारहस्य-नीतिशास्त्र
(९) शिवाजी की जीवनी
(१०) खाल्डिया और हिंदुस्तान

राजनीति पर तो वे १२ किताबें लिखना चाहते थे जिनमें स्पेन, आस्ट्रिया, रूस आदि देशों की नौकरशाही का इतिहास भी लिखना चाहते थे। 'मुस्लिम राज्यों के विकास और ह्रास' पर भी उन्होंने अध्ययन किया था। इन बारह ग्रंथों में से केवल अंतिम 'हितविरोध-परिहार' निबन्ध उन्होंने लिखा।

इसके अलावा 'किसी' में उनके सैकड़ों लेख हैं जो अनेक विषयों पर हैं। उनसे तिलक की अगाध विद्वत्ता और निर्भीक स्पष्टवादिता और अत्यन्त ज्वलंत गद्य-शैली के दर्शन होते हैं। तिलक महाराज के चुने हुए निबन्धों का संग्रह कडीव साहित्य अकादमी ने प्रकाशित किया है, जिसकी भूमिका तर्कतीर्थ लक्ष्मन शास्त्री जोशी ने लिखी है। इसका अनुवाद हिंदी में शीघ्र होना चाहिए।

तिलक भारतीय भाषाओं के पोषक थे। मराठी विश्वविद्यालयों का माध्यम हो। ऐसा होने के लिए उसमें उत्तम शास्त्रीय, वैज्ञानिक ग्रंथ लिखे जायें इसमें उनका विश्वास था। नये कवियों का और कोरे भावुकों का वे मजाक उड़ाते थे—'चार पैसे की भंग लाकर पीसो, पीकर जो भी अंड बंड बको, वह कविता हो जायेगी।' उन्होंने लिखा है कि "हिन्दुस्तान की राष्ट्रभाषा मराठी नहीं हो सकती। पर हिंदी जैसी भाषा राष्ट्रभाषा बनी तो उससे मराठी को धक्का पहुँचेगा।" ऐसा उन्होंने लिखा था।

उनकी भाषा शैली की विशेषताएँ (१) विद्रोहशीलता (२) वैचारिक असहिष्णुता (३) साधार, सप्रमाण, तर्कयुक्त लेखन (४) पांडित्य होने पर भी दुर्बोधता कहीं भी नहीं (५) अनावश्यक विस्तार नहीं (६) अलंकारों से भाषा को सजाने का मोह नहीं बल्कि सीधी-सादी सपाट बयानी (७) राष्ट्रीयता का प्रेम सब गुणों में प्रथम मानने की इच्छा।

ऐसे तिलक को पुनः प्रणाम !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लोकमान्य तिलक

□ जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी

लोकमान्य तिलक को भारत में पूर्ण स्वराज्य की कल्पना करनेवालों का जनक माना जाता है। वे राष्ट्रीय आन्दोलन में थे और उन लोगों में पहले थे जो राष्ट्रीयता के विचारों के कारण १८५७ के बाद जेल भेजे गये। लेकिन भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अत्यन्त सक्रिय कार्यकर्ता होते हुए भी कुछ ऐसा हुआ कि बहुत दिनों तक उन्हें कांग्रेस के नेतृत्व से वंचित रखा गया। जब नागपुर में कांग्रेस का अधिवेशन करने का निश्चय किया गया और वहाँ की स्वागत समिति ने श्री बाल गंगाधर तिलक को अध्यक्ष चुनने की इच्छा प्रकट की तो अधिवेशन का स्थान नागपुर से बदलकर सूरत कर दिया गया और लोकमान्य तिलक का यह आग्रह भी नहीं माना गया कि लाला लाजपत राय को जो भारत निर्वासन से लौटे ही थे कांग्रेस का अध्यक्ष बनाया जाये। इसकी परिगणित १९०६ में सूरत कांग्रेस विभाजन में हुई। लेकिन तबसे लेकर १९१६ तक जब तक कि लोकमान्य तिलक फिर वापस आने के लिए तैयार नहीं हुए कांग्रेस की शक्ति क्षीण ही रही है और देश में लाल, बाल, पाल का झण्डा बिना किसी संगठन के केवल उनके व्यक्तिगत नेतृत्व के आधार पर फहराता रहा।

लोकमान्य तिलक विद्वान थे। उन्होंने नये प्रकार के अध्यापन से कार्य प्रारम्भ किया। उसके परिणामस्वरूप पूना नगर विद्या का केन्द्र हो गया। परन्तु उनका सबसे बड़ा योगदान 'केसरी' और 'मराठा' का प्रकाशन हुआ। जो ४ जनवरी, १८८१ को प्रारम्भ हुआ। यह कांग्रेस से ४ वर्ष पूर्व था और इसके द्वारा देश में नवजागृति आई। बंग-भंग का समर्थन कर लोकमान्य ने न केवल 'केसरी' को एक राष्ट्रीय पत्र बना दिया बल्कि राष्ट्रीय पत्रकारिता की नींव डाली। स्वाधीनता तक भारत के अधिकांश पत्र उन्हीं आदर्शों पर चलने का प्रयास करते थे जिन्हें लोकमान्य ने निर्धारित किया था। असहयोग आन्दोलन में उनका सहयोग था और उस समय एक नारा चलता था 'गाँधी की आँधी आई है, बाजा-बाजा तिलक का डंका।'

विचारों के स्वातन्त्र के लिए उन्हें छह वर्षों तक मांडले में काला पानी हो गया। जब उनकी सजा हुई तो बम्बई में जो मजदूरों की हड़ताल हुई। उसने मजदूर आन्दोलन की नींव डाली। क्या सांवैधानिक आन्दोलन हो, क्या क्रान्तिकारी आन्दो-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लन हो, क्या समाचार पत्रों द्वारा प्रचार हो और क्या ओजस्वी स्वर में व्याख्यान हो लोकमान्य तिलक सभी में आगे थे। 'गीता रहस्य' 'और आर्यों' की आदि भूमि' जैसे ग्रंथ लिखकर उन्होंने दर्शन, इतिहास और नेतृत्व इन सब पर अपने ज्ञान और पाण्डित्य की छाप पहुँचा दी और 'गीता' को वास्तविक कर्मयोग का शास्त्र बना दिया। स्वाभिमान तिलक में कूट-कूट कर भरा था। वे सम्मानपूर्ण जीवन कायल थे। शेरोल ने जब अपनी पुस्तक में उनपर अपमान जनक आक्षेप किए तो वे तिलमिला उठे और यह जानते हुए भी कि अंग्रेजों से न्याय की आशा करना व्यर्थ है किन्तु मात्र अपनी आवाज बुलन्द करने के दृष्टिकोण से ही वे इंगलैंड गए और शिरोल पर मुकदमा दायर किया। इससे उन्हें जो कुछ कहना था, अँग्रेजों के अत्याचार का जो भंडाफोड़ करना था, उनके चरित्र के छिपे घिनौने तथ्यों को जो उजागर करना था, वह काम तो हुआ। वे एकवार जो निश्चित कर लेते थे, उससे डिगते नहीं थे। मार्ग पर आने वाले कष्टों एवं तूफानों से विचलित नहीं होते थे। अद्भुत् साहस और जीवनी शक्ति थी तिलक में।

तिलक संकीर्ण विचारों के नहीं थे। वहुत उदारता थी उनमें। वे समय से काफी आगे चलने वाले मनीषि थे। उन्होंने जिन आन्दोलनों का सूत्रपात किया, गाँधी जी ने केवल विस्तार भर किया। वे खुशामद-पसन्द नहीं थे। आत्मश्लाघा भी नहीं थी उनमें। वे विचारों से समझौता भी करते थे किन्तु तभी जब यह विश्वास जम जाय कि इससे देश का हित होगा। स्वतंत्रता-प्राप्ति उनका स्वप्न था, प्रथम कर्त्तव्य था और उसी को लक्ष्य वनाकर वे निरन्तर जूझते रहे।

तिलक का व्यक्तित्व महान था—ऊँचे हिमालय की तरह। उनकी महानता और पवित्रता से न केवल अँग्रेज भय खाते थे वरन् समसामयिक राजनीतिज्ञ भी आतंकित रहते थे। यश और मर्यादा के भूखे वहुत-से राजनेता तिलक की प्रखरता सहने में असमर्थ थे। केवल जनता जनार्दन उन्हें प्यार करती थी, उनपर जान न्योछावर करती थी। नेताओं के न चाहने पर भी वे एक एकछत्र लोकमान्य जन नेता थे। उनकी निर्भिकता, अदम्य साहसिकता, राष्ट्रीयता, संकल्प-निष्ठा, विद्वता, सच्चरित्रता अद्भुत् और वेमिशाल थी। उनकी १९२० में असमय में ही मृत्यु हो गई। पर भारत के इतिहास में उनका स्थान सर्वोच्च नेताओं में चमकता रहेगा।

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कर्मयोगी तिलक

□ डॉ० त्रिलोकी नाथ व्रजवाल

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक सही अर्थों में कर्मयोगी थे। वे इसी कर्मयोग के सहारे मानव और मानवेतर प्रकृति के हृदय को समीप लाना चाहते थे। उन्होंने अपने जीवन में क्षुद्र स्वार्थों के लिए कभी स्थान नहीं दिया। वे जाति, धर्म, क्षेत्रीयता आदि से बँधे नहीं थे और नहीं उनका ब्राह्मणत्व रूढ़िग्रस्त ही था। वे इस दृष्टि से अत्यन्त उदार थे। यद्यपि उनमें स्वाभिमान कूट-कूट कर भरा हुआ था।

श्री तिलक ने अपने अध्ययन-मनन और अनुभव से यह अनुमान लगा लिया था कि भारतीय स्वतंत्रता के मार्ग में यदि कोई बड़ी रुकावट है तो वह है – भारतीयों की निवृत्ति मार्ग के प्रति आस्था। उनकी दृष्टि में युगधर्म की माँग थी कि भारतीय उदासीनता की वृत्ति का त्याग कर सच्चे कर्मयोगी बनें। उनका विश्वास था कि निरन्तर कर्म और सुदृढ़ आस्था के द्वारा ही मनुष्य को सफलता मिल सकती है। यद्यपि यह सत्य है कि भारत में निवृत्ति मार्ग की उपासना उपनिषद्-काल से ही प्रचलित है और बौद्ध एवं जैन धर्म के द्वारा यह समय-समय पर पल्लवित हुई है। इसका यह प्रभाव पड़ा है कि भारतीय समाज में कर्म को हीन, गार्हस्थ को मलिन और संन्यास को श्रेष्ठ माना जाता रहा है। तिलक के विचार से यह जीवन-दर्शन उचित न था। उनकी दृष्टि में कर्म जीवन की विजय का मार्ग है और संन्यासधर्म से कर्म श्रेष्ठतर है। संसार में मनुष्य कर्मों के द्वारा ही उन्नति कर सकता है। इसीलिए उन्होंने कहा है—"जो प्रवृत्तिमार्ग को छोड़कर निवृत्ति मार्ग की ओर जाता है, वह जीवन से पलायन करता है और वह जीवन का सच्चा आनन्द नहीं उठा सकता।"

तिलक का जीवन मुख्यतः राजनीति से सम्बद्ध था किन्तु उनका हृदय धर्म में और मस्तिष्क ज्ञान-साधना में निमग्न रहता था। वे उच्चकोटि के शिक्षक, उदार समाज सेवक और सफल पत्रकार थे। इतिहास और दर्शन में उनकी गहरी रुचि थी।

वे चाहते थे, देश यथाशीघ्र स्वतंत्र हो। उनकी विदेशी शासन के प्रति घोर अनास्था थी। वे चाहते थे कि उनके स्वदेशवासी एकता के सूत्र में बँधकर स्वतंत्रता

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्राप्त करें और अपने विविध कर्मों से देश को उन्नतिशील बनायें। इस प्रयत्न में उन्होंने अपनी पूरी शक्ति का उपयोग किया तथा अपने जीवन में अनेक कष्ट उठाये। उनका सम्पूर्ण जीवन कर्मयोग का एक ज्वलंत उदाहरण है।

तिलक ने गीता के "योग : कर्मसु कौशलम्" (गीता २।५०) के 'योग' शब्द का अर्थ अपने महान ग्रंथ 'कर्मयोग-शास्त्र' (गीतारहस्य) में निरूपित किया है, वह माननीय है। उनके अनुसार एक ही कर्म करने के लिए अनेक सहज उपाय हो सकते हैं लेकिन, उन सबमें जो उपाय या साधन श्रेष्ठ हो, वही योग की संज्ञा से अभिहित हो सकता है। जैसे "द्रव्य उपार्जन करना' एक कर्म है। इसके अनेक उपाय या साधन हैं, जैसे चोरी करना, जालसाजी करना, भीख माँगना, सेवा करना; ऋण लेना, मेहनत करना इत्यादि। यद्यपि धातु के अर्थानुसार इनमें से सब को 'योग' कह सकते हैं तथापि यथार्थ में 'द्रव्य प्राप्ति योग' उसी उपाय को कहते हैं जिससे हम अपनी स्वतंत्रता रखकर मेहनत करते हुए द्रव्य प्राप्त कर सकें।"

(गीता रहस्य पृष्ठ-५९)

अब प्रश्न है, किस प्रकार के कर्म करने योग्य हैं? इसका उत्तर तैत्तिरीयोपनिषद् में मिलता है। उसमें स्पष्ट लिखा है कि—जो कर्म अच्छे हों (उचित हों) उन्हीं का अनुकरण करो और सब छोड़ दो।

तिलक के अनुसार गीता का सबसे महत्त्वपूर्ण सन्देश यही है कि—कर्मवादी बनो। अपने इसी विश्वास के कारण ही तो तिलक ने बड़ी दृढ़ता से अंग्रेज न्यायाधीश की अदालत में कहा था कि—"स्वाधीनता मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है, मैं उसे लेकर रहूँगा।"

तिलक अपने विचारों में सुदृढ़ होते हुए भी अत्यन्त व्यवहार कुशल थे। बीसवीं सदी के प्रारम्भिक बीस वर्षों में लोकमान्य तिलक भारत के सर्वाधिक चर्चित, मान्य और लोकप्रिय नेता थे। यद्यपि उन्हें इस बीच में शासन से और कांग्रेस से कई बार अपने सिद्धान्तों के कारण संघर्ष करना पड़ा था, कष्ट भी मिला था फिर भी, वे उस समय भारत के सर्वश्रेष्ठ नेता थे।

गाँधी जी जब भारत में (प्रारम्भ में) राजनीतिक जीवन में आये तब उन्हें अपने मार्ग दर्शन के लिए तिलक जी के पास जाना पड़ा। उस समय का चित्रण करते हुए गाँधी जी ने अपनी आत्मकथा में लिखा है—"लोकमान्य से मिला। उन्होंने कहा—सब पक्षों की सहायता लेने का आपका विचार बिल्कुल ठीक है। आपके मामले में कोई मतभेद हो ही नहीं सकता। पर आपके लिए तटस्थ सभापति चाहिए। आप प्रो० भांडारकर से मिलें। वह आजकल किसी आन्दोलन में सम्मि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लित नहीं होते। पर शायद इस काम के लिए तैयार हो जांय। उनसे मिलकर सूचित करें कि क्या हुआ। मैं आपकी पूरी सहायता करना चाहता हूँ। आप प्रोफेसर गोखले से तो मिलेंगे ही। मेरे पास जब आना हो निसंकोच आ सकते हैं।'' लोकमान्य का यह मुझे प्रथम दर्शन था। उनकी लोकप्रियता का रहस्य तुरन्त मेरी समझ में आ गया।

(सत्य के प्रयोग पृ० १७५)

तिलक का कहना था कि ''जब देश पराधीन हो तो स्वराज्य के लिए सचेष्ट होना ही गीता के कर्मयोग में बताये गए कर्त्तव्य की पूर्ति है और यदि किसी धर्म की व्याख्या ही न हो सके तो वह धर्म सच्चा नहीं है। × × कर्त्तव्य के इस संसार व्यापी नियम का पालन मनुष्य के महानतम आदर्शों की पूर्ति है। कर्म का राष्ट्रीय फल स्वराज्य है। कर्मयोगी और राजयोगी स्वराज्य प्राप्ति के लिए सचेष्ट रहते हैं। स्वराज्य है क्या ? स्वयं पर केन्द्रित और स्वयं पर आधारित जीवन। स्वराज्य इस लोक में भी है और परलोक में भी। कर्मयोग के नियम बनाने वाले ऋषि स्वयं वनों में तपस्या करने गए, क्योंकि जनता को स्वराज्य प्राप्त था और क्षत्रिय राजा उसका प्रशासन एवं उसकी रक्षा करते थे। × × × कर्मविहीन ध्यान तो गीता के उपदेश के विरुद्ध है। स्वराज्य के लिए कर्म में परिणत उचित ध्यान ही कर्मयोग है। जो व्यक्ति हाथ-पर-हाथ धर कर बैठ जाता है और अपना बोझ दूसरों पर डालता है, उसे ईश्वर की सहायता की अपेक्षा नहीं करनी चाहिए। निष्काम और सुविचारित कर्म ही दिशासूचक सिद्धान्त है।……गीता का भारतीय आध्यात्मिक जीवन में अभूतपूर्व स्थान है और वह कर्म की भावना से ओतप्रोत है।''

तिलक ने गीता के सन्देश को हृदयंगम किया, उसे व्याख्यायित किया और उसे अपने जीवन में अक्षरशः उतारा। कौन-सा कष्ट नहीं आया उनके जीवन में, कठिन संघर्ष के दिन आए, नाना प्रकार की यातनायें सहनी पड़ीं, अपमान सहना पड़ा, उपेक्षा मिली किन्तु अद्भुत् कर्मयोगी अपने लक्ष्य से नहीं डिगा। आजीवन कर्म में ही रत रहा।

लोकमान्य तिलक का सम्पूर्ण निजी जीवन कर्म योग का एक आदर्श उदाहरण है।

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

झूठ की राजनीति को सत्य से जोड़ने वाले

अमर कर्मवीर–तिलक

□ कुणाल कुमार,
सम्पादक, उत्तर विहार, पट

उन्नीसवीं शदी के यशस्वी अंग्रेज राजनीतिज्ञ स्वर्गीय डिजरायली वेंजामि ने कह रखा है कि 'राजनीति के सदृश दूसरा कोई जुआ नहीं है।' और उस उपयोग के सम्वन्ध में पाँचवीं-छठी शती के भारतीय सिद्धयोगी तथा उज्जयनी नरे भर्तृहरि का यह कथन भी अवतक कालजयी बना हुआ है कि—"राजनीति वेश्य के समान अनेक प्रकार से व्यवहार में लायी जाती है—कहीं झूठ की राजनीति तो कहीं सच की; कहीं कठोरता की तो कहीं मधुर भाषण द्वारा छलना की; क हिंसा की राजनीति चलती है तो कहीं दयालुता की; कहीं कंजूसी की तो क उदारता की भी और कहीं प्रचुर व्यय की राजनीति चलती है तो कहीं अधिक संच (जमाखोरी) की राजनीति काम आती है—

सत्यानृता च परुषा प्रियवादिनी च,
हिंस्रा दयालुरपि चार्थपरा वदान्या।
नित्यव्यया प्रचुर नित्यधनागमा च,
वेश्यांगनेव नृपनीतिरनेक रूपा।
[नीतिशतक]

और सर अर्नेस्ट वेन के शब्दों में —'राजनीति विपत्तियों को खोजने, सर्वत्र प्राप्त करने, गलत निदान करने और अनुपयुक्त इलाज करने की कला' है और उन्नीसवीं शती के ही सुप्रसिद्ध अमरीकी लेखक स्वर्गीय हेनरी ऐडम के अनुस व्यावहारिक राजनीति यथार्थ—वस्तु तथ्य को नकारने में ही व्यस्त रहा करती है तभी तो हमारे लोकमान्य तिलक ने यह स्पष्ट ऐलान कर रखा है कि 'राजनी साधुओं के लिए नहीं है।' और, विश्ववन्द्य वापू वरावर यह वताते रहे कि, 'धर्म विलग राजनीति निष्प्राण काया-सी है, जो वस जला देने के योग्य हुआ करती है तभी तो स्वराज्य मिल जाने के बाद वापू भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को उन्मूलि कर देने के पक्ष में दृढ़-प्राण-सा हो गये थे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मगर "स्वतंत्रता हमारा (हम भारतीयों का) जन्मसिद्ध अधिकार है"— का निसर्ग सुन्दर 'नारा' बुलन्द करनेवाले इस लोकमान्य की वाणी के व्याख्याता के रूप में 'बाल-लाल-पाल' (बाल गंगाधर तिलक, लाला लाजपत राय तथा विपिन चन्द्र पाल) के रूप में प्रख्यात गरम दल (कांग्रेस) के अन्यतम महारथी स्वर्गीय विपिन चन्द्र पाल मौजूद मिलते हैं, जिनका कहना है कि—'परमात्मा अनादि है, स्वतंत्र और स्वयंदर्शी है; अतः मानव मात्र स्वतंत्र स्वयंद्रष्टा (हुआ करता) है और इसीलिए 'स्वतंत्रता मनुष्य का जन्मसिद्ध अधिकार है।' मगर, यह स्वतंत्रता मानव चिन्तन-धारा के मुताबिक स्वकर्म परायणता हुआ करती है जिसमें 'आत्म-संयम' को सर्वोपरि प्राथमिकता दी गयी देखी जाती है।

और, यह कर्म-स्वकर्म-भी और कुछ नहीं, धर्म-स्वधर्म-के रूप में ही व्याख्यात होता आया है। गीता में भगवान् कृष्ण ने स्पष्ट कहा है कि, "प्राणिमात्र की, जिससे प्रवृत्ति (सृष्टि) हुई है और जिसने सारे जगत् को विस्तृत किया है (अथवा जिससे सब जगत् व्याप्त है) उसकी अपने (स्वधर्मानुसार प्राप्त होनेवाले) कर्मों के द्वारा (वाणी अथवा फूलों से ही नहीं) पूजा करने से मनुष्य को सिद्धि प्राप्त होती है।"

—यतः प्रवृत्तिर्भूतानां येन सर्वमिदं ततम्।
स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य सिद्धिं विन्दति मानवः ॥
[गीता १८।४६]

और जिस स्वकर्म को इतना विराट् महत्त्व दिया गया है, उसी को स्वधर्म के रूप में अगले ही श्लोक में भगवान् बता चुके हैं जिसका स्पष्टतम अर्थ यह माना गया है कि, स्वधर्म ही स्वकर्म है और स्वकर्म ही स्वधर्म माना जाता है। गीता बताती है कि, यदि परधर्म का आचरण सहज हो तो भी उसकी अपेक्षा स्वधर्म विगुण यानी सदोष होने पर भी अधिक उद्धारक हुआ करता है क्योंकि स्वभाव विहित कर्म (=स्वकर्म) करता हुआ व्यक्ति पाप का भागी नहीं होता है।

श्रेयान् स्वधर्मो विगुणः परधर्मात् स्वनुष्ठितात्।
स्वभाव नियतं कर्म कुर्वन्नाप्नोति किल्विषम् ॥
[गीता १८।४८]

महर्षि वाल्मीकि ने—

"धर्मोहि परमोलोके धर्मे सत्यं प्रतिष्ठितम्।"

अर्थात्—'धर्म ही संसार में सर्वश्रेष्ठ वस्तु है क्योंकि उस (धर्म) में सत्य प्रतिष्ठित रहा करता है'—कहते हुए जिस धर्म की (=स्वधर्म की) महिमा गायी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

है, वही अगर असत्य-प्रतिष्ठ हो बैठता है, झूठ के सेनापतित्व में आडम्बर सा म्राज्य-विस्तार होता है तो वही धर्म शुष्कता और शून्यता का विस्तारक बनकर समाज विरोधी-लोक विरोधी बन जाया करता है जिसे प्रसिद्ध जर्मन-विचारक कार्ल मार्क्स "मानव समाज के लिए अफीम" और आचार्य नरेन्द्र देव के शब्दों में "मानव की परिपूर्णता में बाधक" हुआ करता है। इसीलिए धर्म-अधर्म किंवा कर्म-अकर्म का पचड़ा भारी उलझनपूर्ण हुआ करता है, यह गीता का उपदेश है।

फलतः गीता की दृष्टि से कर्मभूमि जीवलोक और लोककर्म लोकधर्म स्पष्ट है जिसको जानने-मानने के लिए लोकदृष्टि चाहिए अर्थात् —सुसंस्कृता बुद्धि चाहिए।

गीता के ही अनुसार—परमस्थानी परब्रह्म किंवा पुरुषोत्तम के अलावा इस दुनिया में—जीव लोक में—कर्मभूमि में—शाश्वत एक और तत्त्व माना जाता है जिसे जीव-जीवनधारी के रूप में हम सभी प्रत्यक्ष करते हैं। और, जिसका सदा से यह कार्य रहा है कि, वह मन और पाँच इन्द्रियों के साथ इस देह रूपी गाड़ी को खींचते रहा करता है। यह जीव भी =जीवात्मा भी—न कटनेवाला, न जलनेवाला, न भींगनेवाला, और न सूखनेवाला ही है। यह नित्य, सर्वव्यापी, स्थिर, अचल और सनातन अर्थात् चिरन्तन माना गया है।

(१) ममैवांशो जीवलोके जीवभूतः सनातनः।
मनः षष्ठानीन्द्रियाणि सशरीराणि कर्षति॥
(गीता १५।७)

(२) अच्छेद्योऽयमदाह्योयम क्लेद्योऽशोष्य एव च।
नित्यः सर्वगतः स्थाणु रचलोऽयं सनातनः॥
[गीता २।२४]

फलतः संत तुलसी का चर्चित—
"ईश्वर अंश जीव अविनाशी।
चेतन अमल सहज सुखराशी।"

दुनियादारी में उलझकर—'मायावश्य' बनकर—'ईश-अधीन' बना करता है जिसे भक्तिमार्ग की मुहर महनीय बना चुकी है। मगर भारतीय राजनीति के महानतम स्तम्भ आचार्य चाणक्य का यह स्पष्ट उद्घोष भी कबके हो चुका है कि :—

"जीव स्वयम् कर्म करता है, और उसका फल भी आपही भोगता है। आप ही संसार में भ्रमता है और आप ही मुक्त भी हो जाता है।"

स्वयं कर्म करोत्यात्मा स्वयं तत्फलमश्नुते।
स्वयं भ्रमति संसारे, स्वयं तस्माद् विमुच्यते॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इसलिए—आचार्य चाणक्य का कहना है, कि—'उत्तम कर्म से मनुष्य दो पल भी जीवित रहे, यह श्रेष्ठ है मगर दोनों लोकों-इहलोक और परलोक-के विरोधी दुष्कर्म करने वाले का कल्पभर भी जीवित रहना अच्छा नहीं।'—

मुहूर्त्तमपि जीवेच्च नरःशुक्लेन कर्मणा।
न कल्पमपि कष्टेन लोकद्वय विरोधिना ॥

और यह जीवन भी डाक्टर मुहम्मद इकवाल के शब्दों में—

जिन्दगी इन्सां की मानिन्दे मुर्गे खुशनवा !
शाख पर बैठा, कोई दम चहचहाया, उड़ गया !!

और यह कहना अप्रासंगिक नहीं होगा कि हमारे लोकमान्य भी मानिन्दे मुर्गे खुशनमा की राजनीति की शाख पर बैठे और अपनी मधुर मसृण चहचहानों में हमें आजादी संबंद्ध जन्मसिद्ध अधिकारों का उद्‌बोधन कराया और जीवनलीला समाप्त कर डाली। लोकमान्य की यह उदात्त चहचहान अदम्य बनी रही और इतिहास गवाह है कि, ब्रिटिश-शासन द्वारा इस चहचहान पर प्रतिबन्ध लगाने—इस 'मुर्गे खुशनवा' को वारंवार जेल की सींखचों के अन्दर डालने के सभी प्रयास भी विफल साबित हुए और एक वार के जेल-जीवन में 'ओरायन', दूसरे में 'आर्यों का मूल वासस्थान' और तीसरे में 'गीता रहस्य' जैसी अमृतमयी चहचहान ने पूरे मानव समाज को ही आनन्दविभोर कर रखा है। और इस तरह हम देखते हैं कि इनकी स्वातंत्र्य-चेतना की चहचही वाहर के जीवन में 'केसरी' के चिग्घाड़ों में और भीतर के जीवन में ग्रन्थत्रयी के अमूल्य उपदेशों से सदा आप्यायित—आप्लावित होती रही।

लोकमान्य तिलक ने झूठ की राजनीति को सत्य से जोड़ा। उनके लिए राजनीति पेशा नहीं थी, एक परम पवित्र कर्म, एक धार्मिक अनुष्ठान था। वे निरन्तर कर्म करते रहे; समाज सुधार का काम, स्वराज्य के लिए जागृति फैलाने का काम, अत्याचार के सबल विरोध का काम, शिक्षा प्रसार का काम, धर्म-अनुशीलन एवं व्याख्या का काम; स्वाभिमानपूर्वक मस्तक ऊँचा रखने का काम। वे सच्चे अर्थों में कर्मवीर थे।

गीता रहस्य (पृष्ठ ५०७) के शब्दों में—

"तुम अपनी योग्यता (क्षमता) के अनुसार अपने-अपने सांसारिक कर्त्तव्यों का पालन, लोकसंग्रह के लिए, निष्काम बुद्धि से, आत्मौपम्य दृष्टि से तथा उत्साह से, यावज्जीवन करते रहो; और उसके द्वारा ऐसे नित्य परमात्म देवता (जीव लोक) का सदा यजन करो जो पिण्ड ब्रह्माण्ड में तथा समस्त प्राणियों में एकता से व्याप्त है—इसी में तुम्हारा सांसारिक तथा पारलौकिक कल्याण है।"—का उपदेश वर्त्तमान राजनीतिक परिस्थितियों के परिप्रेक्ष्य में अत्यधिक उपयोगी दीखता है जबकि दलगत राजनीति के चक्कर में पड़कर झूठे वायदों का जाल फैलाना ही नेताओं का एकमात्र कर्त्तव्य शेष रह चुका है। □

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लोकमान्य तिलक और कर्मयोग रहस्य

□ आचार्य अवधेश दया

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में, ईसा की बीसवीं शती के प्रारम्भ में, दो दल हो गए थे। नरम दल के नेता श्री गोपाल कृष्ण गोखले थे, और गरम दल के नेता लोकमान्य श्री बाल गंगाधर तिलक थे। अंग्रेजी शासन ने भारतीय राष्ट्रीयता से निपटने के लिए यह नीति अपनाई कि नरम दल से समझौता करो और गरम दल का दमन करो। इसीलिए सरकारी क्षेत्रों में श्री गोखले का बड़ा सम्मान था और श्री तिलक का बड़ा विरोध था। श्री गोखले राज्यमान्य समझे जाते थे, विपरीत श्री तिलक लोकमान्य हो गए।

श्री तिलक गिरफ्तार करके माण्डले (बर्मा) भेज दिए गए। पूना कांग्रेस में नरम दल और गरम दल की करारी टक्कर हो जाने पर गरम दल वालों को कांग्रेस से अलग हो जाना पड़ा। लगभग एक दशक के बाद, दोनों दलों का समझौता हो गया। १९१६ ई० में ये दोनों दल कांग्रेस के लखनऊ अधिवेशन में सम्मिलित हुए। श्री गोखले १९१५ में मर चुके थे और श्री तिलक भी माण्डले से छूट चुके थे। सन १९१६ में लखनऊ में लोकमान्य तिलक का अभूतपूर्व स्वागत हुआ और वे कांग्रेस अधिवेशन में शरीक हुए। महात्मा गाँधी भी जो प्रथम विश्व युद्ध के छिड़ने के बाद सन १९१५ में दक्षिण अफ्रीका से भारत लौट चुके थे कांग्रेस के लखनऊ अधिवेशन में पर्याप्त सक्रिय रहे।

लोकमान्य तिलकजी का "कर्मयोग रहस्य" एक अद्भुत और अनूठा ग्रंथ है, जिसका प्रणयन माण्डले जेल में ही हुआ। श्री तिलक एक अनोखी और बहु प्रतिभा वाले विश्वविख्यात विद्वान् थे। ब्रिटिश शासन को इनकी राजनीति से भय था, इनके शास्त्राध्ययन से नहीं। समय गुजारने के लिए धार्मिक अध्ययन करना चाहा, तो सरकार ने इनके लिए अभीष्ट साहित्य सुलभ कर दिया। इसी अध्ययन मनन का परिणाम वह ग्रंथ रत्न है जिसे कर्मयोग रहस्य कहते हैं। यह ग्रन्थ इतना पाण्डित्यपूर्ण है कि इस दृष्टि से श्रीमद्भगवद् गीता के सब भाष्यों में अप्रतिम

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पड़ता है लोकमान्य तिलक का निधन १-८-१९२० को हो गया, तब से लगभग ६० वर्ष हो चुके हैं। गीता पर इन बाद के वर्षों में भी इससे अधिक पाण्डित्य पूर्ण और शोधपूर्ण भाष्य (प्रस्तुत लेखक की जानकारी में) नहीं तैयार हुआ। विश्वविद्यालयों के सम्पन्न पुस्तकालयों में बैठकर भी किसी प्रोफेसर या दर्शनाचार्य ने वैसा कार्य नहीं कर दिखाया जो लोकमान्य तिलक ने माण्डले जेल में बैठकर किया। यही नहीं, प्रतीत तो यह होता है कि तिलक ने प्राच्य और पाश्चात्य, प्राचीन और, नवीन, सभी प्रकार के दर्शनों का तुलनात्मक विवेचन करके गीता दर्शन को सर्वश्रेष्ठ सिद्ध किया था, इस सन्तुलन को आज तक के विचारों के सन्दर्भ में पूर्ण करना, अर्थात् तिलक के ग्रन्थ का नव सम्पादन और नवीनीकरण करना भी एक ऐसा कार्य है कि जिसमें यदि कई प्रोफेसर साथ मिल कर प्रयास करें तो भी सम्भवतः उन्हें कुछ वर्ष लग जाएँगे।

लोकमान्य तिलक के "कर्मयोग रहस्य" नामक गीता भाष्य की एक अनोखी विशेषता यह भी है कि उन्होंने अपने भाष्य में पहले लगभग एक हजार पृष्ठ का विवेचनात्मक भूमिका-भाग प्रस्तुत किया है, जो अनेक विद्वत्तापूर्ण अध्यायों से मण्डित है। इसके बाद भाष्य का वह भाग दिया गया है जिसमें गीता के श्लोक, उनके अर्थ और टीका सम्मिलित हैं। मूल ग्रन्थ मराठी में लिखा गया, फिर उसके हिन्दी व अंग्रेजी के अनुवाद निकले। इस अद्भुत प्रतिभाशाली ग्रन्थ रत्न के प्रणेता लोकमान्य तिलकजी अपने ग्रन्थ में विनम्रता पूर्वक यह कहते हैं कि—

सन्तों की उद्दिष्ट उक्ति है मेरी बानी।
जानूँ उसका भेद भला क्या मैं अज्ञानी।।

भाष्य के अध्ययन से स्पष्ट हो जाता है कि लोकमान्य बहुभाषाविद् थे, उनका शास्त्र ज्ञान अगाध था और उन्होंने सभी पाश्चात्य दर्शनों को भी भलीभाँति आत्मसात् कर लिया था। श्रीमद्भगवत् गीता की अन्तरंग और बहिरंग दोनों प्रकार की समीक्षा श्री लोकमान्य ने अपने ग्रन्थ में की है और अन्त में गौरवान्वित होकर ओजपूर्ण घोषणा की है कि गीता किसी विदेशी विचारधारा से प्रभावित नहीं है। भारतीय मनीषियों को किसी बाहरी स्रोत से कुछ सीखना नहीं पड़ा। गीता मौलिक और सर्वश्रेष्ठ दर्शन प्रस्तुत करती है। इस प्रकार श्री लोकमान्य तिलक द्वारा इस महान् ग्रन्थ का रचा जाना स्वयमेव एक महती राष्ट्र सेवा थी, इस सेवा के द्वारा उन्होंने राष्ट्र का मस्तक ऊँचा किया और उसके सुयश में चार चाँद लगा दिये।

अब हमें कर्मयोग रहस्य के एक अन्य पक्ष पर भी विचार करना चाहिए। महाभारत निस्संदेह एक ऐतिहासिक युद्ध था। परन्तु महाभारत में वर्णित युद्ध धर्म

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

और अधर्म की शक्तियों के बीच चलनेवाले शाश्वत् संघर्ष का प्रतीक भी है। साधक के अन्तःकरण के भीतर शुभ और अशुभ वृत्तियों के टकराव से जो भ्रम, संदेह, मोह और विषाद की स्थिति उत्पन्न होती है उसका संक्षिप्त किन्तु अत्यन्त सारगर्भित वर्णन गीता के 'विशादयोग' नामक पहले अध्याय में किया गया है। भीष्म पर्व में अर्जुन को उन्हीं कौरव वीरों से लड़ना था जिनसे लड़कर वह विराट पर्व में विजयी हो चुका था। उस समय की अपेक्षा इस समय परिस्थितियाँ भी अर्जुन के लिए कहीं अधिक अनुकूल थीं। फिर भी बृहन्नला के रूप में स्थित अर्जुन को विराट पर्व में किसी विषादयोग की प्राप्ति नहीं हुई जबकि भीष्म पर्व में श्री भगवान कृष्ण के, सारथी के रूप में, रथ पर विराजमान होते हुए भी विषाद हो गया और वह शोकाकुल होकर रथ के पिछले भाग में बैठ गया। ऐसा क्यों हुआ ? हम ऐसा कह सकते हैं कि विराट पर्व में अर्जुन के सामने केवल तात्कालिक विजय का प्रश्न था। उस समय आक्रमणकारी कौरवों को हराकर भगा देना और विराट को गमों की रक्षा कर लेना उसके लिए पर्याप्त था। परन्दु कुरुक्षेत्र की रणभूमि में केवल तात्कालिक विजय या पराजय का प्रश्न नहीं था। वह एक अन्तिम संघर्ष था जिसमें उभय पक्षों का अस्तित्व ही दाँव पर लगा था। युद्ध के इस घटना क्रम से हमें एक आध्यात्मिक संदेश मिलता है। अच्छा साधक इतनी वीरता तो प्राप्त कर लेता है कि व्यावहारिक जगत में शुभ और अशुभ वृत्तियों के द्वारा विपरीततः प्रेरित किए जाने पर वह शुभ वृत्तियों का ही अनुसरण करें और अशुभ वृत्तियों को पराजित करे। परन्तु, अन्तिम समाधान मोक्ष के लिए उतना पराक्रम पर्याप्त नहीं होता वहाँ साधक के सामने अशुभ वृत्तियों को क्षीण करने का प्रश्न नहीं रहता वरन् उनके समूल विनाश करने का प्रश्न आता है। बहुत अच्छे साधकों में भी अपने शुभ और अशुभ वृत्तियों के साथ एक अपनापन का भाव रहता है। अतः साधन पथ में प्राप्त किसी अन्तर्द्वन्द्व में वृत्तियों के समूल विनाश का अवसर उन्हें कम्पित कर देता है। इन वृत्तियों के महान संहार के पश्चात किसी सम्भावित विजय को साधक नीरस और व्यर्थ समझने लगता है। उसकी भी यही भावना हो जाती है कि जिनके लिए हम राज्य भोग और सुख की कामना करते हैं वे ही प्राण और धन का मोह छोड़कर इस युद्ध में सामने खड़े हैं। (गीता १/३३) इस प्रकार जैसे पराक्रमी अर्जुन को भी आततायी स्वजनों के वध से पाप लगने की आशंका थी उसी प्रकार साधक को भी अन्तिम संघर्ष के समय अशुभ वृत्तियों के प्रति अनुचित दया लगती है इसका पराक्रम शिथिल हो जाता है और वह विषादयुक्त होता हुआ संघर्ष से उपराम होकर बैठ जाता है। ऐसे कठिन समय में, जिस भगवान की कृपा से, शुभ और अशुभ वृत्तियों के बीच स्थित होकर तटस्थ सर्वेक्षण का अवसर मिला

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उसी भगवान की कृपा से, दिशा निर्देश से, अमृतमय वचनों से तथा दिव्य रूप के दर्शन से, मोह का नाश हो कर पुनः प्रबल पराक्रम का उदय होता है और भगवान की शरणागति में प्राप्त जीव प्रसन्नतापूर्वक, मोह और सन्देह से रहित होकर उनकी आज्ञा का प्रसन्नतापूर्वक पालन करता हुआ युद्ध में जुटता है और शानदार विजय (सिद्धि) लाभ प्राप्त करता है।

जिस प्रकार श्रीमद्भगवत् गीता का उपर्युक्त आध्यात्मिक सन्देश है, उसी प्रकार श्रीमद्भगवत गीता का राष्ट्रीय सेवा के क्षेत्र में भी एक चिरन्तन राजनीतिक सन्देश है। इस सन्देश को शायद सबसे पहले अत्यन्त स्पष्ट रूप में लोकमान्य तिलक ने ही प्राप्त किया और सबसे अधिक ओजस्वी और विशद रूप में उन्होंने अत्यन्त कुशलता के साथ उसे कर्मयोग रहस्य में निहित कर दिया। तथापि हमें इस सन्देश की चेतना महर्षि अरविन्द घोष, महात्मा गांधी, ऐनीबिसेन्ट, आचार्य विनोबा भावे आदि में भी स्पष्ट लक्षित होती है।

राजनीति को दुष्टों की लीला का मैदान नहीं रहना चाहिए उसमें राष्ट्र की सतत् निस्वार्थ सेवा होनी चाहिए, परन्तु सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और धार्मिक, सभी क्षेत्रों में निस्वार्थ, निष्पक्ष, निर्भीक, धृतिमान सेवकों की बड़ी कमी है। आवश्यक गुणों से युक्त उत्साही कार्यकर्त्ताओं के अभाव में सेवा के बहुत से आवश्यक कार्य नहीं किए जा सकते। देश और राष्ट्र की उन्नति बहुत सीमा तक अच्छे सक्षम कार्यकर्त्ताओं की उपलब्धि पर निर्भर है। महान विभूतियों को भी यदि साधारण कोटि के लोगों से काम लेना पड़ता है तो उनके विकारों से काम बिगड़ता है। यदि राजनीति के क्षेत्र में कपट चालाकी बराबर चलती रहती है तो बहुत-सा कार्य होने पर भी राष्ट्र का कल्याण नहीं होता। तथाकथित सेवा से राष्ट्र का काम नहीं चल सकता। राष्ट्र को विशुद्ध सेवा की आवश्यकता है। जब श्री लक्ष्मण जी श्री रामचन्द्र जी के साथ वन को जाने लगे तो माता सुमित्रा ने उन्हें सेवा विषयक अनुरूप उपदेश दिया—

सकल प्रकार बिकार बिहाई। मन कर्म वचन करेहु सेवकाई॥

सब प्रकार के विकारों से रहित होकर प्रजा को स्थिर रखकर और बडे से बड़े शुभ या अशुभ परिणाम से अकम्पित चित्त रखकर पूरी निष्ठा से सेवा करने वाले लोग ही राष्ट्र का कल्याण कर सकते हैं। ऐसे लोग ही कर्मयोगी हैं। श्रीकृष्ण ने अपने ज्ञान और जीवन के अनुभव से विषम घड़ी में विषादग्रस्त अर्जुन को कर्मयोग का सन्देश दिया। भारतीय राष्ट्र के उत्थान के कार्य में और विशेषतः स्वतन्त्रता संग्राम में बलिदान के कार्य में हमारे नेताओं को यह अनुभव हुआ कि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कर्मयोग के साधन के विना देश के लिए न उचित कार्यकर्त्ता मिल सकते हैं और न मिले हुए कार्यकर्त्ता टिक सकते हैं। इसलिए लोकमान्य तिलक ने कर्मयोग रहस्य को समझाया, श्री अरविन्द घोष ने भी गीता पर अपने निवन्ध लिखे, महात्मा गांधी जी ने भी दीर्घकाल तक कर्मयोग की साधना करने के बाद गीता पर 'अनासक्ति योग' नामक अपनी टीका लिखी और श्री आचार्य विनोवा भावे भी अपनी वर्षों चलने वाली सहस्रों मील की ऐतिहासिक भूदान-पदयात्रा में अपनी 'गीता प्रवचन' पुस्तक साथ रखते रहे और उसे प्रचलित करते रहे। भारतवर्ष के कितने ही क्रान्तिकारी अपने वलिदान की प्रेरणा भगवत् गीता से प्राप्त करते रहे और उनमें से कई एक गीता की पुस्तक हाथ में लिए हुए फाँसी के तख्ते पर चढ़े। आज स्वराज्य प्राप्ति के ३५ वर्ष बाद भी यह हमारा दुर्भाग्य है कि विकार और उत्तेजना युक्त कार्य में ही साधारणतः नेताओं और कार्यकर्त्ताओं की प्रवृत्ति होती है, अनुत्तेजक निर्माण कार्य में शांति और धीरज से लगे रहने वाले कार्यकर्त्ता प्रायः उपलब्ध नहीं होते। केवल अधिक क्रियाशीलता से न अधिक कार्य हो सकता है न कल्याण सिद्ध हो सकता है। इसलिए श्रीकृष्ण का भी सन्देश है और लोकमान्य का भी उद्घोष है कि कर्मयोग की साधना अनिवार्य है। जैसे स्वतन्त्रता के पहले वाले समय में था, वैसे ही स्वतन्त्र भारत में भी कर्मयोगियों का विकास अत्यन्त आवश्यक है। कर्मयोग के विना दूसरी गति नहीं।

यह कहा जा सकता है कि लोकमान्य ने अपने विशेष दृष्टिकोण के कारण कर्मयोग को इतना महत्त्व दिया। भक्ति के आचार्यों ने गीता पर जो अपने भाष्य लिखे उनमें भगवान श्रीकृष्ण के प्रति अनन्य शरणागति की प्राप्ति को ही परमपुरुषार्थ माना। तथापि इससे इन्कार नहीं किया जा सकता कि अनन्य शरणागत भक्त, भगवदीय योजना के ही अनुरूप व्यावहारिक जगत में वहुत बड़ा पुरुषार्थ कार्य कर सकता है। श्री हनुमान न केवल भगवान नाम के अनन्य अनुरागी और रामकथा के अनुपम प्रेमी हैं, वल्कि लंका के युद्ध में राम के अप्रतिम सेनानी और योद्धा भी हैं। उन्हें अतुलित वलधाम माना गया है, रघुपति प्रियभक्त कहा गया है और ज्ञानी नाम अग्रगण्यम भी घोषित किया गया है। भक्ति और शरणागति का उपदेश स्वागत के योग्य और स्वीकार्य है; परन्तु इससे साधारण जनों के लिए भक्ति प्रधान कर्मयोग और भगवत प्रीत्यर्थ कर्म की ही सिद्धि और पुष्टि होती है।

शक्ति आचार्यों के उपदेशों और लोकमान्य तिलक के भाष्य के बीच उतना विरोधाभास नहीं है जितना शांकर भाष्य और तिलक भाष्य के बीच है। यह प्रतीत

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हो सकता है कि तिलक भाष्य का एक प्रयोजन, प्रत्यक्ष नहीं तो परोक्ष रूप से शांकर मत का खण्डन है। यह समझ लेना आवश्यक है कि तिलक ने अपनी ओजस्वी वाणी का प्रयोग शांकर मत के खण्डन के लिए नहीं किया था। परन्तु देश के लिए परमावश्यक कर्मयोग की साधना का मण्डन उनका स्पष्ट प्रयोजन था। इस प्रयोजन की सिद्धि के लिए प्रासगिक रूप से विपक्षी विचारधाराओं का खण्डन भी लोकमान्य ने किया है।

शास्त्र भी एक दर्पण है जिसमें विभिन्न निष्ठाओं के आचार्यों को अपना ही प्रतिबिम्ब दिखाई देता है। प्रत्येक आचार्य का यह प्रयास कि वह अपने सिद्धान्तों को गीता, उपनिषद् व वेदान्त सूत्रों से सिद्ध करें, विहित, उचित और आवश्यक था। यहाँ यह प्रासगिक न होगा कि शांकर भाष्य और तिलक भाष्य की तुलना की जाए और इनमें से एक की विचारधारा को खण्डित करके दूसरे को मण्डित किया जाए। परन्तु यह अत्यन्त उपयुक्त होगा कि हम उन थोड़े से तर्कों पर विचार करें जो कर्मयोग के पक्ष में अत्यन्त ओजस्वी ढंग से लोकमान्य द्वारा प्रस्तुत किए गए हैं।

एक बात तो यह है कि बहुत दिनों से समाज में बहुत लोगों को यह भय लगता है कि महाभारत के पढ़ने से घर में लड़ाई हो जाएगी और यह भी कि अगर कोई लड़का नियमित रूप से गीता पढ़ने लगता है और गीता का प्रेमी हो जाता है तो यह आशंका है कि वह विरक्त होकर घर से भाग जाएगा। इस प्रकार के सामाजिक संस्कार से यह बात लक्षित होती है कि समाज के साधारण स्तर के बुजुर्ग लोग यही मानते थे और शायद आज भी मानते हैं कि गीता का पारायण करने वाला ज्ञानी होने लगेगा और ज्ञान प्राप्ति से वह व्यावहारिक कर्मों से उपराम हो जाएगा और इसलिए घर छोड़ कर साधू हो जाएगा। लोकमान्य ने इस विचार का बड़ा ही उत्तम प्रतिवाद किया है। उनका कहना है कि घर छोड़कर भाग जाना, जीवन संघर्ष को छोड़ देना तथा भीख मांग कर पेट भरना, इस सारे कार्यक्रम के लिए तो अर्जुन महाभारत के युद्ध स्थल में (गीता के पहले ही अध्याय में) तैयार ही था। यदि आततायी लोग मुझे शस्त्र से मार डाले और मैं उनका कोई प्रतिवाद शस्त्र उठाकर न करूँ, चुपचाप मर जाऊँ तो वह मेरे लिए अधिक श्रेयस्कर होगा। (गीता १/४६); ऐसा क्षात्रधर्म विरोधी, कायरतापूर्ण परन्तु देखने में अहिंसक लगने वाला विचार अर्जुन के हृदय में रूढ़ था ही और उसने घोषित भी कर दिया था कि—

न योत्स्य (मैं नहीं लड़ूँगा) (गीता २।९।)

लोकमान्य ने हमें बताया कि गीता में भगवान कृष्ण का सारा प्रयास

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इसलिए हुआ जीवन के संघर्ष से उपराम, कार्पण्य दोषग्रस्त तथा पुरुषार्थ विही बने हुए अर्जुन को साहसी और वीर कर्मयोगी बनाया जाय। विषादयोगी अर्जु रणभूमि को छोड़कर भागने और भीख मांगकर खाने के लिए तैयार था; परन्तु गीत के सारे उपदेश को सुनने के उपरान्त अर्जुन ने घोषित किया कि—

नष्टोमोहः स्मृतिर्लब्धा त्वत्प्रसादान्मयाच्युत।
स्थितोऽस्मि गतसन्देहः करिष्ये वचनंतव ॥ (१८/७३)

श्री लोकमान्य का बहुत प्रबल तर्क है कि जब श्रीकृष्ण का सारा प्रयोज यह है कि संघर्ष से उपराम अर्जुन को कर्मयोगी बनाकर पुनः संघर्षरत कराएं औ विजयी बना दें, तो फिर उनके उपदेश का कोई ऐसा अर्थ करना जिससे मनु व्यवहार से उपराम और पलायनवादी हो जाए, कदापि मान्य नहीं हो सकता। जि अर्थ में भगवान के उपदेश को अर्जुन ने ग्रहण किया, कर्मवीर और विजेता हुआ उससे विपरीत अर्थ में गीता के उपदेश को ग्रहण करने वाले किसी प्रकार सही नह माने जा सकते। आज भी कमजोर दिल के गृहस्थ बुजुर्गों को जिस तरह की आशंकाएं हों वे अविवेक और भ्रम से उत्पन्न मानी जाएंगी। इन आशंकाओं अधिक दृढ़मूल आशंका ब्रिटिश साम्राज्यवादियों को थी, क्योंकि गीता क्रान्तिकारि को देश के लिए जान खपा देने की बलवती प्रेरणा देती थी—

हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम्।
तस्मादुत्तिष्ठ कौन्तेय युद्धाय कृतनिश्चयः ॥ (२/३७)

"मरने पर तू स्वर्ग जाएगा और जीतने पर पृथ्वी का राज भोगेगा। इसलि हे कुन्ती के पुत्र अर्जुन, तू युद्ध का निश्चय करके उठ खड़ा हो।" इस प्रकार गीत के क्रान्तिकारी संदेशों में वैराग्य का यह उपयोग है कि धर्मयुद्ध में प्राण की आहु देने में कोई संकोच न रह जाय, और कर्मयोगी सत्याग्रही को जीने और मरने सब प्रकार विजय का ही दर्शन हो। जैसा कि महात्मा गांधी ने एक बार कहा कि सत्याग्रही को पराजय की अनुभूति कभी नहीं होती।

गीता के उपर्युक्त श्लोक से न केवल निरंकुश विदेशी सत्ता को भय बल्कि आपातकालीन निरंकुश शासकों को भी यह श्लोक भयावह लगा। एक सज्ज जो आपातकाल में जेल में रखे गए थे, वे अपने नित्य पाठ के लिए अपने घर से गीत की पोथी मंगाने के इच्छुक हुए। पोथी के आ जाने पर जेल के अधिकारियों अपना कर्त्तव्य समझा कि स्वयं पोथी को देखकर, उसने कोई आपत्तिजनक अंश तो उन्हें काटकर तब पोथी सम्बन्धित कैदी को दी जाए। अतः उन्होंने उपर्यु श्लोक को क्रान्ति का सम्भावित प्रेरक समझ कर लाल पेन्सिल से काट कर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पोथी समर्पित की। इस घटना से भी प्रगट होता है कि गीता का सन्देश किसी प्रकार भी पलायनवादी नहीं है। गीता का तो यह उद्घोष है कि—

धर्म्याद्धि युद्धाच्छ्रेयोऽन्यत्क्षत्रियस्य न विद्यते (२/३)

(धर्मयुद्ध से बढ़कर क्षत्रिय के लिए और अधिक कल्याणकारी कुछ भी नहीं है।) लोकमान्य ने बड़ी कुशलता और सक्षमता से उस अविवेक का खण्डन किया है जिसके सहारे क्रान्तिकारी गीता के पलायनवादी अर्थ लगाकर लोग आशंकित या भ्रमित होते थे।

उपर्युक्त के अतिरिक्त भी दो एक बातें लोकमान्य ने कही हैं जो हम लोगों के लिए अत्यन्त विचारणीय और स्मरणीय हैं। सच तो यह है कि लोकमान्य ने कहीं कहीं चोटी पर के अधिवक्ता की भांति कर्मयोग की पैरवी की है। ऊपर जिस तर्क का उल्लेख हो चुका है वह कुछ कम नहीं है परन्तु एक दूसरा तर्क भी अत्यन्त प्रवल है।

यह सुविदित है कि श्री गीताजी में द्विविधि निष्ठा का वर्णन हुआ है—ज्ञान योग और कर्मयोग (गीता ३-३)। इन निष्ठाओं के वारे में भाष्यकारों में वहुत मतभेद रहा है। गीता के अन्तिम अट्ठारहवें अध्याय तक यह विवाद-विन्दु स्थिर रहा कि कर्म ग्राह्य है या त्याज्य। कुछ मनीषियों का मत है कि कर्म दोषवत् त्याज्य है, कुछ यज्ञ, दान, तप आदि शुभ कर्मों को कदापि त्याज्य नहीं मानते। (१८.३) एक पुराना दार्शनिक मत है कि—कर्मणा वध्यते जन्तुर्विद्यात्तु प्रमुच्यते। (कर्म से जीव बन्धन में पड़ता है, ज्ञान से मुक्त होता है।) इस विषय में लोकमान्य तिलक ने इस बात पर बड़ा जोर दिया है कि भगवान् ने स्वयं ही स्पष्ट शब्दों में कह दिया है कि -- कर्म ज्यायो ह्यकर्मणः (कर्म अकर्म से श्रेष्ठ है। गीता ३ ८।) अतः कर्म के त्याग को प्रश्रय देने का प्रश्न ही कहाँ रह जाता है? जहाँ तक कर्म से बन्धन होने की मान्यता है, गीता सकाम कर्म को ही बन्धनकारी मानती है। निष्काम कर्म को नहीं। उसमें तो यह घोषणा की गई है कि—योगिनः कर्म कुर्वन्ति संगम् त्यक्त्वाऽत्मशुद्धये। (५ ११)। योगी लोग आत्मशुद्धि के लिए कर्म करते हैं। तथा यह भी कि-- योगारूढ़ होने की इच्छा रखने वाले मुनि के लिए (निष्काम) कर्म कारण रूप (साधन रूप) है और योगारूढ़ के लिए वैसा ही कर्म शान्ति कारण है। (६ ३), अट्ठारहवें अध्याय में भी भगवान् का निश्चित व उत्तम मत प्रकट हुआ है कि यज्ञ, दान, तप आदि मनुष्यों को पवित्र करने वाले कर्म हैं, इन्हें करना ही चाहिए, छोड़ना नहीं चाहिए। (१८ ५) परन्तु, इन कर्मों को भी संङ्ग व फलासक्ति को छोड़कर ही करना चाहिए। (१८ ६)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यह ठीक है कि भक्तियोगी या ज्ञानयोगी मुनि को श्रीमद्भगवद्गीता का तात्पर्य अन्य प्रकार का ही दिखाई पड़ता है और उसे भी अपनी निष्ठा के अनुकूल प्रमाण मिल जाते हैं। यहाँ भाष्यकारों के मतभेदों से हमारा कोई सीधा सम्बन्ध नहीं है। इतना भली भाँति समझ लेना पर्याप्त है कि राष्ट्र की परिस्थिति और भारतवासियों की दशा, स्थिति, अधिकार आदि के अनुसार गीतोक्त कर्मयोग के सन्देश की अतीव आवश्यकता थी और है। अतः इस सन्देश को अप्रतिम और ओजस्वी ढंग से प्रस्तुत करके लोकमान्य ने राष्ट्र की महती सेवा की।

'सिद्धावस्था और व्यवहार' पर कर्मयोग रहस्य में एक पृथक अध्याय ही है जो अत्यन्त गंभीर, मार्मिक व प्रकाशदायक है। कर्मयोग का सन्देश साधक के लिए भी है, सिद्ध के लिए भी। मोक्ष प्राप्ति के बाद 'तस्य कार्यमविद्यते (३.१७), कुछ भी कर्तव्य शेष नहीं रह जाता, तथापि श्रीभगवान् की अपील है कि ज्ञानी पुरुष कर्मासक्त पुरुषों के समक्ष कर्मानुष्ठान का ही उदाहरण रखे (३·२५), जिससे उन्हें अनुकरण के द्वारा साधन में सहायता मिले, वे साधन भ्रष्ट न हो जायँ। (३.२६) साधक को भी कर्म करना चाहिए क्योंकि जनकादि कर्म ही से सिद्धि को प्राप्त हुए। सिद्ध होने पर भी लोकसंग्रह की दृष्टि से कर्म करना ही योग्य है। (३ २०)

कर्मासक्ति की निन्दा तो बहुत से दार्शनिकों ने की है परन्तु श्री योगेश्वर कृष्ण ने आज्ञा दी कि—

न कर्म फल में आसक्त हो, न कर्म न करने की आसक्ति रखो (२.४७)

अन्त में यह कह देना आवश्यक है कि गीतोक्त कर्मयोग में दीन और दुनिया का समन्वय है, उनमें न जगत् के व्यवहार की उपेक्षा है न परमार्थ की। कर्मयोग 'यतोऽभ्युदयः निःश्रेयस सिद्धिः स धर्मः।' की कसौटी पर खरा उतरता है।

राष्ट्रभक्ति में भी, ईश्वर भक्ति में भी, विषम परिस्थितियाँ आती हैं और विषाद योग की प्राप्ति भी होती है। ऐसी स्थिति में गीता के साधक को भगवद्वाणी से सम्पूर्ण मानसोपचार का लाभ होता है। भगवदुपदिष्ट ज्ञान से मोह दूर होता है, संशय समाप्त होता है, शरणागति दृढ़ होती है और अनासक्त रहकर, अभिमान शून्यतापूर्वक, प्ररन्तु निष्ठा, धैर्य व उत्साहपूर्वक, कर्तव्य कर्म करने का सात्विक उत्साह जागृत होता है। इस प्रकार के सात्विक कर्ता (१८ २६), कर्मयोग की साधना के बिना देश को प्राप्त नहीं हो सकते।

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तिलक का कर्मयोग शास्त्र

□ आनन्द शंकर माधवन

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक की सर्वश्रेष्ठ कृति गीता रहस्य नामक उनका कालजयी ग्रन्थ है। गीता का रहस्य उन्होंने कर्मयोगशास्त्र के रूप में अनुभव किया। उनका मत है मनुष्य मात्र के पुरुषार्थ को उभाड़ देनेवाला उसकी आध्यात्मिक पूर्णावस्था से उसे पहचान देनेवाला उसमें नैसर्गिक रूप से स्थित ज्ञान और भक्ति से उसे परिचय करानेवाला इससे बढ़कर कोई सरल धर्मशास्त्र आजतक विश्व में अवतीर्ण नहीं हुआ है। इस नाते वे भारत की और भारतीयों की आध्यात्मिक साधना और तपश्चर्या की गरिमा और महिमा को पूर्ण रूप से अनुभव करते थे। उनकी प्रबल इच्छा रही है उनके देशवासी गीता में प्रतिपादित इस कर्मयोगशास्त्र के आधार पर अपने जीवन का, परिवार का, समाज का और राष्ट्र का भी पुनर्निर्माण करें।

भारत की विविधमुखी साधना कितनी उच्च कोटि की रही है वे अच्छी तरह जानते थे। भारतीयों का अपने इस परम तेजस्वी परम कल्याणकारी साधना-पथ से भ्रांत हो जाना च्युत हो जाना और क्षीण हो जाना ही उन्होंने भारत दुर्दशा का कारण कहा। अपने जीवन भर के उनके नाना प्रकार के कार्य-कलापों का एक मात्र लक्ष्य भारत को फिर से साधनाशील बनाना रहा है। उनका दृढ़ मत था—भारत ही संसार का कलेजा है। भारत गिरा तो संसार डूबा। भारत से ही जीवन ज्योति का प्राणोन्मेषकारी आध्यात्मिक स्पन्दन चारों ओर व्याप्त होता रहता है। ज्ञान विज्ञान सम्बन्धी अपनी अलौकिक सफलताओं और सिद्धियों के बल पर यहां के तपस्वी महाप्राणों को ही संसार के सब प्रकार के आसुरी तत्वों से संघर्ष करते हुए सर्वत्र अमन चैन और ऐश्वर्य की स्थापना करनी है। वे अपने इस दिग्विजयी स्वप्न को चरितार्थ करने के लिये अतीत के प्रातःस्मरणीय ऋषियों जैसे जीवन भर अथक श्रम और साधना करते रहे हैं। उनके व्यक्तित्व चारित्र्य और कार्य इतने महान विराट और परम भागवत रहे हैं कि उनके देशवासी उन्हें भगवान तिलक कहने लग गये। ऐसे पुरुष पुण्डरीक पर कुछ लिखने का प्रयास करना मन्द कवियश-का प्रार्थी जैसे हास्यास्पद ही नहीं मूर्खतापूर्ण भी है। मगर उनको समझने के लिये

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उनका अनुगमन करने के लिये और उनके तत्त्व को अपने जीवन में ग्रहण करने लिये इस प्रकार उनपर लिखने का प्रयास करने से बढ़कर दूसरा कोई सुगम उपा भी नहीं है।

परहितार्थ कार्य ही कर्म है। और ऐसे कार्य यज्ञवार वीतने चाहिये। क के जरिये भगवान से जुड़ जाना ही विधि है। यह तभी संभव है जव कर्मी में क की फलाशा बिलकुल न रहे और वह भगवान के श्रीचरणों में नैवेद्यस्वरूप उस क को समर्पित कर दे। इस जुड़ जाने की साधना को ही योग कहते हैं। यह ए अद्भुत कौशल है। एक विलक्षण कला ही समझिये। इसी में साधक को कर्म सफलता हासिल करनी है। इस प्रकार के योगसिद्ध कर्मी ही महान और रोमां कारी सफलताओं और सिद्धियों को प्राप्त कर संसार में अद्भुत कर्मी कहलाये हैं जीना स्वयं एक वहुत वड़ा योग है वशर्ते कि हम उसे उसी रूप में व्यतीत क प्रत्येक कार्य को हम योग के रूप में परिणत कर सकते हैं यहाँ तक कि खास क्रि को भी वशर्ते कि हम उसे उसी रूप में करें। इस परिणत करने के कार्य में कौशल की अपेक्षा रहती है। सच वात यह भी है कि इसे पूर्णरूप से हम समझ तो इससे बढ़कर कोई अन्य सरल कार्य दिखाई ही नहीं देने लगेगा। मानसि कार्य ही मनुष्य को भ्रांत करता रहता है। इसीलिये कहा गया है — यौगिक सफल के लिये मन पर अधिकार प्राप्त कर लेना आवश्यक है। वेजरूरत वात उसमें ब ही न पावे। मनुष्य अक्सर अपने मन में उभर उठने वाले नाना प्रकार के विचा और भावनाओं के साथ भटकते ही रह जाते हैं जीवन भर। और अन्त में ''न घर रहे न घाट के'' स्थिति में आ जाते हैं।

तो इस तेजस्वी कर्मयोग शास्त्र के आधार पर समूह को क्रियाशील ब गतिशील रखना चाहा तिलक ने। उनके राजनीतिक कार्यकलाप, साहि अनुष्ठान, सामाजिक सेवाकार्य सभी कुछ इसी एक लक्ष्य की ओर केन्द्रित रहे और उन्होंने स्वयं अपने को भी सदा इसी ओर उन्मुख रखा। उनका ख्याल समाज में अगर एक भी असाधक रह जाय तो वह समाज सुरक्षित, स्वस्थ गतिशील नहीं हो सकता। ऐसी परिस्थिति आने पर समाज के सभी भले लोगों एक साथ संघटित होकर उस असाधक के विरूद्ध संघर्ष करके उसे स्वस्थ दिशा और गतिशील कर देना होगा। इस प्रकार के संघर्ष को वे आध्यात्म सम्मत मा थे। वे कहा करते थे सभी पौधे फूलेंगे। फूलते वे अपनी ताकत से ही, पर उस फू की क्रिया में सब को खास कर के समझदारों को यथामति सहयोग देना होगा। य सेवा है।

मनुष्य को मुक्त रहना ही प्रथम आवश्यकता है। मुक्त मानव ही स्व

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रहकर साधना तपस्या कर सकेगा। मुक्त से यहां तात्पर्य मुक्त मानस से है। नाना प्रकार के कार्य करते हुए भी, तरह तरह की आकांक्षाओं और अभिलाषाओं से ग्रसित रहते हुए भी और अनेकों प्रकार की जिम्मेदारियों और समस्याओं से बोझिल होते हुए भी जो मनुष्य अपने को इन सबों से पूर्ण रूप से मुक्त रखने की क्षमता हासिल किए हुए हैं उन्हें ही मुक्त मानव कहा जा सकेगा और उनसे ही कुछ सम्पूर्ण कामयाबी की आशा की जा सकेगी। अपने सामने कुछ भी बीते, सूर्यदेव पर उसका कुछ भी प्रभाव नहीं। वह अपनी योजना के अनुसार अपनी साधना में अविराम गति से रत है कि संसार आलोकित और आबाद रह सके। यही कर्मयोग साधना का श्रेष्ठतम उदाहरण है। प्रकृति वस्तुतः योग के आधार पर कार्यशील है। योगी-साधक की ही प्रतिभा जगकर-खिलकर चारों ओर अपना सौरभ फैलाने लगती है। बल्कि प्रतिभा जगाने का एक मात्र उपाय योगसाधना है। योगी अपनी ही दीप्त प्रतिभा के बल पर ब्रह्मांड-रहस्य का ही पता चला लेता है। उनके लिए धर्म का अर्थ इस प्रकार के ब्रह्मांड विजय से है। प्रतिभा जागरण और प्रतिभा प्रकाशन ही उनके लिए अध्यात्म साधना है।

यज्ञ है तो अयज्ञ भी है, कार्य है तो अकार्य भी है, ज्ञान है तो अज्ञान भी है। इन दोनों विपरीत पक्षों का पारस्परिक संघर्ष सर्वत्र है। व्यक्ति के जीवन में परिवार में समाज में और राष्ट्र में भी सर्वत्र यह संघर्ष दिखाई देता है। धर्म को गतिशील रखने के लिए अधर्म को क्षीण करते रहने की जरूरत है। इस कार्य के लिए ही भगवान समय-समय पर अवतार ग्रहण करते हैं। यद्यपि भगवान को अपने इस कार्य में किसी से भी सहायता की अपेक्षा नहीं रहती है फिर भी सत्पुरुष और भक्तवृन्द सदा ही इस सहायता कार्य में तत्पर रहते हैं। सत् पुरुषों को सदा इस पर नजर रखनी चाहिए कि धर्म क्या और अधर्म क्या, धर्म के साथ कौन है और अधर्म के साथ कौन है। अधर्म के साथ चाहे जो भी हो अपने आत्मीय और स्वजन ही क्यों न हों, अन्याय दण्डनीय है। सवाल यह भी है अपने पराये का मतलब क्या है, उसकी पहचान क्या है? जो धर्म के साथ है वे ही अपने हैं और जो अधर्म के साथ हैं वे पराये। यही दृष्टिकोण बेहतर है। आखिर अर्जुन ने इतनी तपस्या और साधना करके सिद्धियाँ क्यों हासिल कीं? धर्म की संस्थापनार्थ वे सभी सिद्धियां काम नहीं आ रही हैं तो निस्सन्देह वे सभी व्यर्थ हैं किसी को भी दुर्योधन से झगड़ा नहीं, दुर्भावनाएँ है ही नहीं। पर मुसीबत यह। है उनके कार्यों के जरिये संसार में अधर्म, अत्याचार और पाप फैलते हैं। ऐसी स्थिति में क्या किया जाय?

पूरा भारतवर्ष आज अर्जुन की मानसिक स्थिति में आकर विषाद-पीड़ा में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पड़ा कराह रहा है। उसे सूझ नहीं रहा करणीय क्या है। सर्वत्र कीचकों शकुनि जयद्रथों और दुर्योधनों का खुला निर्भीक ताण्डव है। कितनी ही द्रौपदियों के बाल खुल रहे हैं और चीरापहरण हो रहा है। भारत को फिर से गीता सुनाने और उसके तत्त्वों पर उन्हें अनुशीलन कराने के लिये ही तिलक अवतीर्ण हुए ताकि भारतीयों की तन्द्रा टूटे और उनमें सुपुप्त पड़े युधिष्ठिर तत्त्व और भीमार्जुन तत्त्व जागकर अपना ज्वलन्त परिचय संसारवालों को देने लग जाँय।

जिस शासन नेतृत्व साहित्य और व्यवस्था आदि के अधीन जनता उत्कर्षशील नहीं है बल्कि पतनोन्मुखी और दुखी है उन्हें शीघ्रातिशीघ्र त्याग देने में ही सबका कल्याण है। ज्ञानी पूज्य पुरुषों के नेतृत्वकाल में ही समूह का कल्याण संभव है। प्रतिनिधि कार्यकर्ताओं के व्यक्तित्व और चारित्र्य के अनुरूप संस्था का बल और प्रभाव घटता बढ़ता रहता है। सूर्य किरणें अगर प्रकाश वर्षा न करें तो सूर्य की कीमत क्या रह जायगी ? मुसलमान भ्रष्ट हैं तो इस्लाम कैसे जिन्दा रह सकता है।

उस समय अर्जुन के समक्ष स्वयं कृष्ण थे। आज भारतीयों के समक्ष कृष्ण नहीं हैं, पर उनकी वह अमर वाणी गीता जरूर है। उससे हम लाभान्वित हो सकते हैं। हमें गीता को प्रतिनिमिष उपयोग में लाना चाहिये। यह उपयोग-सामर्थ्य हमें नहीं आया, वह भी उसके श्रेष्ठतम स्तर पर, तो गीता का जीवन भी हमें व्यर्थ सिद्ध होगा।

कर्मयोगशास्त्र भगवत् संस्कृति में अपने को पूर्ण रूप से पूरा करने की साधना है, भगवान के साथ अपने कार्य के जरिये एकदम जुड़ जाना है, भगवान का प्रतिनिधि बनकर या यों कहिये, भगवान ही बनकर संसार को आबाद रखना है। भक्त और भगवान में कोई फरक नहीं ऐसा कहा गया है। इस स्थिति को चरितार्थ करके दिखाना है। इस तरह स्वयं भगवान जैसे बन जाने की कोशिश ही भगवान को साक्षात्कार करने का उपाय भी है।

मानव का व्यवहार ही उसकी चेतना का स्तर परिचय प्रस्तुत करता है। इस चेतना को भगवन् चेतना के रूप में परिणत करना ही आवश्यक है। अभिलाषा ही अधिकार निर्णायक शक्ति है। अभिलाषा को जाग्रत प्रज्वलित और उच्चस्तरीय रखना ही प्रथम आवश्यकता है। समूह की अभिलाषा जिस स्तर की है उस स्तर तक ही राष्ट्र की ताकत भी है। इसलिये समूह की अभिलाषा को उच्च स्तरीय की ओर उठाये रखने के लिये प्रत्येक तेजस्वी कार्यकर्त्ता को ध्यान देना चाहिये। जाग्रत हुई उच्चस्तरीय बनी तो राष्ट्र ताकतवर बन गया — यही सत्य है। समाज की सामूहिक चाह को उच्चस्तरीय रखने के लिये ही धर्म भी साहित्य

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कला भी राजनीति भी सभी प्रकार के यज्ञानुष्ठान भी। जन कल्याणकारी कार्य ही तो यज्ञ है। कार्य को ही रुकावटें संभव है। यज्ञ कार्यों में आसुरी तत्व रुकावटें डालेंगे ही। असुर वृत्तियों के संहार के बाद ही धर्म की संस्थापना संभव है। यही कारण है कि तिलक ने भारत से अंग्रेजों को भगा देना आवश्यक समझा।

कर्मयोग शास्त्र में कर्म से अनासक्त होकर काम करना ही तरीका है। भगवान के प्रीत्यर्थ काम करना है। यह भावना पूर्ण रूप से भीतर जाग जाने पर चित शांत और स्थिर होने लगेगा। सफलता-असफलता, सुख-दुख दोनों ही स्थिति से अनासक्त समान दृष्टि। यह दृष्टि ही आत्मिक सुख को प्राप्त करने का जरिया है।

सिर्फ कार्य करना कर्मयोग नहीं। कार्य तो पशु-पक्षी भी करते हैं, यंत्र भी करते हैं। पर उन्हें हम कर्मयोगी नहीं कहेंगे। कार्य से ज्ञान श्रेष्ठ है, ज्ञान से भक्ति श्रेष्ठ है। कार्य में ज्ञान और भक्ति भी पूर्णरूप से जुड़े रहें तभी उसे गीता की भाषा में कर्म कहा और माना जा सकेगा। कार्य का महत्व कार्यकर्त्ता के चैतन्य पर आश्रित रहता है। कर्त्ता का लक्ष्य ही कार्य में गतिशीलता बनकर प्रकट होता है। इन सभी चीजों के समन्वय से गतितत्व के रूप में कर्त्ता में शील निर्मित होने लगता है। शील ही सब प्रकार की सफलताओं का रहस्य है। कर्मयोगी का वैभव इस परम तेजस्वी शील को हासिल करने में है। जिसके पास शील है उसके पास सब कुछ है—यह आप्त वचन है।

स्वार्थ सुख की लिप्सा ही आधिभौतिक सुखवाद की ओर मनुष्य को ले जाती है। पर इसके साथ शील आदि गुण भी मनुष्य में विकसित होने लग जाय तो अन्त पूर्ण मनुष्यत्व भी इसमें जाग्रत हो सकता है। इस तरह छोटे सुख से बड़े सुख की ओर मनुष्य की यात्रा अपने आप होने लगेगी। सुख की भी परिभाषा विकसित होती चलेगी। कामिक सुख से मानसिक सुख और मानसिक सुख से आत्मिक सुख की ओर मानव विकसित होगा। तब मानव के सामने सवाल रह जायगा परम सुख और परम विकास किसमें है। इसीलिये अर्जुन ने भगवान से पूछा था, मेरी आत्मा के लिये श्रेय किसमें है। यही सवाल नचिकेता ने यमराज से भी पूछा था। दो चीजें है मानव के समक्ष—प्रेय और श्रेय। प्रेय से तात्पर्य है लौकिक सुख और श्रेय से तात्पर्य है चिरकालीन सुख। स्थायी समाधान चिरकालीन सुख को प्राप्त करने में है।

मानव के सभी कार्य सुख की प्राप्ति के लिये है। धर्म अर्थ काम तीनों के ही ध्येय सुख की प्राप्ति है। यानी सुख को पाना, प्राप्त सुख को बढ़ाना और दुख से बचना। सच्चा सुख किसमें है यह अन्वेषण का विषय है। इस अन्वेषण के आधार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में मानव की जो समझ काम कर रही है उसी के अनुरूप ही वह सुख-दुख की व्याख्या करेगा। इस समक्ष में जहाँ तक उसका चैतन्य और प्रतिभा जाग्रत है वहाँ तक ही उसकी व्याख्या भी जायगी।

दुख की चाह किसी मनुष्य में होती नहीं। पुरुषार्थ दुख निवारण और सुख की प्राप्ति में है। यह जीवन पुरुषार्थ-साधना के लिये है। मनुष्य की सभी प्रकार की सांसारिक प्रवृत्तियां वासनात्मक हैं। वासना की उत्पत्ति सांसारिक कार्यों से है। सांसारिक कार्यों से संभव फलाशा को त्यागे बगैर वासना से मुक्ति पाना कठिन है। इसलिये कार्यों को ही त्याग दो यही सन्यास मार्ग कहता है। पर कर्मयोग शास्त्र कार्य को त्यागने को नहीं कहता। कार्य को करो ही। पर आसक्ति रहित होकर करो, मोह और फलाशा नहीं रखो। कार्य में अत्यंत तीव्रतम स्तर पर व्यस्त होते हुए भी अपने को निष्क्रिय और पृथक एवं साक्षी स्वरूप अनुभव करने की जरूरत है। यही कमाल अनुष्ठान है।

ज्ञान और ऐश्वर्य की प्राप्ति में ही सभी प्रकार के दुखों के लिये निवारण है। ऐश्वर्य के आने पर वासना का आना ही दुखद है जैसे रावण की गति हुई। पर जहाँ ऐश्वर्य ही नहीं, किसी भी प्रकार की शक्ति है ही नहीं, प्रतिभा लुप्तप्राय है विभूति है नहीं, चैतन्य किसे कहते जानते ही नहीं; ऐसी परिस्थिति में दुख निवारण के लिये गीता क्या उपदेश देती है—सवाल यह है। आज की परिस्थिति में और महाभारत युगीन परिस्थिति में बहुत बड़ा फरक है। दुर्वृत्तियों से प्राप्त दुख और प्रमाद एक चीज है तो अभाव में रोग में, अज्ञान में, और नाना प्रकार की बद लाचारियों और कमजोरियों में पड़े कराहने वालों का दुख बिलकुल ही एक दूसरी चीज है। भूखे आदमी को वासना से मुक्त हो जाओ तो तुम्हें सुख मिलेगा ऐसा उपदेश देने जाना हास्यास्पद है। कमजोर को ताकत हासिल करने का उपाय बता दो, गरीब को ऐश्वर्य हासिल करने का तरीका बता दो, अज्ञानी और मूर्ख को ज्ञान और चैतन्य को प्राप्त करने की साधना में दीक्षित करो—इसमें गीता भी सलाह देती है; यही ढूंढ़ना है। यहाँ सन्यास मार्ग युक्तिसंगत नहीं है। यहाँ कर्म, तीव्रतम स्तर का कर्म ही काम की चीज है। ऐसे कर्म ऐसी साधना जिससे ऐश्वर्य का अम्बार ही खड़ा हो जावे, चैतन्य की ज्योति जीवन में व्याप्त हो जावे। कर्मयोग शास्त्र इसी का उपदेश देता है। अभावग्रस्त ही मृत है। जीवन ऐश्वर्य की प्राप्ति में है, सर्व विजय की शंखध्वनि बजा देने में है। कर्मयोग शास्त्र यही बताता है।

मनुष्य को सदा सत्कार्य में ही लगा रहना चाहिये। अपना ही अन्तःकरण निर्णय करेगा कि कौन कार्य अच्छा और कौन बुरा। चित्तवृत्तियां शांत और एकाग्र होने पर ही अन्तःकरण जाग्रत होता है और तभी कार्य अकार्य के सम्बन्ध में वह उचित सलाह दे सकता है। शुद्ध मन अथवा शुद्ध अन्तःकरण का क्या लक्षण है

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

क्षेत्र और क्षेत्रज्ञ का बोध साफ हो जाने पर अन्तःकरण योंही शुद्ध हो जाता है। इसमें मन को स्वच्छ, स्वस्थ और एकाग्र होने की जरूरत है। क्षेत्र यह शरीर है और क्षेत्रज्ञ आत्मदेव है। क्षेत्र-क्षेत्रज्ञ ज्ञान आ जाने पर सभी सद्‌गुण अपने आप प्रकट होने लगेंगे। क्षेत्र-क्षेत्रज्ञ का ज्ञान आयेगा कैसे? अध्ययन करने से ही तो संभव है। अध्ययन और गंभीरतम अन्वेषण हो। अन्वेषण से ही रहस्य का ज्ञान हमें प्राप्त होगा। जिसके रहस्य का ज्ञान हमें हो जाता है उसका सफल उपयोग भी हम कर सकते हैं। उपयोग में लाना ही अधीनस्थ करना भी है। इसलिये शरीर, मन आदि का गंभीरतम अध्ययन हमें आवश्यक है। शरीर यंत्र है जरूर। उस यंत्र में स्थापित प्रत्येक चीज का और उसके कार्य का हमें ज्ञान आवश्यक है। तभी इस शरीर का हम सफल और सार्थक उपयोग कर पायेंगे। उसी तरह मन को भी समझिये। यह भी उतना कठिन कार्य नहीं। हमारा ध्यान उस ओर केन्द्रित होने पर सभी कठिनाइयाँ और समस्यायें सुलझती चलेंगी। हमारे इस शरीर में और आभ्यंतरिक जगत् में भी कितने ही ऐसे सशक्त कार्य निरन्तर चल रहे हैं जिनके सम्बन्ध में हमें कुछ भी जानकारी नहीं है। तो यह अनभिज्ञता ही हमारी सभी प्रकार की असफलताओं के लिये कारण है।

हमारा कर्म शुद्ध रहना चाहिये। शुद्ध कर्म शुद्ध बुद्धि द्वारा ही संभव है। बुद्धि को शुद्ध रखने का क्या उपाय है? जिस बुद्धि को परमेश्वर का ज्ञान प्राप्त नहीं हुआ उसे शुद्ध नहीं कहा जा सकता। क्योंकि शुद्धता परमेश्वर की ही परिचायक विशेषता है। कर्मयोग शास्त्र का इसीलिये महत्व है। क्योंकि उसमें कर्म में परमेश्वर को ही परिलक्षित करना है। अतः उसे शुद्ध रखना आवश्यक है ही. साथ-साथ उसमें चैतन्य की प्राण प्रतिष्ठा करना भी आवश्यक बताया गया है। इसीलिये कहा गया है कि कर्मयोगी से बढ़कर कोई आध्यात्मिक साधक संभव नहीं है। उसके लिये कर्म ही पूजा, कर्म ही जप, कर्म में ही समाधि भी। उसे अपने कर्म को इस हद तक दिव्य और चैतन्यपूर्ण कर देना पड़ता है कि परमेश्वर स्वयं उसमें आकर विराजने लग जाय। अपने कर्म में ही अपने प्रभु का दर्शन पाने के लिये उच्चकोटि का ज्ञान और भक्ति भी आवश्यक है। यह एक कमाल अनुष्ठान है। इस विलक्षण अनुष्ठान का ही नाम कर्मयोग है। मानव मात्र के लिये गीता का यही एक मात्र सन्देश है - कर्मयोग। अतीत काल में हमारे देश को जो भी गौरव प्राप्त हुआ था जो भी सफलतायें और सिद्धियां प्राप्त हुई थीं वे सभी इस कर्मयोग साधना पर आधारित अध्ययन, अन्वेषण और तदनुकूल की कर्मसाधना से ही। भीतरी जीवन दिव्य हो, बाहरी आचरण दिव्य हो और स्वयं भी भगवान की ज्योति स्वरूप हो—यही कर्मयोग शास्त्र का रहस्य है। दुनिया से भागना नहीं, दुनिया को भी ऐसा बनाना है। इसे बनाने के कार्य में ही कर्मयोगी को निरन्तर भिड़े रहना है। तिलक का जीवन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वयं भी इसका एक सशक्त उदाहरण रहा है। मनुष्य को देवता ही बनकर जीना है हर माने में। यही कर्मयोग का रहस्य है। देवत्व साधना में आसुरी शक्तियां बाधा उपस्थित करेंगी। इसलिये देवत्व साधना में आसुरी तत्वों से युद्ध एक जरूरी अंग है। इस संग्राम में कर्मयोगी को असाधारण साहस और प्रतिभा का प्रकाशन करना होता है। इसीलिये कर्मयोग आसुरी तत्वों के साथ घोर युद्धयोग भी है। कर्मयोगी को अपनी ही दीप्त प्रतिभा के बल पर ब्रह्मांड विजय करने की शक्ति हासिल करनी होगी और भगवान को ही अपने नित्य सखा के रूप में प्राप्त करना होगा अर्जुन जैसे। यह इतनी बड़ी साधना है। दुनिया में रहते हुए भी दुनिया का नहीं. दुनिया के लिये नहीं, परमेश्वर का है, परमेश्वर के लिये है; परमेश्वर द्वारा है, स्वयं परमेश्वर है—ऐसा जीना होता है कर्मयोगी को।

कर्मयोग साधना अधर्म से और आसुरी तत्वों से अनवरत युद्ध करना है। इस युद्ध में विजय प्राप्त करने के लिये कर्मयोगी को अपनी शक्ति बढ़ानी पड़ती है। शक्ति हासिल करने के सब प्रकार के श्रम भी उसी युद्ध के अंग बन जाते हैं। शक्ति सिर्फ हथियार में नहीं, प्रतिभा में है, गुण में है, प्रभाव में है, संघटन में है और सर्वोपरि अपने श्रेष्ठतम चैतन्य में है। जनसाधारण को भी इस प्रकार की शक्ति हासिल करने की साधना में दीक्षित करना है। इसीलिये कहा गया है कर्मयोग समग्र जीवन को ही अपने अन्दर समेट कर चलना है। सार यह कि कर्मयोगी को सर्वगुण सम्पन्न और सर्वविभूति सम्पन्न बनना होगा। तभी उसे सच्चे अर्थ में कर्मयोगी कहा और माना जा सकेगा।

कर्म का रहस्य विश्व का रहस्य है। विश्व एक वैधानिक व्यवस्था है जिसमें जीवात्मा अल्पकाल के लिये या दीर्घकाल के लिये आ जाता है। हमारा यह जीवन वस्तुतः हमारा नहीं, परमेश्वर का है, परमेश्वर के ही किसी कार्य के लिये है किसी समस्या का समाधान प्रस्तुत करने के लिये है। जीवात्मा परमात्मा का ही आंशिक रूप है। हमारे सभी कार्य उस परमात्मा को ढूंढने के, उससे साक्षात्कार प्राप्त करने के प्रयास स्वरूप ही बीतने चाहिये। हर कार्य के कारण होते हैं। कारणतत्व का रहस्य जाने बगैर कर्म में मजा नहीं आ सकता। इस कारण तत्व को समझने के लिये आध्यात्म साधना सहायक होती है। जिन्दगी इस साधना में बाधक स्वरूप नहीं बीतनी चाहिये। हम परमात्मा के साथ जी रहे हैं तो कहिये सही अर्थ में जी रहे हैं। अन्यथा, हम मर ही रहे हैं।

तो, कर्मयोग साधना आत्मा को ढूंढने का प्रयास है, परमात्मा को प्राप्त करने की साधना है, परमेश्वर के साथ तादात्म्य स्थापित करने का योजनाबद्ध अनुष्ठान है। हमें अपने को परमेश्वर के जिम्मे सुपुर्द कर देना है कि वही कार्य करें हमारे जरिये। हमारी प्रत्येक क्रिया में वही प्रकट हो, प्रत्येक भाव में उन्हीं का आविर्भाव हो और प्रत्येक विचार में उन्हीं की ज्योति निखरने लग जाय। कर्मयोग शास्त्र का सार इतना ही है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लोकमान्य तिलक का गीता रहस्य

डॉ० विश्वनाथ प्रसाद वर्मा
एम० ए० (कोलम्बिया), पी-एच० डी० (शिकागो)
अध्यक्ष, राजनीति विभाग, पटना विश्वविद्यालय।

आधुनिक भारतीय जीवन में लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक का स्थान अत्यंत ही महत्वपूर्ण है। अभी भारतवासियों ने अपनी गुलाम मनोवृत्ति के कारण उनका पूरा-पूरा मूल्यांकन नहीं किया है। बंगाल और पंजाब के नेता अरविंद घोष और लाजपत राय उनके महत्त्व को स्वीकार करते थे। उनका निश्चित विश्वास था कि भिक्षा मांगने से उन लोगों का हृदय नहीं पसीजता जिनके हाथ में अधिकार होते हैं। जो थक जाने तक उद्योग करता है उसे ही भगवान सहायता देते हैं। गीतारहस्य का प्रणेता अद्भुत पुरुष रहा होगा इसमें सन्देह नहीं। १६ वर्ष की अवस्था में "भाषा विवृति" नामक गीता की मराठी टीका के सहारे तिलक का परिचय गीता से हुआ। उनके पिताजी मरणासन्न थे और बालक तिलक का काम पिता को अन्तिम समय में गीता सुनाना था। यौवन के उस प्रभात में जो परिचय कुरुक्षेत्र के अमर व्याख्यान से हुआ, तिलक ने उसे यावज्जीवन कायम रखा। मरने से पूर्व अपनी आखिरी चेतनावस्था में तिलक ने श्रीकृष्ण भगवान के इस श्लोक को दुहराया —

यदा यदाहि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मान सृजाम्यहम्॥

गीतारहस्य कोई सामयिक पुस्तक नहीं है। इसकी तुलना कीथ (Keith) की Religion and Philosophy of the Veda and Upnishads अथवा डायसन (Deusson) की Philosophy of the Upnishads अथवा राधाकृष्णन की In ian Philosophy से नहीं की जा सकती। यद्यपि इन पुस्तकों में भी प्राचीन भारतीय संस्कृति के सम्बन्ध में प्रचुर सामग्री मिलती है, जैसी गीतारहस्य में, तथापि गीतारहस्य एक अनोखी पुस्तक है। गीतारहस्य एक साधनामय मस्तिष्क की उपज है। तिलक जैसे प्रसिद्ध विद्वान् के वर्षों के गहन अध्ययन और चिन्तन का गम्भीर तत्व इसमें भरा पड़ा है। किन्तु इससे भी बढ़कर, एक कठोर तपस्यामय जीवन का वर्षों का अनुभव इसमें समाया है। गीतारहस्य का महत्व नीति-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शास्त्र के ग्रन्थों के समक्ष एक अंश तक वही रहेगा जो स्पायनोजा (Spinoza) के Ethics या अरस्तु (Aristotle) के Ethics या ग्रीन (Green) के Prolugomena का है। कहा जा सकता है कि अरस्तु या स्पायनोजा के समान तिलक स्वतन्त्र चिन्तनकर्ता नहीं थे। कुछ अंशों में यद्यपि यह विचार ठीक है तथापि समस्त प्राचीन और अर्वाचीन आचारशास्त्रात्मक वांङ्मय की गीता के आध्यात्मिक समत्व-प्रतिपादक निष्काम कर्मयोग की दृष्टि से तथा अपने सतत तपस्याशील जीवन को अनुभवराशि के आधार पर सूक्ष्म आलोचना करने के कारण तिलक का स्थान अवश्य ही एक गम्भीर और प्रखर चिन्तक का है।

राजनीतिक जीवन में तिलक का वही स्थान है जो सोलन (Solon), मैजिनी (Mazzini) या बिस्मार्क (Bismarck) का यूनान, इटली तथा जर्मनी के इतिहास में है। अभी हमारा साम्प्रतिक कार्य गीतारहस्य की विवेचना है अतएव तिलक के राजनीतिक कार्यों की आलोचना में हम नहीं लगेंगे। किन्तु इस स्थान पर हम इतना ही कहना चाहते हैं कि राजनीतिक जीवन के घोर कष्टों के समक्ष हिमालय पर्वत की तरह अचल, अविचल, तिलक रह सके, इसका मूल रहस्य यही था कि गीता का अमर सन्देश उनके समस्त जीवन में प्रवाहित था। सुकरात ने कहा है कि ज्ञान ही शील है (Knowledge is virtue) तथा स्वामी रामतीर्थ कहते हैं कि वेदान्त ही निर्भीकता का आधार है। (Vedanta is inseperable from fearlessness)। इन वाक्यों का क्या तात्पर्य है ? जब मनुष्य किसी भावना से पूर्णतः ओतप्रोत रहता है तब उसके हृदय में द्वन्द्व आते ही नहीं। द्वन्द्वातीत मनुष्य से कभी अधर्म हो हो नहीं सकता। जब धर्म और अधर्म में द्वन्द्व होता है तब कभी वृत्तिशक्त्यानुसार धर्म की अथवा अधर्म की विजय होती है। किन्तु जब पूर्णतः एकत्व दृष्टि का बोध है तब अन्य द्वैताद्वैत भेदबुद्धि या द्वेषबुद्धि का स्थान नहीं है। इसलिये पूर्णतः धार्मिक बनने के लिये श्री अरविन्द की भाषा में वैयक्तिक सत्ता और व्यक्तित्व का पूर्ण रूपान्तर (Total transformation of our living and personality) करना होगा। व्यक्तित्व के सम्पूर्ण रूपान्तर का ही नाम मोक्ष अथवा जीवन्मुक्ति है। गीता के अमर वाक्यों को पथप्रदीप मानकर तिलक ने अपने जीवन को उच्चतर बनाया था और सतत चिन्तनात्मक अनुसन्धान की प्राप्ति में वे लगे रहे थे। इस प्रकार उनके जीवन में एक कला परिदृष्ट थी और इस कलात्मक एवं ध्वनिपूर्ण मनोवृत्ति का परिचय गीतारहस्य में हम पाते हैं। इसके प्रत्येक अध्याय की रचना सलक्ष्य सप्रयोजन है। ग्रन्थ की पूर्णता में प्रत्येक अध्याय का हाथ है, यद्यपि स्वतन्त्र रूप से भी प्रत्येक अध्याय एक विशेष महत्व रखता है।

गीतारहस्य का क्या वैशिष्ट्य है ? क्यों हम इस ग्रन्थ का महत्व स्वीकार करते हैं ? क्या गीतारहस्य इसलिये महान् है कि पूर्व और पश्चिम की

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दार्शनिक विद्या इसमें इकट्ठी की गई है ? क्या गीतारहस्य इसलिये महान् है कि तिलक जैसे महान् पुरुष की यह रचना है ? यह ठीक है कि दार्शनिक दृष्टि से, व्यक्ति से अलग रखकर ग्रन्थ की हमें आलोचना करनी चाहिए किन्तु गीतारहस्य के विषय में ग्रन्थ को देखते ही ग्रन्थकार की ओर हमारी दृष्टि चली जाती है। किस विशेष परिस्थिति में इस ग्रन्थ का जन्म हुआ यह भी ध्यान में रखने योग्य है। जिस प्रकार सुकरात और श्रद्धानन्द के जीवन को उनकी मृत्यु से अलग रखकर हम समझ नहीं सकते उसी प्रकार तिलक के जीवन को जानना गीतारहस्य को जानने के लिए आवश्यक है।

तिलक ने बावन वर्ष की आयु में ६ वर्षों की सजा सुनाई जाने पर, गीता की अमर वाणी के समान ही तेजस्विनी वाणी में कहा था—"मैं आप से (जज से) दानभिक्षा नहीं मांगने आया हूँ। मैं अपने कर्मों का भोग करने को तैयार हूँ। मैंने जो कुछ लिखा है, जनसाधारण के प्रति अपना कर्त्तव्य समझ कर लिखा है। यद्यपि जूरी ने मुझे अपराधी ठहराया है, परन्तु मेरा अन्तःकरण मुझे पूर्ण रूप से निर्दोष बताता है। एक ऐसी बड़ी शक्ति यह संसारचक्र चला रही है जिसके आगे मनुष्य की शक्ति की कोई गिनती नहीं है। ईश्वर की मुझे ऐसी मर्जी जान पड़ती है कि मेरे संकट सहने से ही मेरे उठाए हुए आन्दोलन का तेज बढ़ेगा।". (Inspite of the verdict of the jury I maintain that I am innocent There are higher powers that are moving the destiny of things and it may be the will of Providence that the work that I am doing here may well be done more by my suffering than by my remaining free.") अविरत कर्ममय जीवन के द्वारा मातृभूमि की जिस निर्मल सेवा में तिलक लगे थे, जेलयात्रा के द्वारा भी वही कार्य अधिक वेगपूर्ण गति से परमात्मा कराना चाहता था, यह विश्वास उनके हृदय में था। और, वस्तुतः हुआ भी वही। १९०८ के महाराष्ट्र केशरी को १९१४ ई० में हम भारतकेशरी के रूप में पाते हैं। गीतारहस्य के द्वारा भी वही कार्य होना था जिसमें तिलक यावज्जीवन लगे थे। तिलक ने कहा है कि जेल के कष्टों में उनका कार्य अधिक शक्ति प्राप्त करेगा। जेल के भीतर गहन बौद्धिक और आत्मिक विचिन्तन के फलस्वरूप उन्होंने इस ग्रन्थ को रचा। इसके द्वारा उनका कार्य तीव्रता को प्राप्त हुआ, इसमें आश्चर्य ही क्या है ? इसी विचारधारा को सामने रखकर कहा गया है—गीतारहस्य तिलक के जीवन का एक अत्यंत जाज्वल्यमान अध्याय है और इस ग्रंथ के रहस्य को समझने के लिये तिलक के जीवन को समझना होगा।

गीतारहस्य की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं—

(१) महाभारत के नारायणी पांचरात्र धर्माधारित प्रवृत्तिमार्गीय नीतिशास्त्र का इतना सुन्दर विवेचन अत्यन्त कठिनता से मिल सकता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(२) हाब्स, बेंथम, मिल आदि यूरोपीय विचारकों के आधिभौतिक नीति-शास्त्र के ऊपर गीता के आध्यात्मिक विवेचन पद्धति की उत्तमता इसमें प्रमाणित की गई है। भौतिकवादी मार्क्सवादी भी इससे नैतिक प्रेरणाग्रहण कर सकता है।

(३) "सिद्धावस्था और व्यवहार" नामक अध्याय में तिलक जी का जीवन-दर्शन अच्छी तरह रखा गया है। स्थितप्रज्ञ, त्रिगुणातीत, भक्त, ब्रह्मभूत आदि स्थिति कैसी होती है, तथा संसार में व्यवहार करने में उसे यदा कदा किस प्रकार "शठे शाठ्यं समाचरेत्" की नीति का अवलंबन करना पड़ता है, इसका भी सुन्दर रूप प्रस्तुत किया गया है।

(४) लोकमान्य तिलक ने गीता के नैतिक मार्ग (Ethical-standpoint) की तुलना काण्ट के आचारशास्त्र से की है किन्तु गीता की विचारधारा काण्ट की अपेक्षा अधिक आध्यात्मिक है इस पर भी विचार करना चाहिए। सहजस्फूर्त स्वतः संकल्पित संकल्प (Spontaneous self-willed wil) को ही काण्ट पवित्र शिवसंकल्प मानता हैं किन्तु गीता के विचार में ईश्वर भक्ति के द्वारा पवित्रीकृत मन और व्यवसायात्मिका सत्यनिष्ठ बुद्धि और आत्मा से ही पूर्ण नैतिक कर्म सम्भव है। "मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु" यही गीता का चरम प्रतिपाद्य है।

गीतारहस्य की कुछ कमियाँ भी हैं :—

(१. लोकमान्य ने गीता के मूल प्रतिपाद्य विषय को स्पष्ट नहीं किया है। गीता का विवेचनीय विषय किससे —साक्षात्कार-पूर्वावस्था से या पश्यात्साक्षात्कारावस्था से सम्बंध है ? क्या ब्रह्मज्ञाननिमित्तक निष्काम कर्म की आवश्यकता प्रमाणित करनी है अथवा यह सिद्ध करना है कि धनी पुरुष को भी ज्ञानांतर निष्काम कर्म करना चाहिए। भगवद्गीता के अनुसार—(क) स्वतंत्र ज्ञान से मुक्ति, (ख)स्वतंत्रमात्र कर्म से ही मुक्ति, (ग) उभयसमुच्चय से मुक्ति—इन तीनों से कौन-सा मार्ग अभीष्ट है ? मुक्ति के साधनों में कर्म का कौन सा स्थान है, इस प्रश्न की मीमांसा गीता का उद्देश्य है अथवा ज्ञानोत्तरकाल में कर्म (लोकसंग्रहार्थ) करने की आवश्यकता प्रतिपादित करना ? कर्म को ज्ञान प्राप्ति का पूर्ववर्ती गौण साधन (purificator) वेदान्तशास्त्र स्वीकार करता है। यदि लोकमान्य भी कर्म को मुक्ति का स्वतंत्र साधन नहीं मानते तो फिर उनमें और शंकर में क्या मौलिक अंतर रह जाता है ?

(२) मायावाद की कोई अच्छी कारका "अध्यात्म" प्रकरण में नहीं प्रस्तुत की गई है। वेदान्तग्रंथों में जो तर्क प्रस्तुत किए जाते हैं; उन्हीं को उठाकर रख दिया गया है, कोई स्वतंत्र अनुसंधान नहीं किया गया है। किस प्रकार जगत् को मायात्मक सिद्ध किया जाये इसके लिये कोई विशेष परिश्रम लोकमान्य ने नहीं कि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

है। फिर, अध्यात्म दृष्टि से अद्वैतवेदान्तप्रोक्त मायावाद गीता को भी सम्मत है इसका प्रमाण क्या है ?

(३)विश्वरूप दर्शन की वैज्ञानिक व्याख्या नहीं प्रस्तुत की गई है ? केवल महाभारतवर्णित एक और विश्वरूप दर्शन का उल्लेख किया है।

(४) गीता के कालनिर्णय का कोई विशेष ऐतिहासिक अनुसंधानपूर्ण उपयोग लोकमान्य जी ने नहीं किया जैसा वेदों के सम्बंध में उन्होंने किया था।

(५) कहीं-कहीं पर तिलक जी ने संन्यासमार्ग का अनावश्यक उपहास किया है तथा प्रायः सर्वत्र ही गीता में आए 'योग' शब्द को "कर्मयोग" में बदलने का प्रयत्न किया है। इस प्रकार जिस "खींचातानी और क्लिष्टता का आरोप उन्होंने साम्प्रदायिक टीकाकारों पर किया है उससे वे स्वयं मुक्त नहीं हो सके हैं।

तथापि इसमें सन्देह नहीं कि आधुनिक भारतीय साहित्य में गीतारहस्य एक अतिशय महत्वपूर्ण पुस्तक है। राजनीतिक कार्यकर्ताओं को भी इससे त्याग, सेवा और कष्टसहिष्णुता की शिक्षाएँ मिली हैं। दार्शनिक ऊहापोह को इसने उत्तेजना दी है। प्रवृत्तिमार्ग का वैशिष्ट्य प्रतिपादित कर लोकसंग्रहार्थ निष्काम कर्मयोग का शिक्षण करने के कारण राजनीतिक दर्शन के निर्माण में भी इसका महत्वपूर्ण स्थान है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गीतारहस्य

□ प्रो० श्रीरंजन सूरिदेव

गीता की निर्णायक व्याख्याओं में, लोकमान्य वालगंगाधर तिलक कृत 'श्रीमद्‌भागवद् गीता रहस्य' नाम की व्याख्या शिखरस्थ मानी गई है। 'गीतारहस्य' की लोकप्रियता इसी से प्रमाणित है कि इसके कई संस्करण हुए। इस ग्रन्थ के नवम् पुनासंस्करण के प्रकाशकीय निवेदन से ज्ञात होता है कि इस ग्रन्थ के प्रकाशक लोकमान्य तिलकजी के पौत्र श्रीमान् जयन्त श्रीधर तिलक हैं और प्रकाशन-कार्यालय पूना में नारायण पेठ मुहल्ले के 'लोकमान्म तिलक मन्दिर' में अवस्थित है और इसका मुद्रण पूना के ही श्रीमान् वि० गं० केतकर के तत्वावधान में 'लोकसंग्रह छापाखाना' में हुआ है।

'गीतारहस्य' के चतुर्थ संस्करण में इसके इतिहास पर संक्षिप्त प्रकाश डाला गया है। यह सुविदित है कि लोकमान्य तिलक ने बर्मा के माण्डले नगर के कारावास में रहते समय इस महत्कृति को लिखा था। इस ग्रन्थ के प्रारूप का निर्माण मांडले जेल में ही सन् १९१० ई० के २ नवम्बर को हुआ था और सन् १९११ ई० के ३० मार्च को नौ सौ पृष्ठों में सम्पूर्ण ग्रन्थ अन्तिम रूप से लिपिवद्ध हुआ। ज्ञातव्य है कि लोकमान्य महोदय ने मूल ग्रन्थ का प्रारूप पेंसिल से चार प्रतियों में तैयार किया था और जैसा कि संकेत है, उन चारो प्रारूपों की हस्तलिखित प्रतियाँ इस ग्रन्थ के प्रकाशक के पास सुरक्षित हैं।

लोकमान्य महोदय सन् १९१४ ई० के ८ जून, सोमवार को माण्डले जेल से छूटकर पूना लौटे और माण्डले के काराधिकारी द्वारा जब्त की गई 'गीतारहस्य' की पाण्डुलिपि के वापस आने की प्रतीक्षा करते रहे। जब कई सप्ताह बीत गये, तब लोकमान्य को यह धारणा बँधी कि अँग्रेज सरकार, पाण्डुलिपि जल्दी वापस नहीं करेगी। लोकमान्य तिलक के शुभानुय्यायी भी कहने लगे कि सरकार का इरादा ठीक नहीं मालूम होता। ऐसी स्थिति में लोकमान्य तिलक ने कहा : 'आशंकित होने की कोई बात नहीं। ग्रन्थ यदि सरकार के कब्जे में है, तो उसका मजमून मेरे मस्तिष्क में है। निवृत्ति के समय शान्तिपूर्वक सिंह गढ़ के किले में स्थित अपने बंगले में बैठकर ग्रन्थ को फिर से यथावत् लिख डालूँगा।' निश्चय ही, उतनी उम्रवाले, अर्थात साठ वर्ष के वयोवृद्ध की, आत्मविश्वास से परिपूर्ण यह तेजस्वी भावना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रेरणादायक तो है ही विस्मयकारक भी है। क्योंकि, 'गीतारहस्य' कोई मामूली ग्रन्थ नहीं, बल्कि गहन तत्वज्ञान के विषय से परिव्याप्त नौ सौ पृष्ठों का है। इस दृष्टि से लोकमान्य महोदय के प्रवृति परक प्रयत्नवाद की यथार्थ कल्पना मन में सहज ही उद्ग्रीव हो आती है। किन्तु, सौभाग्य की बात हुई कि सरकार ने गीतारहस्य के प्रारूपों सहित अन्तिम रूप से तैयार की गई पाण्डुलिपि को सुरक्षित वापस कर दिया और लोकमान्य के जीवन काल में ही ग्रन्थ की तीन आवृत्तियाँ हुईं।

प्रकाशकीय सूचना के अनुसार, लोकमान्य तिलक ने पुस्तक की अनुक्रमणिका समर्पण (छह संस्कृत श्लोक) और प्रस्तावना भी कारागृह में ही लिखी थी। साथ ह पाण्डुलिपि में जगह-जगह समावेश्य महत्वपूर्ण तथ्यों को अंकित करके पुस्तक को पूर्णतया प्रारूपित कर लिया था। क्योंकि, पहली बात तो यह थी कि लोकमान्य महोदय को कारामुक्ति का भरोसा नहीं था और दूसरी बात थी कि वे अपने परिश्रमपूर्वक सम्पादित ग्रन्थ में संचित ज्ञानराशि को व्यर्थ नहीं जाने देना चाहते थे। साथ ही, उनकी अत्युत्कट इच्छा यह भी थी कि उनके द्वारा अर्जित अक्षरबद्ध ज्ञान का लाभ अगली पीढ़ी को पहुँचे।

कारागृह में ग्रन्थ तैयार करते समय लोकमान्य को अनेक असुविधाओं का सामना करना पड़ा था। हालाँकि, लेखन के उपयुक्त जिन शान्त और एकान्त वातावरण की अपेक्षा होती है, उसकी पूर्ण उपलब्धि उन्हें कारागृह में अवश्य हुई। ग्रन्थ लेखन कार्य में उत्पन्न अपनी असुविधाओं की चर्चा करते हुए लोकमान्य महोदय ने अपने मराठी पत्र 'केसरी' के, सन् १९१४ ई० के ३० जून के अंक में लिखा है कि ग्रन्थ के सम्बन्ध में, तीन हुक्म आये —एकबार तो सभी पुस्तकें साथ रखने का हुक्म था, दूसरी बार पुस्तक रखने की मनाही हो गई, और तीसरी बार सिर्फ चार पुस्तक साथ रखने का आदेश मिला। अन्त में, बर्मा सरकार से प्रार्थना करने पर ग्रन्थलेखन-कार्य के निमित्त सभी पुस्तकें साथ रखने का आदेश प्राप्त हुआ। इस प्रकार लोकमान्य महोदय ने 'गीतारहस्य' के लेखन में तीन सौ से चार सौ पुस्तकों तक की सहायता ली। लिखने के लिए उन्हें जो कागज मिलता था, वह जिल्दबन्द पुस्तिका के रूप में रहता था, जिसके पन्ने गिनकर उनपर संख्या अंकित कर दी जाती थी। इससे स्पष्ट है कि सम्पूर्ण विश्व के लिए गौरवालंकार-स्वरूप इस ग्रन्थ को लिखने में लोकमान्य को कितनी अधिक मुसीबतें उठानी पड़ी थीं।

लोकमान्य तिलक ने 'गीतारहस्य' को मूलतः मराठी में लिखा था जो बाद क्रमशः गुजराती, हिन्दी, कन्नड़, तेलगु, बँगला, तमिल और अंग्रेजी में आवृत्त हुआ। इस ग्रन्थ का मूलस्पर्शी हिन्दी अनुवाद श्रीमान् माधवरायजी सप्रे ने किया। मराठी भाषी हिन्दी-अनुवादक ने अपने अनुवाद के विषय में गर्वोक्ति का उद्गार करते हुए लिखा है—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"यद्यपि मराठी रहस्य को हिन्दी पोशाक पहनाकर सर्वांगसुंदर रूप से हिन्दी पाठकों के उत्सुक हृदयों में प्रवेश करने का यत्न किया गया है और ऐसे महत्त्वपूर्ण विषय को समझने के लिए उन सब साधनों की सहायता ली गई है, जो हिन्दी साहित्य के संसार में प्रचलित हैं। फिर भी, स्मरण रहे, कि यह केवल अनुवाद है। इसमें वह तेज नहीं आ सकता, कि जो मूल ग्रन्थ में है।"

यही बात स्वयं लोकमान्य महोदय ने गीता के संस्कृत श्लोकों के मराठी अनुवाद के विषय में कहा है: "स्मरण रहे, कि अनुवाद आखिर अनुवाद ही है। हमने अनुवाद में गीता के सरल खुले और प्रधान अर्थ को ले आने का प्रयत्न किया है सही परन्तु संस्कृत शब्दों में और विशेषतः भगवान की प्रेमयुक्त, रसीली, व्यापक और क्षण-क्षण में नई रुचि उत्पन्न करने वाली वाणी में लक्षणा से अनेक व्यंग्यार्थ उत्पन्न करने का जो सामर्थ्य है, उसे जरा भी न घटा-बढ़ाकर दूसरे शब्दों में ज्यों का त्यों झलका देना असम्भव है।' (चतुर्थ संस्करण की अनुवादकीय भूमिका से)

जो भी हो, राष्ट्रभाषा हिन्दी को इस बात का अभिमान है कि इसके भाण्डार में महात्मा तिलक के 'गीतारहस्य' जैसे ग्रन्थरत्न का अनूदित संस्करण सचित है।

महर्षि अरविन्द ने 'गीतारहस्य' के बारे मे लिखा है: "गीता ग्रन्थ पर स्व. लोकमान्य तिलकजी की व्याख्या निरी मल्लिनाथी व्याख्या नहीं है। वह एक स्वतंत्र प्रबन्ध है। उसमें नैतिक सत्य का उचित निदर्शन भी है। अपनी, सूक्ष्म और व्यापक विचार प्रणाली तथा प्रभावोत्पादक लेखन-शैली के कारण मराठी-भाषा के पहली श्रेणी का यह पहला प्रचण्ड गद्यग्रन्थ अभिजात वङ्मय में समाविष्ट हुआ है।

महात्मा गांधी ने 'गीतारहस्य' को मौलिक ग्रन्थ का स्थान देते हुए उसकी प्रशंसा में लिखा है: "उनकी (तिलकजी की) गीता पर जो अधिकारयुक्त टीका है, उससे अधिक मौलिक ग्रंथ की निर्मिति न अभी तक हुई है और न निकट भविष्यत्काल में होने की सम्भावना है।"

लोकमान्य महोदय ने 'गीतारहस्य' में अपने विचारों को पंद्रह प्रकरणों में विभक्त करके उपन्यस्त किया है। पहले प्रकरण में विषय प्रवेश; दूसरे प्रकरण में कर्मजिज्ञासा; तीसरे में कर्मयोगशास्त्र; चौथे में आधिभौतिक सुखवाद; पाँचवें में सुख-दुख विवेक; छठे में आधिदैवत पक्ष और क्षेत्र-क्षेत्रज्ञविचार; सातवें में कापिल सांख्यशास्त्र और क्षराक्षर विचार, आठवें में विश्व की रचना और संहार, नवें में अध्यात्म विचार; दसवें में कर्म विपाक और आत्मस्वतंत्र विवेचन; ग्यारहवें में संन्यास और कर्मयोग की व्याख्या; बारहवें में सिद्धावस्था और व्यवहार-विचार, तेरहवें में भक्ति मार्ग का विवेचन, चौदहवें में गीताध्याय-संगति पर विचार और पन्द्रहवें में उपसंहार है। इसके बाद 'परिशिष्ट' प्रकरणों में गीता की बहिरंग परीक्षा की गई है। सबसे अन्त में गीता के मूल श्लोक, अनुवाद और टिप्पणियाँ हैं।

लोकमान्य तिलक ने अपने 'गीतारहस्य' को कर्मयोग शास्त्र का पर्याय माना है। गीता पर तिलक महोदय ने अपनी पूरी व्याख्या पौरस्त्य और पाश्चात्य चिन्तन के वैचारिक परिप्रेक्ष्य में तुलनात्मक दृष्टि से उपस्थापित की है। फलतः, इसके स्वाध्याय के लिए पाठकों की गम्भीर मनीषा अपेक्षित है। कहना न होगा कि धर्म और कर्म के तत्वज्ञान की व्यापक विवेचना की पृष्ठभूमि पर आधृत यह महाग्रंथ भारतीय प्रज्ञा की परम अद्भुत पार्यन्तिक कृति है। महात्मा तिलक द्वारा कृष्ण की जन्मभूमि (कारागृह) में लिखी गई गीता-रूपी सनातन संदेश की व्याख्या अवश्य ही महत्तमहीयसी है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तिलक का गीता-रहस्य

□ डॉ० जनार्दन उपाध्याय

"श्री गीतार्थः क्व गंभीरः व्याख्यातः कविभिःपुरा।
आचार्यैर्यश्च बहुधा क्व मेंऽल्प विषया मतिः॥
तथापि चापलादस्यि वक्तुं तं पुनरूद्यतः।
शास्त्रार्थानि् संमुखीकृत्य प्रयत्नान् नव्यैः सहोचितैः॥
तमार्याः श्रोतुमर्हन्ति कार्याकार्य-दिदृक्षवः।
एवं विज्ञाप्य सुजनान् कालिदासाक्षरैः प्रियैः॥
बालो गंगधरिश्चाऽहं तिलकान्वयजो द्विजः।
महाराष्ट्रे पुष्यपुरे वसन् शांडिल्यगोत्रभृत्॥
शाके मुग्नन्गि वसुभू संमिते शालिवाहने।
अनुसृत्य सतां मार्गं स्मरश्चापि वचो हरेः।"
समर्पये ग्रंथमिमं श्रीशाय जनतात्मने।
अनेन प्रीयतां देवो भगवान पुरुषः परः॥

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक भारतीय मनीषा के अप्रतिम प्रतिभा सम्पन्न व्यक्तित्व हैं। उन्होंने अपनी प्रातिभ सेवा से गीतारहस्य का जो उद्घाटन किया है, वह उसकी पूर्व के समस्त सिद्धान्तपरक व्याख्याओं से ऊपर एक स्वतंत्र व्याख्या है। प्रारम्भ से ही तिलक का यह मत रहा है कि गीता कभी भी सन्यास का संदेश नहीं देती। इसके साथ ही उन्होंने यह भी कहा है कि गीता से यह उपदेश उपस्थापित होता है कि सामाजिक दायित्वों से निवृत्त होकर मनुष्य पूर्ण जीवन को प्राप्त नहीं कर सकता। उसके लिए आवश्यक है कि वह कर्म के सिद्धान्त का पालन करते हुए अपने जीवन में गतिशील रहे। यही मूल प्रेरणा थी जिससे अनुप्राणित होकर तिलक ने माण्डले जेल में 'गीता रहस्य' की रचना प्रारम्भ की।

गीता रहस्य के सम्बंध में उन्होंने एक पत्र लिखा था जो मराठा पत्र मे मार्च १९११ में प्रकाशित हुआ। पत्र की मूल-विचारधारा इस प्रकार है—"यह एक स्वतंत्र एवं मौलिक ग्रंथ है। इसमें गीता के उद्देश्य का अन्वेषण किया गया है और दर्शाने का प्रयास किया गया है कि उसके अन्तर्गत हमारे दर्शन को आचार नीति की समस्याओं का समाधान करने के लिए किस प्रकार प्रयुक्त किया गया है। मेरी दृष्टि में गीता आचार-नीति का ग्रंथ है। उसका दृष्टिकोण न उपयोगितावादी है और न अन्तःप्रज्ञात्मक बल्कि पारलौकिक है और कुछ ग्रीन के "प्रोलीगोमैना टू एथिक्स" से मिलता जुलता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लोकमान्य तिलक ने अमरावती में जो भाषण दिया उससे 'गीतारहस्य' का उद्घाटन होता है : "प्रारम्भ में ही मैं आप को यह वतला दूं कि मैंने भागवद् गीता का अध्ययन आरम्भ किया। जब मैं बालक ही था उस समय मेरे बड़े बूढ़े प्राय: कहा करते थे कि शुद्ध धार्मिक एवं दार्शनिक जीवन तथा प्रतिदिन के तुच्छ एवं नीरस जीवन के बीच सामंजस्य नहीं हो सकता। यदि किसी व्यक्ति में जीवन के उच्चतम लक्ष्य मोक्ष को प्राप्त करने की महत्त्वाकांक्षा है तो उसे सांसारिक इच्छाएं त्याग देनी चाहिए और जगत् से सन्यास ले लेना चाहिए। मनुष्य ईश्वर तथा संसार इन दो स्वामियों की साथ-साथ सेवा नहीं कर सकता। मैंने इसका अर्थ यह समझा कि यदि कोई व्यक्ति धर्मानुकूल सत् जीवन का अनुसरण करना चाहता है तो उसे सांसारिक जीवन का शीघ्रातिशीघ्र परित्याग कर देना चाहिए। इस विचार ने मुझे सोचने के लिए प्रेरित किया।" तिलक ने स्पष्ट स्वीकार किया है कि गीता पढ़ने एवं गीतारहस्य लिखने में मेरा कोई पूर्व निर्धारित दार्शनिक विचार अथवा मेरा कोई अपना सिद्धान्त नहीं रहा है जिसके आलोक में मैंने गीता रहस्य की व्याख्या प्रस्तुत की है। उन्होंने स्वयं अपने चिंतन मनन के पूर्वाग्रह निरपेक्ष होकर जो विचार व्यक्त किया है, वह सर्वथा दार्शनिक निरपेक्ष व्यावहारिक सिद्धांत है। उन्होंने गीता रहस्य में स्पष्ट रूप से संकेत किया है कि ज्ञान एवं भक्ति द्वारा परमब्रह्म के साथ तादात्म्य स्थापित कर लेने के उपरान्त भी इस संसार में व्यक्ति को कर्मरत रहना चाहिए। कर्म आवश्यक है क्योंकि इस कर्म के द्वारा व्यक्ति संसार को विकास के उस मार्ग पर अग्रसारित करता रहता है जिसे सृष्टि में इसके लिए निर्धारित किया गया है। कर्म करने वाला बंधन रहित रहे, इसके लिए ही निष्काम कर्म का उपदेश दिया गया है। बिना कर्मफल की कामना किये सृष्टिकर्त्ता के उस उद्देश्य की पूर्ति में योगदान देना मानवीय जीवन का उद्देश्य होना चाहिए।

तिलक ने बार-बार कहा है—"मेरा कथन है कि गीता के अनुसार ज्ञान एवं भक्ति में पूर्णता प्राप्त कर लेने तथा इन साधनों के द्वारा परमब्रह्म का साक्षात् कर लेने के उपरान्त भी कर्म करना चाहिए। इस दृष्टि से मेरा अन्य सभी भाष्यकारों से मतभेद है। ईश्वर, मनुष्य तथा प्रकृति इन तीनों में आधारभूत एकता है। विश्व का अस्तित्व इसलिए है कि ईश्वर की ऐसी इच्छा है।"

तिलक ने गीता को एक महान ग्रंथ स्वीकार किया है। इसमें एक तरफ अद्वैतवादी तत्त्वशास्त्र प्रतिपादित है और दूसरी तरफ सृष्टिशास्त्र एवं ब्रह्माण्डशास्त्र की विवेचना है। यह निस्संदेह आध्यात्मिक अनुभूतियों के मार्ग को स्पष्ट करने वाला अनुपम ग्रंथ है। उसमें कर्म के महत्त्व को नकारा नहीं गया है। मनुष्य, ईश्वर, संसार के समन्वयात्मक अनुभूति के लिए कर्म, वह भी बंधनहीन कर्म की

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

करता रहे। कहने का आशय है कि गीता एक समन्वय ग्रंथ है। इसमें सत्यं शिवं सुंदर का समन्वय है। मनुष्य मोक्ष के लिए परमात्मा एवं आत्मा की एकता का प्रत्यभिज्ञान करता है। परंतु कर्म ज्ञानी एवं जिज्ञासु दोनों के लिए आवश्यक है। ज्ञानी वह है जिसने परमात्मा एवं आत्मा की एकता का प्रत्यभिज्ञान कर लिया है, जिज्ञासु वह है जो ऐक्य की कामना से उसके मार्ग का संधान करने में प्रयत्नशील है। तिलक कहते हैं : गीता का मुख्य उद्देश्य परमब्रह्म की सत्ता का उपदेश देना तथा उसके आधार पर कर्म की आधारभूत समस्याओं का समाधान करना है। (गीतारहस्य)

शंकर, रामानुज, माधव, वल्लभ, निम्बार्क, सभी ने अपने-अपने साम्प्रदायिक एवं धार्मिक मतों के अनुसार गीता का भाष्य लिखा है। परन्तु तिलक ने किसी मतवाद से प्रभावित होकर इसका विवेचन नहीं किया है, उन्होंने उसे उसकी ऐतिहासिक संदर्भ में रखकर उसके ऊपर चिन्तन किया है। उनका कथन है कि जिस ऐतिहासिक परिवेश में वह दिव्य ग्रंथ लिखा गया, उस परिवेश को नकारा नहीं जा सकता। युद्धक्षेत्र में अर्जुन को करुणा एवं विषाद होता है। वह अपनी सम्पूर्ण शक्ति खोकर कर्तव्य को प्राप्त करता है। कृष्ण-अर्जुन की कर्तव्यता का बोध कराते है और समस्त सूक्ष्मतत्त्वशास्त्रीय विवेचन के मध्य अर्जुन को कर्म का उपदेश देते हैं। स्वधर्म पालन एवं युद्धरत रहने का उद्घोष प्रथम अध्याय में प्रस्तुत है। गीता रहस्य के द्वितीय अध्याय में तिलक ने विभिन्न उदाहरणों द्वारा कर्त्तव्य एवं अकर्तव्य के द्वन्द्व के स्वरूप एवं निर्णय को स्पष्ट किया है। कर्म, अकर्म, विकर्म क्या है, इसका सम्यक् ज्ञान आवश्यक है। तृतीय प्रकरण में तिलक के अनुसार कर्मयोग वह कर्म है जिससे व्यक्ति को व्यवसायात्मिक बुद्धि को प्राप्त करने की प्रक्रिया में सहयोग मिलता है। व्यवसायात्मिक बुद्धि के द्वारा ही संतुलन समता, एवं अविचलित स्थायित्व किया जा सकता है। गीता मोक्ष प्राप्त करने एवं संसार में कर्म करने का मार्ग निर्देशित करती है।

गीता रहस्य के चौथे एवं पाँचवें प्रकरण में दुख-सुख की प्रकृति विश्लेषित है। तिलक ने चारवाक, हाब्स, हेल्वेशियस, सिजविक, मिल, बैंथम, शेफ्टसबरी आदि के विभिन्न सिद्धान्तों की आलोचना की है और कहा है कि कर्मयोग का विज्ञान सुख की समस्याओं के सम्बन्ध में आध्यात्मिक दृष्टिकोण का समर्थन करता है। छठवें प्रकरण में आचारनीति अन्तः प्रज्ञावादी सम्प्रदाय का विश्लेषण है एवं खण्डन भी। सातवाँ प्रकरण कपिल सांख्यशास्त्र एवं क्षराक्षर विचार की व्याख्या प्रस्तुत करता है। आठवें प्रकरण में विश्व-संरचना एवं संहार का निरुपण है। नवाँ प्रकरण अध्यात्म का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। दसवाँ प्रकरण कर्म विपाक एवं मानव आत्मा की स्वतंत्रता का समन्वय प्रस्तुत करता है। एकादश प्रकरण में सन्यास एवं कर्मयोग की

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विवेचना की गयी है। बारहवें प्रकरण में पूर्ण ज्ञान के बाद कर्म की प्रणाली एवं प्रक्रिया क्या हो, इसका विवेचन है। भक्ति मार्ग का विवेचन तेरहवें प्रकरण में हुआ है। गीता रहस्य का चौदहवाँ प्रकरण गीता के १८ अध्यायों की पारस्परिक विवेचना प्रस्तुत करता है। पन्द्रहवाँ-प्रकरण उपसंहार है जिसमें कर्मयोगशास्त्र और आचार-संग्रह का भेद प्रस्तुत किया गया है। परिशिष्ट प्रकरण गीता की वहिरंग परीक्षा करता है।

गीतारहस्य में सुदूर अतीत में जाकर महाभारत के आदर्श को ग्रहण किया गया है तथा गत्यात्मक निष्काम कर्म की भावना को स्वीकृति दी गयी है। आज के युग में नैतिक निरपेक्षतावाद को चुनौती दी जा रही है, पर गीतारहस्य परमब्रह्म की सत्ता को स्वीकार कर उसी के आधार पर नैतिक व्यवस्था का निर्माण करता रहा है।

गीतारहस्य संतुलित जीवन-दर्शन की व्याख्या प्रस्तुत करता है। इसके लिए गीता रहस्य का सिद्धावस्था एवं व्यवहार प्रकरण द्रष्टव्य है। तिलक ने काँट के दृष्टिकोण से गीता के दृष्टिकोण को ज्यादा आध्यात्मिक माना है। इसके होते हुए भी इतना स्पष्ट है कि तिलक ने गीतारहस्य में गीता की मुख्य समस्या की गलत व्याख्या प्रस्तुत कर दी है। जीवन में दो प्रश्न प्रमुख रूप से उभर कर सामने आते हैं :—

(१) क्या कर्म मोक्ष का प्रमुख मार्ग है अथवा गौण ?

(२) क्या स्थितप्रज्ञ के लिए भी अपने को कर्म में नियोजित करना आवश्यक है ?

वस्तुतः गीता की मूल समस्या पहली है। गीता बार-बार कहती है: गीता निष्काम कर्म द्वारा परमब्रह्म का साक्षात् किया जा सकता है। अतः गीता की स्पष्टतः प्रमुख समस्या कर्म द्वारा ईश्वर के साक्षात्कार की है। अर्जुन उस समय मुमुक्षु था। उसे परमब्राह्मी स्थिति प्राप्त करनी थी। इसी के लिए गीता में आग्रह है कि कर्म ही सिद्धि का मार्ग है। इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि गीता आध्यात्मिक आचारनीति (जैसा कि तिलक कहते हैं) का ग्रंथ न होकर तत्त्वशास्त्र का ग्रंथ है। नैतिक कर्म महत्वपूर्ण हैं, पर वह परम सत् के साक्षात्कार का साधन मात्र ही हैं, साध्य नहीं।

तिलक ने सत् असत् भेद एवं मायावाद के सिद्धान्त को स्वीकार किया है, पर उसके लिए कोई मौलिक तर्क को नहीं रखा है। तिलक ने मायावाद की व्याख्या परम्परात्मक शैली में की है। तिलक का कथन है कि वे गीता का अर्थ निष्काम भाव से ढूढ़ रहे हैं, पर उन्होंने सन्यास मार्ग का उपहास किया है।

समग्रतः गीतारहस्य एक अनुपम ग्रन्थ है। हिन्दी के दार्शनिक साहित्य में इसका उच्च स्थान है। इसमें विचार गम्भीर एवं प्रतिपादन शैली सरल है। इसका ओजपूर्ण गद्य स्फूर्तिकारक एवं प्रेरणादायक है। सबकुछ होते हुए भी गीता रहस्य में तिलक ने कर्मयोग की प्रभावी व्याख्या प्रस्तुत की है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बुद्धियोग के प्रतीक तिलक

□ डॉ० गोवर्धननाथ शुक्ल,

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक कट्टर राष्ट्रवादी, भारतीय संस्कृति के मूर्तिमान प्रतीक, कथनी और करनी में अभेदता के पोषक सत्यनिष्ठ कूटस्थ व्यक्ति थे। "स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है" भारत को यह नारा देकर उन्होंने जन-चेतना में स्वातंत्र्य-भावना की अग्नि प्रज्वलित की थी। शैशव से ही उनमें संकल्प की दृढ़ता विद्यमान थी। उसी के परिणामस्वरूप उन्होंने स्वतंत्रता की लड़ाई का नेतृत्व किया था। तिलकजी बुद्धियोगी थे। उनका बुद्धियोग श्रीमद्भागवद्गीता के गहन स्वाध्यायन से परिचालित था। गीता ने उन्हें तिल-तिल-कूटस्थ बना दिया था। उसी के परिणामस्वरूप उनके यावन्मात्र कार्य-कलापों में—

'सुखदुःखे समे कृत्वा लाभालाभौ जयाजयौ।
ततो युद्धाय युज्यस्व नैवं पापमवाप्स्यसि॥ २।३८, गीता

यह गीतोक्त मंत्र विद्यमान रहता था। उन्होंने यावज्जीवन संघर्ष किया। शैशव में अपने स्वास्थ्य से संघर्ष किया और उस पर विजय पायी। वे अकिंचन परिवार के व्यक्ति थे अतः अपनी शिक्षा-दीक्षा एवं जीविकोपार्जन में भी आजन्म संघर्षरत रहे। तदोपरान्त ब्रिटिश शासकों से राष्ट्रीय संग्राम में संघर्षरत रहे। 'केसरी' के संपादन के माध्यम से उन्होंने समूचे देश में राष्ट्रीय-भावना जागृत करके स्वतन्त्रता-संग्राम को जो बौद्धिक उत्तेजना दी वह अभूतपूर्व थी। उनके नित्य के जागृतिक व्यवहारों में गीता का निष्काम कर्मयोग समा गया था। वे तन-मन कूटस्थ हो गए थे, साथ ही भारतीय परम्पराओं के कठोर समर्थक थे।" "तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते" * के वे पक्के समाराधक थे। एक स्थान पर उन्होंने लिखा है—

"भक्ति सर्वात्मैक्यरूप साम्य बुद्धि को पूर्णतया प्राप्त कर लेना और उसे प्राप्त कर लेने पर भी संन्यास लेने की झंझट में न पड़, संसार में शास्त्रतः प्राप्त सब कर्मों को केवल अपना कर्त्तव्य समझ कर करते रहना ही इस संसार में मनुष्य का परम पुरुषार्थ अथवा जीवन व्यतीत करने का उत्तम मार्ग है।"**

तिलक महाराज अपने 'कूटस्थ स्वभाव' के कारण ही माण्डले जेल की यम-यातना-सहते हुए गीतारहस्य जैसी टीका इस देश के अध्यात्म पिपासुओं को दे सके। पहली बार समग्र पाण्डुलिपि आततायियों के हाथ पड़ जाने पर भी वे पुनः अपनी मेधा

* गीता—१६/२४।
** भूमिका—गीतारहस्य (तिलक)।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

से दुवारा उसे यथावत् लिख देने को संस्तुत थे। यह उनकी असाधारण प्रतिभा और लोकोत्तर मनीषा का ही परिणाम था। उन्हें अपने जीवन में पुत्र-विछोह जैसा दारुण कष्ट भी झेलना पड़ा था परन्तु वे तो "द्वन्द्वातीतो विमत्सरः" थे। गीता का भारी-भरकम ज्ञान उनके मन-प्राणों में समाया हुआ था अतः उनके प्रत्येक व्यवहार में, आचरण में और कथन में उसका सफल स्वरूप देखने को मिल जाता था। निष्काम कर्मयोग ही गीता का एकमात्र सिद्धान्त है—संत ज्ञानेश्वर के बाद तिलक महाराज ने इस सिद्धान्त पर बल दिया और गीता केवल संन्यासियों का ही धर्म-ग्रन्थ है इस मान्यता को जन-साधारण के विश्वास से दूर कर दिया। श्रीमद्भागवद् गीता मानव मात्र का और उनके प्रत्येक वर्ग का मार्गदर्शक दीप-स्तंभ है। यही तिलक महाराज का दृढ़ मन्तव्य था।

निष्काम कर्मयोग के साथ-साथ उन्होंने "निर्वैरः सर्वभूतेषु" को भी आत्मसात् कर रखा था। यह सिद्धान्त उनके आचरण में भलीभाँति पैठा हुआ था। उस समय के महान् विचारक एवं राजनीति के प्रकाण्ड पण्डित श्री गोखले से उनका सैद्धान्तिक मतभेद सर्व विदित है; परन्तु उन मतभेदों को प्रेम में परिणत कर देने की अद्भुत कला और क्षमता भी तिलक महाराज में विद्यमान थी। आगे चलकर श्री गोखले उनके प्रबल प्रशंसक बन गए थे।

कर्मयोगी तिलक अपने जीवन में प्रायः वर्षों रुग्ण रहे। परन्तु शरीर की पीड़ा के सामने उन्होंने पराजय कभी स्वीकार नहीं की। गीता रहस्य में एक स्थान पर उन्होंने मराठी के प्रसिद्ध सन्त मोरो पन्त की एक आर्या का हिन्दी में सटीक अनुवाद किया है उससे प्रतीत होता है कि वे शरीर की पीड़ा से टूटने पर भी मन से सतत् सावधान थे। उन्होंने लिखा है—

"यम सेना की विमल ध्वजा अब 'जरा' दृष्टि में आती है।
करती हुई युद्ध रोगों से अब देह हारती जाती है॥"

सच पूछा जाय तो लोकमान्य तिलक जैसा कर्मयोगी देश में उत्पन्न नहीं हुआ। महर्षि अरविन्द ने गृह त्याग करके एकान्त-साधना अपना ली थी। लोकमान्य एकान्त-साधना करते हुए समाज और जगत् की नित्य मंगल-साधना में जीवन के अन्तिम क्षण तक संलग्न रहे। कर्मनिष्ठा और ज्ञाननिष्ठा का जबर्दस्त समन्वय उनके व्यक्तित्व में था। भक्तवर नामदेव ने ज्ञानेश्वर महाराज के लिए एक स्थान पर लिखा है—

संसारी आसक्त माया मोहें रत।
तापत्रय संतप्त जाले जीव॥
ऐसिया पतितांचा करावा उद्धार।
या लागीं अवतार तुमचा जगीं॥

निश्चय ही उपर्युक्त कथन के अनुसार लोकमान्य तिलक का अवतार भी जगत् को निष्काम कर्मयोग का पाठ पढ़ाने को ही हुआ था। आज भी राष्ट्र उनकी वाणी से प्रेरणा ले रहा है और आगे भी लेता रहेगा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लोकमान्य तिलक और शिक्षा का स्वरूप

□ श्री राजवल्लभ सिंह
('राष्ट्रपति पुरस्कार' प्राप्त शिक्षाविद्)

आजादी के पैंतीस वर्षों के बाद भी भारत में शिक्षा के स्तर में कोई सुधार नहीं हो सका और आए दिन नाना प्रकार के अधकचरे प्रयोगों से इसे और अधिक दिशाहीन बनाने में कोई कोर-कसर शेष नहीं रखी जा रही है। आज तक शिक्षा शास्त्री और सरकार एकमत होकर कोई ऐसी पद्धति नहीं निकाल सके जो भारत के लिए सच्चरित्र, सुयोग्य, ज्ञानवान एवं कर्मठ नागरिकों को तैयार कर सके। राष्ट्रीयता का कोई समग्र चित्र ही हम जनमानस में अभी नहीं उभार पाए हैं। शिक्षा के क्षेत्र में दिशाहीनता एक घोर राष्ट्रीय संकट है और भविष्य की समृद्धि तथा प्रगति उसी दीप्ति में निहित है जिससे हम अपने युवा-मानस को मण्डित करना चाहते हैं। जैसी शिक्षा होगी, वैसा ही चरित्र होगा और जैसा चरित्र होगा, वैसा ही देश का रूप होगा। हम अपने नौनिहालों को अन्धकार में भटकने को छोड़कर सुख की नींद नहीं सो सकते। हमें आज एक ऐसी शिक्षा-पद्धति की जरूरत है जो हमारे ज़ेहन में भारत को एक सही राष्ट्र के रूप में उतार सके; जो एक जीवन को समग्र रूप में, पूर्ण संवेदनशील मानव के रूप में जीने की कला सीखा सके। हमें मात्र पुस्तकीय ज्ञान को छात्रों के दिमाग में भरकर सन्तोष नहीं करना है वरन् उनके हाथों में इतनी इल्म भर देनी है कि वे अपनी छवि को स्वयं अपने स्वप्नों के अनुरूप ढाल सकें। किन्तु आजादी के इतने दिनों बाद तक हम एक सर्वोपयोगी शिक्षा-प्रणाली भी नहीं दे सके हैं। इस धरती से प्रेम करने वाला प्रत्येक हृदय आज की शिक्षा-से असन्तुष्ट है।

....और लोकमान्य तिलक भी तत्कालीन प्रचलित शिक्षा प्रणाली से कतई सन्तुष्ट न थे। उनके अनुसार वह शिक्षा-पद्धति छात्रों को देश एवं जीवन की वास्तविकताओं से अलग-थलग रखती है जिसके फलस्वरूप उनका व्यक्तित्व अविकसित रह जाता है। वे चाहते थे कि छात्र नौकरी पाने के लिए नहीं वरन् जीवन को सही ढंग से जीने के लिए शिक्षा प्राप्त करें। पढ़ना-लिखना सीख लेना ही शिक्षा नहीं है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

शिक्षा वही है जो हमें जीवनोपार्जन के योग्य बनाये, देश का सच्चा नागरिक बनाये और हमें हमारे पूर्वजों के ज्ञान और अनुभव दे।" यह लोकमान्य का विचार था जो स्पष्टतः शिक्षा द्वारा प्रत्येक युवा-मानस को जीवन, राष्ट्र एवं अपनी संस्कृति से जोड़ने का समर्थक है। जीवन के लिए अपरिपक्व विचार बेकार होते हैं और राष्ट्र के लिए अविकसित व्यक्तित्व पीड़ादायक बन जाता है तथा संस्कृति से कट-छंट कर मनुष्य नंगा और रुग्न बन जाता है। अतः जीवन, देश तथा अपनी सांस्कृतिक धरोहरों के प्रति निष्ठावान बनाने वाली शिक्षा ही सही दिशा प्रदान करने वाली हो सकती है।

लोकमान्य तिलक काफी सुलझे विचारों के एक महान व्यक्ति थे। शिक्षा जैसे अतीव महत्त्व के प्रश्न पर उन्होंने काफी विचार किया था। उनके विचार अनेकानेक भाषणों एवं लेखों में प्रकट हुए। शिक्षा कैसी हो, उसका स्वरूप कैसा हो, वह कितने प्रकार की हो आदि विभिन्न मुद्दों पर उन्होंने अपना दो-टूक मत सबके सामने रखा। यहाँ हम उनके कुछ भाषणों के अंश प्रस्तुत कर देना ही अलम् समझते हैं जिससे शिक्षा सम्बन्धी उनके विचार आइना की तरह साफ हो जाते हैं। इन विचारों पर किसी भी प्रकार की टिप्पणी जोड़ना पेवन्द की तरह भद्दा दिखने लगेगा अतः यहाँ प्रस्तुत हैं केवल वे अंश जो शिक्षा के विभिन्न पहलुओं पर तिलक के सुचिन्तित विचारों को उजागर करते हैं—

शिक्षा का स्वरूप क्या हो ?

"आजकल शिक्षा तो रोटी कमाने का एक धंधा-सा हो बैठा है। यह शिक्षा नहीं, मजदूरी है। उससे राष्ट्र की उन्नति नहीं, उलटे अवनति ही होगी। हमें तो वह शिक्षा चाहिए, जिससे देश की जनता को ज्ञान-लाभ होकर उसकी उपजीविका की कुछ व्यवस्था हो सके ; लोगों की नीति, नीयत, और देशाभिमान में वृद्धि होकर प्रतिष्ठा के साथ जीवन चलाना उनके लिए सम्भव हो जाय और राजनैतिक तथा सामाजिक क्षेत्रों में कल्याणकारी कल्पनाओं का प्रसार होकर लोग अपनी स्थिति अधिक सुखकर बना सकें। हम चाहते हैं कि ऐसी शिक्षा देश में सबके लिए उपलब्ध हो। स्वराज्य मिलने पर पहले हम यह देखेंगे कि देश में शिक्षा अनिवार्य तथा बिना मूल्य मिलती है, दूसरी बातें बाद में सोचेंगे।

बाड़े में बंधे पालतु पशुओं को हम जो शिक्षा देते हैं, उनमें, और हम बाल-बच्चों को जो शिक्षा देना चाहते हैं, उसमें बुनियादी अन्तर है। शिक्षा का यही अन्तर स्वतंत्र देशों की पाठशालाओं तथा हमारे यहाँ सरकारी स्कूलों में दी जानेवाली शिक्षा में भी पायी जाती है। हमारे यहाँ की कन्याशालाओं में तथा लड़कियों के हाई स्कूलों में जो शिक्षा दी जाती है, वह घर गृहस्थी चलाने के लिए इतनी निकम्मी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

है कि सिवा थोड़ा-बहुत लिखने-पढ़ने के अतिरिक्त यह शिक्षा पानेवाली लड़कियां गृहस्थी के अन्य क्षेत्र में बिलकुल ही निरुपयोगी सिद्ध होती हैं। उनकी शिक्षा देशी भाषा में हो, उसमें उचित मात्रा में धर्म-शिक्षा भी रहे तथा उसका ढांचा हमारे यहाँ की परिवार, पद्धति के अनुसार हो, इसकी नितान्त आवश्यकता है। स्पष्ट है कि सारी सामग्री अच्छी होते हुए भी यदि उससे अच्छाई निष्पन्न नहीं होती तो दोष शिक्षा-पद्धत्ति का ही है, और जब-तक अपनी शिक्षा अपने लोगों के हाथ नहीं आती तबतक उसमें सुधार नहीं हो सकता।

जब भी कोई स्वतंत्र देश अन्य स्वतन्त्र देशों से पीछे रहने लग जाता है तो उस राष्ट्र की जनता तुरन्त आवाज उठाती है कि हो-न-न हो हमारे राष्ट्र की शिक्षा में कुछ दोष है। जनता की यह आवाज वहां की सरकार को सुननी ही पड़ती है और उसके अनुसार अपनी शिक्षा-दीक्षा में आवश्यक सुधार-परिवर्तन करने पड़ते हैं। ऐसी सुधरी, ऊँची, तथा संस्कारक्षम शिक्षा का अनिवार्य होना भी बहुत आवश्यक होता है। हम यदि चाहते हैं कि शिक्षा अनिवार्य हो, तो अपनी मांग के पीछे हमें अनिवार्य तथा दुर्दम्य शक्ति खड़ी करनी ही होगी। इसीलिए हमारी राष्ट्रीय मांग है कि शिक्षा आमूलस्रोत राष्ट्र के अधिकार में हो।

देश में दी जाने वाली शिक्षा देश की जनता की उन्नति और उत्कर्ष के लिए ही होनी चाहिए। इसीलिए हम चाहते हैं और सभी प्रगत देशों की भी यही सर्वसम्मत मान्यता है—कि जहां तक सम्भव हो, उच्च शिक्षा सरकार के अधिकार में न रहे। देश की युवा पीढ़ी की शिक्षा-दीक्षा देश के विद्वान नेताओं के हा अधिकार में होनी चाहिए। पराये हाथों में तो वह कदापि स्वीकार नहीं हो सकती। क्योंकि देश का शिक्षा-क्रम राष्ट्र की भावी उन्नति की नींव होता है। जबतक शासक तथा जनता के हित एक नहीं हो जाते, शिक्षा देश हितकारी नहीं की जा सकेगी। हमें तो वह शिक्षा चाहिए जो हमारे तरुणों को स्वराज्य का अधिकार पाने के लिए संघर्ष करने को सिद्ध, तथा स्वराज्य प्राप्त करने के लिए कटिबद्ध करे।

शिक्षा वही, जो भावी जीवन के लिए उपयोगी तथा सहायक हो सके। लिखने-पढ़ने से ही मनुष्य समझदार नहीं बन जाता। यह शिक्षा तो समझदार बनने का एक साधन मात्र उसे दे जाती है। यह मानना कि लाखों रुपयों का लेन-देन करनेवाला मूर्ख है और बैंकन की दो किताबें रटकर नाक पर ऐनक चढ़ानेवाला ग्रेज्युएट पंडित है, निंदनीय बात है। ऊंची शिक्षा या उत्तम गुरु का मार्गदर्शन पाने मात्र से सब सयाने बनते होते, तो 'सुविद्य मूर्ख' वाली कहावत प्रचलित ही न हुई

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

होती। विश्वविद्यालय की डिग्री प्राप्त होते ही हमारे स्नातक यह समझने लगते हैं कि बस अब तो वे विद्या की चोटी पर पहुंच गये हैं। किन्तु वास्तविकता यह होती है कि उन्होंने तब-तक जो कुछ लिखा-पढ़ा होता है, उससे हुआ विद्या का संस्कार इतना अधूरा और अपर्याप्त होता है कि आगे पठन-पाठन, अध्ययन जारी न रखा तो इन स्नातकों को सुशिक्षित कह सकना भी मुश्किल हो जाता है।

यह निरा भ्रम है कि अंग्रेजी शिक्षा के कारण दस-पाँच नई कल्पनाएँ कर सकते ही कोई समाज का नेतृत्व करने के योग्य बन जाता है। इस भ्रम पर आधारित हर आन्दोलन का एक-न-एक दिन असफल हो जाना बनी बात है। अंग्रेजी शिक्षा के कारण हमारी युवा पीढ़ी में तेजस्विता, ओज, स्वावलम्बन, कर्तृत्वशक्ति आदि गुणों का लोप होकर केवल कलमघिसाई तथा जीहुजूरी में ही सुख मानने वालों की सबदूर बाढ़ आ गई है। इस देश की भूमि पर अंग्रेजों का अधिकार हो तो मुझे उतना बुरा नहीं लगेगा, जितना कि अंग्रेजी शिक्षा-दीक्षा और अंग्रेजीयत का हमारे युवकों के मन पर परिणाम होने से लग सकता है।

जिस प्रकार पुर्तगालियों ने हिंदुस्तान में ईसाई धर्म का प्रसार कर यूरोपीय लोगों के लिए आसानी से बटलर उपलब्ध करने की व्यवस्था कर दी, उसी प्रकार अंग्रेजों ने हमें अंग्रेजी शिक्षा देकर वर्तमान राजकाज के लिए आवश्यक कलम घिसनेवालों की भरमार कर रखी है। कोई व्यक्ति जीवनभर भगवान् का नाम लिए बिना ही जैसे मर जाता है, वैसे ही इस देश के अंग्रेजी पढ़े-लिखे लोग अपने पर राजनीति का साया भी न पड़ने देते हुए पीढ़ी-दर-पीढ़ी मरते जायें, ऐसी अंग्रेज सरकार की शिक्षा-योजना है। यह सच है कि अंग्रेजी नौकरशाही ने यहां काफी सुधार किये, रेलें चलाई, तार-व्यवस्था कर दी; किन्तु यह तो सब शव-शृंगार के समान ही है। अंग्रेजी शिक्षा-दीक्षा से लोग जवान बनते हों, शूरवीर बनते हों, विद्वान बनते हों, तब तो बात समझ में आ सकती है, अन्यथा शव-शृंगार करने वाली अंग्रेजी शिक्षा को मैं किसी काम की नहीं मानता।

विद्या, नैतिकता, धर्मनिष्ठा अनुशासनबद्ध आचरण तथा गृहस्थिति में एक शाश्वत सम्बन्ध रहना आवश्यक होता है। बिना ऐसे सम्बन्ध के राष्ट्र के विद्वान् लोग नेता बनकर राष्ट्र की उन्नति करने में असमर्थ होते हैं। अंग्रेजी शिक्षा ने इस सम्बन्ध की जड़ें ही काट दी हैं। अंग्रेजी शिक्षा का सबसे पहला बुरा परिणाम यह हुआ है कि उससे हमारे नेताओं की मनः स्थिति बहुत ही अव्यवस्थित हो गई है। इस अव्यवस्थित प्रवृत्ति के कारण हमारी परिवार-व्यवस्था भी विकृत हो गई है। निस्सीम तपोबल तथा वैराग्य की योग्यता आधुनिक अंग्रेजी शिक्षा के कारण हमारी समझ में ही नहीं आ रही है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आजकल हमारे स्कूलों में जो शिक्षा दी जाती है वह तार्किक तथा कोरी ग्रांथिक होती है। इसीलिए उसके कारण छात्र- छात्राओं में धर्म के बारे में उचित विचार तो जागृत होते ही नहीं, उलटे न केवल अपने, अपितु संसार भर के हर धर्म की निंदा करने की प्रवृत्ति उनमें देखी जाती है। उनको आत्मा धर्मबन्धन को अनावश्यक मानती है ? वे कहने लगते हैं कि दण्ड-संहिता के अनुसार समाज चलता हो तो अनीश्वरवादी होने में भी कोई हानि नहीं है। यह सब उन्हें प्राप्त शिक्षा का ही परिणाम है। जबतक उस शिक्षा में आमूलचूल सुधार नहीं किया जाता, इन लोगों में आत्मिक या अन्य किसी प्रकार की लगन निर्मित नहीं हो सकती।

सच्ची शिक्षा

बीती पीढ़ी का अनुभव आगामी पीढ़ी के लिए उपलब्ध कराने का नाम ही शिक्षा है। फिर वह पुस्तकों से मिलती हो या अन्य किसी माध्यम से। जो राष्ट्र के सभी आबाल-वृद्ध स्त्री-पुरुषों को अधिकाधिक ज्ञान संपन्न कर, उन्हें राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक एवं औद्योगिक क्षेत्रों में राष्ट्र की उन्नति करने की लगन से जुटा सके, वही सच्ची शिक्षा है। विद्या तथा शिक्षा ही दो ऐसी शक्तियां हैं, जो बुद्धिमान् को असीम सामर्थ्य प्रदान कर सकती हैं। किन्तु यह ध्यान रखना चाहिए कि केवल पढ़-लिख सकने का ही नाम शिक्षा नहीं है। जिसके द्वारा प्रत्येक बच्चे-बूढ़े में अपने नागरिक अधिकारों तथा दायित्वों को समझने की क्षमता आती हो, वही सच्ची शिक्षा है, और जिसे वह प्राप्त है, वही सच्चा राष्ट्र है। मनुष्य स्वभावतः कितना ही अच्छा हुआ तो भी शिक्षा द्वारा बुद्धि परिष्कृत हुए विना वह देश की उन्नति में, राष्ट्रोत्थान के कार्य में योग नहीं दे सकता। और जब तक ऐसी शिक्षा देश के प्रत्येक स्त्री, पुरुष, बच्चे और बच्ची को नहीं मिलती, कोई भी देश उन्नत नहीं हो सकता।

बुद्धि में वांछित संस्कार करने का मुख्य साधन शिक्षा ही है। उच्च-कोटि की शिक्षा के संस्कार से मन की संकीर्णता दूर होती है और वह विशाल, विकसित तथा उदात्त बनता है और उसमें समूचे संसार के प्रति ममत्व की भावना का निर्माण हो जाता है। ऐसी शिक्षा का उपयोग यही है कि हर व्यवसाय के व्यक्ति में अपने-अपने व्यवसाय का काम अधिक कुशलता से कर सकने की क्षमता का निर्माण हो जाय। राष्ट्रपुरुष की सभी दृष्टि से उन्नति करनेवाली तथा राष्ट्रीयता का परिचय करा देनेवाली शिक्षा ही राष्ट्रीय शिक्षा है। मनुष्य का शील तथा विचार शिक्षा से ही बनते-बिगड़ते हैं। अच्छी तथा ऊंची शिक्षा वह है, जिसे पाने पर मनुष्य पूर्ण विचार के बाद बने अपने मतों का प्रतिपादन तथा तदनुसार आचरण करने से नहीं डिगता।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लोकाभिमुख शिक्षा

शिक्षा हमेशा लोकोपयोगी होनी चाहिए। आज की शिक्षा तो परीक्षा-पद्धति पर आधारित है। किन्तु यद्यपि परीक्षा विद्वता को नापने का एक साधन है, यह नहीं कि उसके द्वारा सच्ची विद्वता की परीक्षा हमेशा ही होती है। इसीलिए शिक्षा पद्धति को लोकाभिमुख बनाना चाहिए। शिक्षा,संस्थाएं राष्ट्रीय विचारों का आदिस्थान होती हैं। पराई प्रभुता में ये सस्थाएं दासता की शाश्वत जंजीरों से राष्ट्र को जकड़ने में सहायक होती हैं। इसीलिए शिक्षा की शुद्धता की आवश्यकता होती है। यह बात शिक्षकों पर निर्भर करती है। राजा का नौकर, विदेशी राजा का गुलाम होने के कारण लोभ से लालायित या उस लोभ के कुसंस्कार से अनेक वर्ष तक दूषित बनता आया संकीर्ण मनोवृत्ति का शिक्षक सच्चा विद्यागुरु नहीं हो सकता। स्कूलों में आवश्यक धर्म शिक्षा देने के लिए यद्यपि अनेक साधन होते हैं, फिर भी शिक्षकों का व्यवहार ही सबसे उत्तम साधन हुआ करता है। युवा पीढ़ी को राष्ट्रहित की बातें समझा देना और युवावस्था से ही तदनुसार आचरण करने की प्रवृत्ति उनमें निर्माण करना शिक्षक का ही काम है।

हिन्दुस्तान के विश्वविद्यालयों में शिक्षा पाकर निकलने वाले विद्वान् वाल-मंदार वृक्ष के समान होते हैं। दीखने में वे बड़े लुभावने लगें और युरोपीय अधिकारी जब चाहे उनके फल-फूल तोड़कर उनका स्वाद ले सकें, इसी अन्दाज से उनका लालन-पालन करने की दक्षता इन विश्वविद्यालयों में आरम्भ से ही ली जाती है। आज के विश्वविद्यालय यानि निम्न श्रेणी की सरकारी नौकरियों के लिए आवश्यक उम्मीदवार तैयार करने की टकसालें या मजदूरखाने हैं। उन्हें विश्वविद्यालय कहने के बजाय अच्छा हो कि परीक्षायंत्र या बच्चों को सुविद्य-मूर्ख एवं सत्वशून्य बनाने के कोल्हू कहा जाय। यूरोप के विश्वविद्यालय हिंदुस्तान के विश्वविद्यालयों की भांति परीक्षाएं लेने वाली तथा डिग्रियां देने वाली कम्पनियाँ नहीं, वरन विभिन्न विषयों में पूर्णतया निपुण लोग निर्माण करने वाले विद्या मन्दिर हैं। इसीलिए आज की विश्वविद्यालय शिक्षा-प्रणाली में अनेक सुधार किये जाने चाहिए, ताकि ये सच्चे अर्थ में विद्वत्ता एवं विद्वानों के जन्म स्थान बन सकें।

सच्चा विद्यापीठ

सच्चा विद्यापीठ वह है, जहां राजनैतिक, सामाजिक, वैज्ञानिक, औद्योगिक या व्यावहारिक विषयों पर बिना लिहाज के विचारपूर्वक मत प्रतिपादन करने वाले विद्वान तैयार होते हों। किन्तु जो विश्वविद्यालय शराब के अड्डे की भांति सरकारी के लाइसेन्स से चलाने होते हैं, उनसे, सत्य निष्ठा से उत्पन्न होने वाले डाक्टरों

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कट्टरता की आशा कैसे की जा सकती है ? विभिन्न विज्ञानों तथा शास्त्रों का अखंड अध्ययन एवं चिन्तन करने वाले अनेक विद्वान जहाँ रहते हैं और जिनकी कीर्ति सुनकर दूर-दूर के सैकड़ों छात्र विद्यार्जन के लिए उनके पास आते हैं, उस स्थान को विश्वविद्यालय विद्या मंदिर या विद्याश्रम की संज्ञा प्राप्त होती है।

निजी शिक्षा क्यों ?

"इन दिनों हिन्दुस्तान में गोरे अधिकारी पुरानी ही शासन प्रणाली चला रहे हैं। उसे शिकस्त देने के लिए हमें अपनी आगामी पीढ़ी को तैयार करना होगा। इसके लिए आवश्यक शिक्षा आज के सरकारी स्कूलों,कालेजों में नहीं मिलती। सरकार यदि यह करने के लिए तैयार नहीं होती तो उसे उसकी बातों पर छोड़ दो। किन्तु निजी स्कूलों में यह कार्य अवश्य होना ही चाहिए। वस्तुतः इसी कार्य के लिए निजी स्कूलों की आवश्यकता है। यदि वे भी इस कार्य को नहीं कर सकते तो उनका रहना या बन्द हो जाना एक-सा ही है। निजी स्कूलों का काम ही यह है कि शिक्षा को जितना हो सके उतनी सुलभ और सुगम बनाये।" × × ×

राष्ट्रीय शिक्षा

आजादी की लड़ाई के दिनों में राष्ट्रीय शिक्षा की आवश्यकता को रेखांकित करते हुए तिलक ने कहा —

"छात्रों को राष्ट्रीय शिक्षा देने का एक ही मार्ग है, कि एक राष्ट्रीय विश्व-विद्यालय स्थापित करें। राष्ट्र की आकांक्षाओं तथा आवश्यकताओं को पूरा करने वाली तथा राष्ट्र के हर स्त्री, पुरुष, बच्चे को अधिकाधिक ज्ञान-सम्पन्न बनाकर राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक तथा औद्योगिक दृष्टि से राष्ट्र की उन्नति करने के लिए उन्हें एकता से अग्रसर करने वाली शिक्षा ही राष्ट्रीय शिक्षा है। हम जो चाहते हैं, उसे प्राप्त करके ही रहेंगे की जो सीख देती है, वही राष्ट्रीय शिक्षा है। धैर्यशाली, तथा नौकरशाही का सामना करने वाले नेता का निर्णय करना ही राष्ट्रीय शिक्षा का ध्येय है, फिर इन लोगों को आप बढ़ईगिरी, बुनाई, कताई, आदि की शिक्षा दें, चाहें न दें।

राजनैतिक सिद्धान्तों एवं सामाजिक प्रमेयों की दीक्षा छात्रों को बचपन से देना ही राष्ट्रीय शिक्षा का बीज है। देश की युवा पीढ़ी को देश का राजनैतिक, औद्योगिक तथा सामाजिक वैभव बनाये रखने और बढ़ाने के योग्य बनाने वाली शिक्षा उसे देना शिक्षा-विभाग का कर्तव्य है। इस शिक्षा को ही राष्ट्रीय शिक्षा कहा जाता है। ऐसी राष्ट्रीय शिक्षा स्वतंत्र लोगों द्वारा सम्भव भी है; क्योंकि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सरकारी अनुदान का भूत राष्ट्रीय शिक्षा पर सवार हुए बिना नहीं रहता। औषधि एक ही रही तो भी अनुपान भिन्न हुआ करते हैं। सरकारी स्कूलों का अनुपान हमारे लिए अहितकारी है। उनकी शिक्षा एक-तरफा तथा संकीर्ण होती है। शिक्षा का दायित्व जब तक राष्ट्र के लोग अपने हाथों में नहीं लेते तब तक वह ठीक ढंग से पूरा हो नहीं सकता। इसीलिए हमें हितकारी अनुपान के राष्ट्रीय स्कूलों की आवश्यकता है।

राष्ट्र की आवश्यकता को समझकर दी जानेवाली, राष्ट्र की प्रतिष्ठा एवं सम्पत्ति को बढ़ानेवाली, तथा अन्य देशों पर अपने राष्ट्र का प्रभाव अंकित करनेवाली शिक्षा ही सच्ची राष्ट्रीय शिक्षा है। राजा और प्रजा जहाँ एक नहीं, वहाँ राष्ट्रीय शिक्षा सरकार के द्वारा मिल सकना असम्भव है। अपने पैरों पर खड़े होकर अपने बल-बूते पर अपनी रोटी कमाने की सामर्थ्य यदि राष्ट्रीय शिक्षा से नहीं आती हो तो वह शिक्षा राष्ट्रीय हो नहीं सकती।

राष्ट्रीय शिक्षा की दृष्टि से जाति-जाति के अलग-अलग स्कूल रखना कदापि उचित नहीं। सभी जातियों का एक ही स्कूल में बैठकर राष्ट्रोत्थान की शिक्षा पाना अतीव इष्ट तथा आवश्यक है। अनीति के प्रसार में परोक्ष रूप से बड़े-बड़े स्कूल ही सहायक हुआ करते हैं। इसीलिए बच्चों की नीति बनाये रखने की बहुत बड़ी जिम्मेदारी स्कूलवालों पर होती है।

राष्ट्रीय शिक्षा के द्वारा सरकारी शिक्षा-नीति को असफल करा देने के अतिरिक्त हमारे सामने अन्य कोई चारा नहीं है। अंग्रेज शासकों से हम यदि कोई अधिकार प्राप्त करना चाहते हैं तो शिक्षित-अशिक्षित दोनों को एक होकर शासन-व्यवस्था ठप कर देनी चाहिए। अपनी शिक्षा का उपयोग जो इस प्रकार देश के लिए करता है वही वास्तव में शिक्षित है।

सैनिक शिक्षा कई परीक्षाओं से भी अधिक श्रेष्ठ है।

सरकारी अनुदान, या किसी विश्वविद्यालय के साथ संलग्नता प्राप्त करने का मूल्य, झूठे अनुशासन का कड़ाई के साथ पालन करने का बन्धन स्वीकार करना ही हो, तो क्यों न ऐसे बन्धनों की कड़ियों को चट-चट तोड़कर राष्ट्रभक्ति तथा स्वार्थत्याग के नाम पर हम अपनी शिक्षा को विमुक्त एवं सर्वतंत्र स्वतंत्र कर लें? इस राष्ट्रीय शिक्षा के मार्ग में अधिकारी रोड़े अटकाएंगे, इसमें कोई सन्देह नहीं। किन्तु शासनकर्ता भी जबतक राष्ट्रीय शिक्षा का ध्येय स्वीकार नहीं करते तब तक तो इन कठिनाइयों में मुकाबला करते हुए हमें उनपर हावी होना ही पड़ेगा। किन्तु सिवा जनप्रिय सरकार के शासकगण राष्ट्रीय शिक्षा को अपना ध्येय स्वीकार करनेवाले नहीं हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जनता और सरकार जब एक हो तथा नागरिकता के समान आदर्श से प्रेरित हों, तब तो राष्ट्रीय शिक्षा के प्रश्न पर कोई संघर्ष या मतभेद खड़ा नहीं हो सकता। किन्तु नागरिकता के दोनों के आदर्श भिन्न हों, तथा शासक वर्ग जनता के पूरे नागरिक अधिकार पाने की बलवती इच्छा को दमनचक्र में पीसकर उन्हें दबाये रखना चाहता हो, तब तो सरकारी शिक्षा-दीक्षा से सर्वथा भिन्न एवं स्वतंत्र राष्ट्रीय शिक्षा एक राष्ट्रीय आवश्यकता बन जाती है।.......'' × × ×

धर्मशिक्षा

धर्म-शिक्षा को भी आधुनिक शिक्षा का अंग बनाया जाय ताकि अति-भौतिकता की विसंगियाँ मिट सकें—ऐसा बहुतों का मत है। लोकमान्य तिलक का स्पष्ट विचार है :—

"शिक्षा में सुधार करते समय हमें देखना होगा कि उसमें शारीरिक शिक्षा के साथ ही धर्म-शिक्षा एवं व्यावसायिक शिक्षा भी शामिल की जाती है। वास्तव में धर्म-शिक्षा एवं व्यावसायिक शिक्षा हमारी आम शिक्षा के अभिन्न अंग होनी चाहिए। किन्तु धर्म-शिक्षा यानि जातिविरोध की शिक्षा नहीं। व्यक्ति का स्वभाव जिससे स्वाभिमानी, श्रद्धावान, कर्त्तव्यदक्ष तथा सत्यनिष्ठ बनता हो वही सच्ची धर्म-शिक्षा है। ऊंचे-ऊंचे विचार लोगों को सिखाकर उन्हें उनके दैनिक आचरण भुला देना, जाति-जाति में भेदभाव नष्ट करते हुए "हम सब एक हैं" की धारणा उनमें भर देना ही सच्ची धर्म-शिक्षा का कार्य है।

छात्रों में सत्यनिष्ठा, देशप्रीति, दृढ़ता, आदि गुणों का प्रादुर्भाव होकर राष्ट्रीय जनता का पक्ष लेने की क्षमता उनमें आने से ही उनका व्यक्तित्व बन सकता है। और, यह कार्य सिवा धर्म-शिक्षा के अन्य किसी साधन से सम्पन्न नहीं हो सकता। धर्म-शिक्षा से एक प्रकार का मानसिक साहस निर्माण होता है। धर्म या समाज के रूप में अपनी विशेषता बनाये रखने के कार्य में प्रसंगानुसार कठिनाइयाँ उठानी पड़ती हैं, कष्ट सहने पड़ते हैं। और, इस प्रकार की कठिनाइयों को सहर्ष उठाने के लिए लोगों को तैयार करना धर्म-शिक्षा से ही सम्भव होता है। रेल-इंजन चलाने के लिए जिस प्रकार भाप ही मुख्य होती है, उसी प्रकार समाज की धारणा को सुनियंत्रित रखने के लिए धर्म के मूल सिद्धान्तों की शिक्षा आवश्यक होती है।

आज की शिक्षा-प्रणाली सौ वर्ष से चल रही है। इस अवधि में पांच पीढ़ियाँ आईं और बीत गईं। किन्तु इस शिक्षा प्रणाली ने एक भी हिंदू धर्म-प्रसारक पैदा नहीं किया। मैं आपसे पूछता हूं—आपमें कितने विवेकानन्द हैं?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आज का पढ़ा-लिखा व्यक्ति समाज-शिक्षा की बातें तो बहुत लम्बी-चौड़ी किया करता है, किन्तु अपने सुख-चैन से वह रत्ती-भर भी हिलने को तैयार नहीं होता। अपना घर-बार छोड़कर एक संन्यासी की भांति देश का चप्पा-चप्पा भूमि देखने के लिए वह तैयार नहीं होता। समाज की निम्न श्रेणी के लोगों से तो वह कतराता है। उनमें उठते बैठते हुए, हिल मिलकर, अपने आचरण, अपनी शिक्षा-दीक्षा तथा अपने उदाहरण से इन लोगों में सुधार करने की कल्पना से भी वह भाग खड़ा होता है। आप में से कितने लोग इस प्रकार समाज सुधार करने के लिए प्रस्तुत हैं ? समाज-शिक्षा का यह विशाल क्षेत्र आपके सम्मुख पूरी तरह से उपेक्षित-सा पड़ा है। ईसाई धर्म प्रचारकों ने इस दिशा में कुछ करना आरम्भ कर दिया है। इसका कुछ श्रेय भी उन्हें मैं अवश्य दूंगा। यद्यपि उनके उद्देश्य मुझे एकदम नापसंद हैं। बहुजन समाज के धर्म, रीति-रिवाज, रहन-सहन, शिक्षा-दीक्षा आदि में सुधार करने की पूरी जिम्मेदारी शिक्षित समाज पर ही है। आप यदि उसे निभाएंगे नहीं तो समाज का नेतृत्व करने की पात्रता आपमें नहीं है। किसी का भी नेता बनने का आपको कोई अधिकार नहीं।......"

× × ×

व्यावसायिक शिक्षा

व्यवसाय की शिक्षा सबको मिले, इस तथ्य को प्रायः आजकल सभी स्वीकार करते हैं। तिलक ने इसे काफी महत्वपूर्ण मानते हुए कहा है—

"धर्म-शिक्षा की भांति व्यावायिक शिक्षा भी महत्वपूर्ण है। शरीर को निरोग रखने के लिए भीतर अनेक आवश्यक रसों का निर्माण तथा कई तरह के पदार्थों का भक्षण जरूरी होता है। उसी प्रकार सारे राष्ट्र के पोषण के लिए राष्ट्र की मेधा का अनेक व्यवसायों में विकसित होना भी आवश्क होता है। और इसके लिए व्यावसायिक शिक्षा के अलावा अन्य कोई मार्ग नहीं। व्यापार-स्पर्धा के आज के जमाने में राष्ट्र की अस्मिता को अक्षुण्ण रखने का व्यावसायिक शिक्षा ही प्रभावी साधन है। उसका मुख्य लाभ यही है कि छोटे-मोटे व्यवसाय चलाने का ज्ञान लोगों को मिलता है तथा रोटी कमाने के लिए केवल सरकार का मुंह ताकते बैठने की नौबत उन पर नहीं आती।

सरकारी नोकरी, वकालत, बैरिस्टरी आदि भी व्यवसाय अवश्य हैं और इन व्यवसायों की शिक्षा भी सरकारी स्कूलों में मिलती है। ऐसी शिक्षा देने वाले स्कूलों की संख्या भी काफी है। किन्तु ये व्यवसाय गन्ने के कोल्हू के समान धनोत्पादक नहीं, रेतीली सामग्री के कोल्हू यंत्र के समान केवल धन-वितरक हैं। देश में इस प्रकार के धन-वितरक व्यवसायों, की शिक्षा की ही भरमार रही और धनो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

…पादक व्यवसाय और उनकी शिक्षा का उत्तरोत्तर लोप होता गया तो फिर साहूकार मरे या किसान, दोनों राष्ट्र की दृष्टि से अनिष्ट ही है।

नये उद्योग-धंधे और व्यवसाय-हुनर सिखाने के लिए वैज्ञानिक ज्ञान तथा यांत्रिक औजार की आवश्यकता होती है। ऐसे व्यवसायों की शिक्षा देने वाले स्कूल जिले-जिले में खुलने चाहिए। उनको नष्ट प्रायः होते जा रहे व्यवसायों को भी पुनरुज्जीवित करना चाहिए। ऐसा हुए बिना देश का औद्योगिक उत्थान नहीं हो सकता। सच्ची व्यवहारोपयोगी शिक्षा तब तक नहीं मिलती जब तक जिम्मेदारी स्वयं पर नहीं आ पड़ती। इसीलिए व्यावसायिक या व्यावहारिक शिक्षा की रचना इस प्रकार होनी चाहिए कि उसे पानेवाला छात्र, सैद्धान्तिक ध्येयवाद की बेकार की कल्लस में न उलझता हुआ, मध्यम आयु-प्रवेश के समय ही यथायोग्य व्यवसाय को चुन ले और उसी को सारा जीवन समर्पण करता हुआ अपने उद्योग का फल प्रभु के चरणों में अर्पण करने के निश्चय से ही अपने विश्वविद्यालय से बाहर आवे।

प्राथमिक शिक्षा और व्यावसायिक शिक्षा का साथ ठीक न बैठा तो केवल शिक्षा पाने से गरीबों के मन पर अच्छे संस्कार नहीं होंगे। उलटे वे अपने-अपने व्यवसायों को बुरा मानने लगेंगे। इसीलिए हमारी व्यावसायिक शिक्षा को अनिवार्यतः छात्रों में ये भाव भरने चाहिए कि व्यवसाय अपने तईं कभी ओछा या ऊंचा नहीं होता! उसमें प्रदर्शित कुशलता और कर्तृत्व से ही वह आंका जाता है। छोटे व्यवसाय ही देश में अनेकों की रोटी का सहारा हैं। आप जिस व्यवसाय में प्रवेश करेंगे, उसकी चर्चा चल पड़ते ही आपका नाम लोगों के सामने प्रथम खड़ा हो जाना चाहिए।—इस प्रकार की भावना से व्यवसाय चलाने वाले लोग हों तो देश का उत्कर्ष किसी के रोके नहीं रुक सकेगा।....” × × ×

शिक्षा सम्बन्धी लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक के ये विचार कितने साफ और सुलझे हुए तथा तथ्यपूर्ण हैं। ये आज भी उतने ही महत्वपूर्ण हैं जितने सत्तर वर्ष पहले थे। इससे तिलक के प्रखर चिन्तक का स्वरूप उजागर होता है, उनके शिक्षानुराग का आभास मिलता है तथा यह उनके स्वस्थ दृष्टिकोण का परिचायक है।

आज अपने देश में जो भ्रष्टाचार का सुरसा-वदन निरन्तर बढ़ता चला जा रहा है, उसके पीछे युवा पीढ़ी के समक्ष नैतिक चरित्रों के आदर्श का सर्वथा अभाव भी एक बड़ा कारण है। धर्म सम्प्रदाय नहीं होता, संकीर्ण नहीं होता, वह भेद-भाव का जनक नहीं है। शाश्वत मानवता के कर्त्तव्यों को जीवन का रस-गन्ध बना लेनाही धर्म है। तिलक जीवन को कर्ममय कर देने को ही धार्मिकता मानते हैं। तिलक के ये विचार आज लोकाभिमुख शिक्षा पद्धति के निर्माण में हमारे सहायक सिद्ध हो सकते हैं। □

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लोकमान्य तिलक

□ स्व० लालबहादुर शास्त्री
(भूतपूर्व प्रधानमंत्री का एक भाषण)

"कुछ ऐसा हुआ कि यह जो हमारी दासता थी, इसी से एक बड़ा भारी लाभ हुआ। और वह लाभ यह हुआ कि बड़े-बड़े दिग्गज पैदा हुए हमारे देश में। यानी मैं नहीं जानता कि भारत के इतिहास में ऐसा कोई समय आया कि तीस, पैंतीस और चालीस वर्ष के अन्दर ऐसे बड़े लोग, ऐसे महान पुरुष, जिनमें तिलक जी का नाम बहुत ऊँचा है, मैं कहूँ कि सबसे ऊँचा है, तो वह भी ठीक होगा, कि भारत भूमि ने जन्म दिया हो। ऐसे महान् पंडित, इतने बड़े लेखक, इतने बड़े विचारक. वह भी पोलीटीशियन के रूप में आ गये। ऐसे बड़े विद्वान और ऐसे राजनीतिक लोग कम हैं जो दोनों काम कर लेते हैं। राजनीतिक क्षेत्र में रहकर संघर्ष का भी जीवन बितायें और इसके साथ साथ किताबें भी लिखें, रिसर्च भी करें और कुछ देश और दुनियाँ को दे जायें नई चीज। लोकमान्यजी उनमें आते हैं, जिन्होंने लड़ाई भी लड़ी, जिन्होंने किताबें भी लिखीं और जिन्होंने खोज भी की और जो देश को और दुनिया को बहुत कुछ दे गये। लेकिन ज्यादातर समय लोकमान्य का राजनैतिक संघर्ष में बीता। इसलिए मैं यह कह रहा था कि वह तो स्कालर थे, पंडित थे। उस पंडित को दौड़ फिरकर यह लगा कि देश की गुलामी के खिलाफ लड़ाई पहले और लिखना बाद में। हमारे देश ने ऐसे लोगों को जन्म दिया, जिनकी हमारे इतिहास में सदा याद रहेगी और वह हमेशा अमर रहेंगे।

वैसे तो दिल्ली का बहुत बड़ा नाम है। पूना का, बम्बई का और कलकत्ते का बहुत बड़ा नाम है। मैं एक बार रत्नागिरी गया था। लोकमान्यजी का वहाँ जन्म हुआ था। मैं उस मकान में गया, उस पवित्र मकान में जहाँ इस महान पुरुष ने जन्म लिया था। मैं वहाँ गया, देखा और अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। ऐसा लगा कि रत्नागिरी सचमुच में रत्नों की खान है। उस छोटी-सी जगह ने बड़े-बड़े लोगों को जन्म दिया। मुझ पर तो रत्नागिरी का बड़ा असर पड़ा। वहाँ जो मैंने संयम देखा एक सभा में जो नियन्त्रण पाया, एक शब्द एक आवाज कहीं से नहीं। हो सकता है वहाँ के सब लोग मेरे विचारों से सहमत न हों, लेकिन मैंने जो नियन्त्रण देखा उसका मेरे पर जबरदस्त असर हुआ। यह मैंने कम से कम देखा कि महान विभूति

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

की भूमि में जो यह चीज है, वह बहुत सुन्दर है, और आज भी उस नगर के प्रति मेरी श्रद्धा है।

लोकमान्यजी को जिधर से भी देखिए, उधर से वे बड़े हैं। राजनीतिक क्षेत्र में, वे एक मंजिल तक पहुँचा गए देश को और उस मंजिल के बाद फिर गांधीजी ने उस रास्ते को बताया और फिर देश को आजाद किया। एक ऐसा समय था जब कि गांधीजी अपने असहयोग आन्दोलन को चलाने वाले थे और लोकमान्य तिलक उस समय कांग्रेस के एकमात्र नेता थे। लोगों के मन में बड़े-बड़े सन्देह थे कि क्या होगा, क्या नहीं होगा? लोकमान्य तिलक गांधीजी के विचारों से सहमत होंगे या नहीं, कई समस्यायें उस समय लोगों के सामने थीं। आगे क्या होता है यह कोई नहीं जानता है। मगर फिर भी तिलक जी की अपनी विचारधारा राजनैतिक क्षेत्र में एक अपने खास ढंग की थी। गांधीजी की विचारधारा एक अपने ढंग की खास और एक नयी तरह की चीज, जोकि मैं नहीं जानता कि आज तक राजनीतिक क्षेत्र में कभी इसको अमल में लाया गया हो। गांधीजी का तरीका नानवायलेन्स का, अहिंसा का। व्यक्ति में चलता है कि माता-पिता अपने पुत्र के साथ या पुत्र अपने माता-पिता के साथ, यदि संघर्ष न हो तो वहाँ अहिंसा और प्रेम रहता है लेकिन एक बड़े क्षेत्र में जहाँ एक दूसरों के विरोधी हैं, एक दूसरे का इन्ट्रेस्ट यानी एक समझता है कि सम्बन्ध रहना चाहिए और दूसरा कहता है कि इन्हे निकालना चाहिए, ऐसी जगह में अहिंसात्मक लड़ाई की कल्पना करना और अहिंसात्मक लड़ाई के माने कि प्रेम से बदल देना अपने शत्रु को, यह एक कल्पना थी राजनीतिक क्षेत्र में। इसके पहले था कि जो जैसा करता है, वैसा उसको जबाब दिया गया। जो तलवार चलाता है, उसको तलवार से जबाब दिया गया, जो गोली चलाता है उसको गोली से जबाब दिया गया। इतिहास को देखा जाए तो उसमें यही निकलेगा। लोकमान्य का कुछ इससे मिलता जुलता विचार था। जब वह काशी में आए मैंने उनका भाषण सुना था। उसमें उन्होंने कहा था कि कभी ऐसा हो सकता है कि अंग्रेज संकट में हों, तो हम सोचें कि हमें क्या करना है, हमारा उसमें क्या रास्ता होगा उस समय। उनका इशारा था कि वे संकट में हों, तो हम उनकी मदद नहीं करेंगे और अगर हो सका तो उनको मुसीबत में डाल देंगे। उनकी यह विचार शैली थी। यह शुरू से लेकर आखिर तक अडिग रहे और मैं नहीं समझता हूँ कि उनकी राय कभी बदली हो। मैं इस पर बहुत विश्लेषण नहीं करना चाहता, उस पर कुछ कहना नहीं चाहता लेकिन ऐसा मुझे लगता है कि कुछ समझ में नहीं आता कि क्या मार्ग ठीक है। जब दुनिया में उतरें तो बहुत सी कठिनाइयाँ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आती है, जिसमें यह समझ में नहीं आता कि अगर हम शान्ति-प्रेम का मार्ग अ-नायें तो कहां तक इस पथ पर चला जाय और आज की हालत में तो और भी कठिन है। ये तो हमको समझते हैं कि हम बिल्कुल नालायक हैं और मुझे ऐसा लगता है कि ये बुरा कहकर तो विरोध करते ही हैं, लेकिन जब अच्छा करते हैं तो भी विरोध करते हैं। तो, मुश्किल पड़ जाती है कि क्या करें क्या न करें। मगर यह बात जरूरी लगती है कि आदमी साधन और साध्य को जरूरी समझें। यह बहुत ही जरूरी चीज है। अगर हमको सामने की मूर्ति, गणेश जी के पास जाना है तो रास्ते में जो बैठे हैं उनके सिर पर से चला जाय या बच्चों और बड़ों को प्यार से हटायें कि हमें वहां जाना है। समझायें-बुझायें, उनसे कहें कि हमको वहां जाना है। मैं नहीं समझता कि दुनिया में आज तक इसका कोई जवाब मिला हो। इसका कोई एक जवाब नहीं। मैं समझता हूं कि उस पर गांधी जी की विचारधारा का काफी असर है। यानी मैं यह कह सकता हूं कि कहीं न कहीं दुनिया को सोचना पड़ेगा कि अगर दुनिया में शान्ति लानी है, तो लड़ाई से नहीं होगी। आज अमरीका समझे कि हम शक्तिशाली हैं और हम रूस को कुचल देंगे या रूस यह समझे कि हमारी शक्ति बढ़ती जाती है और चीन हमारे साथ है। ज्ञान उनका बहुत बड़ा है मगर क्या इससे रास्ता निकलेगा दुनिया में शान्ति का ? तो, यह सोचना पड़ेगा कि दुनिया को यदि ठीक करना है तो 'मीन्ज और एण्ड' का सवाल हल करना होगा। मुझे यह लगता है कि एक आदमी को जहां तक हो सके, अगर वह राजनीतिक मैदान में भी अपने साधन को ठीक रख सके तो बहुत अच्छी बात है। आज संघर्ष का जमाना है, लेकिन गवर्नमेंट को अपने मीन्ज को ठीक रखना होगा। अगर मिनिस्टर का व्यवहार अच्छा है, उसके साधन ठीक हैं तो जनता पर भी उसका अच्छा असर पड़ेगा। इसलिए मैंने कहा कि साधन और साध्य की महिमा बहुत बड़ी है।

यह दुनिया को देखने को मिला कि गांधीजी की, जिन्हें अहिंसा का अवतार माना जाता है, हत्या कर दी गई। आप देखिये कि विरोध किसी के मन में पैदा हुआ और उन्होंने उनको खत्म कर दिया। इसलिए मैंने कहा कि एक जैसी राय बनाना बड़ी मुश्किल बात है। मैं चाहता हूं कि युवकों को अपने विचार को खुला रखना चाहिए और सोचना चाहिए कि क्या चीज अपने देश के कल्याण में है; क्या चीज लोगों के दिलों में है और उसका दिल खोलकर फैसला करना चाहिए, इसमें घबराना नहीं चाहिए। विवेक में घबराने की बात नहीं होती। हर आदमी एक तरह का नहीं होता, सब एक नहीं हो सकते, सब मेरी तरह छोटे नहीं हो सकते। जहां

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लिखने पर ताला लगा हो, वहाँ इन्सान, इन्सान नहीं रहता। मैं नहीं जानता कि कितनी स्वतन्त्रता एक कम्युनिस्ट सोसाइटी में हो सकती है। यानी आजादी से सोचने की, आजादी से बोलने की, आजादी से लिखने की और जहाँ यह नहीं है, वहाँ उन्नति नहीं हो सकती। इसलिए मैं यह कहना चाहता हूँ कि आजादी से सब की बात सोचना और हरएक आदमी अपना खुला दिमाग रखे। मैं इतना ही आप से कहना चाहता हूँ कि यदि लोकमान्यजी की विचारशैली में, यदि वह जीवित रहते, मैं उनकी जीवनी पढ़ रहा था, उसमें यह लिखा था कि लोकमान्यजी का नाम सन् १९२० के स्पेशल सैशन में सभापति के लिए रखा गया, उनको सूचना भेजी गयी। उनकी जीवनी में लिखा है कि लोकमान्यजी ने कहा कि इसमें कुछ लोगों की चालाकी मालूम होती है और उन्होंने कहा कि गांधीजी से लोग मुझे लड़ाना चाहते हैं। मैं इसको स्वीकार नहीं करूँगा। गांधीजी से जब उनकी बात हुई तो उन्होंने कहा कि मेरा सहयोग आपको मिलेगा। पं० मदनमोहन मालवीय को भी यह सन्देह था और जो उस समय के बड़े-बड़े नेता थे उनको सन्देह था कि क्या गांधीजी के आन्दोलन से देश आगे बढ़ेगा। लोकमान्य तिलक डरने वाले नहीं थे। उन्होंने गांधीजी से कहा कि आपको मेरा सहयोग मिलेगा। बड़े आदमी जो होते हैं, वे लकीर के फकीर नहीं होते। बड़े लोग जो आते हैं तो आपके और हमारे, हजारों के मन को मोड़ देते है।

लोकमान्यजी तिलक जब काशी गये, तो मैं वहाँ से ६०-७० मील की दूरी पर था। मैं साधारण; एक गरीब विद्यार्थी, मेरे पास साधन नहीं था कि जल्दी पहुँचा जाय। लेकिन मैंने कुछ पैसा इकट्ठा किया और मैं वहाँ पहुँचा उनके दर्शन करने। मैंने उनका भाषण सुना। उन्होंने कहा कि अंग्रेजों पर जब संकट आयेगा तो हम सोचेंगे। मेरे जैसे विद्यार्थी पर इसका जबरदस्त असर हुआ। उनकी मृत्यु पर तो, मुझे याद है, सारे स्कूल-कालेज बन्द हुए आप अन्दाज कीजिए हम सब स्कूलों से निकल आये, तमाम विद्यार्थी। एक अथाह समुद्र था आदमियों का। तो, मैं कहता हूँ कि कितने जन-समूह पर उनका असर था। बड़े-बड़े लीडर थे कांग्रेस के। लेकिन जिस लीडर ने लोगों को, जनता के दिलों को पकड़ा, उनको एक नया बल प्रदान किया, वह थे लोकमान्य तिलक। उन्हें लाखों करोड़ों की जनता को उठाना था और वह उन्होंने किया और एक महान् शक्ति पैदा की। "स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है।" इसमें इतनी शक्ति थी कि जो हमारा वर्थ राइट है, उसमें वह आदमी मरकर भी वर्थ राइट को हासिल करता है। इस एक वाक्य ने बहुत कुछ किया। ठीक है; हम लोगों ने भी थोड़ा-बहुत किया किन्तु एक लगातार संकट और मुसीबत का लोकमान्य जी ने मुकाबला किया, जिसकी कोई सीमा नहीं, और उस समय तो सबसे बड़ा हथियार वह था कि उन्होंने सरकार के विरुद्ध अखबार के जरिये एक जबरदस्त लड़ाई छेड़ी। एक इलाहाबाद के शायर ने कहा—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"खींचो न कमानों को, न तलवार निकालो
जब तोप मुकाबल हो तो अखबार निकालो।"

आखिर मैं यह कह सकता हूँ कि हमारे तमाम राजनीतिक नेताओं में लोकमान्य चोटी पर हैं। मैं तो निजी बात कहता हूँ कि दो चार नेताओं को इतनी बड़ी इज्जत मिल सकती है। लेकिन दो-चार ऐसे हैं जिनके भीतर से कभी बड़प्पन की बात नहीं निकलती। हम लोगों में बल नहीं रहा। भगवान ने उनको उस समय बल दिया था। मैं अपने मन में खुद सोचता हूँ कि आज गवर्नमेंट में हैं, कल नहीं हैं, हम इसके लिए बैठे कि 'मैं कामर्स और इन्डस्ट्री मिनिस्टर बना रहूँ या रेलवे का बना रहूँ।' किस बात के लिए हम कांग्रेस की चर्चा करते हैं? किस बात के लिए हम गांधीजी की चर्चा करते हैं? मगर हमें लगता है कि अच्छे आदमी यहाँ आते हैं तो इससे हमें एक नयी शक्ति मिलती है। मैं तो जब सोचता हूँ तो उससे लाभ उठाता हूँ। इसलिए तिलक तो एक ऐसे महान् व्यक्ति थे कि जिनका स्मरण करना भी हमको एक नया जीवन, नया बल प्रदान करता है। उनका विद्याध्ययन, उनके ज्ञान को, जैसा कि मैंने कहा बिरले लोग पाते हैं, जो राजनीति में जाते हैं और गीता रहस्य जैसी किताबें लिखते हैं। मैंने जेल में इसको पढ़ा। जीवन में जो बड़ा असर पड़ा वह है गीता रहस्य का। मैं नौजवानों को कहना चाहता हूँ कि जिन्होंने गीता रहस्य न पढ़ी हो, उनको अवश्य पढ़नी चाहिए। अगर कोई ऐसा है जिसने गीता और महाभारत को पढ़ा नहीं तो मैं कह सकता हूँ कि वह अपने धर्म को अच्छी तरह नहीं जानता। गीता रहस्य ने तो एक नया अध्याय खोल दिया और वह अध्याय कर्म का है। ये जो बड़े-बड़े लोग, अवतार, लीडर और नेता आते हैं, ये जैसा समय होता है, उस चीज पर बल देते हैं। लोकमान्यजी ने देखा कि हमारे यहाँ दर्शन-वेदान्त की सब चर्चा करते हैं, लेकिन काम कम करते हैं, लोग अपने कर्त्तव्य को भूल जाते हैं। तो, सारा गीता रहस्य इस बात से भरा हुआ है और उन्होंने बताया है कि मनुष्य कर्मप्रधान है, उसे हर समय अपने काम में लगा रहना चाहिए, हमको कर्म-मार्ग में ही रहना चाहिए। इसमें ड्यूटी और कर्त्तव्य का बहुत सुन्दर चित्रण है। यह सब बात ठीक है मगर असली बात है व्यक्ति अपने को कैसा बनाता है, सब बात इस पर निर्भर करती है। आप लोकमान्य को देखें उनके जीवन में पवित्रता के अलावा और बात नहीं थी। शुरू से लेकर आखिर तक, ऊपर से नीचे तक उनको देखिए। उनमें स्वच्छता है, पवित्रता है, सच्चरित्रता है इसलिए व्यक्ति अपने काम को ठीक से करे, निभाये, यह असली बात है। काम किस तरह करना है और क्या करना है, यह कोई बात नहीं है। क्या कर्म है, क्या अच्छा है, क्या बुरा है, उसे बड़े-बड़े लोग भूल जाते हैं। कठिन बात है कि आसानी से आदमी तय नहीं कर पाता कि क्या कर्त्तव्य है। अर्जुन को मोह हुआ कि मैं लड़ूँ या नहीं। तो लोकमान्य ने बड़ा अच्छा उसका विश्लेषण किया। इसलिए अपनी ड्यूटी को करना और फिर विवेक से करना यह बड़ी बात है। इसलिए मैंने आपसे कहा कि लोकमान्य तिलक जैसा व्यक्ति मिलना कठिन है। □

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक

□ पं० युगल किशोर चतुर्वेदी
संपादक, लोक शिक्षक

"वह सब जो कुछ मैं कहना चाहता हूँ, यह है कि न्यायालय के निर्णय के बावजूद मेरी धारणा है कि मैं निर्दोष हूँ। व्यक्तियों के तथा राष्ट्रों के भाग्यों का निर्णय करने वाली कुछ उच्च शक्तियाँ हैं, और ईश्वर की यह इच्छा है कि जिस उद्देश्य की पूर्ति के लिए मैं प्रयत्न कर रहा हूँ। वह मेरे मुक्त होकर बाहर रहने से अधिक मेरे द्वारा जेल की यंत्रणा भोगने से होगी।"

ये वे चिर स्मरणीय तथा ऐतिहासिक महत्व के उद्‌गार हैं, जो भारत माता के महान सपूत लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने २२ जून, सन् १९०८ को बम्बई हाईकोर्ट की विशाल बिल्डिंग में उन न्यायाधीशों के समक्ष प्रकट किये थे जिन्होंने आपके विरुद्ध राजद्रोह के तीन अपराधों के लिये आपको ६ वर्ष का कठोर कारावास तथा निर्वासन का दण्ड दिया था।

इस सदी के प्रारम्भिक दो दशकों में भारत के राजनीतिक आकाश में बाल, लाल और पाल के नाम में जो तीन जाज्वमान नक्षत्र प्रकाशमान रहे थे उनमें पंजाब केसरी लाला लाजपतराय तथा बंगाल के बेताज के बादशाह विपिनचन्द्र पाल के साथ लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक का नाम सर्वोपरि आता है, जिन्होंने अपनी मातृभूमि की दीर्घकालीन दासता की बेड़ियों को काटने के लिए आजीवन प्रबल प्रयास और परिश्रम किया था। उसी का परिणाम १५ अगस्त सन् १९४७ को पूर्ण स्वाधीनता प्राप्ति के रूप में प्रकट हुआ था।

लोकमान्य तिलक ने २३ जुलाई, सन् १८५६ को रतनगिरि (पूना) के एक साधारण चितपावन ब्राह्मण परिवार में जन्म लेकर तथा बी० ए०, एल० एल० बी० की शिक्षा प्राप्त करने के अनंतर अपना सार्वजनिक जीवन एक शिक्षक और पत्रकार की हैसियत से प्रारम्भ किया था और फिर शनैः शनैः राजनीतिक विचारधारा के नेता बन गये थे। अपने द्वारा सम्पादित तथा प्रकाशित "केसरी" और "मराठा" दोनों समाचार पत्रों के द्वारा आप विदेशी शासन विशेषतः गोरी अफसरशाही के विरुद्ध ऐसा विष वमन करते थे कि जिससे तिलमिला कर अधिकारियों ने आपको क्रमशः चार महीने, १८ महीने, और ६ वर्ष का निर्वासन का कठोर दण्ड दिया था।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सर्व प्रथम आपने अपने साथी और सहयोगी श्री आगरकर के साथ "केसरी" और "मराठा" में कोल्हापुर के महाराज का पक्ष लेकर वहाँ के अंग्रेज दीवान मि० वेवे के विरुद्ध कुछ ऐसे तीखे लेख लिखे थे, जिनको आपत्तिजनक मान-कर आप दोनों को चार-चार मास के कठोर कारावास का दण्ड दिया गया था। जेल की यंत्रणा के कारण आपका २४ पौंड वजन घट गया था। परन्तु उससे आप महाराष्ट्र प्रांत में अत्यन्त लोकप्रिय नेता बन गये थे।

उन्हीं दिनों आपने 'गणपति उत्सव' तथा "शिवाजी उत्सव" मनाने का आयोजन प्रारम्भ किया था जिसमें जाति-पात तथा ऊँच-नीच का भेदभाव भुलाकर सभी लोग उत्साहपूर्वक भाग लेते थे। इससे उनमें मातृ-भाव के साथ-साथ राष्ट्रीयता की भावना भी भरती थी और विदेशी शासन के दमन और अत्याचार का विरोध करने की प्रवृत्तियाँ बढ़ती थीं।

लगभग उन्हीं दिनों सन् १८९७ में पूना में प्लेग ने बड़ा भयंकर रूप धारण कर लिया था, उसका शमन करने के लिए सरकार ने मि० रैण्ड नामक एक बदमिजाज अंग्रेज को वहाँ का अधिकारी नियुक्त किया। जो जबरदस्ती लोगों के मकान खाली कराकर उनको तंग और परेशान करता रहता था। इससे जनता में भारी क्रोध और क्षोभ उत्पन्न हुआ। लोकमान्य तिलक ने अपने पत्र केसरी में इस सम्बन्ध में लिखा था, 'बीमारी तो केवल बहाना है।' वास्तव में सरकार लोगों की आत्मा को कुचलना चाहती है। मि० रैण्ड अत्याचारी है। वह जो कुछ कर रहा है सरकार के आदेश से कर रहा है। इसीलिए प्रार्थना करना व्यर्थ है।

इसके कुछ समय पश्चात् जब २२ जून सन् १८९७ को समूके साम्राज्य महारानी विक्टोरिया का ६० वें राज्याभिषेक दिवस मनाया जा रहा था तो पूना में भी उसके उपलक्ष में रोशनी की गई और आतिशबाजियाँ छोड़ी जा रही थीं। इस समय खुशी में झूमते हुए मि० रैण्ड को किसी ने गोली मार दी जिससे वह उसका ढेर हो गया, इस घटना से सम्बन्धित जो लेख 'केसरी' में प्रकाशित हुए उनको लेकर लोकमान्य तिलक पर मुकदमा चलाकर आपको १८ महीने के कठोर कारावास का दण्ड दिया गया था।

जेल से छुटने के अनन्तर लोकमान्य तिलक फिर सार्वजनिक कार्यों में व्यस्त हो गये। तभी आप लाला लाजपत राय के साथ कांग्रेस में गर्म दल के नेता की हैसियत से कार्य करने लगे, सन् १९०७ में जिस समय कांग्रेस का अधिवेशन सूरत में हुआ था, तो आपकी टक्कर अधिवेशन के अध्यक्ष के पद तथा कुछ प्रस्तावों के प्रश्नों को लेकर हो गई। आपके गर्मदल के लोग उसी समय जेल से छुटकर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लाला लाजपत राय को अध्यक्ष बनाना चाहते थे और नर्म दल के लोग एक दली नेता को। मतभेद यहाँ तक कहा कि अधिवेशन के दौरान धक्का, की और कुर्सियों तक चल गई थी। अन्त को गर्म दल कांग्रेस से पृथक हो था।

फिर सन् १९०८ में जब बंगाल में हुए बमकाण्ड से उत्पन्न परिस्थिति से टने के लिए सरकार ने 'विस्फोट पदार्थ एक्ट' तथा समाचार-पत्र एक्ट नामक दो ले कानूनों की सृष्टि करके उनमें अपराधियों को देश से निर्वासित करने तक का फान कर दिया था। उक्त कानून के आधार पर लोकमान्य के कतिपय लेखों पर पके विरुद्ध राजद्रोह का मुकदमा लगाकर जो न्याय का नाटक रचा गया उसके रान आपने अपनी पैरवी स्वयं की थी। इस सिलसिले में आपने पांच दिन में पूरे घन्टे तक बहस करके यह सिद्ध करने की चेष्टा की थी, सरकार की आलोचना ना राजद्रोह नहीं माना जा सकता और अपने देश की स्वतंत्रता के लिए लड़ना डनीय अपराध नहीं हो सकता। यह मुकदमा कानून के इतिहास में अपूर्व और जोड़ माना गया था। परन्तु जैसी कि आशंका की थी न्यायालय ने अपने निर्णय आपको ६ वर्ष के निर्वासन का दण्ड देकर बर्मा के माण्डले जेल भेज दिया जहाँ : तबाही में रहकर आपने गीता रहस्य जैसी महान दार्शनिक ग्रन्थ की रचना थी।

इस निर्वासन के दौरान ही लोकमान्य तिलक की धर्म पद्धति का ७ जून १९१२ को एक लम्बी बीमारी के बाद देहान्त हो गया, और उनकी दो पुत्री थू और दुर्गा तथा दो पुत्र राम-भाऊ और बापू सर्वथा निराश्रित रह गये थे। से आपके हृदय को सशक्त आघात पहुँचा था, परन्तु आपने उसको बड़े धैर्य और हस के साथ सहन किया था।

सन् १९१४ में वहां से रिहा होकर आप बम्बई व पूना में फिर वापिस आये र पहले की भांति देश और समाज की सेवा में लग गये। इस समय तक लोकमान्य तिलक समूचे देश में अत्यन्त प्रसिद्ध और लोकप्रिय हो चुके थे। फलतः जिस मय सन् १९१६ में लखनऊ में कांग्रेस अधिवेशन हुआ और उसमें भाग लेने आप हां पधारे तो पूना से लखनऊ तक के पूरे मार्ग पर जहां-जहां ट्रेन ठहरती थी वहीं जनता द्वारा आपका बड़ा ही भव्य और जोरदार स्वागत होता गया तथा जब प लखनऊ स्टेशन पर उतरे तब तो एक विशाल जन समूह ने आपको आंखों पर लिया और कांग्रेस अधिवेशन के आयोजकों की इच्छा के विरुद्ध आपका ऐसा पूर्व जुलूस निकाला जैसा उसके अध्यक्ष का भी नहीं निकाला था, विशेषतः

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

युवकों ने आपकी गाड़ी को अपने कन्धों से खींचकर आपके प्रति अपनी श्रद्धा और भक्ति-भाव का परिचय दिया था। उस अवसर पर आपके ही प्रयत्न से कांग्रेस के गर्म दल और नर्म दल ही नहीं मुस्लिम लीग भी एक ही मंच पर एकत्रित हुए थे।

कांग्रेस का संभवतः यह अन्तिम अधिवेशन था, जिसमें लोकमान्य तिलक उपस्थित हुए थे। उसके उपरान्त आपके सम्बन्ध में एक अंग्रेज पत्रकार चिरोल ने अपने पत्र में कुछ आपत्तिजनक टिप्पणी लिखी जिसके विरोध में आपने इंगलैण्ड की अदालत में मुकदमा दायर किया था। और अपनी पैरवी करने स्वयं वहां पहुंचे। उसका निर्णय तो आपके विरुद्ध हुआ था, परन्तु आपने वहां पूरे १३ महीने रहकर अपनी मातृभूमि के हित में वहुत कार्य किये थे। विशेषतः उन दिनों भारत में स्वराज्य प्राप्ति के लिये जो प्रवल आन्दोलन चल रहा था,। उसके पक्ष में लोकमत वनाने का आपने प्रवल प्रयत्न किया था। इस कार्य में आपको १८-१८ घन्टे लगाने पड़े थे।

इंगलैंड से वापिस लौटने के पश्चात् आपका स्वास्थ्य विगड़ता ही गया और अन्त में १ अगस्त सन् १९२० को अर्ध रात्रि के १२.४० पर आप भारत माता और उनके सैकड़ों सपूतों को रोता-विलखता छोड़कर स्वर्ग सिधार गये।

लोकमान्य तिलक केवल राजनीतिक नेता ही नही थे, आप प्रवल समाज सुधारक भी थे। समाज के सुधार के संदर्भ में जो आपने निम्नलिखित सुझाव दिये थे, आज भी वे सर्वथा अनुकरणीय हैं :—

१. १६ वर्ष से कम आयु की कन्याओं का विवाह न किया जाये।
२. २० वर्ष से कम आयु के लड़कों का विवाह न किया जाय।
३. ४० वर्ष की आयु के पुरुष को विवाह करना ही नहीं चाहिये।
४ यदि ऐसा पुरुष विवाह करे भी तो विधवा स्त्री से ही करना चाहिये।
५. मद्यपान का पूर्ण परित्याग करना चाहिये।
६. दहेज प्रथा का अन्त कर देना चाहिये।
७. विधवाओं का मुण्डन नहीं करना चाहिये।

काश ! वर्तमान भारतवासी आपके तप, त्याग, देश के लिये कष्टसहिष्णुता, और सर्वस्व समर्पित करने की भावना के साथ-साथ आपके समाज सुधार सम्बन्धी सुझावों को हृदयंगम करके उन पर आचरण भी करते होते।

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तिलक का राजनीतिक जीवन : एक खुला ग्रन्थ

□ श्री मो० ग० तपस्वी

तिलकजी का ३० वर्ष का राजनीतिक जीवन अपने में ही एक खुला ग्रंथ है। कुछ लोगों की यह मान्यता है कि तिलकजी कट्टर धर्माभिमानी और कर्मकाण्ड के पुजारी थे। इसके लिए उनके कुछ विचारों का आधार भी वे ले लेते हैं। उनकी पुराने ढंग की वेशभूषा को भी लोग अपने समर्थन में खड़ी कर देते हैं। किन्तु कुछ दूसरे लोग उन्हें तेली-तम्बोलियों का नेता मानते आए हैं और स्वयम् ही तिलकजी को कर्मकाण्डी के वर्ग का मानने से इन्कार कर देते हैं। हिंदुत्व-वादी लोग तिलकजी को एक पक्का हिन्दू मानते हैं और हिन्दू-मुस्लिम दंगों के जमाने में मुसलमानों के विरुद्ध 'केसरी' में लिखे लेखों का हवाला अपने मन की पुष्टि के लिए देते हैं। किन्तु राजद्रोह के पहले अभियोग में स्वयम् मोहम्मद अली जिन्ना का उनकी पैरवी के लिए खड़ा होना, और अलीबन्धुओं द्वारा उन्हें न केवल हिन्दुओं का अपितु मुस्लिमों का भी नेता स्वीकार किया जाना ऐसी घटनाएं है, जो हिन्दुत्ववादियों की बुनियादी चौखट को तोड़कर निकल जाती हैं। सशस्त्र विद्रोह के क्रान्तिकारी सपने देखने वाले उन्हें, अपने रंग की ऐनक से देखते हुए, किसी-न-किसी बहाने उसी रंग में रंगा दिखाना चाहते हैं, किन्तु विद्रोह की आशंका में दिन-रात चौकन्नी रहने वाली विदेशी सरकार और उनकी नौकरशाही के स्थानीय हस्तक एड़ी चोटी का पसीना एक करने पर भी तिलकजी पर गैरकानूनी या अवैध कारवाइयां करने का अभियोग लगाने में असमर्थ रहे, यह ऐतिहासिक सत्य आतंकवादी मार्गों के प्रेमियों का तर्क स्वयं ही देता है। विदेशी सत्ता ने उन्हें गैर-ब्राह्मण लोगों का विरोधी कहा किन्तु १९०८ में राजद्रोह के अभियोग में उन्हें ६ वर्ष देश—निकाला दिये जाने पर अंग्रेजी राज में बम्बई के मजदूरों ने पहली और पूरी हड़ताल कर दी और सरकार के घरभेदियों के लाखों कारनामों के बावजूद भी जो टूट न सकी, उसमें स्वयम् सरकार भी अपनी थोथी दलीलों से हार गई और तिलकजी यथार्थ में लोकप्रियता के शिखर पर पहुंचकर लोकमान्य हो गए।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तिलकजी की राजनीतिक चेतना इस प्रकार परस्पर भिन्न पहलुओं से विभूषित दीप्तिमान रत्न रही। उसने उनकी आत्मा को सर्वव्यापी बनाया। इसलिए चरमोत्कर्ष की सीमा तक विस्तृत बनी उनकी आत्मा भारतीय जनता के लिए परमात्मा बन गई। इतने वह समाज के साथ एक रूप हो गये थे। वस्तुतः उनके इस अनथक जनसंपर्क के कारण ही सरकार चिंतित हो उठी थी। वैधानिक मार्गों से खुल्लम्खुल्ला, डंके की चोट, जो जनजागरण तिलकजी करते जा रहे थे उस पर कानूनी प्रतिबन्ध लगाना असम्भव था और फिर भी उनका प्रत्येक शब्द घन जैसा प्रचण्ड आघात करता हुआ अंग्रेजी सिंहासन की ईंट-ईंट को कम्पित करता था। तिलकजी का यह सारा कार्य एक खुले ग्रंथ के रूप में राष्ट्र की धरोहर है। उसके किसी एक अध्याय को ही समग्र ग्रंथ मानकर पूरे जीवन का अध्ययन करना चाहिए।

लोकसत्तात्मक अधिष्ठान

तिलकजी के कार्य का अधिष्ठान लोकसत्तात्मक था और वही उनकी विशेषता है। जब ब्रिटिश नौकरशाही यहाँ पूरे जोर पर थी और अवैधानिक गतिविधियों से उसके पैर उखाड़ना असम्भव था, तब दूर की बात सोचकर तिलकजी ने वहां के लोगों को जगाया, नौकरशाही के आधार-स्तम्भों को सचेत किया और हम चाहें तो सरकार का कारोबार एक दिन में ठप कर सकते हैं, यह आत्मविश्वास जनता में जगाया। नेता लोग इस विचार को गरमपथी मानते थे, किन्तु किसानों, मजदूरों तथा उसी श्रेणी के अन्य समाज को तिलकजी के खड़े और सीधे तर्क हिला देते थे, दिलों को छू जाते थे। इसीलिए उनका नेतृत्व किसी वर्ग या गुट विशेष की चहारदीवारी में कभी बन्दी न बन सका। तिलकजी लोकसत्ता के पुजारी थे। इसीलिए लोगों की अन्तिम भलाई की बात के सिवा उनके मन में और कोई धुन नहीं थी।

उनकी राजनीति का आधार यही लोकनीति थी। आन्दोलन यदि टिकाऊ और जोशीला बनाना हो तो उसे समाज के निचले-से-निचले स्तर तक पहुँचाना जरूरी है, यही उनकी मान्यता थी। इसीलिए वह अपने विचारों को देहात-देहात में पहुँचाना चाहते थे और उस दृष्टि से आए हर अवसर से बराबर लाभ उठा लिया करते थे। मजदूरों की संख्या शहरों में बड़ी है और वे छुट्टियों में अपने-अपने देहात अवश्य जाते हैं, यह व्यावहारिक सत्य पहिचानकर तिलकजी ने मजदूरों से हमेशा सम्पर्क रखा। हमारी अर्थव्यवस्था को खोखली बना देनेवाले शासकों के शोषण के कारनामे उन्होंने किसानों की सभाओं में डंके की चोट खोलकर रख दिये। सरकारी नौकरियाँ करने वालों के मन में उन्होंने यह बात गहरी अंकित कर दी कि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अंग्रेजी शासन की सारी मीनार उन्हीं के वल पर खड़ी है और नौकरशाही की नींव उन्हींके खून-पसीने से भर दी गई है। अत: यदि सरकार से असहकार किया जाता है तो अंग्रेज कितने ही प्रवल रहें, दाँतों तृण दबाकर उन्हें हिंदुस्तानियों के सामने झुकने पर विवश किया जा सकेगा। यही थी उनकी दृष्टि। यही कारण था कि तिलकजी को अत्याचारी शासन द्वारा देश-निकाला देने पर वम्वई में आम हड़ताल हो गई और 'तिलक महाराज की जय' के नारों से अंग्रेजी शासन दहल उठा। छह साल तक तिलकजी लोगों से दूर रहने के वाद जब माण्डले से छूटकर आ गए तब उनके स्वागत के लिए दस-दस हजार की विशाल जनसभाएँ बिना लाउडस्पीकरों के तिलकजी के विचार सुनने के लिए चित्रवत् शान्त वैठी रहती थी। यह उन्होंने लोकसत्ता का जो आवाहन किया, उसका परिणाम था। कानून के दायरे में रहकर स्वजनों को अंग्रेजी निष्ठा से विमुख कर देने का महान् कार्य तिलकजी ने किया।

लोकसत्तात्मक अधिष्ठान की प्रस्थापना के लिए उन्होंने स्वयम् दिन-रात दौरे किये। छोटे-वड़े सभी को जोड़ा। विरोधियों को भी तोड़ा नहीं। अर्थनीति, समाजनीति, शासननीति आदि सभी क्षेत्रों में उन्होंने अपने भाषणों द्वारा, तथा 'केसरी' और 'मराठा' पत्रों द्वारा तीस साल तक मानो एक अखण्ड ज्ञानसत्र चलाया। इसीलिए तिलकजी 'लोकमान्य' हुए। उन्होंने इस देश की जनता का खोया और सोया हुआ 'स्व' खोजा और उसे जागृत किया। यही कारण है कि राजनीतिक क्षितिज पर उनके जैसे सूर्य का उदय होते ही अन्य नरमदलीय नेता सितारों की भाँति कान्तिहीन हो गए और आसेतुहिमाचल सारे भारतवर्ष ने तिलकजी को अपना नेता मान लिया।

युगनिर्माता

भारत में तिलकजी से पहले भी कई आन्दोलन हुए। किन्तु तिलकजी ने स्वराज्य के लिए एक ऐसा प्रचण्ड शक्तिशाली आन्दोलन चला दिया कि उसमें विदेशी सत्ता या स्वदेशी जनमानस ही केवल नहीं अपितु राजनीति की व्याख्या, मान्यता, धारणा और कल्पना सभी तह से सतह तक प्रवल वेग से आन्दोलित हो उठी और उस महामंथन से राष्ट्र की चेतना अमृतपान कर 'हतो वा प्राप्यसे स्वर्गम् जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम्' के गीता-रहस्य को आत्मसात् करती हुई स्वराज्य युद्ध के लिए खड़ी हो गई।

तव तक काँग्रेस की राजनीति परिषद्-कमरों में ही चक्कर काटती थी। तिलकजी के नेतृत्व में वह वहाँ से वाहर निकलकर मैदान में आ गई; खेतों में और देहातों में पहुँच गई। उसे लोकनीति का स्वरूप प्राप्त होने लगा और प्रस्तावों के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कोल्हू से निकलकर उसे रणनीति का अधिष्ठान मिल गया। नौकरशाही के मन में लोकशाही के प्रति भय तथा आदर निर्माण करने का अतीव मौलिक मोड़ भारत की राजनीति में लाने का श्रेय तिलकजी को ही प्राप्त है।

राजनीति को रणनीति का स्वरूप आते ही लोगों की दृष्टि में परिवर्तन आ गया और शासकों का रूख भी बदल गया। किन्तु तिलकजी भी महान द्रष्टा थे। मंजे हुए खिलाड़ी की भाँति उन्होंने एक एक दांव ऐसा मारना शुरू किया कि अंग्रेजों के हौसले भी पस्त होने लगे। बौखलाई खिसियानी बिल्लीं की तरह वे तिलकजी के 'केसरी' में आने वाले लेखों का खम्भा नोचने लग गये और न्याय कुछ भी कहता हो, तिलकजी के प्रति इसी द्वेष के कारण शासकों के दबाव ने उन्हें देशनिकाला दिलवा दिया। किन्तु जन-आन्दोलन का ज्वार रोके न रुका। उनकी अनुपस्थिति में भी नरमपंथी नेताओं का प्रभाव लोगों पर पड़ नहीं सका। समाज-जीवन के अंग-प्रत्यंग से सम्बन्ध रखने वाली हर नीति और रीति को तिलकजी की विचारधारा ने झकझोरा था, ललकारा था और मरोड़ा था। तिलकजी की विचारधारा का पारस स्पर्श होते ही पराई प्रभुता का जंग खाया हुआ यहाँ का हर लोहा सोना बनता जा रहा था। भारत की राजकीय आकांक्षाएं पुष्पित हो रही थीं। इस मिट्टी के गुण की अचूक परख करनेवाला उनके जैसा जौहरी मिलते ही यहाँ की मिट्टी सोना हो उठी।

सभी भावी आन्दोलनों के लिए सम्बलस्वरूप प्रवल इच्छाशक्ति, दुर्दम्य आकांक्षा की मौलिक देन तिलकजी ने इस देश को दी। राजनीतिक चेतना का एक दीप्तिमान नया युग उन्होंने शुरू कर दिया। इस युग का मूलमंत्र था 'राष्ट्र देवो भव।' और युगस्रष्टा थे लोकमान्य तिलक।

वास्तविकतावादी नेतृत्व

तिलकजी के भाषण सुनने का सौभाग्य जिन्हें प्राप्त था, उन्होंने कहा है और लिखकर भी रखा है कि उनकी भाषा जनता की भाषा थी इस अर्थ में कि जनता उसे अपने ही हृदय से झंकृत होती अनुभव करती थी। किन्तु साथ ही वह एक बहुत ही सशक्त नेता की प्रखर ओजस्विनी भाषा भी थी; इस अर्थ में कि सुननेवाले के मन पर छाया भ्रम का अन्धेरा दूर कर उसे सत्य-ज्ञान का प्रकाश दिखाती हुई उस आलोक में ध्येय की ओर अग्रसर होने की चेतना प्रदान करती थी।

यह सब इसलिए सम्भव होता था, क्योंकि तिलकजी एक वास्तविकतावादी नेता थे। सम्भावनाओं के दायरे से बाहर जाकर कल्पना की उड़ानें उन्होंने कभी नहीं भरी और नहीं उनका नेतृत्व स्वप्निल क्रान्तिवाद के चक्कर में कभी पड़ा। और

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

फिर भी उनकी राजनीति, ध्येयवाद, समाज की विकासोन्मुखता में कभी बाधा सिद्ध नहीं हुई। समाज के साथ ही उसका विकास होता गया।

"सरकार बहुत प्रबल है, हम दीन हैं। इसीलिए मैं आप से कहता हूँ कि सरकार के विरुद्ध विद्रोह कभी न करें। किन्तु इसका अर्थ यह नहीं कि आप उफ् तक न करते हुए सारे अत्याचार सह लें। आप अत्याचार और अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाएं, शोर मचाएं। बिना ऐसा किये सरकार आपकी एक न सुनेगी। 'मुझे कष्ट है' कहने का अधिकार आपको है; उसे कोई छीन नहीं सकता।"—यह था राजनीतिक अशान्ति जगाने के कार्य का तिलकजी द्वारा दिया गया पहला पाठ।

इसी वास्तववादिता के कारण उन्होंने स्वदेशी और बहिष्कार को अपने आन्दोलन का मुख्य साधन बनाया। उन्होंने नरमदलीय नेताओं की विचारधारा को जड़ से उखाड़ दिया। स्वदेशी और बहिष्कार के द्वारा असहकारिता तक के मार्ग की रूपरेखा उन्होंने तय कर ली। साथ-ही-साथ लोगों में राष्ट्रीयता की भावना का भी कूट-कूटकर निर्माण किया। और इन दोनों प्रकारों से राष्ट्र-चेतना जगाते हुए वास्तविकतावादी दृष्टि रखकर उन्होंने आनेवाली हर स्थिति से लाभ उठाया।

बंगाल का विभाजन होते ही जनमानस में उत्पन्न हुए स्वाभाविक क्षोभ से दूरदर्शिता रखते हुए, उन्होंने लाभ उठाया और वहाँ की जनता से कहा—"निषेध-पत्र, प्रार्थना पत्र, और सभा के प्रस्तावों से सरकार के कानों पर जूँ तक नहीं रेंग सकती। इसके लिए तो आप सरकार की अर्थरचना की नाड़ियों को बन्द करने का स्वदेशी और बहिष्कार का मार्ग अपनाएँ। तभी कुछ असर हो सकता है। इस मार्ग पर आप पाँच साल चलेंगे तो यूरोप में युद्ध छिड़कर रहेगा। हिन्दुस्तान के बाजार पर अंग्रेज पूरी तरह से छा गए हैं, और यह बात यूरोप के बलवान राष्ट्रों को बहुत बुरी तरह से अखरती है। हममें अंग्रेजों से लड़ने की शक्ति नहीं। तो आइए, हम उन लोगों को उकसा दें, जो अंग्रेजों से लड़ सकते हैं। शत्रु के शत्रु को उकसाने का कार्य बहिष्कार से और अपना घर सुधारने का कार्य स्वदेशी के द्वारा करने का यह दुधारा हम चलावें।"

वास्तविकतावादी आवाहन का परिणाम बंगाल पर हुआ और वहाँ स्वदेशी तथा बहिष्कार दोनों आन्दोलनों ने तूल पकड़ी। तुरन्त तिलकजी ने देश-भर में इस आन्दोलन का नारा पहुँचाया। वह कहते थे कि लगान वसूल कराने और शान्ति रखने में हम लोग सहायता न देंगे और न्यायदान के कार्य में मदद न देते हुए अवसर आने पर कर देने से भी हम इन्कार कर देंगे तो बिना कोई विद्रोह किये ही हम जब चाहें तब स्वतंत्र हो सकते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इस प्रकार सम्पूर्ण असहकारिता का नारा लगानेवाले तिलकजी को येन केन प्रकारेण देशनिकाला देने में सरकार सफल हो गई और छह वर्ष की लम्बी कड़ी कैद काटकर भी जब तिलकजी ने बाहर आते ही 'प्रतियोगी सहकारिता' का नारा लगाया, तब एक बार उनके समर्थक भी दंग रह गये। किन्तु इसमें तिलकजी की वास्तविकतावादी राजनीतिज्ञता तथा राजनीतिक दूरदर्शिता ही प्रकट हुई, कलाबाजी नहीं। उस समय पहला विश्वयुद्ध शुरू हुआ था। अंग्रेज सरकार संकट में थी। उसकी इस संकटापन्नता से लाभ उठाने का तिलकजी निश्चय न करते तभी आश्चर्य था। अंग्रेजी सेना यूरोप में बुरी तरह उलझ गई थी। ऐसी अवस्था में भारत का कारोबार चलाने के लिए कुछ सेना अलग रखना उसके लिए असम्भव था। उन्हें सैनिकों की आवश्यकता थी। इधर तिलकजी की लोकप्रियता से परिचित होने के कारण सरकार उनके जैसे लोकमान्य नेता को सैनिक भरती अभियान का समर्थन न सही, किन्तु विरोधी भी बनाना नहीं चाहती थी। इस स्थिति का तिलकजी ने बराबर लाभ उठाया। 'सेना में भरती हो जाओ' शीर्षक अग्रलेख 'केसरी' में लिखकर उन्होंने सरकार को खुश करते हुए जहाँ अपने पर लगी संचार की पाबंदियाँ हटवा लीं वहाँ दूसरे ही दम वह यह कहते गये कि "हम सरकार के साथ अवश्य सहकार्य करेंगे, किन्तु बिना मूल्य नहीं। हम सरकार के दास नहीं मित्र हैं, और हमारी इस मित्रता के बदले हमें हमारे बुनियादी अधिकार मिलने ही चाहिए। बिना शर्त सहकार्य हम नहीं करेंगे और न ही असहकारिता की जिद्द करेंगे। जितनी मात्रा में अधिकार मिलेंगे, उतनी ही मात्रा में सहकार्य करेंगे।" इससे अधिक वास्तविक दृष्टि और क्या हो सकती थी। "युद्ध में भारतीय सैनिक यदि आपकी सहायता करेंगे तो बदले में आपको हिंदुस्तान को स्वतंत्रता देनी ही पड़ेगी।" यह चेतावनी तिलकजी सरकार को हमेशा देते जा रहे थे।

दूरदर्शिता

किन्तु केवल यह चेतावनी देकर ही वह रुके नहीं। युद्धस्थिति से लाभ उठाकर अमरीका जैसे देश का ध्यान वह भारत की ओर आकर्षित करना चाहते थे। दूरदर्शिता से उन्होंने यह भाँप लिया था कि इंगलैण्ड, फ्रान्स, इटली, जर्मनी, और अमरीका में भी पूंजीवाद के अत्याचारों की प्रतिक्रिया के रूप में आर्थिक और सामाजिक सुधारों का ज्वार अवश्य आनेवाला है, समाजवादी विचारों को प्रभुता प्रस्थापित होनेवाली है। इसीलिए वह इंगलैण्ड गए। वहाँ के विभिन्न राजनीतिक दलों को देखा, परखा और मजदूर दल से सम्पर्क स्थापित किया। इंगलैण्ड के विरुद्ध भारत जो लड़ाई लड़ रहा था, वह आर्थिक शोषण का ही एक भाग है, इसे पहिचानकर समाजवादी विचारधारा में बद्ध और साम्राज्यशाही का सिद्धान्ततः विरोध करनेवाले मजदूर दल से सम्बन्ध जोड़ने में तिलकजी ने कितनी दूरदर्शिता से काम किया, यह इस घटना से काफी स्पष्ट हो जाता है कि उसी मजदूर दल ने आगे चलकर भारत को स्वतंत्रता प्रदान की।" (तिलक विचार-सार" से साभार।)

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महात्मा तिलक और साधु-प्रसंग

□ प्रो० व्रजकिशोर

लोकमान्य तिलक के प्रपितामह श्री रामचन्द्रराव की पत्नी का देहान्त अचानक हैजे से हो गया जिसका सदमा उन्हें इतना अधिक लगा कि वे न केवल संसार से ही विरक्त हो गए, वरन् अपने बच्चों के प्रति भी उनकी कोई ममता नहीं रही। दो बेटों तथा एक पुत्री को छोड़कर वे चित्रकूट की ओर चल पड़े। १८३७ से १८७२ के बीच वे केवल एकबार ही घर आए-गदर के बाद। उस समय तक उनका पोता पैदा हो गया था और घर की हालत काफी सुधर चली थी।

तिलक के पिताश्री एक साहसी व्यक्ति थे। परिस्थितियों से जूझना उन्हें खूब आता था। सत्तरह वर्ष की आयु में ही माँ के स्वर्गवास और पिता के संन्यास ले लेने के बाद लगभग असहाय बन गए गंगाधार ने अपनी कुशाग्रबुद्धि, साहस; परिश्रम और कर्त्तव्य-परायणता से अपनी स्थिति काफी सुदृढ़ कर ली। उन्होंने अपने पिता की तरह केवल पूजा-पाठ और तत्त्वचिन्तन में डूबना उतराना पसन्द नहीं किया वरन् कठोर परिश्रम से कर्म की पूजा करने का व्रत लिया। वे अनुशासनप्रिय शिक्षक थे और उनकी लिखी पुस्तकें उस समय विद्यालयों में पढ़ाई जाती थीं।

तिलक के पिता जिस तरह कर्म में डूबे रहते थे, उसके ठीक विपरीत माता पार्वती बाई का समय पूजा-अर्चना में बीतता था। वे दयालु और धर्मपरायण महिला थीं। उनका ईश्वर में दृढ़ विश्वास और प्रेम था। वे जबतक दैनिक पूजन-अर्चन समाप्त नहीं कर लेतीं तबतक अन्न-जल ग्रहण नहीं करती थीं। तीन पुत्रियों के बाद जन्मे अपने पुत्र को वे सूर्य भगवान् के अनुग्रह का फल मानती थीं और दुलार में 'केशव' कहती थीं। इस नाम से वे न केवल बालक के बाबा केशव राव के प्रति ही वरन् कुलदेवता 'लक्ष्मी केशव' के प्रति भी श्रद्धा एवं कृतज्ञता ज्ञापित करती थीं। व्रतों के क्रम में लगातार उपवास चलते रहते। एक ओर पिता की कर्त्तव्य-परायणता और दूसरी ओर माता की धर्म-परायणता — तिलक के व्यक्तित्व निर्माण में इन दोनों सद्गुणों ने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। पिता की उदारता भी तिलक में कूट-कूट कर भर गई। अपनी स्वयं की कमाई हुई सम्पति में पिताश्री ने जहाँ तिलक के लिए व्यवस्था की, वहीं एक तिहाई भाग अपने भाई को भी दे दिया। पैंतिस वर्षो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

की लम्बी अवधि तक मुकदमा लड़ने के बाद तिलक ने जो पूर्वजों की सम्पत्ति प्राप्त की उसे सहर्ष ही उन्होंने अपने ग्राम-देवता लक्ष्मी केशव के मन्दिर निर्माण में दान कर दिया। कानून के अध्ययन के सिलसिले में तिलक को हिन्दू समाज, उसके रीति-रिवाजों, देवताओं, नेताओं आदि का विशेष ज्ञान प्राप्त किया था। हिन्दू समाज के सुधार की उनमें गहरी अभिरुचि थी। गणपति महोत्सव और शिवाजी जयंती के द्वारा उन्होंने हिन्दू समाज को न केवल संगठित किया वरन् उसमें नए प्राण फूक दिए।

वेदों में लोकमान्य तिलक को बड़ी श्रद्धा थी। वे न केवल श्रद्धा की दृष्टि से वरन् शोध की दृष्टि से भी वेदों में रूचि रखते थे। उनको वेदों में कुछ ऐसी खगोल तथा नक्षत्र सम्बन्धी जानकारी मिली जो केवल उत्तरी ध्रुव से ही सम्बन्धित हो सकती थी। अतः तिलक ने निष्कर्ष निकाला कि वेदकालीन आर्यों के पूर्वज उत्तरी ध्रुवीय क्षेत्र के रहने वाले थे। उन्होंने वेदों का समय लगभग चार हजार इसवी पूर्व निर्धारित किया।

गीता तिलक के लिए एक महत्त्वपूर्ण धर्म-ग्रन्थ थी और उनका साँगोपाँग अध्ययन करने के बाद लोकमान्य ने 'गीता रहस्य' जैसी अद्भुत पुस्तक रच डाली। इस प्रकार लोकमान्य में धार्मिक प्रवृति जो बचपन में पनपी वह अन्त तक जमी रही और उन्हें बराबर प्रोत्साहित करती रही।

जब तिलक सोलह वर्ष के थे तब उन्होंने सर्वप्रथम अपने रुग्न पिता को गीता का मराठी अनुवाद पढ़कर सुनाया। गीता के गूढ़ वचन तब उन्हें समझ में भले नहीं आए किन्तु एक लगन लग गई और बाद में उन्होंने गीता की टीकायें पढ़ डाली—अंग्रेजी में भी और संस्कृत में भी। उनकी बहुत सारी शंकायें स्वाध्याय से निर्मूल हो गईं। तिलक ने लिखा है—"जब मैं बालक था, मेरे बड़े मुझसे धार्मिक प्रवृति अपनाने को कहते थे। ...यदि मोक्ष प्राप्ति करनी हो, और यही चरम लक्ष्य है, तो सांसारिक इच्छाओं से अनासक्ति उत्पन्न कर सन्यास लेना चाहिए। मनुष्य दो स्वामियों—'संसार और ईश्वर' की सेवा एक साथ नहीं कर सकता। मैंने समझा कि यदि अपने धर्म के अनुरूप जीवन यापन किया जाय तो जितनी जल्दी संसार को त्याग दिया जाय उतना ही अच्छा है। मेरे मन में जो प्रश्न उठा वह यह था कि क्या मेरा धर्म मनुष्यत्व के पूर्णत्व को प्राप्त करने के प्रयत्न करने और उसके योग्य होने के पूर्व ही मुझसे यह दुनिया छोड़ने की अपेक्षा करता है। बचपन में मुझसे से यह भी कहा गया था कि गीता में हिन्दू धर्म के सभी दर्शन और सिद्धान्तों का समावेश है। मैंने सोचा कि मेरे प्रश्न का उत्तर गीता में अवश्य मिलेगा और मैंने उसका

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अध्ययन आरम्भ किया। मेरे मन में कोई विचार नहीं थे और कोई सिद्धान्त नहीं थे, जिनका प्रतिपादन मैं गीता में ढूँढ़ता। जिसके मन में पहले से कुछ धारणाये होती हैं, उसका अध्ययन पक्षपात पूर्ण होता है। संसार के अनेक देशों अनेक भाषाओं में गीता की टीकायें हैं और हर एक में पुस्तक को अपनी-अपनी व्याख्या दी गई है। किन्तु मूल लेखक ने इतनी व्याख्याओं के लिए तो पुस्तक लिखी न होगी। उसका तो एक ही आशय और एक ही तात्पर्य पूरी पुस्तक में रहा होगा।

"गीता संसार में ध्यान व भक्ति द्वारा ईश्वर से पूर्णतः एकात्म होने के उपरान्त भी कर्म करने को प्रेरित करती है। यह कर्म संसार को विकास के उस मार्ग पर चलाने के लिए होना चाहिए जो ईश्वर ने नियत किया है। यह कर्म फल के प्रति किसी आसक्ति से नहीं,, वरन् संसार को विशिष्ट मार्ग पर चलने के उद्देश्य से होना चाहिए, नहीं तो कर्त्ता के लिए कर्म ही बन्धन हो जाएगा। ज्ञान योग है, भक्ति योग है पर ये दोनों गीता के कर्मयोग के अधीन हैं। यदि निराश अर्जुन को युद्ध करने, कर्म करने को प्रेरित करने के लिए गीता का उपदेश दिया गया तो यह कैसे कहा जा सकता है कि एक महान् पुस्तक का परम उपदेश भक्ति या ज्ञान मात्र है? वास्तव में गीता में इन सभी योगों का समन्वय है।"

तिलक में ज्ञान है, भक्ति है किन्तु दोनों कर्म को ही परिपुष्ट करने के लिए। वे कर्त्तव्यपरायणता को सर्वोत्कृष्ट गुण एवं धर्म मानते थे। उनके अनुसार, "जो व्यक्ति हाथ पर हाथ धर कर बैठ जाता है और अपना बोझ दूसरे पर डालता है, उसे ईश्वर की सहायता की अपेक्षा नहीं करनी चाहिए। निष्काम और सुविचारित कर्म ही दिशा सूचक सिद्धान्त है।"

यह कर्मयोगी तिलक की विचारभूमि थी। उनके लिए सुविचारित निष्काम कर्म ही धर्म था और इसी अर्थ में जीवन का कुरुक्षेत्र (कर्मक्षेत्र) एक धर्मक्षेत्र था। तिलक के जीवन में मानवोचित गुण कूट-कूट कर भरे थे। वे संघर्षों में पले, संघर्षों में बढ़े और संघर्षों के बीच ही मरे। कर्मयोगी का जीवन ऐसा ही होता है। मानवों का दुख देखकर उनका हृदय चीत्कार कर उठता था और वे किसी को भी संकट में घिरा देखकर दौड़ पड़ते थे, सहायता करने को आगे बढ़ जाते थे। सामाजिक विपन्नता कैसे दूर हो, इसके लिए वे सदैव प्रयत्नशील रहे।

तिलक में ये गुण अचानक नहीं आए थे। व्यक्ति जिस वातावरण में पलता-बढ़ता है, उसी के अनुरूप उसका व्यक्तित्व ढलता है। तिलक आपादमस्तक एक धर्मपरायण व्यक्ति थे। साधु-सन्यासियों के प्रति उनमें अपार श्रद्धा थी, अतीव आदर था।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हिन्दू धर्म-ग्रन्थों को वे परमश्रद्धा भाव से देखते थे। जो सच्चा सन्त होगा, वह किसी का कष्ट नहीं सह सकता। वह सबका भला चाहता है क्योंकि 'ईशावास्यमिदं सर्वम्' मानकर वह जन-जन को अपनी सेवा अर्पित करता है। स्वामी विवेकानन्द के एक समकालीन व्यक्ति ने अपने मित्र से कहा था—"....देखो, तुम्हारे गुरुदेव का हृदय कितना विशाल व दया से पूर्ण है। मैं उन्हें इसलिए सम्मान नहीं देता कि वे पण्डित व प्रतिभाशाली व्यक्ति हैं, बल्कि उनके उस असीम उदार हृदय के लिए मैं उनपर श्रद्धा करता हूँ—जो मनुष्य के दुख-कष्ट की बात सुनते ही दया से विचलित हो जाता है।'

इसी मानवीयता ने विवेकानन्द को संसारत्यागी होने पर भी भारतवर्ष को सम्पूर्ण हृदय से प्यार करने को बाध्य किया था। "उनके हृदयन्त्र में भारतवर्ष का कम्पन होता था, उनकी नस-नस में भारत स्पन्दित होता था। तात्पर्य यह है कि भारतवर्ष उनके जीवन के साथ मिलकर एकरूप हो गया था।" स्वामी विवेकानन्द के बारे में कही गई इन पंक्तियों को अक्षरशः तिलक के लिए भी समझा जाना चाहिए तभी तो उन्हें भारतवर्ष के लोगों ने "लोकमान्य" कहकर आदर दिया।

भारतीय मनीषा के दो जाज्वलमान नक्षत्र—तिलक और विवेकानन्द बहुत-से अर्थों में एक समान थे और संयोग कहिए कि एक दिन दोनों की भेंट भी अचानक ही हो गई।

तिलक और स्वामी विवेकानन्द

तब स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक रूप में घूम रहे थे। आज यहाँ तो कल वहाँ! नाना प्रकार के अनुभवों से गुजर रहे थे वे। १८९२ ई० के सितम्बर महीने की बात है। स्वामी जी बम्बई से पूना जाने वाली गाड़ी में द्वितीय श्रेणी में बैठे थे। उसी डब्बे से तीन महाराष्ट्रीय युवक भी यात्रा कर रहे थे। ट्रेन में समय काटने के लिए नाना प्रकार की बातें यात्रीगण करते हैं। बातचीत का दायरा बहुत लम्बा होता है। समाज की, मित्र की, गाँव-जवार की, देश की, राजनीति की, धर्म की—नानाविध बातें होती हैं। बहसें लम्बी खींचती हैं। उन तीन महाराष्ट्रीय युवकों में भी बहस छिड़ी हुई थी। विषय था—'संन्यास!'

दो युवक सुधारवादी दृष्टिकोण से संन्यास की अकर्मण्यता तथा दोषों का प्रदर्शन कर रहे थे। तीसरा व्यक्ति उन दोनों का खण्डन कर रहा था। उसकी दृष्टि में भारत की महान प्राचीन परम्परा की महिमा अत्यन्त प्रशंसनीय और गौरवशाली थी। उन लोगों का तर्कयुद्ध देखकर विवेकानन्द प्रसन्न हो गए। वे स्वयं तार्किक थे। संन्यास-पक्ष की बात करते हुए समर्थन देने वाले युवक थे लोकमान्य बाल गंगाधर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तिलक ! कुछ देर तक तो स्वामी जी चुपचाप सुनते रहे। फिर स्वयं तर्कयुद्ध में उतर पड़े। बातें अँग्रेजी में हो रही थीं। स्वामी जी की प्रांजल अँग्रेजी की प्रवाहशीलता सुनकर युवकगण विस्मित हो गए। किसी संन्यासी को ऐसी अँग्रेजी बोलते उन्होंने पहले कभी नहीं सुना था।

स्वामी विवेकानन्द ने उन्हें अच्छी तरह समझा दिया कि संन्यासियों ने ही भारत के विभिन्न भागों में भ्रमण करते हुए राष्ट्रीय जीवन के उच्चादर्शों को प्रचारित किया है। भारतीय सभ्यता की सर्वोच्च अभिव्यक्ति संन्यासी ही है जो शिष्य-परम्परा द्वारा देश के आदर्श की रक्षा नाना प्रकार की बाधाओं को सहते हुए करते आया है।

निस्सन्देह बीच-बीच में ढोंगी और स्वार्थी लोग इसमें आए और इस पवित्रतम परम्परा को लांछित तथा विकृत कर दिया किन्तु क्या कुछेक लोगों के ढोंग के कारण समस्त संन्यासी समाज को ही लांछित कर देना युक्ति संगत बात हो सकती है ?

स्वामी जी की वाक् पटुता, गम्भीर विद्वता और तेजोदीप्त मुखमण्डल ने तो बालगंगाधर तिलक को मंत्र-मुग्ध कर दिया। उन्होंने पुणे स्टेशन पर उतरने के बाद स्वामी जी को घर चलने के लिए आमन्त्रित किया और आदरपूर्वक घर ले भी गए। स्वामी जी ने भी तिलक की प्रतिभा पहचान ली। उनकी प्रखर प्रतिभा और वेदादि शास्त्रों का गहन अध्ययन देखकर स्वामी जी अतीव प्रसन्नता का अनुभव करने लगे। वे तिलक के यहाँ ही कुछ दिनों तक ठहर गए। दोनों आपस में बैठकर वेदार्थ की गूढ़ आलोचना करते थे। परस्पर विचारों का आदान-प्रदान चलता। 'काव्य शास्त्र विनोदेन कालो गच्छति धीमताम्।' आपसी शास्त्र-चर्चा में कितना समय निकल गया, इसका अनुभव ही नहीं होता था।

स्वामी विवेकानन्द भी तिलक की धार्मिकता, गहन विद्वता और अपनी संस्कृति एवं परम्पराओं के प्रति अगाध श्रद्धा देखकर बड़े प्रभावित हुए। दोनों प्रखर विचारक थे और साथ-साथ दोनों के मन में कुछ कर गुजरने की चाह प्रज्ज्वलित थी। दोनों की जड़ें भारतीय मिट्टी में गहराई तक गई थीं अतः वे परस्पर मित्र-भाव रखते थे। तिलक ने तो बचपन से ही साधु सन्यासियों का आदर करना सीखा था। धर्म के प्रति उनकी गहरी निष्ठा थी। गीता उनकी प्रिय पुस्तक थी। इन दो महापुरूषों के बीच जो वैचारिक आदान-प्रदान एव विश्लेषण हुआ वह दोनों के लिए लाभप्रद सिद्ध हुआ। विवेकानन्द भी 'कर्म' को बड़ा महत्व देते थे और तिलक ने तो गीता की कर्म-परक विवेचना ही की। सीधे या प्रकारान्तर से दोनों देश की स्थिति को सुधारना चाहते थे, गुलामी मिटाकर स्वावलम्बन का सन्देश

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देते थे। तिलक एवं विवेकानन्द दोनों ही निर्भीक सिंह थे। सत्य के पुजारी थे। दोनों का हिन्दुत्व से गहरा प्रेम था और वे अपने को हिन्दू कहते गौरवान्वित होते थे। सत्य के प्रति अडिग निष्ठा ने तिलक एवं विवेकानन्द दोनों को चट्टानी व्यक्तित्व प्रदान किया। सरल, उदार अकपट स्वामी जी के पाण्डित्य, निरभिमान, विनय, तीव्र राष्ट्र प्रेम ने सबको आकर्षित एवं मोहित किया तो इन्हीं गुणों ने तिलक को भी अप्रतिम बना दिया। एक ने अपनी वाणी; तार्किकता एवं सरलता से पश्चिम को चकित कर दिया तो दूसरे के पाण्डित्य एवं हिमालयी व्यक्तित्व ने उसे लोकमान्य बना दिया।

गजानन जी महाराज के सम्पर्क में

शेगांव एक नामी स्थान है महाराष्ट्र में अब। इसका महत्व परम सिद्ध योगी गजानन जी महाराज का कर्मस्थल होने से और अधिक बढ़ गया है और दूर-दूर से यात्री स्वामी जी की समाधि के दर्शनार्थ वहाँ उपस्थित होते हैं। एक पवित्र तीर्थ स्थल के रूप मे विकसित हो गया है—शेगांव और इस तीर्थ के देवता हैं गजानन जी महाराज!

२३ फरवरी १८७८ को अचानक एक प्रीतिभोज के समय कगालों की जमात में एक पगला-सा व्यक्ति शेगांव में प्रकट हुआ और धीरे-धीरे उसकी अजं बोगरीब हरकतें चमत्कार की कहानियों में बदलती गईं। वह नवजवान अज्ञातकुलशील व्यक्ति देखते-देखते श्रद्धालु लोगों के हृदय के प्रेम को जीतकर श्रद्धेय बन गया। गजानन महाराज की सिद्धियों की चर्चा आज भी होती है और जिनकी समाधि पर मानी गई मनौती पूरी होकर रहती है-ऐसा विश्वास लाखों लोगों का है।

गजानन जी महाराज का जन्म कब और कहाँ हुआ था-पता नहीं। वे शेगांव में प्रकट हुए और फिर वहीं के होकर रह गए। महाराष्ट्र के नेता और वहाँ के लोग स्वामी जी को बड़ी श्रद्धा की दृष्टि से देखते थे किन्तु उनसे डरते भी बहुत थे। वे अक्खड़ स्वभाव के थे। किसी को कुछ भी बोल देना, किसी को गाली दे बैठना, किसी की कलई खोल देना उनके लिए सहज था। उनके भीतर कोई दुराव नहीं था, छल-छद्म नहीं था। जन सम्पर्क से तग आकर वे रुक्ष स्वभाव को प्रदर्शित करते थे। भीड़ से बचने के लिए ब्रह्मज्ञ महापुरुष ऐसा ही बाना लेते हैं, ऐसा कोई उपाय निकाल लेते हैं ताकि संसारी लोग उनके पास कम-से-कम संख्या में पहुँच सकें और उनकी सिद्धि से अपनी सांसारिक उपलब्धियों के लाभार्थ परेशान नहीं करें। योगी और फकीर तो मनमौजी होता है— मस्तमौला। उसे न तो कोई

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चिन्ता होती है और न कोई भय ! वह सत्य कथन में विश्वास करता है, सत्य आचरण में विश्वास करता है, सत्य के चिन्तन में विश्वास करता है।

ऐसे सिद्ध योगी का बाल गंगाधर तिलक समादर नहीं करे— यह कैसे सभव था। इनके लिए बड़ी श्रद्धा रखते थे तिलक जी। इस श्रद्धा को प्रकट करने वाली एक दो घटनाओं का जिक्र करना ही यहाँ अभीष्ट है जिससे पता चल जाय कि भारतीय मनीषा के उत्कृष्ट रत्न तिलक में अपने परम्परागत ऋषि-स्वरूप के प्रति कैसा उत्कट आकर्षण था।

अंकोला नगर में शिवाजी-जयन्ती समारोह के अवसर पर बाल गगाधर तिलक का भाषण होने वाला था। शिवाजी के गुरु थे समर्थ स्वामी रामदास जी। अतः लोगों का विचार हुआ कि किसी प्रिय सन्त से ही इस समारोह की अध्यक्षता कराई जाय। लोगों ने तुरन्त इसके लिए गजानन महाराज का नाम लिया जो पूरे महाराष्ट्र में अपनी सिद्धियों के चमत्कारों के लिए घर-घर प्रसिद्ध हो गए थे। किन्तु कुछ लोगों ने इस प्रस्ताव का विरोध किया – 'स्वामी जी किसी भी समय गड़बड़ कर सकते हैं। अतः उनके जैसे मनमौजी व्यक्ति को किसी आम सभा में नहीं लाना ही समोचीत होगा।'

किन्तु अधिकांश लोगों को यह बात मान्य नहीं थी। अत: उस समय के प्रसिद्ध वकील दादा साहब खाण्डे को स्वामी जी के पास शेगांव भेजा गया।

स्वामी जी ने खाण्डे साहब को देखते ही कहा —'....हम तुम्हारी सभा में अवश्य चलेंगे और विश्वास रखो कि वहाँ पागल की तरह व्यवहार नहीं करेंगे और न किसी को मारेंगे-पीटेंगे। किसी का अपमान नहीं होगा। याद रखो, राष्ट्र के उद्धार के लिए बाल गंगाधर तिलक के समान महापुरुष फिर कभी न होगा।'

खाण्डे साहब और उनके साथ गए लोग अचरज में पड़ गए। अकोला में हुई बात स्वामी जी कैसे जान गए ? अस्तु, स्वामी जी अंकोला गए और उस महती सभा का सभापतित्व किया। शिवाजी-जयन्ती समारोह, शिवाजी के सदृश ही संघर्षों से जूझते मातृभूमि की स्वतंत्रता के लिए कटिबद्ध तिलक और समारोह में उपस्थित होकर आशीष देने वाले समर्थगुरु रामदास की तरह चमत्कारी व्यक्तित्व वाले सिद्ध योगी गजानन जी महाराज। उस सभा में तिलक ने बड़ा ही ओजस्वी भाषण दिया। कुछ बातें कटु थीं और अंग्रेजों के विरूद्ध थीं। स्वामी जी ने कहा —'इस प्रकार का भाषण देने के कारण तुम्हें जल्द ही हथकड़ियां लगेंगी।'

उस समय सभा सम्पन्न हो गई किन्तु कुछ समय बाद तिलक जी को गिरफ्तार कर लिया गया। उनपर मुकदमा चलने लगा। तिलक के एक भक्त कोल्हट

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

-कर स्वामीजी के पास निवेदन करने पहुँचे कि महाराज जी अपनी शक्ति-सिद्धि का उपयोग तिलक को कारामुक्त कराने के लिए करें। उनकी बात सुनकर स्वामी जी ने कहा 'देखो। विधि के विधान में बाधा देना उचित नहीं। जो हुआ, सो ठीक हुआ। उनके द्वारा एक अति महान कार्य निष्पादित होने वाला है अत तुम लोग उन्हें छुड़वाने की चेष्टा मत करो ....जाओ और तिलक को मेरा यह आशीर्वाद कह देना। यह रोटी उन्हे खिला देना।"

स्वामी जी ने एक बासी रोटी कोल्हटकर साहब को दे दी। वे उस रोटी को लेकर श्रद्धापूर्वक तिलक के पास गए। स्वामी जी पर तिलक महाराज की भी असीम श्रद्धा थी। उन्होंने उस सूखी रोटी को चबा-चबाकर निगल लिया।

बाल गंगाधर तिलक उस समय भारतीय राजनीति के जगमगाते नक्षत्र थे। उनके भाषणों से सरकार थर्राती थी। उन्हें छः वर्षों की सजा हो गई और वे वर्मा के माण्डले जेल में भेज दिए गए। वहाँ उन्हें एकान्त चिन्तन-मनन का, अध्ययन और लेखन का बड़ा सुअवसर मिला। वही उन्होंने अपना विश्वविख्यात् 'गीता रहस्य' लिख डाला। इस श्रेष्ठ ग्रन्थ के कारण तिलक के व्यक्तित्व का एक विशिष्ट-पक्ष उजागर हुआ। गजानन जी महाराज ने ठीक ही भविष्यवाणी की थी कि 'जेल में तिलक से एक महान कार्य सिद्ध होने वाला है।' गीता-रहस्य एक महान कृति है जिसके कारण महापुरूष तिलक की कीर्ति युग- युग तक अक्षुण्ण बनी रहेगी।

लोकमान्य तिलक के कारण महाराष्ट्र में गणेश-महोत्सव को भी धूमधाम एवं व्यवस्थित रूप में मनाने की परम्परा चल पड़ी। शेगाँव के आश्रम में भी यह उत्सव उसी उत्साह से मनाया जाता था। गजानन जी महाराज अन्तःकरण से तिलक के प्रशंसक थे और उन्हें आशीर्वाद देते थे। स्वामी गजानन जी महाराज ने तो गणेश चतुर्थी के महोत्सव के दिन को ही अपनी इहलीला समाप्त कर ब्रह्मलीन होने के लिए चुना।

लोकमान्य तिलक वस्तुतः एक महात्मा थे—महामना मनस्वी थे। उन्होंने जीवन भर नाना प्रकार का कष्ट झेला, जेल-यातना सही, तप किया। वे एक बड़े तपस्वी थे। हिमालय की कन्दरा में नहीं जीवन और जेल के बीच उनकी तपश्चर्या चलती रही। सुभाष चन्द्र बोस ने बाद में माण्डले जेल में उस सेल का निरीक्षण किया था जिसमें तिलक कैद थे। उन्होंने आश्चर्य प्रकट किया है तिलक की महान सहनशक्ति पर। बचपन से मृत्यु-पर्यन्त तिलक ने एक तपस्वी का जीवन जिया।

स्वामी अखण्डानन्द सरस्वती ने महाराष्ट्र की सन्त-परम्परा को याद करते हुए लिखा है—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"महाराष्ट्र के संतों की परम्परा विलक्षण ही है। ज्ञान होने के बाद भी ज्ञानेश्वर जी में भक्ति गौण और योग तथा ज्ञान प्रधान हैं। श्री एकनाथ और नामदेव जी में तत्वज्ञान के साथ ऐश्वर्य-प्रधान भक्ति है। तुकाराम जी में तत्त्वज्ञान और माधुर्य-प्रधान भक्ति है। समर्थ रामदास जी में ज्ञान और धर्मानुष्ठान प्रधान है। लोकमान्य तिलक में ज्ञान के साथ कर्मयोग प्रधान है। सन्त कबीर के समान ही नामदेव जी भी अन्तर्यौगी-ध्यान योग-प्रधान तत्वज्ञानी हैं। व्यवहार में सबमे अन्तर है किन्तु तत्वज्ञान में सब एक है।"

—(कर्मयोग : पृष्ठ ९८)

स्वामी जी ने तिलक को सहर्ष ही ज्ञानेश्वर, नामदेव, तुकाराम, समर्थ रामदास, एकनाथ प्रभृति की श्रेणी में रखा है और महाराष्ट्रीय सन्त-परम्परा मे गिना है। 'गीता रहस्य' का लेखन उनकी विद्वता का सूचक है किन्तु उसमें प्रतिपादित तथ्य स्वानुभूति के बाद ही उतने प्रखर हो सके हैं—इसमे कोई सन्देह नहीं हो सकता। वे एक योगी थे, एक महात्मा थे। महात्मा गांधी ने बहुत-से अनुष्ठान एव व्रत सीधे तिलक से ही ग्रहण कर पूरा किया। बाद में अपने योग-दर्शन के लिए विश्व भर में ख्यात योगिराज अरविन्द भी तिलक से बहुत प्रभावित थे और अपने प्रारम्भिक काल में उन्हें गुरुवत् आदर देते थे।

इस प्रकार धर्मनिष्ठा तिलक में मात्र एक अन्तःसलिला की तरह नहीं थी वरन् एक प्रत्यक्ष स्रोतस्विनी की तरह कल-कल निनाद करती प्रतीत होती थी। अनेक ज्ञात-अज्ञात सिद्ध पुरुष उनके सम्पर्क में आए और सरल हृदय तिलक को शुद्ध अन्तःकरण वाले योगनिष्ठ सत्पुरुष के रूप में समादृत किया।

"महात्मा गांधी ने दर्शन पक्ष नहीं उठाया है। उनका साधन पवित्र हो इसी पर बल है। लोकमान्य तिलक 'साधन और साधक दोनों पवित्र होने चाहिए' यह कहते हैं। श्री गोयन्दका जी का कहना है—'साध्य की भी पवित्रता चाहिए।' इस तरह स्वामी अखण्डानन्द जी ने तिलक के महात्मा-रूप को गांधी जी के एतत् सम्बन्धी स्वरूप से अधिक निखरा हुआ एवं दीप्त पाया है।

मृत्यु से जूझते हुए तिलक के पास गीता लाई गई और उन्होंने अपने प्रिय श्लोक पढ़े—

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्म संस्थापनार्थाय संभवामि युगे-युगे॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

और इसके बाद वे अचेत हो गए ३१ जुलाई, १९२० को और फिर किसी युग में 'आत्मानं सृजाम्यहम्, का संकल्प दुहराते हुए महात्मा तिलक पहली अगस्त को विदा हो गए।

'गीता रहस्य' में तिलक जी ने लिखा है—'वैदिक धर्म अत्यन्त प्राचीन है। वैदिक धर्म (यज्ञ) कर्मप्रधान धर्म है। यह वैदिक धर्म के निरूपक मूलरूप से ऋक्, यजु, साम—वेदत्रय हैं, अतः इसे त्रयीधर्म भी कहा जाता है। गीता ९/२०-२१ में इसी का उल्लेख है। इसे विवेचित करने का काम पूर्वमीमांसा ने सुनिपुणता से किया है, अतः यह 'मीमांसक मार्ग' से भी कथित होता है। मीमांसक यह मानते हैं कि यज्ञार्थ कर्म बाधक नहीं होता। गीता उसे 'यज्ञार्थात्कर्मणोऽन्यत्र लोकोऽय कर्मबन्धनः' कहकर कर्मबन्धन का निवारण जिस युक्ति या कौशल से करती है उसे 'साम्य योग' शब्द से समझा जा सकता है—'योऽयं योगस्त्या प्रोक्तः साम्येन मधुसूदन।' इसकी मुख्य शर्त्त हैं निष्कामता एवं लाभ-हानि, जय-पराजय में समता पूर्वक ईश्वरार्पण भाव से अथवा लोकमंगल की ईश्वरीय भावना से कर्त्तव्य कर्मों का पालन ज्ञानोत्तर जीवन में भी अन्त तक करते रहना। निःश्रेयस की दो निष्ठाओं में इसकी विशिष्टता 'लोकसंग्रह' के आधार पर भगवान को मान्य है।" जब हम तिलक के जीवन का अध्ययन करते हैं तो साम्ययोग की शर्त्तों का अक्षरशः पालन पाते हैं। वे एक विलक्षण निष्काम-कर्मयोगी तथा साम्ययोगी दृष्टिगोचर होते हैं।

श्री रामगोपाल ने अपनी पुस्तक 'लोकमान्य तिलक' के पृष्ठ २३७ पर बिल्कुल ठीक ही लिखा है—

"उनका जीवन पवित्र और देवोपम था और उनके देशवासियों ने उनका आदर लोकमान्य की भाँति नहीं, तिलक भगवान की भाँति किया। तिलक घने घिरे अन्धकार में अपने हाथ में प्रकाश लेकर अवतीर्ण हुए थे।"

तिलक के समान महात्मा, उनके जैसा कर्मयोगी युगों बाद उत्पन्न होता है। वे सचमुच युगावतार थे।

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

परिशिष्ट

१ लोकमान्य तिलक की जन्म कुंडली

५	शुक्र रवि ४	बुध-शनि ३	२
केतु ६	मंगल ७	१	राहु गुरु चन्द्र १२
८	९	१०	११

शके १७७८ आषाढ़ मासे कृष्ण पक्षे तिथौ ६ भौम वासरे घ० २१ प २५ तरा भाद्रपक्ष नक्षत्रे घ० ० प० ३३ सूर्योदयात्दगंत घ० २ प० ५

इस कुंडली मे केवल दो ही उल्लेखनीय योग हैं, जिन्हें प्राय: सभी ज्योतिषियों ने स्वीकार किया है। नवम् स्थान का गुरु चन्द्र योग प्रकट करता है कि — वह व्यक्ति अलौकिक प्रतिभावाला एवं नेता होने योग्य तथा राष्ट्र गुरुत्व का मान पानेवाला होगा।

इसी प्रकार द्वादश स्थान में शनि और बध एवं भाग्य स्थान मे राहु के होने के कारण कदाचित् तिलक को बार-बार कारागृह वास भोगना पड़ा।

शुभ फल देने वाले गुरु और अशुभ फल देने वाले शनि। ये दोनों ग्रह तिलक की कुंडली मे जोरावर हैं। □

२. तिलक के जीवन के पूर्वार्द्ध मुख्य स्थल

१. वंशपरिचय
२. बाल्यकाल और विद्याभ्यास
३. तिलक से पहले का महाराष्ट्र
४. न्यू इंगलिश स्कूल की स्थापना
५. केसरी और मराठा
६. कोल्हापुर का मामला और पहली सजा
७. फर्ग्यूसन कालेज की स्थापना
८. तिलक और आगरकर का विरोध
९. झगड़े और त्यागपत्र
१०. क्राफर्ड प्रकरण
११. केसरी और मराठा
१२. सम्मति वय विषयक बिल का प्रश्न
१३ तिलक और ग्रामराय प्रकरण
१४. पंडिता रमा बाई का शारदा सदन
१५. हिन्दू मुसलमानों के दंगे
१६. वापट कमीशन
१७. फुटकर आन्दोलन
१८. तिलक और धारा सभा
१९. दो नये राष्ट्रीय उत्सव
२०. राष्ट्रीय सभा के मंडप का विवाद
२१. सार्वजनिक सभा और डेक्शन सभा
२२. तिलक और लार्ड हेरिस
२३. सन् १८९६ का अकाल आन्दोलन
२४. पूने में प्लेग का प्रकोप
२५. राजद्रोह का अभियोग
२६. कारावास और छुटकारा
२७. तिलक और वेदकाल निर्णय
२८. पुनश्च हरिः ॐ □

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

३. लोकमान्य तिलक का वंशवृक्ष :

केशव
|
दामोदर (दादाजी)
|
कृष्णा जी
|
केशव
कृष्णा जी — अन्य तीन पुत्र
(मृ० शके १६८७)
|
- केशव उर्फ केसोपन्त
- अन्य दो पुत्र

केशव उर्फ केसोपन्त
|
रामचन्द्रपन्त (जन्म सन् १८०२
समाधि १८७२) — अन्य तीन पुत्र
|
अन्य तीन पुत्र
|
गोविन्द राव
जन्म १८३५ ई०
मृ० १९०४ ई०

रामचन्द्रपन्त
|
गंगाधर पन्त (जन्म ता० १३-८-१८२०
मृत्यु ३१-८-१८७२
नाम पत्नी पार्वती बाई
मृ० २४-७-१८६६
|
{ बलवंत राव
लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक
पत्नी—सत्यभामा बाई } जन्म २३-७-१८५६ मृत्यु १-८-१९२०
|
- सौ० कृष्णा बाई। जन्म सन् १८८० पति-- वि० जं० केलकर (वकील) नासिक
- विश्वनाथ जन्म १८८३ मृत्यु १९०३ —
- सौ दुर्गा बाई ज० १८८९ पतिदेव पो० रा० वैद्य सरकारी इंजीनियर —
- सौ मथुरा बाई, जन्म १८९१ पतिदेव डॉ० श्री० मो० साने प्रोफेसर (लखनऊ)
- रामचन्द्र जन्म १८९४ —
- श्रीधर जन्म १८९६ —

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'लोकमान्य शिवतिलक महात्मा महामना हे'

प्राध्यापक 'अचल'

जब कस जाती धरती है खूनी पंजों में,
जीवन के अंकुर होते उच्छेदित मर्दित,
युगों युगों से संचित संस्कृति की कालिन्दी,
हो जाती कालिया नाग विष से अभिसिंचित।

कारागृह जब निरपराध नर अश्रुसलिल से,
प्रक्षालित होकर बन जाता है बलिवेदी,
नर पिशाच की आशंकाओं की कृपाण से,
हो जाती है माताओं की सूनी गोदी।

दुर्विनीत शासक शोषक के अनाचार से,
मानव का स्वातंत्र्य तड़पता बन्दी गृह में,
बेगारों में दही-दूध-धन-श्रम अपहृत कर,
भर देता है अपने सुख के वैभव गृह में।

कारागृह में रोती हैं वसुदेव-देवकी,
गोकुल में परवश हैं नन्द यशोदा मैया,
जाने कब अनीति की फौलादी कटार से,
कट जायेंगे कितने बच्चे कितनी गैया।

अतिनृशंस यमदण्ड कंस के भुजदण्डों से,
होता डावांडोल भूगोल-खगोल कांपता,
तब होती अवतीर्ण धरा पर मनुज-शक्ति है,
लिए शंख गुरु गदा पद्म औ चक्र चमकता।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पराधीन मनुजों की कटती लौह-शृंखला,
आशा की अगणित किरण होती प्रकीर्ण हैं,
अति निराश वसुदेव देवकी के अकों में,
तमस् चिरती ब्रह्म ज्योति होती विकीर्ण है।

अत्याचारों के बन्धन कँट-छँट जाते हैं,
अन्यायी का प्रहरी हो अचेत सो जाता,
धम पुरुष भादो की अर्ध निशा में हँसता,
यमुना की लहरों पर क्रीड़ा करता जाता।

कभी उठाता गोवर्धन है निज अंगुलि पर,
कभी लोकहित दावानल पी जाता है वह,
वही कालिया नाग नाथ कर उसे नचाता,
जीवन की बाँसुरी विचित्र बजाता है वह।

कभी प्रेम-बाँसुरी बजाकर लीला करता,
कभी बजाकर पांचजन्य रण-घोष सुनाता,
राधा का वह प्राण गोपियों का जीवन-धन,
अर्जुन को है गीता का उपदेश सुनाता।

स्वतंत्रता है जन्मसिद्ध अधिकार मनुज का,
करता यह उद्घोष धरा पर विचरा करता,
'लोकमान्य शिवतिलक महात्मा महामना हे !,'
कह-कह कर यह अखिल भुवन चरणों में झुकता।

—इन्टर कॉलेज, मुहमदाबाद, गाजीपुर,

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लोकमान्य तिलक के प्रति

□ रामजा राय

लोक तुम्हारे लौह-स्वप्न की पूजा करता है
कठिन कर्म की तेज धार पर शीश चढ़ाता है
मारकेश थे तुम उन दुष्टों के खातिर
नष्ट और विध्वस्त किया इस कानन को जिनने।

यतिवर भू पर उतर और चढ़ महाराष्ट्र-फुनगी पर
बार-बार भीषण रव से कर गर्जना भीतकारी
ललकारा जड़ता को, लोहे का जजीरों को।

गगाधर का विष-अमृत ले, छा भारत के मन में कण में
गायी गीता अभिनव स्वर में, भय के भूत भगे
धधक उठी दकन की ज्वाला, फिर अगस्त्य के भाग्य जगे।

रसा नीरसा भारत की फिर लगी पुलकने भीतर से
तिमिर तेज से डरा और छिप गया सिंधु के जल में
ललित लास्य के खिले कमल-स्वप्नों की सरसी में
कलुष काट उषा मुस्काई, आर्यावर्त्त अम्बर में।

केशव अब यह देश नहीं बँध पायेगा—अहि बन्धन में
निस्पृहता की ज्ञान-शिखा से जला कर्म बन्धन को
स्वधर्म का फूँक शंख धर निर्भीकता कवच को
पृथ्वी-धर्म को समझ कूद स्वातन्त्र्य समर में
हमने पहचाना अपने को, आपको, जीवन को।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

और हमारा जन्मसिद्ध अधिकार कहाँ छिपता
रहा युगों से छिपा इन्द्र सा जो ब्रह्म हत्या के भय से
संकट-भोगी जन परलोक लालसा की लिप्सा से
घर्षिता धरा को छोड़ छिपे थे जो – वे फिर आए भू पर।

व्यक्तित्व-व्यक्ति से टूट कैद था -
लोहे की दीवारों में
की तुमने वह कठिन साधना
दिया जोड़ जन से जीवन को
निखिल जगत को

संसृति का रहस्य खोल बुन दिया ग्रन्थ के पट पर
दानी बादल बन बरसे जलते मरु अंचल पर।

जग में लोकमान्य कहलाये—
बने तिलक भारत के
यश से परिप्लावित पूरित हो --
बने कृष्ण के करके
होवे यह भू हरित-भरित-
खिल उठें पुष्प कंचन के
वे नदियाँ फिर बहें –दुग्ध की,
मधु की, नव जीवन की।

—आनन्द-गृह, छित्तूपुर, वाराणसी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'तिलक'

□ रामेश्वर पाण्डेय
एम० ए० प्रथम वर्ष हिन्दी
का० हि० वि० वि०

तुम्हारे नाम का मैं गान क्या तुम्को सुनाऊँ,
तुम्हारी कीर्ति की प्रतिकृति कहाँ कैसे दिखाऊँ।
बहाया जा रहा इतिहास तेरा उस महातल में,
वहाँ पर कौन जाये हा भला कैसे बताऊँ।

तुम्हारे आब के जिस राज में शोले धधकते थे,
सुनहरे ख्वाब के निर्झर हमेशा हो बहा करते।
ये अपना हिन्द अपनी जान है, सम्मान है, ऐसा—
न जाने किन उछाहों में भला तुम थे कहा करते।

तुम्हारे हिन्द के वासी तुम्हें क्या याद करते हैं?
तुम्हारी कब्र पर अब कौन है आंसू बहाता?
छोड़कर स्वयं के दुःख-दर्द को, इतिहास को,
कौन है तेरा सुखद इतिहास गाता?

नहीं अब रह गया अवसर किसी को गीत गाने का,
हाथ में हाथ लेकर प्रेम से कुछ मुस्कराने का।
यहाँ तो लूट की प्रतियोगिता हर क्षण हुआ करती,
यहाँ एक सोच है सबको महज कुर्सी बचाने का।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

किया सम्मान था तिलक हिन्दुस्तान ने तेरा,
लोक की मान्यता तुझको मिली ससार से सारे।
यहाँ तो रोज हां अपना तिलक हैं स्वयं कर लेते,
अगर कुर्सी मिली तो हां, नहीं धरती पर मन-मारे।

तुम्हारी आंख मे तो थी समूचे हिन्द की छाया,
यहाँ की आंख में है भर रही परिवार की माया।
तुम्हारी दृष्टि में तो थे पराये भी सदा अपन,
हुआ है जा रहा प्रतिक्षण यहां अपना पराया।

जहाँ पर स्वार्थ के बादल वरसते रोज दिखते हैं,
हृदय की क्यारियों में स्वार्थ के हा फूल खिलते हैं।
तुम्हारा वीरता की मूक गाथा कौन गाये,
कहाँ फुरसत उन्हें जो स्वयं का इतिहास लिखत ह।

धरा के देव हो सचमुच तुम्हें मैं मानता तो हूँ,
पुस्तकों में तुम्हारी शक्ल को पहचानता ता हूँ।
मगर अफसोस है इतना तुम्हारी पुस्तकी-प्रतिमा
मिटाई जा रही दिन-दिन इसे मैं जानता तो हूँ।

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लोकमान्य तिलक के प्रति

□ रामेश्वर प्रसाद सिनहा

लोकमान्य तेरी महानता के गुण कैसे गाएँ ?
तेरी ऊँचाई तक खुद को कैसे हम पहुँचाएँ ?
तुम 'अजेय सागर' क्या मापें तेरी गहराईं को
तुमने फूँके मंत्र, नई जागृति दी अमराई को
तुम तेजस्वी और दूरदर्शी तुम, ज्ञानी, त्यागी
शौर्यवीर तुम, दिव्य पुरुष औ स्वतंत्रता अनुरागी
ढीली की बेड़ियाँ दासता की, तुमने ललकारा
तुमने बोस, आजाद, भगत में भर दी नव आशाएँ।
अपने आकर्षक व्यक्तित्व से तुमने सबको जीता
तेरी तेजस्विता तपस्या रही सदैव पुनीता
अपने मौलिक लेखन से तुमने विद्वता दिखाई
रही खेलती तुमसे हरदम पौरुष की तरुणाई
लड़खड़ा रहे थे हम राहें स्वस्थ न जब दिखती थीं
ढुलमुल राजनीति को तुमने दे दी नयी दिशाएँ।
छोड़ गए तुम जन-जीवन में अपनी छापें गहरी
देश-प्रेम की बेल तुम्हें पा और फफन कर लहरी
तुमने चिन्तन के कुछ ऐसे जगमग दीप जलाए
भटक रहे थे जब हम, तुमने सही पंथ दिखलाए
धन्य हुई यह धरा तुम्हें पा फूल और पत्थर में
तुमने शील रचा, उदात्तता की खीचीं सीमाएँ।
जब तक आग रहे सूरज में, भूल नहीं पाओगे
जब तक चाँद रहेगा शीतल, याद सदा आओगे
राह भूल जाएँगी अपनी जब मंजिल की राहें
तब तब तेरी ओर उठेंगी अगणित स्वर की बाँहें
आँधी औ तूफान असख्यक झंझावात भले हों
जलती सदा रहेंगी तेरी जगमग कीर्ति-शिखाएँ।

—महामंत्री, भोजपुरी विकास मंच
शंकर भवन, सिविल लाइन, बक्सर (भोजपुर)

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री बाल गंगाधर तिलक के नाम

नजरानए-अकीदत

□ परवाज भोजपुरी

ऐ मोहिब्बाने[1] वतन आजादिए हिन्दुस्ताँ
गम में तेरे आज अहलेहिन्द हैं मातमकुमाँ[2]

देश जब अंग्रेज के हाथों में अपना कैद था
तूने जंजीरे गुलामी से छोड़ा दिया देके जाँ—

अजमे-नौ[3] लेकर बढ़ा दरसे[4] अमल देता रहा
मिट गया दौरे गुलामी के जमाने का निशाँ

तू गुजर जाता था हँसकर मंजिले दुशवार[5] से
रहबरी करता रहा बनकर अमीरे कावाँ —

आखरी दम तक जुबान पर बस यही एक नारा था
हक मेरा पैदायशी आजादीए-हिन्दुस्ताँ—

तूने वह कारे[6] नुमायाँ देश की खातिर किये
कि पहुँच सकते नहीं इन्सान के वहमो[7] गुमाँ

जान की बाजी लगाकर जंगे आजादी लड़ी
हो गया आजाद आखिर गुलशने हिन्दुस्ताँ

जान भी अपनी गँवायी और लुटाया मालो जर
खूने दिल देकर किया सैराब[9] तूने गुलसेताँ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तू मोसन्नीफ़[10] और मोजाहिद[11] मुल्क का विद्वान था
वीरताई देखकर तेरी लरजता था जहाँ—

चन्द्रशेखर और भगत, सुभाष में थे हम असर
और गाँधी व पहले आजाद व नेहरु हम जोबाँ

"बाल गंगाधर तिलक" तू जिन्द-ओ जावेद[12] है
मिट नहीं सकता तेरा तारीख से नामो-निशाँ

कारनामे देखकर तेरे ये कहते हैं सभी
अबेजर[13] से काबिले तहरीर[14] है ये दास्ताँ"

ऐ मोहिब्बाने वतन 'परवाज' की है ये दुआ
फूल बरसाता रहे तेरी लेहद[15] पर आसमाँ

●

---

(१) देश का साथी (२) गम मनाने वाले (३) नया इरादा
) उपदेश (५) सख्त (६) काम (७) जाहिर (८) खयाल-
ार (९) सीचना (१०) लेखक (११) लड़ाई लड़ने वाला
२) जिन्दा (१३) सोनहला पानी (१४) लिखावट (१५) कब्र
६) अमिरे कारवाँ - काफिले का नेता।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लोकमान्यस्मृतिः

□ शिवदत्त शर्मा चतुर्वेदः
(B. 3/9, F.F., B.H 4. वाराणसी)

(१)

गीता ज्ञान सामाहृत-
सर्वस्व सत्प्रयोक्तारम्
श्रीलोकमान्य तिलकं
को नामाद्यापि न स्मरति

(२)

भारत राष्ट्र विनाशक—
वैदेशिक पारतन्त्र्यमय काले
गीता ज्ञानं धृत्वा
लोकेयो मानवीयोऽभूत् ।

(३)

राष्ट्रीये जागरणे—
प्रतीक भूतस्तु लोक मान्योऽयम्
शतशः कोटि जनानां
वन्द्यो नेता महान् विद्वान्

(४)

प्राचीनाचार्याणां—
सद् ग्रन्थान् सम्यगालोच्य
पाश्चान्यानां विदुषां
ग्रन्थानाद्यन्तमालोक्य

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(५)

मानव जीवन मार्गे
प्रकाशकत्वं यथा विहितम्
गीता रहस्य ग्रन्थे
तेन तु नितरां प्रकाशितोलोकः

(६)

सर्वविध सिद्धिदात्री
जगतां संचालिका क्रियाशक्तिः
गीतायामुपदिष्टा
साक्षात् श्रीकृष्ण चन्द्रेण

(७)

कर्मणि कर्मणि तिष्ठति
जगदीशः कर्म मार्गेऽस्मिन्
मानवता चेश्वरता
संमिलिते संविभासेते

(८)

इत्थं तर्क सहस्रैः
प्रमाण पूर्णैर्वचो विभवैः
श्री लोकमान्य तिलको
ऋषिरिव वन्द्यः समस्त जनतायाः

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सरधाञ्जलि।

☐ डॉ० कमला प्रसाद मिश्र 'विप्र'

फूंकि के शंख कइल सिंहनाद जे—
मारल अमर सुराज के मोहर।
अंगरेजिहन से काढ़ि के कांग्रेस,
पटइ दिहल भारत का हर घर।
गीता का गूढ़-गियानी तिलक से—
कांपत रहन फिरंगिया थर थर।
स्नेह भरलि सरधाञ्जलि 'विप्र' के
जय हे महान, श्रीवालगंगाधर!

—विप्र नगर, बक्सर (बिहार)

●

केसरी

☐ शालिग्राम द्विवेदी
सप्तम् 'ब'

तिलक ने निकाला समाचारपत्र केसरी
गोरे गज समूह पर हुंकार किया केसरी
जन्मसिद्ध स्वराज्य का था अधिकारी वह
ऐसा दहाड़ता था पत्र सदा केसरी
भारत माता का वाहन निर्भय वह केसरी
महिषासुर शत्रु का था काल वह केसरी
देशवासियों को जाग्रत किया वह केसरी
केसरी में गरजती थी भारत विन्ध्येश्वरी

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पावन-स्मृति

श्री अनंत प्रसाद
प्रयोगशाला सहायक

भारत माता का भाल तिलक,
उनकी गोदी का लाल तिलक,
माता बन्धन में सिसक रही थी,
अंग्रेजों के शासन में।
अपार कष्ट भोगती।
अवतार लेकर लोकमान्य,
आए तब धरती पर
पीछे से गाँधी का आगमन।
इन देश भक्त वीरो ने—
ठान लिया प्रण
कर जीवन का होम
काट बेड़ी-जजीर
भगा दिया दूर भारत से दुश्मन को।
रचकर सत्याग्रह समर,
रणाङ्गण मे साहस भर
चिनगारी दहक उठी
आग-सी धधक उठी
हो गया आजाद देश
उन्हीं के तप से।
पावन स्मृति जगी
बाल गंगाधर की आज
श्री लोकमान्य के अनेक
युद्ध कौशल आते हैं याद
जिनके रण कौशल को
आत्मसात् कर बापू ने
अद्भुत इतिहास एक
धरती पर रच दिया।
शत-शत प्रणाम उस
ज्योतिपुंज तिलक को
पावन स्मृति में
श्रद्धा सुमन अर्पित ये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रद्धाञ्जलि

□ गोपाल प्रसाद,
सहायक शिक्षक

भव्य भाल भारत तिलक, बाल इन्दु गंगाधर का;
राजनीति की कुमुद कली पर, सुस्मित हास्य कलाधर का।
महामंत्र स्वातंत्र्य यज्ञ का स्रोत प्रेरणा कर्मों का;
उद्गाता गीता रहस्य का, मूल मंत्र जो धर्मों का।
मलयानिल सौरभ सा सुरभित, सदा समुन्नत नगपति सा;
द्रष्टा स्वर्णिम सुखद स्वप्न का, वीर बाँकुड़ा क्षत्रपति सा।
हुई कल्पना मूर्त्त आज तव, धरा मुक्त उन्मुक्त गगन है;
सर सरिता कल-कल निनादमय, व्योम वीच लय-लीन पवन है।
शिलान्यास प्रासाद बना अब, प्रजातंत्र रंगरजित शोभित,
पुष्पित पल्लव पचशील अब, वैभव सुयश वीक्ष्य जगमोहित।
आज कल्पना बाँध नूपुर पग, रगशाला महँ थिरक रही है;
लाल, वाल अस पाल की प्रतिमा, मातृभूमि अव निरख रही है।
सफल तपस्या, सिद्ध मनोरथ, मानचित्र परिपूर्ण हुआ;
वाल अरुण विज्ञान क्षितिज पर, रिपु तम दल भय चूर्ण हुआ।
ऋणी कोटि नर, श्रद्धा-सुमन कर, पद पंकज धर शीश झुकाते;
पुष्प-माल, कर थाल आरती, भाल तिलक पर तिलक लगाते।
नतमस्तक हैं कोटि नारी नर, वरद हस्त से इन्हें उठा लो;
मन-मानस कर पुन परिष्कृत, प्रहरी बन निज कीर्ति सँभालो।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आह्वान

□ श्री शिव शंकर राय
शिक्षक

कल्प वृक्ष पाकर नन्दन कानन है धन्य हुआ,
कामधेनु ही से सुरलोक सदा धन्य है।
लोकमान्य तिलक को पाकर कहा भारत ने
मुझ सा वसुंधरा में देश नहीं अन्य है।
लोकमान्य की ही सब भारत की क्रीड़ा स्थली,
भारत सपूत जो अनेकों किये काम हैं।
गणना करने में असमर्थ सब ही के सब,
तारों के समान ही अनगिनत जिनके काम हैं।
आज बाल गंगाधर तिलक याद आये हैं,
स्मृति उनकी है जगी भारत कण-कण में।
तिलक की पावन मूर्ति घर में स्थापित करें,
उनसे देश सेवक को बुलावें क्षण-क्षण में।

भारत का लाल

□ श्री सिद्धेश्वरनाथ उपाध्याय

भारत माँ ने पैदा किया ऐसा एक लाल।
आगे चल करके हुआ गोरों के हित काल।
देश भक्ति में था रंजित -
जिसका जीवन काल।
आजीवन माथे पर था
कष्टों का जजाल।
कारागार में वर्षों उसका रहा निवास
उसी में किया है अपने जीवन का विकास
कर्मवीर तिलक का अनुपम था स्पष्ट विचार—
स्वतंत्रता है हमारा जन्मसिद्ध अधिकार!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लोकमान्य बालगंगाधर तिलक

□ रामेश्वर प्रसाद सिनहा

किरितिया तोहार हो, भुलाई नाहीं देसवा।
जब रहे देस में विपति के अन्हरिया
लउकत रहे नाहीं केनियो डहरिया
बरल दियरवा, भइल उजियार हो, भुलाई ..।
राजनीति के ना रहे अहथिर नितिया
दृढ़ता के छोहगर उठवल तू भितिया
पनिगर पौरुष उठल ललकार हो, भुलाई .....।
देसवा के दिहल तू खोलि बन अँखिया
जोस में आजादी फरफरावे लागलि पँखिया
झटका गुलामी के मिलल जोरदार हो, भुलाई ....।
हमनी के, चिन्तन के दिहल तू थतिया
लेखनी से अपना देखवल रहतिया
रहल समुन्दर मन के उदार हो, भुलाई ...।
चनवा-सुरजवा के रहल किरिनिया
धीरता आ वीरता के रखल तू पनिया
रहल तू जुग के खिलल कचनार हो, भुलाई ...।
होई के 'अजेय' तू अमर बनि गइल
रहि के तपसवी तपल तप कइल
भरल गेयान, खूब बँटल दुलार हो, भुलाई ....।
मथवा प लोग सभे 'तिलक' लगाई
गुनवा तहार हमनी से ना गवाई
प्रेरना से तहरे भइल भितुसार हो, भुलाई .।
हियरा के भाव वा चरनवा में अरपित
सरधा के फुलवा आ, मन वा समरपित
जुग-जुग गंगा के सूखी ना धार हो, भुलाई ...।

—महामंत्री, भोजपुरी विकास मंच
शंकर भवन, सिविल लाइन
वक्सर (भोजपुर)

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हस्ताक्षर अमर

□ श्री गणेश उपाध्याय
सहायक शिक्षक

गीता के टीकाकार देश में अनेक हुए
किन्तु महा तिलक समान तिलक का ही मान है
पार्थ को युद्ध हेतु कृष्ण ने प्रस्तुत किया
मोह के समूह नाश हेतु गीता-ज्ञान है।

कर्म ही प्रधान विश्व-जीवन-आधार है
कर्म से ही जीवन की जीत और हार है—
कर्म में लगे बिना उद्धार कहाँ मानव का
"निष्काम कर्म" ही लक्ष्य परम, मुक्ति का द्वार है।

तिलक ने गीता का रहस्य सभी खोल दिया
'स्वतंत्रता अधिकार हमारा जन्म-सिद्ध' बोल दिया
आत्मा को वन्धन कहाँ; शुद्ध-बुद्ध निरंजन वह
संशय-अविद्या के आवरण कर भग गोल किया।

अंग्रेजों के अनाचार के प्रवल विरोधी
राष्ट्र-प्रेम के दीप-स्तम्भ ज्योतिर्मय प्रखर
तिलक के विचार साफ उग्र आग के शोला-से
संघर्षों में आजीवन रहे कुन्दन सदृश निखर।

धन्य-धन्य यह भरत-भूमि, तिलक अवतरित जहाँ
सदैव तिलक तिलक सदृश माता के भाल पर
संस्कृति के पुजारी को नमन शतवार नित्य
गंगाधर हस्ताक्षर अमर इतिहास-काल पर'।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आवें हम तिलक को तिलक करें

लिया है जन्म भारत चमन में राष्ट्रप्रेमी एक,
साधक महान, कर्मयोगी, तपस्वी बड़ा नेक।

मिली जिससे देश को नयी दृष्टि,
चाहता है रचना एक नयी सृष्टि।

संघर्ष ही जिसका है सम्वल,
उत्साह अपरिमित, वेग प्रवल।

फूँका है रग-रग में राष्ट्रप्रेम,
निभाया है मरते दम अपना नेम।

जगाया है राष्ट्र प्रहरियों को लगा अमर नारा –
है जन्म-सिद्ध स्वराज्य अधिकार हमारा।

चलाया है न तोप-तलवार,
किया है केवल विचारों से वार।

आवें हम हिलमिल कर तिलक को तिलक करें,
उनके ही पदचिन्हों पर चलने का संकल्प करें।

—राम अयोध्या चौधरी 'अवधेश'
बाढ़ नियंत्रण प्रमंडल बक्सर

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भारतीय संस्कृति के पोषक तिलकजी

□ जगदीश नारायण राय

"देश हमारी मां है, देश ही हमारा जनक है। देश ही हमारा सब कुछ है। इससे अलग हमारे लिए सब कुछ मिथ्या और निस्सार है।" इन शब्दों के उद्घोषक, जन-नायक लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक को आज सारी दुनिया भली-भाँति जानती है। भारतीय तो उन्हें तबतक नहीं भूलेंगे, जबतक गंगा-यमुना प्रवाहित रहेंगी और उतुंग हिमालय खड़ा रहेगा। उनकी प्रशंसा में न जाने कितने ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं, उनकी गिनती कौन कर सकता है? फिर भी बहुत कुछ लिखना अभी शेष है। महाराज तिलक का चरित्र-चित्रण करना-सफलतापूर्वक उनकी उपलब्धियों पर कुछ लिखना बहुत ही कठिन कार्य है क्योंकि उनका जीवन इतना व्यापक तथा उनके कार्य इतने विशाल हैं कि बापू को भी मानना पड़ा और उन्होंने नम्र भाव में श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा, "वे हिमालय की भाँति उच्च और महान् किन्तु अगम्य और सागर के समान अजेय हैं।....तिलक अपने समय से भी आगे चलने वाले व्यक्ति थे।" ये शब्द आकाश में सदा गूँजते रहेंगे। हमारा परम-कर्त्तव्य है कि ऐसे राष्ट्र-निर्माता की स्मृति में स्थान-स्थान पर कीर्ति-मन्दिर की स्थापना करें, जहाँ तिलक जी के जीवन सम्बन्धी अद्भुत झांकियों तथा नाना प्रवृत्तियों का दिग्दर्शन कराया जा सके। तिलक और गांधी हमारे गगन-मण्डल के सूरज एवम् चांद के समान दीप्तिमान रहेंगे, इसमें तनिक सन्देह के लिए स्थान नहीं है। राष्ट्रनिर्माताओं की प्रथम पंक्ति में सर्वोच्च स्थान और सम्मान पाने का श्रेय-तिलक जी को कैसे मिला? आखिर रहस्य क्या है? प्रसंग में जब मैं अपने ही विचारों की विवेचना करता हूं तो कतिपय निम्न तथ्य उभर कर सामने आते हैं।

चरित्र के धनी

भारत के कर्णधारों और राजनीतिज्ञों में कोई व्यक्तित्व ऐसा दृष्टिगोचर नहीं हो रहा है, जिसकी तुलना लोकमान्य के चरित्र से की जाय। इतने चरित्र के धनी थे—महापुरुष तिलक जी! महामना मालवीय जी का चरित्र इस प्रसंग में बरबस स्मरण हो आता है। वह युग भी विचित्र था—'चरित्र-युग' यद्यपि भारत गुलामी की जंजीरों में आबद्ध था। बापू और गोपाल कृष्ण गोखले आदि का नाम भी सदैव उल्लेखनीय है। तिलक जी का चरित्र जीवन-पर्यन्त पवित्र और बेदाग रहा। वे सच्चरित्रता के सम्पूर्ण अंगों से विभूषित थे। भर्तृहरिजी ने सच्चे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ईश्वर-प्रेरित एवम् समर्पित समझते थे। राष्ट्रीय-शिक्षा का कार्य भी उन्होंने इसी भावना से सम्पन्न किया।

समय को बरबाद न करें :

यदि हम चरित्र-नायक का एक भी शब्द अथवा वाक्य सच्चे दिल से मानस-पटल पर बिठा लें तो अपनी जीवन-नैया को आसानी से किनारे पर ला सकते हैं और सुख-शान्ति की सांस ले सकते हैं वे यह कहते हुए कभी नहीं थके कि 'अगर तुम्हें अपने जीवन से प्रेम है तो समय को बरबाद मत करो, क्योंकि समय से ही जीवन का निर्माण हुआ है।'' परतंत्र भारत में राष्ट्रीय जागरण और एकता के प्रथमसूत्रधार वे ही थे। जन-नायकों की परम्परा में उनका स्थान सर्वोच्च है। सचमुच ही लोकमान्य एक अनुपम, एवम् अद्वितीय नेता थे, जिन्हें भारतीय जनता का असीम प्यार और अतुलनीय सम्मान प्राप्त था।

"Tilak was one of the greatst men that India has ever known. He was admired, respected and followed by millions of country men. They loved him because they knew he loved them."

स्वतन्त्रता-प्रिय मानव इस महामानव को चिर काल तक स्मरण करते रहेंगे, क्योंकि उन्होंने मानवता के उद्धार का मार्ग प्रशस्त करते हुए सदियों से गुलामी में जकड़े और सोए हुए राष्ट्र को जगाने का बीड़ा उठाया। 'गीता-रहस्य' उनका दिया हुआ एक ऐसा ही ग्रन्थ है जिसकी तुलना हजारों 'कोहनूर' से नहीं की जा सकती। वह अनमोल है। भारतीय संस्कृति के परम उपासक को हमारा कोटिशः प्रणाम।

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तिलक एक महान योद्धा

□ विजय कुमार पाण्डेय
नवम' व'

'धरा जब-जब विकल होती, मुसीबत का समय आता
किसी भी रूप में कोई महामानव चला आता।"

हमारा भारत सदियों से गुलामी की बेड़ियों में जकड़ा हुआ कराह रहा था। भारत माँ बेड़ियों में जकड़ी होने के कारण भारत की गली-गली में घूम-घूमकर भारत के जवानों के सामने सिसकियाँ ले लेकर मुक्ति की भीख माँग रही थी। लेकिन भारत के जवान जिनकी माँ सिसकियाँ भर-भर कर भीख माँगती रही और वे लोग कान में तेल डालकर अंग्रेजों के जुल्म सहते रहे। फिर भी उनके कानों पर जूँ तक नहीं रेंगी। परंतु जब किसी के कान पर जूँ नहीं रेंगती तो भगवान् के कान पर जूँ जरूर रेंगती। तभी तो पंडित गगाधर रामचन्द्र तिलक की धर्म पत्नी की गोद में बाल गंगाधर तिलक का अवतरण हुआ। ऐसे तो आकाश में लाखों लाख नक्षत्र आये और चले गये लेकिन कोई भी अपने प्रकाश से ससार को प्रकाशित नहीं कर सका। तब एक ही नक्षत्र ऐसा पैदा हुआ जिसने अपने प्रकाश से देश का ही नहीं बल्कि सारी दुनिया को भी प्रकाशित किया और वह नक्षत्र और कोई नहीं स्वयं बालगगाधर तिलक ही थे। इसीलिये किसी कवि ने कहा है कि—

"वह देस सदा ही धन्य है, वह माता सदा निहाल है,
जिस भाग्यवती की गोद में, तिलक जैसा लाल है।"

राष्ट्रपिता बापू ने लोकमान्य तिलक का सही मूल्यांकन करके ही तो कहा है कि तिलक "अजेय सागर हैं।" सागर की गहराई और अजेयता दोनों ही लोकमान्य तिलक में विद्यमान थी। उनका ज्ञान प्रशान्त महासागर जैसा शांत तथा गंभीर था। जो कभी अशान्त नहीं हुआ। जिसका कोई ओर-छोर नहीं था। यही नहीं; वे बहुत तेजस्वी और दूरदर्शी थे। तिलक जी की विद्वता भी अद्वितीय थी जिसका परिचय "गीता रहस्य" "आँरियन" और 'आर्कटिक होम इन दि वेदाज" में मिलता है। उस समय की राजनीति लंगड़ी राजनीति का रूप धारण कर चुकी थी। उसी समय तिलक जी ने अपने त्याग, तपस्या, तेजस्विता एवं दूर-दर्शिता से देश की ढुलमुल राजनीति को सही दिशा एवं गति प्रदान किया। तिलक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जी ने भारत की गली गली में घूम-घूमकर "स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है" के मंत्र को, सोये हुये देश और उसके स्वाभिमान को बिगुल बजाकर जगाया और नवजागृति का मंत्र फूंका। वे दासता की बेड़ियों को तोड़ तो नहीं सके लेकिन उसे अपने उत्कट प्रहारों से ढीला अवश्य कर दिया। और उसे खोलने के लिये देशवासियों को अपने मंत्रों के जरिये झकझोर डाला। जिससे सोये हुये शेर जाग उठे और यह संकल्प कर लिये कि जबतक हम भारतवासियों की रग में लहू की एक बूंद भी रहेगी तबतक हम अंग्रेजों से मुकाबला करते रहेंगे। दासता की बेड़ियों को जरूर काट डालेंगे। किसी कवि ने ठीक ही कहा है कि—

"जिसको न निज गौरव, तथा निज देश का अभिमान है
वह नर नहीं है पशु निरा है, और मृतक समान है।"

देश स्वाभिमान की कलंगी सारे भारतवासियों के सिर पर लग गयी। भारत के जन-जन और गली-गली से सिर्फ यही आवाज आ रही थी कि अंग्रेजो 'स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है।" यह मंत्र सारे भारत के कोने-कोने में गुंजार करने लगा। और सारे देश में स्वतंत्रता का बिगुल बज उठा। तिलक की दीप्ति से ही चन्द्रशेखर आजाद, भगत सिंह, सुभाषचन्द्र बोस, सरदार पटेल आदि स्वतंत्रता सेनानी देदीप्यमान थे। तिलक में एक ही साथ शंकराचार्य की ज्ञान गरिमा, प्रताप-शिवाजी का शौर्य एवं स्वतंत्रता प्रेम तथा विवेकानन्द का भारत-गौरव तरंगायित था। तिलक वास्तव में जीते-जागते शक्तिधर, शौर्य एवं शक्ति के ज्वलंत प्रतीक थे। तभी तो ब्रिटिश सरकार इनसे थरथराती थी। तिलक जनता के हृदय सम्राट् थे इसलिए जनता उनको महाराष्ट्र "केसरी" के उच्च आसन से भी उच्चतम स्थान पर आसीन कर गौवरन्वित होती थी। ऐसे महान् और स्वतंत्र योद्धा की माँ इनको बचपन में ही अपने अंचल की स्नेहिल छत्र-छाया से वंचित कर चुकी थी। कुछ दिनों के बाद ही इनके पूज्य पिताजी ने इहलोक की लीला संवरण कर ली थी। अब तिलक की निर्भीकता दूरदर्शिता, और कर्मठता कसौटी पर चढ़ चुकी थी।

तिलक जी ने तोपों बन्दूकों गोलियों और तलवारों के सहारे क्रांतिकारियों में क्रांति की लहर नहीं फूंकी। अपनी लेखनी के बल पर ही उन्होंने भारतियों के हृदय में क्रांति की लहर जागृत की।

"कलम देश की बड़ी शक्ति है, भाव जगाने वाली'
दिल ही नहीं दिमागों में भी आग लगाने वाली'
पैदा करती कलम विचारों के जलते अंगारे,
और प्रज्वलित, प्राण देश का कभी मिटेगा मारे !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धन्य है, तिलक जी की लेखनी जिसने क्रांतिकारियों में जलते हुये अंगारे पैदा कर दिया। तिलक जी से अंग्रेज सरकार जलती थी जिसके कारण उन्हें ६ वर्ष के लिए कालापानी की सजा मिली। इस खबर को सुनकर सारे भारत में शोक के बादल छा गये। भारतवासियों ने खुलकर इसका विरोध किया। फिर भी अंग्रेजों पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा। बल्कि सरकार ने बड़ी बेहयाई और बेशर्मी से जनता के असंतोष को अनसुना ही नहीं किया बल्कि बड़ी क्रूरता और कठोरता से कुचल भी दिया लेकिन जनता के इस असंतोष ने ब्रिटिश साम्राज्य को ढाहकर ही छोड़ा। उनको जेल की काली कोठरी में डाल दिया गया। लेकिन तिलक सदा इस कहावत को चरितार्थ करते रहे कि "शेर पिंजड़े में बंद रहने पर भी शेर ही कहलाता है।" तिलक जी काली कोठरी में से ही अपनी लेखनी द्वारा अंगारों की बौछार करते रहे। अनेकों कष्ट झेलने पर भी उन्होंने अपनी दृढ़ प्रतिज्ञा को नहीं तोड़ा। धन्य हैं तिलक जैसे महान योद्धा जिन्होंने सोये हुये भारतवासियों के अन्दर स्वतंत्रता की कलँगी फहराई। उन्होंने स्वशासन के सम्बन्ध में जनता का आह्वान करते हुये कहा—'अपने को होमरुल कहने से कभी भी पीछे मत हटो, कहो कि हमें होमरुल चाहिये और जब तुम उसके लिये तैयार हो जाओगे तो वह तुम्हें अवश्य मिलेगा।' किसी कवि ने कहा है—

"जब मानव जोर लगाता है, पत्थर पानी बन जाता है"

मांटेग्यू ने अपनी डायरी में लिखा था कि "संभवतः इस समय भारत में सबसे अधिक शक्तिमान तिलक हैं।" तिलक की अलौकिक शक्ति, अद्वितीय प्रतिभा, स्पष्टता, व्याख्यान शक्ति आदि गुण प्रायः सभी अंग्रेजों के लिये सिरदर्द थे। ऐसे महान् और स्वतंत्र योद्धा जिसके ऊपर सारे भारतवासी आशा लगाये हुये थे कि स्वतंत्रता हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है।" एकदिन एक छोटी सी बीमारी विकराल रूप लेकर आयी और ऐसे महान् योद्धा को इस धरा-धाम से ले गयी। १ली अगस्त १९२० ई० को तिलक जी को उठा ले गयी। तिलक तो चले गये लेकिन हम भारतियों के अन्दर स्वतंत्रता के बीज बोकर ही गये। यदि तिलक अपने प्रकृत क्षेत्र को छोड़कर राजनीति में न कूदते तो निश्चय ही स्वतंत्रता की मंजिल इतनी जल्दी करीब नहीं आती। "स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है और हम लेकर ही रहेंगे। लोकमान्य का केवल यही 'उद्घोष' युग-युगान्तर तक मानव काल का पथ-निर्देशन करता रहेगा। जबतक यह धरा रहेगी तबतक हमलोग जन्म जन्मान्तर तक गाते रहेंगे कि धन्य हैं तिलक जिनके कारण हम भारतवासी स्वतंत्र हुये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एकांकी

लोकमान्य तिलक

□ हनुमान प्रसाद सिंह

[पूना में एक मध्यवर्गीय गृहस्थ का मकान। बाहर से सदर दरवाजा खटखटाने की आवाज - खट,खट !— 'बालगंगाधर तिलक जी हैं ?'']

काकी— (भीतर से)- हां हैं। दरवाजा खुला है, भीतर चले आइए ।

मिस्टर वेब —(प्रवेश कर) मैं बाल गंगाधर तिलक जी से मिलना चाहता हूं।

काकी— आप बैठक में बैठिए मैं बुलाती हूं, (भीतर की ओर मुख कर) केशव, देखो कौन आया है।

मिस्टर वेब— मैं केशव जी से नहीं बाल गंगाधर तिलक से मिलने आया हूं।

काकी— (हंसकर) बाल गंगाधर तिलक का ही घर का नाम केशव है, परिवार में छोटा होने के नाते हम लोग उन्हें बाल भी कहते हैं।

मिस्टर वेब – क्षमा करें, मैं नहीं जानता था, बाल गंगाधर तिलक ही नाम सुना था, इसलिए इसी नाम से मिलने चला आया। इस समय बारह बज रहे हैं, क्या तिलक जी देर से भोजन करने के अभ्यस्त हैं ?

काकी - जी नहीं ! केशव समय का पक्का है, आज शायद 'मराठा' के लिए अग्रलेख लिखने में उसे देर हो गई।

मिस्टर वेब—'मराठा' और 'केशरी' दोनों में आज का अग्रलेख छप चुका है, फिर आज के लिए अग्रलेख की बात समझ में नहीं आती, अच्छा मैं बैठक में बैठता हूं।

काकी— अवश्य बैठिए। आज का लिखा अग्रलेख तीसरे दिन छपेगा, नाम ही उसका 'अग्रलेख' है।

तिलक— (प्रवेश कर) कौन है काकी जी !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

झाँकी – (कक्ष की ओर संकेत कर) कोई अंग्रेज अधिकारी है। साफ हिन्दी बोलता है। तुम से मिलना चाहता है।

तिलक— (बैठक में प्रवेश कर, अभिवादन करते हुए) मैंने आपको पहचाना नहीं, मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ?

मिस्टर वेत्र —मैं बाम्बे प्रेसीडेंसी से सम्बन्धित अधिकारी हूँ। मैं आपको यह हिदायत करने आया हूँ कि आप 'केसरी' और 'मराठा' में उग्रलेख न लिखें।

तिलक— ऐसा क्यों भाई!

मिस्टर वेत्र—प्लेग अधिकारी मिस्टर रेण्ड की परसों कुछ लोगों ने हत्या कर दी। अपराधी पकड़ा गया है, किन्तु शासन को विश्वास है कि अकाल और प्लेग की आड़ में आपके लेखों ने उन्हें इस कार्य के लिए प्रेरित किया। इस प्रकार मिस्टर रेण्ड की हत्या के कारण आप हैं।

तिलक – मिस्टर रेण्ड के सम्बन्ध में 'मराठा' में जो कुछ लिखा गया, वह सत्य है। उनका कार्य बड़ा असन्तोषजनक और कष्टकारी था। लोगों ने उनकी हत्या मेरे लेखों के कारण नहीं, बल्कि उनके कर्मों के कारण की होगी। जब अपराधी पकड़ा ही गया है, तो उससे क्यों नहीं पूछा जाता?

मिस्टर वेत्र -(तैश में) मानता हूँ आपने अपने हाथो मिस्टर रेण्ड की हत्या नहीं की, किन्तु लोगों में ऐसी भावनायें भर दीं कि मिस्टर रेण्ड का वध कर दिया गया। आपको और आपके मित्र गोपाल गणेश आगरकर को शोलापुर पत्र काण्ड के सिलसिले में १८८१ में चार-चार मास की सजा मिल चुकी है, आपको फँसाने के लिए इतना प्रमाण काफी है।

तिलक – आप मेरे निवास स्थान पर पधारे हैं, इसलिए आप जो चाहें कह लें। दीवान और रेजीडेण्ट दोनों मिलकर शोलापुर के राजा के विरुद्ध षड़यन्त्र कर रहे थे। मैंने 'मराठा' में और आगरकर ने 'केसरी' में उसका भण्डाफोड़ कर दीवान के दोनों पत्रों को प्रकाशित कर किया। दोनों पत्र दीवान के लिखे हुए थे। किन्तु सरकारी तन्त्र ने उन पत्रों को जाली करार दिया, क्योंकि न्याय फैसला हो गया था, और हम लोगों को सजा देना तय कर लिया गया था। हम लोग बार-बार कहते रहे कि पत्रों के लेखक-दीवान की लिखावट की सही जाँच हो। न्याय क्या हुआ न्याय का मजाक उड़ाया गया इसलिए सजा मिली।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मिस्टर रेण्ड की हत्या में मैंने कोई सहयोग नहीं किया, जनता स्वयं समझदार हो चुकी है। सुफेद शैतानों की कारगुजारियों को जनता भलीभाँति जानती है, अतएव मिस्टर रेण्ड का अन्त बहुत आश्चर्य-जनक नहीं है।

मिस्टर वेब –(गरम होते हुए) पब्लिक समझदार है अथवा नहीं, परन्तु आप अपने भविष्य के बारे में समझ लें कि आप सेन्ट पर सेन्ट कानून के शिकंजे में आ गये हैं। यदि आपने उग्र अग्रलेख लिखना बन्द नहीं किया तो इसका परिणाम भुगतना पड़ेगा।

तिलक— आप स्वतंत्र हैं जो चाहे करें। जो सही एवं देशहित में होगा वह 'केसरी' और 'मराठा' दोनों पत्रों में बराबर छपता रहेगा। जनता को हर विधि से सही सूचना देना पत्रकार का धर्म है। (...कुछ रुककर)... आपको बम्बई से पूना पधारने का कारण क्या केवल इतना ही है? यह कार्य तो आपका थानेदार भी कर सकता था।

मिस्टर वेब —मिस्टर मैक्समूलर का एक निजी टेलीग्राम मुझे आज ही मिला, इसलिए मुझे आना पड़ा।

तिलक— मिस्टर मैक्समूलर प्राच्य साहित्य एवं भारतीय भाषाओं के जानकार हैं। मेरी समझ से उन्हें भी कोई गलतफहमी हुई है, अन्यथा वर्तमान दुर्भिक्ष, एवं प्लेग में सरकारी कर्मचारियों की लोकसेवा अपर्याप्त, बदलापूर्ण एवं अदूरदर्शितापूर्ण है। यदि मैं कलकत्ता गया तो मैं उनसे मिलूँगा।

मिस्टर वेब—मेरा जो धर्म था, मैंने कह दिया। अब मैं जाता हूँ। (बाहर निकलता है) वामन शिवराम आप्टे (प्रवेश कर)— दादा, यह साँप का बच्चा यहाँ क्या करने आया था?

तिलक— आप तो कोलकार हैं। मैक्समूलर को अच्छी तरह जानते हैं; उन्होंने बाम्बे प्रेसीडेन्सी के अधिकारी मिस्टर वेब के द्वारा अभी-अभी धमकी दिलवाई है कि मैं अपने पत्रों में निर्भीकतापूर्वक न लिखूँ, अन्यथा राजदण्ड भोगना पड़ेगा।

आप्टे— दोष मैक्समूलर का नहीं मिस्टर वेब का है। यह बम्बे प्रेसीडेण्सी का मजिस्ट्रेट है। इसने अपने को एक साधारण अधिकारी बतलाया है, यह झूठ है। राजद्रोह का पूरा मुकदमा बना-बनाया रखा हुआ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

है। मिस्टर रेण्ड का हत्यारा पकड़ा गया, फाँसी भी दे दी गई किन्तु सरकारी आँख आपके ऊपर लगी हुई है। मैक्समूलर मजिस्ट्रेट की तरह नौकरशाह नहीं है। जब उससे आपके बारे में पूछा गया होगा तो उसने सलाह दी होगी कि बात आमने-सामने की जाय। इसलिए मिस्टर वेब यहाँ पधारे थे।

मिस्टर आगरकर—(प्रवेश करते हुए)—हमें जमानत की तैयारी करनी चाहिए। हमलोगों को पकड़ने के लिए बाहर पुलिस खड़ी है। हम लोगों के द्वारा 'गणपति उत्सव' एवं अन्य उत्सवों में जनता के बीच भाईचारे की भावना एवं देशप्रेम का प्रचार भी उनको षड्यन्त्र नजर आता है। मुझे तो इतना ही पता चला है कि प्रेसीडेन्सी मजिस्ट्रेट मिस्टर वेब ने हम लोगों के विरुद्ध, राजद्रोह के नाम पर सोलह मास की सजा का फैसला लिख मारा है, केवल तारीख और हस्ताक्षर बाकी है।

तिलक— निष्काम सेवा व्रत कठिन है। प्रभु की जैसी इच्छा। आप लोग 'मराठा' और 'केसरी' को सँभाले रखिएगा। जमानत की कोई आवश्यकता नहीं। जब बिना मुकदमा चलाए उसका फैसला लिखा जा चुका है तो इससे बड़ा अन्धेर क्या होगा। अफसोस 'गीता रहस्य' पूर्ण नहीं हो सका।

पुलिस इंस्पेक्टर—(प्रवेश कर)—मिस्टर रेण्ड की हत्या के सिलसिले में मुझे आपको पकड़ने का आदेश मिला है।

तिलक— आप आदेश का पालन करें, हम तैयार हैं। स्वतन्त्रता हमारा जन्म-सिद्ध अधिकार है। इसके लिए कितनी ही यातनाएँ मिलें मैं नकार नहीं सकता, किन्तु यह बात निश्चित है कि हमारा देश एक न एक दिन अवश्य स्वतंत्र होगा। (दोनों हाथ आगे करते हैं)

(नेपथ्य में) भारत माता की जय! बालगंगाधर तिलक जिन्दाबाद! नौकरशाही नहीं चलेगी, नहीं चलेगी। स्वतन्त्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। तिलक अकेले नहीं हैं। हम जेलों को भर दें।

(सबका प्रस्थान)

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री हनुमते नमः

लोकमान्यः बाल गंगाधर तिलकः

□ आचार्य ओमप्रकाश गुप्त :
संस्कृत-शिक्षक :

सामान्य परिचय :—

"अग्रतः सफलं शास्त्रं पृष्ठतः सशरं धनुः"

इति सूक्तिमनुसरन्तं श्रीमन्तं तत्र भवन्तं तिलक महानुभावं कोऽसौ सहृदय साहित्यिकः यो न जानाति। सामान्यतः लोकमान्यतिलकः आत्मनः पुण्येन चरित्रेण समस्त भारतीयानां प्रातःस्मरणीयः महापुरुष आसीदित्यत्र नास्ति कोऽपि सन्देहः।

वस्तुतः सर्वेषु एव युगेषु तथा सर्वेषु एव देशेषु परदुखकातराः महात्मानः जायन्ते इत्यनुसारेण अस्य महानुभावस्य जन्म महाराष्ट्रे रत्नगिरि-नाम्नी मण्डले चिखलनामके ग्रामे अष्टादशशत् षट् पंचाशत् तमे खीष्टाब्दे जुलाई मासस्य त्रयोविंशतिः दिनाङ्के सोमवासरे अभवत्। अस्य पितुर्नाम पण्डित गगाधर पंत आसीत्। अस्य माता पुण्यचरिता पार्वतीबाई आसीत्। तिलक महानुभावस्य पूर्णनाम प्रचलितां प्राचीन रीति-मनुसृत्य पितुर्नामसहयोगेन "बालगंगाधर तिलकः" इत्यासीत्।

शिक्षा—

"प्रसाद-चिह्नानि पुरः फलानि"

इत्यनुसारेण अनेन महानुभावेन १८७४ खीष्टाब्दे इण्ट्रेंस परीक्षा उत्तीर्णा कृता। तदुपरान्ते अनेन 'पूना' नगर स्थिते 'डक्कन महाविद्यालये प्रवेशः कृतः। १८७६ खीष्टाब्दे अनेन बी० ए० परीक्षा प्रथमश्रेण्यामुत्तीर्णाकृता। किञ्चित्कालोपरान्ते एल. एल. बी. उपाधिमपि अयं सुशोभितवान्। अस्मिन् समस्त देशे नवीन विचारधारां प्रसारणाय अनेन "न्यू इंगलिश स्कूल" इति विद्यालयस्य स्थापना कृता। अस्मिन् विद्यालये शिक्षायाः पूर्णरूपेण सर्वा व्यवस्था आसीत्।

देश सेवा—

"क्रियासिद्धि सत्वे भवति महतां नोपकरणे"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इति सूक्त्यनुसारेण यद्यपि पूर्णं साधनानामभावः आसीत् तथापि सः 'मराठा' एवं 'केसरी' नाम्ना पत्र द्वारेण जन मानसेषु स्वातन्त्र्यस्य देशानुरागस्य च भावनामुदबोधयत् । समस्ते भारते अनयोः यथा प्रचारः आसीत् तथा न कस्यापि आंग्लभाषायाः पत्रस्य ।

तिलकस्य हृदि बाल्यादेव देशभक्तिः जागृता आसीत् । सः देशस्य विकासाय महत् कष्टं सस्मितमन्वभवत् । यथार्थतः लोकमान्य तिलकस्य जीवनं उदारतापूर्णमासीत् । जुलाई मासस्य पञ्चतमे दिवसे १८९५ खीष्टाब्दे कांग्रेसस्य अधिवेशनं 'मद्रास' नगरे अभवत् । अस्मिन् अधिवेशने तिलकः कांग्रेसस्य दशवर्षाणां कार्याणां विवरणम् प्रस्तुतवान् । यद्यपि 'नरम दल' एवं 'गरम दल' इत्याख्ये द्वे संगठने तदानीं आस्ताम् तथापि तिलक महानुभावः 'गरमदल' इत्यष्यैव सदस्य आसीत् ।

"देहपातमपीच्छन्ति सन्तो नाविनयं पुनः"

इत्यनुसारेण सः कदापि मिथ्यां प्रशंसां न कस्यापि अकरोत् । अयं महानुभावः आंग्लशासकानामनुचितकार्याणां समक्षे सदैव विरोधं कृतवान् । अनेकदा सः कारागारमसेवत । कारागारे सः नाना विधानि दुःसहानि कष्टानि प्राप्तवान् । एवं विधानि कष्टानि अनुभवन् 'स्वाध्याये नित्ययुक्तः स्यात्' इति सूक्त्यनुसारेण कारागारे सः शास्त्रचिन्तनमत्यकरोत् । "गीता रहस्यम्" तिलकस्य साधनायाः — आकाशदीपः अस्ति यः बहु कालं यावत् स्वकीयं प्रकाशं दास्यति ।

देशभक्तः महात्मा अयमेव यः खलु आंग्ल-शासकान् उद्दिश्य 'स्वराज्यमस्माकं जन्मसिद्धोऽधिकारः" इति मन्त्रमुदघोषयत् । "उत्तिष्ठत् जाग्रत स्वराज्यस्थापयत" इति प्रेरणादायकं वाक्यं श्रीमता तत्र भवता तिलकेनैव समस्त देशे प्रसारितम् ।

रचना :—

लोकमान्यः न हि केवलं क्रान्तिकारिः नेता आसीत् अपितु क्रान्तिकारि लेखकः अप्यासीत् । अयं महानुभावः "ओरायन" !'मृग शीर्ष" एवं "आर्कटिक होम इन दा वेदाज" इत्यादि पुस्तकानां रचनां कृतवान् । "श्रीमद् भगवद्गीता-रहस्यम" नामकं पुस्तकं अनेन महानुभावेन सर्वजन-समक्षे समुपस्थापितम् । महात्मना गान्धिना सत्यमेवोक्तम् — "लोकमान्यः जनतायाः आराध्यदेवः आसीत ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

निर्वाणम :—

इत्थं मुम्बई नगरे एकोनविंशति शतविंशति (१९२०) तमे खीष्टाब्दे जुलाई मासस्य एक त्रिंशत् (३१) तमे दिवसे लोकमान्यः तिलकः स्वकीयं पार्थिवं शरीरमत्यजत् ।

वस्तुतः धन्योऽयं महानुभावः यो विश्वस्य पुरतो जीवनस्य स्वरूपं तदीयं मर्मं च समुपस्थापयामास । यथार्थतः जीवन धारिणां समक्षे जीवन-प्रतिष्ठापकाः भूत्वा ये महानुभावाः अवतरन्ति, तैः महानुभावैर्धरा गौरव शालिनी भवति । प्राणिनश्च आश्वासनमयस्य श्वासस्य परिग्रहणाय सदवसरं लभन्ते ।

अतः अस्माभिः सर्वैरपि अस्य महानुभावस्य श्रेष्ठादर्शनामनुकरणं कर्त्तव्यम् । तदैव अस्माकं सर्वेषां कल्याणं भवितुं शक्यते ।

□

हम भूल गए हैं

यूरोपीय लोग दांते शेक्सपीयर, गेटे तथा अन्य कवियों की लेखनी पर गौरव अनुभव करते हैं और उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करने में नहीं चूकते। क्या हमें कालिदास, भवभूति, मोरोपंत, तुकाराम तथा अन्य संस्कृत और मराठी कवियों पर अभिमान न होना चाहिए ? क्या हम उन्हें भूल नहीं बैठे हैं ? इतना ही नहीं, हम शिवाजी महाराज जैसे महान् पुरुषों को भूल गए हैं।

—लोकमान्य तिलक

हमारा दुर्भाग्य है

हमारी कैसी स्थिति हो गई है ? यदि सरकार दमन करती है तो हम उसको दण्ड नहीं दे सकते; यदि हम चिल्लाते भी हैं तो सरकार के कानों पर जूं नहीं रेंगती। यदि अब भी हमारी आँखें नहीं खुली हैं तो हम यही कह सकते हैं कि यह हमारे दुर्भाग्य के सिवा और कुछ नहीं !

—तिलक

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लोकमान्य बालगंगाधर तिलक

□ नारायण दत्त द्विवेदी, विशारद, साहित्य शास्त्री, साहित्याचार्य

वलवन्तराव तिलक का जन्म तारीख २३ जुलाई सन् १८५६ ई० को रत्नगिरि में सदोवा गोरे के घर हुआ। तिलक का नाम लोक व्यवहार में यद्यपि वलवन्त राव रहा है, तथापि उनका जन्म नाम 'केशव' रखा गया था। यह नाम इनके प्रपितामह एवं कुलस्वामी का नाम होने से रखा गया था। किन्तु "वाल" नामक जो सांकेतिक नाम बाल्य काल से घरू व्यवहार में प्रचलित हो गया, वह योग्यतानुसार वाल गंगाधर तिलक हो गया। वलवन्त राव और केशव छूट गया। अपनी ख्याति से पीछे लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक हो गया। इनके पिता का नाम वाल गंगाधर पन्त था, वही गंगाधर शब्द इनके नाम मे जुड़ गया। माताजी का नाम पार्वती बाई था। तिलक श्रेष्ठता का प्रतीक शब्द हैं।

तिलक जी के पिता गंगाधर पंत संस्कृतज्ञ थे, अतएव वचपन में अपने पुत्र तिलक जी को संस्कृत के अनेक श्लोक कंटस्थ कराये थे। सन् १८६९ में तिलक ने पूना हाईस्कूल की पांचवीं कक्षा में नाम लिखाया। छात्र जीवन में ये वड़े ही धृष्ट थे और शिक्षकों से सही बातों पर डट जाते और इनकी विजय होती। विद्यार्थी जीवन में ही इनका विवाह सन् १८७१ मे हो गया। धर्म पत्नी का नाम सत्यभामा बाई था। सन् १८७३ ई० में तिलक डेक्कन कालेज में प्रविष्ट हुये।

सुवह का समय अखाड़े में और नदी मे तैरने में विताते थे। सायं काल खेल-कूद एवं हवाखोरी में लगाते। रात में गपशप और हंसी मजाक में विताते। अध्ययन काल में संलग्नता से अपने अभीष्ट विषय में डूब जाते और सफलता प्राप्त करते। आई० ए० की परीक्षा पास कर ये सन् १८७६ में प्रथम श्रेणी में बी० ए० पास किए। और सन् १८७९ मे एल० एल० बी० पास कर लिए। वालगंगाधर तिलक छात्र जीवन ही में संस्कृत के सुन्दर श्लोक रचा करते थे। जिस प्रकार गोस्वामी तुलसी दास जी ने खलों की वन्दना की है उसी प्रकार बाल गंगाधर तिलक की खल-वन्दना पढ़िए: —

(१)

सदा गुणज्ञः सुपरिक्षणाय वै कवीन्द्र काव्यमृत कांचनस्य वै।
करोति लोके निकषं न दुर्जनं खलाय तस्माय हिताय मे नमः ।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(२)

कृशानु तापः कुरुते यथामलं मलं गृहीत्वा वयनस्य जीवनम् ।
तथा करोत्येव चयः सतोहितः खलाय तस्मै प्रथमं नमोस्तु ते ।।

(३)

यथा वयस्येव घृतं हि वर्तते तथापि लोके सहते ऽति तप्तताम् ।
पयाति शुद्धिं च तदा ततोमृतं खलस्य तोषे कथिता तथा शुचिः ।।

उपसंहार

संत कवीर दास जी ने कहा है कि—

सात समद को मसि करूँ, लेखनि सब वन राय ।
धरती सब कागद करूँ, हरि गुन लिखा न जाय ।।

यही बात लोकमान्य वाल गंगाधर तिलक के विषय में है। इनकी संपूर्ण जीवनी महासागर है, बृहदाकाय है। एक छोटे लेख में अक्षरशः आ जाना असंभव है। पर उनकी बहुमुखी कृतियों का उल्लेख ही संपूर्णता की प्राप्ति है। अतएव हम अपनी भाग्यशालिनी 'ज्ञान-तरंगिणी' पत्रिका में बूंद में ही सिन्धु का समावेश कर सकते हैं।

कविवर रहीम की उक्तिः—

बूंद में सिन्धु समाना को कासों अचरज कहै ।
हेरन हरि हिरान, रहिमन अपने आपु में ।।

भारत माता के बन्धन को तोड़ने वाले उनके यशस्वी देशभक्त दो नेत्र तारे एवं लालों में ज्येष्ठ पुत्र लोकामान्य वाल गंगाधर तिलक ने गणेशोत्सव आदि नीतिमय प्रयोगों के द्वारा देश को एक सूत्र में आवद्ध किया और स्वतंत्रता प्राप्ति का अमोघ वीजा रोपण किया और मोहनदास कर्मचन्द गांधी ने स्वतंत्रता लेकर ही दम लिया।

लोकमान्य वाल गंगाधर तिलक यशस्वी वंश के उज्ज्वल रत्न, योग्य पिता के योग्य पुत्र, महापंडित, विप्रवंशावतंस, क्रियानिष्ठ आदि सर्वगुण सम्पन्न थे। महामना मदन मोहन मालवीय जी ने ईश्वर से वैसे रत्न की भारत माता की गोद में पुनः मांग की है। जीवनी का लेखक धन्य है। पाठक धन्य है। और धन्य हैं ज्ञान-तरंगिणी के संरक्षक और संपादक एवं लेखक जो लोकमान्य वाल गंगाधर सम्बन्धी विशेषांक प्रकाशित करने जा रहे हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लोकमान्य तिलक

□ शिव बहादुर पाण्डेय,
सहायक शिक्षक

भारतीय क्रान्ति के जनक एवं आधुनिक भारत के निर्माता लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक का अवतरण भारत की पवित्र भूमि पर सन् १८५६ ई० में हुआ था तथा उनके पार्थिव शरीर की समाधि ३१ जुलाई सन् १९२० ई० में हुयी।

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक हमारे स्वतंत्रता-आन्दोलन के आदिपिता थे। उन्होंने ही सर्वप्रथम निर्भीक एवं सशक्त वाणी में आह्वान किया था कि स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। तिलक और गाँधी दोनों की समान मूल्यों पर आस्था थी और दोनों ने एक ही आदर्श लक्ष्य की प्राप्ति के लिए संघर्ष किया था।

तिलक जन्मजात स्वाधीनता एवं स्वतंत्रता के समर्थक थे। उन्होंने सन् १८८७ ई० में प्रोफेसर के पद को जनसेवक पत्रकार तथा राजनीतिक बनने के लिए छोड़ दिया। वे किसी क्रान्तिकारी आन्दोलन में शामिल नहीं हुए, प्रत्युत दादाभाई नौरोजी एवं न्यायमूर्ति रानाडे द्वारा संस्थापित कांग्रेस में भर्ती हो गये। उनकी यह मान्यता दृढ़ थी कि अंग्रेजों से शनैः-शनैः या अचानक सत्ता तभी ली जा सकती है, जब सम्पूर्ण भारत राष्ट्र का सुदृढ़ तथा अडिग रुख हो। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए सभी जातियों, वर्णों एवं धर्मों के भारतीयों की एक प्रतिनिधि संस्था होनी चाहिए जो जनता को वैधानिक, किन्तु सामूहिक रूप से अपने अधिकारों के लिए लड़ने की शिक्षा दे। जनता को उनके आधारभूत अधिकारों के लिए शिक्षा देना कांग्रेसी नेताओं के सामने सबसे महत्वपूर्ण कार्य था।

तिलक ने इस बात की टीका की कि कांग्रेस का उस समय वर्ष में केवल एक बार अधिवेशन होता था और बाद में पूरे वर्ष लोग अपने-अपने काम धन्धों में लगे रहते। लोकमान्य से कहा—"कांग्रेस के पास पूरे समय काम में जुटे रहने वाले सार्वजनिक कार्यकर्ता नहीं हैं। ऐसी स्थिति में कांग्रेस के नेता तथा पत्रकार, चाहे वे अपने भाषणों एवं लेखों में कितने भी तेज क्यों न हों, जनता से निकट का सम्पर्क नहीं स्थापित कर सकते हैं। नेताओं और जनता के बीच यह खाई पाटी ही जानी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चाहिए। उसके बिना जनता, नेताओं को समझ नहीं सकेगी और समय आने पर अधिकारों के संघर्ष में उनका साथ नहीं दे सकेगी।'

नेताओं में मतभेद

तिलक एवं उनके पंजाब तथा मध्यप्रदेश के साथियों के इन विचारों की कांग्रेस समिति में बहुधा चर्चा होती थी। राजनीतिक प्रचार कार्य का उनका तरीका उन लोगों से तात्विक रूप से भिन्न था जिनके हाथ में उस समय कांग्रेस की बाग-डोर थी और जो अपने अनुदार विचारों के अनुरूप संस्था को चला रहे थे। मेहता तथा गोखले आदि नेताओं का मत था कि कांग्रेस केवल ऐसा संघटन हो जिनमें विचार किया जाय। सरकार के द्वारा जनता के प्रति किये जाने वाले अन्यायों के प्रति जनमानस को जागरित करने से ऐसी स्थितियाँ पैदा हो सकती हैं जिन्हें काबू में रखना सदैव संभव न हो और तब उनके परिणाम गंभीर रूप धारण कर सकते हैं।

तिलक ने दृढ़ता के साथ उत्तर दिया कि कांग्रेस के प्रस्तावों के पीछे जनबल होना आवश्यक है। तभी उन्हें सम्मान की दृष्टि से देखा जायेगा और उनपर विचार किया जायेगा। जनसमर्थन के अभाव में कांग्रेस द्वारा विचार विमर्श कॉलेज के लड़कों के वाद विवाद की तरह ही रहेंगे तथा उनकी बात केवल नक्कारखाने में तूती की आवाज जैसी ही रहेगी। तिलक ने दृढ़तापूर्वक कहा था—"राष्ट्रीय कांग्रेस के नेता सत्ताधारियों से, जो उनके ही भाइयों पर जुल्म करते हैं, अच्छे बने रहने के प्रमाण पत्र प्राप्त करने की चिन्ता छोड़ दें। ब्रिटिश लोकतंत्र और ब्रिटेन के राज-नीतिज्ञों पर उनकी आवाज का प्रभाव उसी हद तक हो पायेगा जिस हद तक वे भारतीय जनता का सक्रिय सहयोग और समर्थन प्राप्त करने में समर्थ होंगें।"

कांग्रेस के अन्य पुराने नेताओं और तिलक के बीच भिन्नता का दूसरा मुख्य मुद्दा यह था कि वे भारत पर ब्रिटिश शासन को 'दैवी कृत्य' नहीं मानते थे। अन्य स्रोतों से यह आभास मिलता है कि न्यायमूर्ति रानाडे भारत पर ब्रिटिश आधिपत्य के समर्थन में "दैवी कृत्य" की अभिव्यक्ति के लिए उत्तरदायी थे। लोकमान्य तिलक ने कहा था कि दैवी कृपा से नहीं प्रत्युत मानव स्वभाव की कमजोरी के कारण कोई व्यक्ति कर्त्तव्य, न्याय और सच्चाई के मार्ग से विमुख होता है। प्रतिवर्ष कांग्रेस द्वारा पारित प्रस्ताव इस तथ्य के अकाट्य प्रमाण हैं कि कांग्रेस न केवल हितसाधन के लिए अपितु ब्रिटेनवासियों के हित में भारत की जनता का शोषण करने तथा इस देश के साधनों का लाभ उठाने के लिए भारत भूमि से अपना पांव हटाना नहीं चाहते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्राच्य विद्या विशारद

दक्षिण के बेताज के वादशाह तिलक को सर्वप्रथम सन् १८९७ में देशद्रोह के आरोप में दो वर्ष का और पुनः देशद्रोह के आरोप में ६ वर्ष का कारावास मिला। देशद्रोह के प्रथम मुकदमें से ही जनता के सामने यह स्पष्ट हो गया कि तिलक और नेताओं के जिन्हें पूना और वम्बई के नर्मदल के नेता कहा जाता था) विचारों में क्यों मुख्य अन्तर है। तिलक को भयंकर यातनायें भुगतनी पड़ीं। उन्हें सख्त कैद की सजा हुयी। कारावास में उन्हें वेदों के उच्चत्तर अनुशीलन का समय मिला। उन्हें पिताश्री गंगाधर शास्त्री से 'ओरिया' की शिक्षा मिली थी। 'ओरिया' ग्रंथ के प्रकाशन से पूर्व ही तिलक की विद्वता की धाक जम चुकी थी। अग्रेत्तर अनुसंधान कार्य में उन्हें ऋगवेद एवं अन्य वैदिक साहित्य में सामग्री उपलब्ध हुयी कि वैदिक आर्यों का मूल उद्गम स्थल आर्कटिक क्षेत्र था। उन्होंने अपनी 'थीसिस' का सारांश प्रोफेसर मैक्समूलर को सम्मति और सुझावों के लिए भेजा था।

तिलक को जेल से मुक्त करवाने के लिए इंगलैण्ड में जो आन्दोलन चलाया गया था उसमें प्रो० मैक्समूलर तथा अन्य प्राच्य विद्या विशारदों ने भाग लिया था जिसके फलस्वरूप तिलक दो वर्ष की अवधि के पूर्व ही जेल से छोड़ दिये गये।

कट्टरता के गढ़से लोहा

लोकमान्य पूना की कट्टरता के गढ़ में बड़े हुए थे। लेकिन पूना उस समय प्राच्य विद्या का केन्द्र भी था। जब वे केवल १५ वर्ष के थे तब १० वर्ष की वधू के साथ उनका विवाह हुआ था। वंबई विश्वविद्यालय की स्थापना के अनन्तर शिक्षित युवक नये-नये विचार और परिकल्पनायें लेकर जीवन क्षेत्र में प्रवेश कर रहे थे जिन्हें सदियों से चली आ रही रूढ़ियों, सामाजिक रीतिरिवाजों और धार्मिक विचारों से संघर्ष करना पड़ रहा था। तिलक ने विश्वविद्यालय शिक्षा समाप्त करने के वाद उस जमाने के महान समाज सुधारक स्वर्गीय विष्णु शास्त्री चिपलूणकर के साथ कार्य शुरू किया। आगरकर भी उस टोली में शामिल हो गये और तीनों ने देश सेवा में जुट जाने का संकल्प लिया। इन्होंने एक हाई स्कूल की स्थापना की जिसका उद्देश्य पूर्व और पश्चिम के ज्ञान के साथ-साथ युवकों में देश भक्ति एवं स्वतंत्रता की भावना भरना था। उन्होंने मराठी में "केशरी" तथा अंग्रेजी में "मराठा" नाम के दो साप्ताहिक पत्र भी शुरू किये ताकि स्वस्थ जनमत तैयार किया जा सके।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाद में तिलक तथा उनके सहयोगियों ने "दक्षिण शिक्षा संस्था" की स्थापना की ओर समूचे महाराष्ट्र के युवकों को सही शिक्षा देने का व्रत लिया। किन्तु सन् १८८७ ई० में राजनीतिक तथा सामाजिक और यहाँ तक कि शैक्षणिक प्रश्नों पर इतने तीव्र मतभेद हो गये कि तिलक ने शिक्षण संस्थान के हित में उससे अपना संबंध पृथक करना ही श्रेयस्कर समझा।

पत्रकारिता का क्षेत्र में

शिक्षा शास्त्री से तिलक अब पूर्णतः पत्रकार बन गये और दोनों पत्रों का संचालन करने लगे। यह क्षेत्र उनके विशेष अनुकूल था। अब उन्हें कक्षा में लेक्चर देकर विश्वविद्यालयीय परीक्षा के लिए मुट्ठी भर छात्र तैयार करने नहीं थे बल्कि पैंतिस करोड़ भारतीयों को स्वतंत्रता का मंत्र पढ़ाना था ताकि 'देश की आजादी' की बड़ी परीक्षा में वे कहीं विफल न हो जाँय। अपने इस उद्देश्य में तिलक कितने सफल हुए वह इस तथ्य से प्रकट होता है कि १८९७ से १९२० तक अंग्रेज शासकों ने उनपर जुल्म ढाये। देशद्रोह का दूसरा मामला सन् १९०८ में उन पर इसलिए चलाया गया था कि सदा के लिए अंग्रेज तिलक से पिंड छुड़ा सकें। १९०७ में सूरत अधिवेशन में कांग्रेस में फूट पड़ी थी और नरम दल वालों ने प्रतिद्वन्दी संघटन बनाया था।

ऐतिहासिक मामला

तिलक ने स्वयं इस मामले में अपनी पैरवी की। समाचार पत्रों की स्वतंत्रता की रक्षा में तिलक की पैरवी का विशेष महत्व है किन्तु जूरी ने तिलक को दोषी करार दिया। जब न्यायमूर्ति डाबर ने उनसे पूछा कि क्या वे निर्णय सुनाने से पूर्व और कुछ कहना चाहते हैं तब तिलक ने ये शब्द कहे थे—"जूरी के निर्णय के बावजूद भी मैं कहता हूँ कि मैं निर्दोष हूँ। मेरी इच्छा है कि जिस पुनीत कार्य के लिए मैं संघर्षरत हूँ उसकी सिद्धि मेरे मुक्त रहने की अपेक्षा कारावास की यातना भुगतने से अधिक सुगमतापूर्वक हो।"

तिलक के ये शब्द अब बंबई हाई कोर्ट की शोभा बढ़ा रहे हैं। मुख्य न्यायाधीश ने इन शब्दों की प्रस्तर शिला का अनावरण करते हुए कुछ वर्ष पूर्व कहा था कि हाई कोर्ट अब ५० वर्ष बाद लोकमान्य तिलक को निर्दोष मान रहा है और अपना निर्णय बदल रहा है। भारतीय स्वतंत्रता के लिए समर्थन प्राप्त करने हेतु तिलक ने ब्रिटेन की यात्रा की जहाँ उन्होंने मजदूर दल से सम्पर्क स्थापित किया और "भारत को स्वशासन देने" की बात मजदूर दल के चुनाव

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

घोषणापत्र में सम्मिलित करवायी। यह तिलक की सबसे बड़ी सिद्धि थी और उनकी दूरदर्शिता का यह एक ज्वलन्त प्रमाण था क्योंकि सन् १९४७ में मजदूर दल की सरकार ने ही भारत को स्वतंत्र घोषित किया।

भारतीय क्रान्ति के जनक

भारतीय क्रान्ति के अधिष्ठाता के रूप में लोकमान्य तिलक चिरस्मरणीय हैं। लोकमान्य भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के शीर्ष सेनानियों में अग्रगण्य तथा भारतीय क्रान्ति के अग्रदूत थे। जीवन पर्यन्त राष्ट्र सेवा में संलग्न तिलक का आदर्श रूप जनजागरण का सर्वदा प्रतीक बना रहेगा। लोकमान्य यद्यपि प्रारंभ से ही कांग्रेस में थे किन्तु वे कांग्रेस की उदार नीति के समर्थक नहीं थे। सन् १८८५ ई० में लार्ड डफरिन एवं ह्यूम के प्रयत्न से कांग्रेस का जन्म हुआ। उस समय कांग्रेस का उद्देश्य था भारत की उन्नति के लिए इसकी एक राष्ट्रीय महासभा होनी चाहिए जो शासन सुधार की अपनी मांगे अंग्रेजी सरकार से बराबर करती रहे ताकि देश की उन्नति हो। डा० ह्यूम के बाद कांग्रेस का नेतृत्व श्री गोपाल कृष्ण गोखले ने किया। वे सुधारवादी नेता थे। उस समय तक स्वराज्य का ध्यान ही किसी को न रहा क्योंकि प्रौढ़ वर्ग सार्वजनिक सुधारों में लग गया था। सन् १८८७ ई० में देश में राजनीतिक चहल-पहल ने जोर पकड़ा और देश के महारथी लोकमान्य तिलक मैदान में आये। उनको मौखिक राजनीति में विश्वास नहीं था। तिलक अंग्रेजी राज्य को हटाकर देश में स्वराज्य की स्थापना करना चाहते थे।

स्वराज्य जन्म सिद्ध अधिकार

'स्वराज्य हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है और उसे हम लेकर रहेंगे"—लोकमान्य तिलक के इस उद्‌घोष ने ब्रिटिश शासन को हिलाते में भूकम्प सा प्रभाव डाला। कांग्रेस के सूत्रधार गोखले और उनके सहयोगी अंग्रेजी राज्य के छोटे-मोटे सुधारों से संतुष्ट थे परन्तु वे व्यवहारिक सुधारों के समर्थक थे। लोकमान्य के विचार के बिना स्वतंत्रता के देश में सुधार संभव न था। अतः उन्होंने सर्वप्रथम स्वराज्य के लिए संघर्ष की घोषणा कर भारतीय क्रान्ति का सूत्रपात किया।

उन दिनों भारतीय युवकों में राष्ट्रीयता का अभाव था। उनमें राष्ट्रीय चेतना विकसित करने का श्रेय भी लोकमान्य तिलक को ही प्राप्त है। लोकमान्य तिलक ने भारतीय युवकों में राष्ट्रीय भावना जागरित करने के लिए महाराष्ट्र में शिवाजी जयन्ती का प्रचलन किया क्योंकि उनका विश्वास था कि महापुरुषों के निकट सम्पर्क से युवकों का आत्मबल विकसित होता है। सारे महाराष्ट्र में शिवाजी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जयन्ती धूम-धाम से मनायी जाती, मनीषी विद्वानों के भाषण होते और उनके वक्तव्यों के द्वारा शिवाजी के आदर्शों पर प्रकाश डालकर स्वराज्य प्राप्त करने पर वल दिया जाता था। ब्रिटिश शासन के लिए यह महोत्सव अहितकर था। तिलक अंग्रेजों की आँखों में पहले से ही खटक रहे थे। अतः शिवाजी जयन्ती तथा रेण्ड हत्याकाण्ड के प्रश्न को लेकर लोकमान्य को अठारह माह की सजा हुयी। लोकमान्य तिलक ने प्लेग अधिकारी रैण्ड के काले कारनामों के विरूद्ध अपने पत्रों में लिखा था। सन् १९०५ में लोकमान्य का प्रभाव राष्ट्र व्यापी हो गया। इन्हीं दिनों पंजाव में राजनीतिक उपद्रव हुए और उनका समर्थन तिलक ने किया।

जेल यातनायें

सन् १९०८ में तिलक को राजद्रोह के मुकदमें में ६ वर्ष की सजा हुयी। तिलक के कारावास का प्रभाव जनता पर वहुत वुरा पड़ा। जनता वहुत उत्तेजित हो उठी। इधर उधर तोड़ फोड़ तथा अन्य छोटे वड़े उपद्रव भी हुए। राष्ट्र में लोकमान्य तिलक के समर्थन में अंग्रेजी सरकार के प्रति घोर विरोध प्रकट किया गया। रंगून में मांडले की जेल यात्रा में आपने "गीता रहस्य" का सृजन किया। "गीता रहस्य" लोकमान्य वाल गंगाधर तिलक की अनुपम कृति है। लोकमान्य अनेक जेल यात्राओं के दौरान भी शासन के लिए सिरदर्द वने रहे।

स्वदेशी आन्दोलन

लोकमान्य तिलक मर्यादावादी राजनेता थे। उन्हें भारत को अपनी संस्कृति और संस्कार के अनुरूप देखना पसंद था। वे अर्वाचीन विज्ञान को ग्रहण कर प्राचीन ज्ञान को भूलना नहीं चाहते थे। सन् १९१४ के जून मास में तिलक कारागार से मुक्त हुए। चार अगस्त सन् १९१४ को प्रथम विश्व युद्ध छिड़ जाने से शीघ्र ही राष्ट्रीय चेतना पुनः जागरित हो गयी और भारत में स्वशासन की मांग को अधिक शक्तिशाली वनाने में तिलक ने अग्रस्थान ग्रहण किया। लोकमान्य तिलक विश्वयुद्ध में अंग्रेजों की सहायता करने के पक्ष में नहीं थे। उन्होंने इसी वीच मौका पाकर ऐसा सवाल खड़ा कर दिया जो वाद में चलकर स्वदेशी आन्दोलन के रूप में व्यापक हुआ। लोकमान्य तिलक ने सर्वप्रथम महाराष्ट्र में स्वदेशी आन्दोलन आरंभ किया। इस आन्दोलन में देश की शिथिल राजनीति गतिशील हो गयी। सन् १९१६ ई० में कांग्रेस के लखनऊ अधिवेशन में लोकमान्य तिलक के सहयोग से नरम और गरम दलों में मिलकर स्वदेशी आन्दोंलन के पक्ष में एक राष्ट्रीय संघटन स्थापित किया। तिलक की धारणा थी कि जव शत्रु संकट में हो तभी मुक्त होने का उपयुक्त अवसर समझकर उसका समूचित उपयोग करना चाहिए।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अतः लोकमान्य तिलक ब्रिटिश शासन में सहयोग के प्रतिफल में यह वचन चाहते थे कि युद्ध के बाद तत्काल भारत को स्वराज्य दे दिया जाय। किन्तु दुर्योग से उदार दल के नेताओं ने बिना शर्त ही सहायता देना उचित समझा। यदि ये उदार विचारवादी लोकमान्य तिलक का समर्थन कर थोड़ा धैर्य का परिचय देते तो अवश्य ही लोकमान्य तिलक जीवित रहते ही स्वतंत्र भारत को देख लेते। उसके बाद सन १९१८ ई० में तिलक ने इंगलैण्ड में कांग्रेस समिति स्थापित की। जीवन के अन्तिम दिनों में भी वे सक्रिय रहे। सन् १९१९ के अमृतसर कांग्रेस अधिवेशन में तिलक ने अन्तिम बार भाग लिया और महामना मालवीय जी के सुधारवादी प्रस्ताव का समर्थन किया।

तिलक और गाँधी

महात्मा गांधी के नेतृत्व में आन्दोलन एक अगस्त से प्रारंभ होने वाला था। लोकमान्य तिलक का यद्यपि ३१ जुलाई सन् १९२० में स्वर्गवास हो गया तथापि आन्दोलन की पृष्ठभूमि पहले से ही तैयार थी। महात्मागांधी ने असहयोग आन्दोलन के संबंध में लोकमान्य तिलक से अनेक बार वार्ता की थी। तिलक की अनेक बार वार्त्ता में वे गांधी जी से यही दुहराया करते थे—"असहयोग आन्दोलन में अभी जिस आत्म त्याग की आवश्यकता है, उसे देश पूरा कर सकेगा, इसमें मुझे संदेह है।" लोकमान्य तिलक का संदेह सत्य प्रमाणित हुआ। महात्मा गांधी ने आन्दोलन को अहिंसा के ताने-बाने में बुना था किन्तु जब चौरीचौरा काण्ड को लेकर हिंसा का रंग उस पर चढ़ाया गया तो राष्ट्रपिता ने तत्काल आन्दोलन को स्थगित कर देना ही श्रेयस्कर समझा। तिलक ने भारतीय स्वतंत्र्य संग्राम की नींव रखी और महात्मा गांधी ने उसे पूरा किया।

महान संपादक

लोकमान्य तिलक एक महान संपादक थे। आपकी विद्वतापूर्ण रचनाओं का राजनीतिक एवं सांस्कृतिक महत्व है। अपनी कृतियों के माध्यम से लोकमान्य ने देश विदेश में महान जागृति की। अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के विचारक एवं चिन्तक थे। आपने 'मार्गशीर्ष' 'आर्यो का उत्तर पूर्व निवास' तथा 'गीता रहस्य' नामक ग्रंथों का संपादन किया। लोकमान्य की रचना 'मार्गशीर्ष' को देखकर यूरोप के विद्वान मैक्समूलर ने ब्रिटिश सरकार से निवेदन किया कि बालगंगाधर तिलक जैसा प्रकाण्ड पंडित जेल की यातना भुगते यह शोक का विषय है। कहा जाता है कि विद्वान मैक्समूलर के इन उदगारों के कारण समय से दो मास पूर्व ही लोकमान्य बन्दी गृह से मुक्त कर दिये गये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हिमालय की भांति दुर्गम

लोकमान्य तिलक सिद्धान्त के अटल और मर्यादाशील राजनेता थे। तिलक निडर और स्पष्टवक्ता थे। वे राष्ट्रीयता के पुजारी थे। राष्ट्रपिता बापू के शब्दों में—"लोकमान्य तिलक की देशभक्ति उनके हृदय की वस्तु थी। देशप्रेम उनका प्रमुख धर्म था। उनका जीवन एक खुले ग्रन्थ जैसा था। उन्हें सादगी पसन्द थी। वे आडम्बर रहित थे। उनका व्यक्तिगत जीवन अत्यन्त विमल था। उन्होने अपनी सम्पूर्ण चमत्कारी प्रतिभा का उपयोग राष्ट्र सेवा में किया। उनमें साहस का अभाव कभी नहीं देखा गया। निःसंदेह तिलक ने अपने जीवन के चालीस वर्षों में स्वराज्य के लिए जो संघर्ष किया आज वह साठ करोड़ जनता की सुख एवं समृद्धि का कारण बन गया है।" महात्मा गांधी ने तो लोकमान्य को प्रथम दर्शन में ही परख लिया था—"तिलक हिमालय की भांति दुर्गम और दुर्धर्ष थे।"

२४ जनवरी सन १९६२ में भारत के अन्तिम गवर्नर जनरल लार्ड माउन्टबेटेन ने लंदन में लोकमान्य तिलक स्मारक भवन का शुभारंभ किया। इस अवसर पर अपने-अपने भाषण में कहा—"कहने की आवश्यकता नहीं कि लोकमान्य तिलक भवन के शुभारंभ के लिए आमंत्रित होने का मैं अपना महान गौरव एवं सम्मान मानता हूँ।"

आम तौर पर लोग यही जानते हैं कि आधुनिक भारत के निर्माता महात्मा गांधी ही हैं तथापि स्वयं महात्मा गांधी ने ही यह उपाधि लोकमान्य तिलक जी को दे रखी है। वे अपने जीवन काल में ही स्वराज्य की पूर्णतः स्थापना देख लेना चाहते थे। यदि ऐसा नहीं हो पाया तो इसमें दोष उनका नहीं। उन्होंने तो स्वराज्य को अनेकशः सन्निकट ला ही दिया था। अन्ततः मेरे विचार से हमारी स्वाधीनता की सर्वप्रथम सुरक्षा लोकमान्य तिलक जैसे महापुरुषों के पदचिन्हों पर चलने में है—जिस स्वाधीनता के लिए वे सदैव संघर्षरत रहे।

—सहायक शिक्षक
एस० पी० विद्यामन्दिर, बक्सर
(भोजपुर)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एक उग्रवादी नेता के रूप में तिलक का योगदान

□ ओमप्रकाश राय

उग्रवाद के प्रमुख नेताओं में लाल, बाल, पाल की जिस त्रिमूर्ति का विवरण दिया जाता है, उनमें बालगंगाधर तिलक का नाम सबसे अग्रणी है। उन्होंने उग्रवाद की स्थापना में तथा इसे रूप देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, और जीवन पर्यन्त भारतीय राजनीति को उस राजनीतिक साधुवाद से मोड़ने का प्रयास करते रहे जिसमें आरम्भिक कांग्रेस की आस्था थी। तिलक का जीवन उस प्रथम राष्ट्रीय नेता का जीवन है जिसने राष्ट्रीय सेवा के लिये सभी प्रकार के कष्ट भोगे, तीन बार जेल की यात्रा की और अपने राजनीतिक विचारों के कारण जिसे लगातार संघर्ष करना पड़ा।

बम्बई का कोंकण प्रदेश महत्वपूर्ण राष्ट्रवादियों के लिये प्रसिद्ध है। इस क्षेत्र में २३ जुलाई १८५६ को तिलक का जन्म हुआ। परिवार ने इन्हें बहुत ही छोटा नाम दिया 'बाल' अर्थात बच्चा, जो पिता के नाम से जुड़कर बालगंगाधर तिलक कहलाया। तिलक अपने पिता के अकेले पुत्र थे, और एक सामान्य मध्यम वर्गीय परिवार में उस समय जितनी अच्छी शिक्षा दी जा सकती थी उन्हें दी गयी। वे मेधावी छात्र थे। जिसका प्रमाण १८७७ की बी० ए० परीक्षा से मिला, जो उन्होंने प्रथम श्रेणी में पास की। दो वर्ष बाद कानून की डिग्री लेकर शिक्षा पूरी की। महाराष्ट्र के जिस युग में तिलक युवा हुये वह युग ऐसा युग था जिसमें बहुत से लोग सरकारी नौकरी के लिये दौड़ रहे थे। लेकिन तिलक ने कभी भी सरकारी नौकरी के लिये आवेदन पत्र नहीं दिया।

उनके जीवन काल को विशेष रूप से तीन भागों में बांट सकते हैं—(१) १८५६ से १८९१ तक (२) १८९१ से १९१४ तक (३) १९१४ से १९२० तक का काल, आरम्भिक काल में जिसका कुछ विवरण हम ऊपर दे चुके हैं। तिलक ने जीवन यापन के दो रास्ते चुने, एक शिक्षा दूसरा पत्रकारिता। एक नया हाईस्कूल उन्होंने स्थापित किया, तथा संचालिम किया, दक्षिण शिक्षा संस्था की स्थापना की, और इस प्रकार इस संस्था के सहारे महाराष्ट्र

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में विशेष रूप से पूना में शिक्षा के प्रसार में कार्य किया। १८८१ का वर्ष उनके जीवन का महत्वपूर्ण वष साबित हुआ, जब २५ बर्ष की आयु के इस युवक ने अपने ही साधनों से दो समाचार पत्रों को निकाला। एक मराठी में 'केशरी' दूसरा अंग्रेजी में 'मराठा'। इन दो समाचार पत्रों में तिलक हमेशा लिखते रहे, और उनकी राजनीतिक विचार धारा इन पत्रों के माध्यम से हमेसा लोगों तक पहुँचती रही। राजनीतिक शिक्षा का कार्य भी इन्हीं समाचार पत्रों के माध्यम से किया गया।

१८८९ में तिलक कांग्रेस में आये और लगातार राष्ट्रीय कार्यों में उन्होंने अपना जीवन बिताया। १८९५ तथा ९६ ये दो ऐसे वर्ष हैं, जब राजनीतिक सरगर्मी अचानक महाराष्ट्र में तेज हो गई। इन्हीं वर्षों में महाराष्ट्र में प्लेग फैला तथा १८९७ के प्लेग में अंग्रेज कमिश्नर रेण्ड (RAND) की हत्या कर दी गई। चापरकर बन्धुओं को इस हत्या के लिये दोषी माना गया। तिलक ने जब रेण्ड की हत्या पर टिप्पणी की तो दूसरी बार उन्हें छ महीने के लिये कारावास भोगना पड़ा। इस समय से वे स्थानीय नेता से एक राष्ट्रीय नेता बन गये।

इन्हीं वर्षों में तिलक ने शिवाजी उत्सव तथा गणेश उत्सव आरम्भ किया। इन उत्सवों का आरम्भ एक प्रकार से उग्रवाद का आरम्भ माना जाता है। शिवाजी को राष्ट्रीय नेता के रूप में प्रस्तुत करके और गणेश उत्सव व्यापक पैमाने पर मनाने का कार्य करके तिलक ने सांस्कृतिक धार्मिक धारा को राजनीति से जोड़ दिया। इस कारण उग्रवाद का आधार भारतीय धर्म तथा सांस्कृति हो गया।

१९०५ से ८ के बीच उग्रवाद अपने सबसे प्रबल रूप से राष्ट्रीय धारा के रूप में दिखाई दिया। बनारस के कांग्रेस अधिवेशन तथा सूरत एवं कलकत्ता के अधिवेशन में तिलक की छाया स्पष्ट रूप से दिखाई दी। तिलक यानी ऐसा व्यक्ति जो अपने सिद्धान्तों पर अडिग था, जो अपने विचार समाचार पत्रों के माध्यम से पहले ही व्यक्त कर चुका था और जो नौकरशाही को चुनौती देने के लिये परम्परागत राजनीति से हट कर कुछ नये प्रकार की राजनीति का हिमायती था। कांग्रेस में भी ऐसा ही हुआ जो समय के साथ-साथ बढ़ता ही गया।

१९०६ की कलकत्ता की कांग्रेस में यदि राष्ट्रीय शिक्षा का बहिष्कार किया गया तो इसमें तिलक का महत्वपूर्ण योगदान रहा, तथा यहाँ देखा गया कि कांग्रेस पर उग्रवाद हावी होता जा रहा है। एक ओर १९०७ के आरम्भ होते ही कलकत्ता के मैदान में तिलक अपने नये राष्ट्रीय दल के सिद्धान्तों पर प्रकाश डाल रहे थे और दूसरी तरफ उनके बिरोधी उग्रवाद को कमजोर बनाने की योजना बना रहे थे। यह संघर्ष वर्ष भर लगातार चलता रहा, दो भिन्न विचारों का टकराव

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कांग्रेस के भीतर व्यक्तियों की टकराहट में बदल गया। दिसम्बर १९०७ में जब सूरत का अधिवेशन हुआ तो तिलक कांग्रेस के विभाजन के लिये कतई तैयार नहीं हुये न इन्हें ऐसी आशंका थी, पर फिर भी उग्रवादियों को कांग्रेस से हटा दिया गया।

१९०८ में तिलक के सामने दो विकल्प थे। वे या तो शान्त हो सकते थे या फिर अपने विचारों के लिये कष्ट सहने को तैयार हो जाते। उन्होंने दूसरा रास्ता चुना। सरकार उग्रवादियों के दमन हेतु कमर कसे हुये थी। उग्रवादी के लिये सुधार की योजना तथा उग्रवादी के लिये दमन की नीति, यही ब्रिटिस सरकार का लक्ष्य था। और व्यक्ति समाचार पत्रों में लगातार लिख रहा हो उसकी लेखनी के लिये कभी भी देशद्रोह भड़काने वाले विचार लिखना कठिन नहीं था। १९०८ में तिलक के ऊपर कोर्ट में मुकदमा चला और उन्हें छ माह की सजा मिल गई। बंबई हाईकोर्ट में जब न्यायाधीश ने तिलक से पूछा कि वे अपने पक्ष में कुछ कहना चाहते हैं, तो उन्होंने निम्न वाक्य कहा—"मनुष्य के भाग्य का निर्णय करने के लिये कुछ ऊँच शक्तियाँ होती हैं, और यह सम्भव है कि ईश्वर को यही इच्छा हो कि जिस कार्य का मैं प्रतिनिधित्व कर रहा हूँ, वह मेरे कष्ट सहने से अधिक सफल हो—बजाय मेरे स्वतंत्र रहने के।' यह वाक्य तिलक के जीवन दर्शन को प्रतिविम्बित करता है। ईश्वर पर आस्था रखने वाला एक राजनीतिज्ञ जो सरकार से प्रार्थना करने के बजाय चुनौती देना अच्छा समझता है तथा जो परतन्त्र रहने के बजाय कष्ट सहना अच्छा समझता है। यहीं से भारतीय राजनीति में देश के लिए अधिक से अधिक उत्सर्ग करने की भावना बढ़ी, और तिलक एवं उनके मित्र राजनीतिज्ञ देश के लिये अधिक से अधिक योगदान देने एवं कष्ट उठाने को तैयार हुये।

१९१४ में तिलक अपने कारावास का समय पूरा करके अपने नगर वापस आ गये, तिलक के जीवन का मूल्यांकन करने वाले उनके जीवन के अन्तिम छ वर्षों पर ध्यान नहीं देते। कुछ इतिहासकार यह कहते हैं कि मांण्डले जेल से निकल कर तिलक के विचार बदल गये थे। प्रत्येक राजनेता तथा परिस्थिति के अनुसार अपनी राजनीति में परिवर्तन करता है। हो सकता है तिलक को ऐसा ही करना पड़ा हो। १९१४ से १८ के बीच प्रथम महायुद्ध के समय, सरकार राजनीतिक चुनौती को बर्दास्त करने के पक्ष में एकदम तैयार नहीं थी। पर तिलक ने इस समय भी होमरुल आन्दोलन चलाया जो दूसरे शब्दों में स्वराज माँग पर आधारित था। तिलक ने स्वराज की व्याख्या कभी नहीं की। क्योंकि परिस्थितियाँ कुछ इस प्रकार की थीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सिद्धान्त तथा लक्ष्य में स्पष्टीकरण का युग नहीं था पर वे लगातार अपने आवेशों के प्रति संघर्ष करते रहे। युद्ध के बाद के वर्ष ऐसे वर्ष रहे, जब राजनीतिक रूप से परिवर्तन का समय दिखाई दे रहा था। इसी समय १ अगस्त १९२० में तिलक का देहावासन हो गया, एक प्रकार से राजनीतिक मंच से तिलक ने हट कर महात्मा गाँधी के लिये रास्ता तैयार कर दिया, यह एक दूसराही प्रश्न है कि यदि तिलक जीवित रहते तो फिर क्या कांग्रेस का नेतृत्व गाँधी जी को मिल पाता अथवा उन्हे प्रतीक्षा करनी पड़ती।

अन्त में यह ध्यान देने योग्य है कि जो व्यक्ति लगातार लिखता रहा हो, उसने राजनीति पर कोई पुस्तक नहीं लिखी। मांण्डले जेल में जब उन्हें समय मिला तो 'गीता रहस्य' की प्रसिद्ध पुस्तक मराठी भाषा में गीता की व्याख्या तन्त्र कर्मयोग के सिद्धान्त पर विषद रूप से चर्चा करते हुये लिखी। 'आर्यो का आदि देश उनकी दूसरी पुस्तक थी, इस प्रकार उन्हें जो भी थोड़ा समय मिला उसमें उन्होंने राजनीति से इतर विषयों पर अपने विचार प्रकट किये।

□

(पृष्ठ २१५ का शेष)

के महत्व—प्रतिपादन के लिए उन्होंने "राष्ट्रीय उत्सवों की आवश्यकता" नामक लेख लिखा। उन्होंने मेलों पर भी अधिक जोर दिया।

लोकमान्य तिलक एक शिक्षा प्रेमी थे परन्तु इसका मतलब यह नहीं कि वे शिक्षाच्युत थे। लोकमान्य तिलक गणित एवं संस्कृत के महापंडित थे। इनका सारा परिवार ही विद्वता की छाया में था। इनके पिता महान विद्वान थे। उन्होंने तिलक से कहा था कि अगर तुम एक श्लोक याद करोगे तो एक पाई दूंगा। बचपन में इन्होंने अनेक श्लोकों को रटा और पिता से प्रति श्लोक एक पाई जीता। बड़े होने पर जब वे स्कूल में पढ़ने जाने लगे तब कि बात है कि—वे पढ़ने में अत्यन्त मेघावी थे। उनको एक बार एक हिसाब को ब्लैक बोर्ड पर हल करने को कहा गया। वे तुरन्त ही उस हिसाब को मौखिक हल कर दिए तथा कहे कि चॉक से हाथ कौन बिगाड़े।

इस तरह के थे लोकमान्य तिलक और इनका था गहरा शिक्षाप्रेम।

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शिक्षाप्रेमी लोकमान्य

□ कुमार तिलक
नवम 'ब'

लोकमान्य तिलक एक विद्वान थे। उनका ज्ञान बहुत गम्भीर था। वे तेजस्वी दूरदर्शी थे और बहुत बड़े शिक्षा प्रेमी थे। लोकमान्य शिक्षा का महत्व जानते थे। शिक्षा से ही जन-जागरण संभव है, इसलिए इन्होंने "न्यू इंगलिश स्कूल" की स्थापना की। इस स्कूल की इतनी अधिक प्रगति हुई कि यह सारे भारत में एक मात्र अच्छा स्कूल बन गया। तभी तो शिक्षा आयोग के अध्यक्ष सर विलियम हंटर ने कहा था कि—"इस स्कूल की प्रगति देखते हुए मैं बहुत प्रसन्न हूँ और मैं निश्चय पूर्वक यह कह सकता हूँ कि सारे भारत में इसकी बराबरी करनेवाला एक भी स्कूल मेरे देखने में न आया। बिना किसी प्रकार का अनुदान लिए यह सरकारी हाई स्कूल की बराबरी ही नहीं बल्कि इससे होड़ भी कर सकता है। दूसरे देशों के स्कूलों से तुलना करने पर भी इसका नंबर सबसे ऊपर आएगा।

'न्यू इंगलिश स्कूल' की स्थापना के बाद जनता में राष्ट्रीय विचारों के प्रचार-प्रसार और नवजागरण लाने के लिए लोकमान्य तिलक ने पत्रों का प्रकाशन प्रारंभ किया। १८८१ ई० में उन्होंने "केसरी" नामक पत्र का प्रकाशन आरंभ किया। यह पत्र मराठी भाषा में निकलता था। परन्तु इसके बाद यह विचार सामने आया कि मराठी भाषा का पत्र तो केवल महाराष्ट्र प्रदेश में ही लोकप्रिय हो सकता है। इसलिए उन्होंने अपने विचारों को अन्य प्रान्तों तक पहुँचाने के लिए "मराठा" नामक एक और पत्र अंग्रेजी में निकालना प्रारम्भ किया। इन पत्रों ने अपनी निर्भीक एवं ओजस्वी वाणी से जनता के प्राणों में नव-जागृति का मंत्र फूका। स्वतंत्रता की आवाज जन-जन तक पहुँचाने में तिलक को आशातीत सफलता मिली। "न्यू इंगलिश स्कुल" की स्थापना में जिस तरह तिलक ने अपनी कर्मठता का परिचय दिया उसी तरह "केसरी" की स्थापना में। तिलक विशेप कर शिक्षा के मामले में बचपन से ही दूरदर्शी थे। राष्ट्र केवल शिक्षित व्यक्तियों से ही नहीं बनता परन्तु अशिक्षित व्यक्तियों से भी बनता है। अतः इन्होंने इस अनुष्ठान की पूर्ति के लिए "गणेश—उत्सव" एवं 'शिवाजी—उत्सव' प्रारंभ किए। इन उत्सवों

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक एक स्वतंत्र योद्धा

□ सुजित कुमार
नवम 'व'

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक जी का जन्म महाराष्ट्र के रत्नागिरि जिले के चिरवल नामक ग्राम में सन् १८५६ के २३ जुलाई को हुआ था।

इनके पिता श्री गंगाधर तिलक जी विद्यालय के उपनिरीक्षक थे। लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक जी अपने पिता जी तथा अन्य स्वजनों की कृपा दृष्टि से बचपन से ही अत्यन्त मेधावी थे। ये गणित तथा संस्कृत में बहुत तेज थे।

तिलक जी निर्भीक उत्साही कर्मठ एवम् दूरदर्शी थे तथा अन्याय से लड़ने वाले एक वीर थे। उनके चरित्र की दृढ़ता जो कि प्रसिद्ध है। पर एक कहानी है कि एक बार बाल्यावस्था में इनके विद्यालय के सहपाठियों ने मूँगफली के छिलके अपनी कक्षा में बिखेर दिये। बाद में अध्यापक द्वारा पूछे जाने पर किसी ने नहीं बताया। इस पर अध्यापक रुष्ट हो गये और उन्होंने सभी को दो-दो बेंत लगाना आरम्भ किया। पर तिलक ने इसका प्रतिरोध किया, जिसके कारण वे स्कूल से निकाले गये थे। तिलक जी ने अन्याय के सामने झुकना कभी स्वीकार नहीं किया।

तिलक जी ने सन् १८७९ ई० में एल०एल० बी० की परीक्षा उत्तीर्ण की। इन्होंने देश सेवा करने का संकल्प लिया था। सागर की गहराई एवं अजेयता दोनों ही तिलक जी में कूट-कूट कर भरी थी।

उन्होंने अपनी स्वार्थ रहित त्याग कठिन तपस्या एवं दूरदर्शिता से देश की जंजीरों में जकड़ी हुई स्वतंत्रता से लोगों को परिचित कराया। सुसुप्त भारत को उसके स्वाभिमान से परिचय कराकर नव जागृति का मूलमंत्र फूँका।

यद्यपि उन्होंने दासता की बेड़ियाँ नहीं तोड़ी फिर भी वे देशवाशियों को उसकी कुंजी दे गये थे। तिलक जी रौलेट समिति के अनुसार बहुत खतरनाक थे।

उन्होंने देश के नवयुवकों को जागृत करनें के लिए "केसरी' नामक समाचार पत्र को अपना साधन बनाया। उन्होने 'केसरी' द्वारा जनता को अंग्रेजी सरकार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

की हुकूमत के खिलाफ खूब भड़काया। इस कार्य का पुरस्कार उन्हें जेल की यातनाएँ सहकर प्राप्त करना पड़ा। फिर इनके जेल जाने का क्रम चलने लगा।

सन् १८९६ ई० में सरकार ने इन पर राज-द्रोह का झूठा मुकदमा चलाकर डेढ़ वर्ष का कठोर कारावास का दंड दिया। उस जेल यातना का बुरा असर पड़ा जिससे उनके भार में ११ किलो ग्राम की कमी हो गयी।

फिर १९०६ ई० में जब तरुण शहीद खुदीराम बोस ने अंग्रेज अफसर पर बम फेंका, जिसमें अफसर न मरकर दो अंग्रेज औरतें मारी गईं। इस कारण फिर तिलक जी गिरफ्तार हो गये। उनको ६ वर्ष की कठोर कालापानी की सजा दी गयी। देशवासी यह घटना सुनकर स्तंभित हो गये। सारे शहरों में हड़ताल शुरु की गई थी। देश की सभी राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं में इस अन्याय की खुल कर आलोचना की गई परन्तु सरकार ने उसका दमन बड़े जोर-शोर से शुरु किया।

लोकमान्य तिलक को बर्मा में मांडले के जेल में रखा गया। वहाँ उनके साथ बुरा बर्त्ताव किया गया। फिर भी उन्होंने सुविधा की मांग नहीं की। इस लम्बी अवधि में उन्होंने "गीता-रहस्य" नामक किताब लिखी। इस अवधि में उनका स्वास्थ्य गिरता गया। अन्त में १६ जून १९१४ ई० को इन्हें जेल से छोड़ा गया।

अंग्रेज सरकार की यातनाए इनके विचार को बदल न सकी। यहाँ तक कि उनकी पत्नी (जो कि शास्त्रों के द्वारा मनुष्य की अर्द्धांगनी कहलाती है) की मृत्यु का दुखद समाचार भी उन्हें कर्म से च्युत नहीं कर सका।

तिलक जी कांग्रेस के नरम एवं गरम दलों में झगड़ा नहीं होने देना चाहते थे, अतः उन्होंने श्रीमती एनीबेसेन्ट के साथ मिलकर अपने अधिकारों की प्राप्ति के लिए होमरुल की स्थापना की। उनका कहना था कि "अपने को होमरुल कहो, जब तुम उसके लिए तैयार होगे तो अवश्य मिलेगा।" तिलक जी पर अंग्रेजों के द्वारा अनेक निराधार आरोप लगाये गये, क्योंकि वे चाहते थे कि तिलक को किसी तरह पकड़ लें।

प्रथम विश्व युद्ध के बाद जब अंग्रेजों ने भारत में कठोर दमन शुरु किया तो वे तुरन्त इंगलैण्ड से भारत लौट आए। यह तिलक जी की सच्ची देशभक्ति का सच्चा नमूना था।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जीवन के अन्तिम चरण में वे ६४ वर्ष की आयु में स्वर्गलोक सिधार गये। एक छोटी सी बीमारी के पश्चात ३१ जुलाई १९२० ई० को उनकी मृत्यु हो गयी। बम्बई में इनकी अंत्येष्टि क्रिया बहुत धूमधाम से हुई।

भारत को स्वतंत्र कराने में लोकमान्य जी का महत्वपूर्ण और चिरस्थायी हाथ है।

"स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। उसे हम लेकर रहेंगे।' तिलक जी का यह नारा हमें निरंतर आगे बढ़ने का निर्देश देता रहेगा। यह नारा हम बालकों के लिए प्राणदाता एवम् आदर्श बना रहेगा। उनके आदर्श एव कर्म आजादी के दिवानों को हमेशा उत्प्रेरित करते रहेंगे।

ऐसे सच्चे वीर बनों तुम, भारत माँ के लाल।
जिनके कारण हुआ देश का, जग में ऊँचा भाल॥

"आजादी अधिकार हमारा"
यही एक था जिसका नारा,
भारत के जन-जन का प्यारा,
फँसा सका था जिसे न बिल्कुल,
धन-पद का जंजाल।
'लोकमान्य' से बनो वीर तुम,
भारत माँ के लाल॥

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लोकमान्य

□ श्री ललितेश्वर राय, बी० ए०

"गुणिगण गणनारम्भे न पतति कठिनी 'सुसम्भ्रमाद्यस्य।
तेनाम्बा यदि सुतिनी वद वंध्या कीदृशी भवति॥"

इन्हीं भावों को भाषा के किसी कवि ने इन शब्दों में व्यक्त किया है :—

'गुणवन्तन में जासु सुत प्रथम गिनो न जाय।
पुत्रवती वह मात तो बन्ध्या कौन कहाय॥
माता जने तो भक्त जन, कै दाता कै शूर।
नाहिं तो तू बाँझ रह काहे गँवाये नूर॥"

हम सर्वप्रथम उस महीयसी माता..............का पुण्य स्मरण करते हुए श्रद्धावनत हैं जिसने बालगंगाधर तिलक जैसे लोकमान्य पुत्र को जन्म दिया। बाल गंगाधर तेजस्वी थे। ऐसी तेजस्विता को जन्म देने वाली प्राची स्वरूपा माँ की कीर्त्ति से दिगदिगन्त प्रभामण्डित हो ही जाता है।

लोकमान्य बाल गगाधर तिलक महान् थे। मन, बचन और कर्म से एक। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के एक अपराजेय महारथी योद्धा, सर्वतो भावेन समर्पित देश भक्त और एक महान् कर्मयोगी थे वे। वे विविध विद्यानुरागी, तत्त्वाभिनिवेशी, उद्‌भट पण्डित तो थे ही। उनकी अप्रतिम मनस्विता एवम् उत्कट देशभक्ति को भास्वर करने वाला उनका स्वतंत्रताभिमानी अकुतोभय व्यक्तित्व इतिहास पुरुष के कीर्त्तिदीप्त भाल का तिलक है।

कर्मयोगी तिलक की प्रतिभा अद्‌भुत थी। वे 'गीता रहस्य' 'कर्मयोग शास्त्र' उद्‌गाता, वेद-विद्या के उपासक, शास्त्र चिन्तक, इतिहासविद्, ज्योतिर्विद्या के मर्मी तथा संस्कृत एवं गणित के पारंगत पण्डित थे। लोकमान्य के वैदुष्य से पाश्चात्य विद्वान भी अभिभूत थे। इनके अगाध ज्ञान गरिमा के मांक्षमूलर (मैक्समूलर) प्रभृति पौर्वात्य विद्यानुरागी पाश्चात्य पण्डित मुक्तकंठ से प्रशंसा किया करते थे और उनके मन में लोकमान्य की प्रतिभा के प्रति श्रद्धा भाव थी।

वे हिमवान् की तरह उन्नत, गंगा की तरह पावन एवं लोक कल्याणकारी तथा समुद्र की तरह गम्भीर थे।

मान-अपमान से ऊपर उठकर उन्होंने देश की सेवा की। विषपायी शकर की तरह उन्होंने गरल पान किया। ब्रितानी शासन की दुस्सह यातना तो वे प्रसन्न मन लिये झेलते ही रहे। नरम दलीय नेताओं का विष वमन भी उन्हें म्लान मन नहीं कर पाया। अभंग देश-सेवा-व्रत का पालन करते हुए ही उन्होंने अपने प्राणों का उत्सर्ग किया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शंकराचार्य की ज्ञान गरिमा, शिवजी का शौर्य और विवेकानन्द का उत्कट देश प्रेम तिलक के व्यक्तित्व में मूर्तिमन्त हुआ था।

महामति आर्य चाणक्य की संकल्पपूत दिव्य वाणी का एक-एक शब्द मूर्त्तिमान चाणक्य-प्रतिभा चाणक्य संकल्प लोकमान्य तिलक के कर्मयोगी जीवन सूत्र को व्याख्यायित कर रहा है —

व्यायामिकोऽस्मि चतुरोऽस्मि विचक्षणोऽस्मि।
विद्याधरो स्मि पटुरस्मि न चास्मि भीरुः ॥
कार्यं करोमि सततं न च सिद्धिरस्ति।
दैवं न संवहति कोऽत्र ममापराधः ॥

चाणक्य —

मैं पुरुषार्थी हूँ अर्थात् सत्य की सेवा में अवश्य उत्साही हूँ, चतुर हूँ। विलक्षण बुद्धिमान हूँ विद्वान हूँ, अर्थात् अभ्रान्त सदाद्विचारशीलता की विकसित मूर्त्ति हूँ, कर्म कुशल हूँ, कायर अर्थात् असुरी वृत्ति-विरोध रूपी कर्त्तव्य से पराङ्मुख होने वाला नहीं हूँ, कर्त्तव्य मूढ हो नहीं सकता, सतत् कर्त्तव्य पथ पर अग्रसर रहता हूँ, फिर भी यदि भौतिक विजय नहीं मिलती, सिद्धि के दर्शन नहीं होते और दैव सहायता नहीं करता तो इसमें मेरे लिए पश्चात्ताप का कोई कारण नहीं है।

आदर्श राष्ट्र निर्माण की जीवन्त बुभुक्षा, प्रज्ञा की अलौकिक मूर्त्ति आर्य चाणक्य का यह आत्म-विश्वास प्रत्येक प्रबुद्ध राष्ट्र सेवक के अपने ही हृदय की प्रति ध्वनि है। सत्याग्रही, संकल्पित देशभक्त स्वातंत्र्य भावना से उद्‌बुद्ध होकर राष्ट्र सेवक की जो लोककल्याणी निंभ्रन्ति योजना बनाता है, वह किसी यश-मान लिप्सु अज्ञानी व्यक्तित्व के वासना मलिन मन का अविष्कार न होकर 'स्वतंत्रता हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है और हम उसे लेकर रहेंगे, के हठीले ज्ञानी हृदय के प्रत्यक्ष अनुभूति सत्य की अभिव्यक्ति होती है।

लोकमान्य तिलक धीर पुरुष थे, न्याय मार्ग से कभी विचलित होने वाले नहीं थे। वे उन महापुरुषों में सम्पूज्य थे, जिनके संकल्प के प्रति यह निभ्रन्ति धारणा है —

"निन्दन्तु नीति निपुणाः यदिवास्तुवन्तु लक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम्।

अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा, न्याय्यात् पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः ॥

लोकमान्य के आदर्शों का ही नैवेद्य अर्पित कर हम उनके पावन चरित्र से कर्त्तव्य पथ पर अविचलित निर्भय आगे बढ़ते रहने की प्रेरणा लेते हैं।

'अनुव्रतः पितुः पुत्रो।' □

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तिलक जी एक आदर्श पुरूष

□ श्री सिद्ध नाथ ठाकुर
सहायक शिक्षक

"स्वतंत्रता है जन्म सिद्ध अधिकार हमारा,
बीज मंत्र को बना देश की चिन्ता धारा।
लोक शक्ति को नयी दिशा दी तुमने प्रभवर,
कोटि-कोटि ब्रह्र्षि झुकाते श्रद्धा से सर ।।
—"खाक बनारसी"

कवि ने लोकमान्य की भारतीय वाङ्मय में उपादेयता की झाँकी केवल दो पंक्तियों में प्रस्तुत किया है। व्यक्ति समाज, देश एवं काल को किस तरह प्रभावित कर सकता है, इसका उत्कृष्ट उदाहरण हमें लोकमान्य के जीवन में मिलता है।

ब्रह्र्षि कुलोत्पन्न, किसानी-जीविका में पलित, चित्त से पावन, 'बाल' नाम से बचपन बिताने वाले, इतिहास प्रसिद्ध पेशवा कुल से संबधित लोकमान्य से विभूषित भारतीय संस्कृति के महान पंडित एवं आचारी, सस्कृत के प्रसिद्ध विद्वान श्री रामचन्द्र तिलक के पुत्र रूप में लोकमान्य का आर्विभाव महाराष्ट्र के रत्नगिरि जिले में २३ जुलाई १८५६ ई० को हुआ था। इनके माता का देहावसान बाल्यावस्था में हो गया था तथा जब १६ वर्ष के थे तब इनके पिताजी भी इनका साथ छोड़ दिये।

बाल के पितामह सन्यासी हो चुके थे। इन्हें नाना साहब, तात्या टोपे, झाँसी की रानी आदि की कहानियाँ सुना-सुनाकर इनके 'बाल' हृदय फुलवारी में ऐसा बीज बो दिया जो समय पाकर अंग्रेजी शासन की नींव खोद डाली। अगर कृष्ण का जन्म कारागार में हुआ तो उनके द्वारा कही गीता का रहस्य कारागार में ही तिलक की लेखनी द्वारा प्रस्फुटित हुआ।

"कर्मण्ये वाधिकारस्ते'.......की व्याख्या लोगों को असीम एवं कठोर कर्त्तव्य पालन की प्रेरणा देने लगी। एक तरफ 'शिवाजी उत्सव' एवं 'गणपति उत्सव' मनाने के साथ-साथ हिन्दुओं में वीर भावना एवं राष्ट्रीय चेतना जागृत की तो दूसरी तरफ 'मराठा एवं केसरी नामक समाचार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पत्रों द्वारा देशभक्ति का संदेश फूंका। अपने आचरण, वेश-भूषा खान-पान आदि से उन्होंने लोगों के अंदर स्वदेश एवं स्वदेशी का प्रेम जगाया।

सर वेलेन्टीन शिरौल की दृष्टि में तिलक भारतीय विप्लव के जन्मदाता थे और नौकरशाही उन्हें अपना कट्टर शत्रु समझती थी। उन्होंने राष्ट्रीय आंदोलन में

"अग्रतश्चतुरो वेदा: पृष्टत: सशरं धनु:
इदं ब्राहमं इदं क्षात्रं शायादपि शरादपि ॥"

तथा तुलसीदास की वाणी 'बिनु भय होहिं न प्रीति' को चरितार्थ करने का आदर्श प्रस्तुत किया। डा० एनीबेसेन्ट के शब्दों में "यदि भारतवर्ष की जनता में राजनीतिक चेतना पर्याप्त मात्रा में होती तो तिलक क्रोमवेल के समान देश के सफल नायक होते" भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू इन्हें भारतीय राजनीतिज्ञों के प्रेरणा स्रोत मानते थे।

संदेश में तिलक जी में आदि गुरु शंकराचार्य की भारतीय संस्कृति के प्रति प्रेम, महाराणा प्रताप की निर्भयता, शिवाजी का देश प्रेम, तात्या टोपे जैसा कष्ट सहने की शक्ति, भाई मतीदास जैसा सत्य धर्म पालन करने का अद्भूत साहस निहित था। उनका यह विचार कि भारत के आजादी मिलने पर वे गणित के प्राध्यापक के रूप में देश की सेवा करेंगे, हमें सेवा के लिए निःस्वार्थ सेवा की प्रेरणा देता है। ये थोड़े से भाव उनकी याद में समर्पित है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तिलक

□ श्री उमाशंकर राय
प्राचार्य, शिव प्रसाद उच्चविद्यालय, बक्सर

संघर्ष एवं विप्लव की प्रतिध्वनि महामानव लोकमान्य तिलक के जीवन पर्यन्त कृत्यों में स्पष्ट रूप से सुनायी पड़ती है, जिसकी प्रेरणा आज के संत्रस्त, भयभीत एवं जड़ता में लिप्त मानव सक्रिय रूप से पाता है। आज के संदर्भ में उस युग पुरुष से हम कहाँ तक लाभान्वित हो सकते हैं: पीड़ित मानवता का उद्धार कर सकते हैं, 'स्वराज्य' शब्द को अपने दैनिक जीवन में रूपान्तरित कर सकते हैं, यह निश्चय ही विचारणीय है। यहाँ पर दो चार शब्दों में लोकमान्य के दिव्य एवं अमर संदेशों से अभिप्रेरित एवं अनुप्राणित करना ही लेखन का अभीष्ट है।

संतों एवं अलवारों की पावन भूमि महाराष्ट्र के अति धार्मिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक चित्तपावन ब्राह्मण कुल में उत्पन्न बालगंगाधर तिलक के बाल्यकाल से ही यथार्थ एवं दर्शन – आधिभौतिक एवं आधिदैविक-दोनों का समन्वय परिलक्षित होता है। एक ओर जहाँ बालक तिलक में सत्यप्रियता, दृढ़ता एवं ऊँची सकल्प प्रियता की भावनाएँ कूट-कूट कर भरी हुई हैं, वहाँ दूसरी ओर हिन्दू धर्म के प्रति उत्कट प्रेम एवं अपार श्रद्धा है। कर्म एवं धर्म की इसी मिश्रित भावना ने साधु तिलक से 'गीता-रहस्य' जैसे अनमोल एवं अतुल्यनीय ग्रन्थ का बाद में प्रणयन कराया। महात्मा गांधी के समान बालगंगाधर तिलक ने भी विद्यार्थी जीवन में असत्य को अपना संबल न बनाया, यह तथ्य आज के भौतिकवादी असत्यमूलक जीवन में सभी के लिए विशेषत: छात्रों के लिये उपयोगी एवं अनुकरणीय है। सच्चाई एवं दृढ़संकल्प मानव-जीवन को निश्चित रूप से सफलता की ओर उन्मुख करते हैं। वर्तमान युग में समाज के सभी अंगों में असत्य, अनीति एवं मिथ्यावाद के प्रति बड़ा व्यामोह दृष्टिगत होता है। इसका निवारण एवं मूलत: निर्मूलन तिलक जैसे मनीषियों के जीवन सन्देश से ही सम्भव है, इसमें सन्देह नहीं।

किशोरावस्था में गणेश पूजा तथा अन्य धार्मिक अनुष्ठानों और विविध समाजोपयोगी कृत्यों के द्वारा तिलक ने महाराष्ट्र के किशोरों एवं युवकों को ही उद्वेलित नहीं किया अपितु सम्पूर्ण राष्ट्र के किशोर जीवन में अध्यात्म की एक नयी लहर दौड़ा दी। इसके मूल में आर्य जाति की श्रेष्ठता, हिन्दुत्व की पवित्रता एवं

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उज्ज्वलता, हिन्दू समाज की मान्यताओं का अस्तित्व बोध, धर्म के प्रति सच्चा प्रेम, दर्शन एवं अध्यात्म के प्रति उद्‌बोध, जीवन में कर्म करने के प्रति अमिट अनुराग, राष्ट्र के प्रति सच्ची निष्ठा, त्याग एवं बलिदान मूलक भावनाओं का उन्मेष, चरित्र गठन मानव-कल्याण की अनमोल चाह, प्राचीन परम्पराओं एव मान्यताओं के प्रति सहज एवं सक्रिय सहयोग आदि उत्तम भावनायें सन्निहित थीं। किशोर एवं युवक ही समाज के भावुक हृदय को आन्दोलित कर नयी दिशा की ओर अग्रसर करते है। निश्चय ही तिलक ने धार्मिक अनुष्ठानों एव कृत्यों द्वारा भारत के युवक समाज के सामने एक नया धार्मिक मानचित्र प्रस्तुत किया जिसके निर्देशन में इस देश के रहने वाले अंग्रेजी भाषा एवं सभ्यता से पराभूत भारतीय युवकों में अपने देश के धर्म इसकी प्राचीन संस्कृति एवं सभ्यता के प्रति लगाव की एक नयी भावना प्रस्फुटित हुई। जिस जाति ने अपने धर्म, जीवन-दर्शन एवं परम्परा को तिलांजली दे दी, थी उसकी आत्मा का अधः पतन हो गयी थी। तत्कालीन समय में भारतीय किशोरों एवं युवकों का जीवन सन्देह, संशय एवं हीनता के गलीजों में सड़ रहा था, परिणामतः वे निराशा के कगार पर थे। जिस प्रकार भगवान कृष्ण ने अर्जुन को – द्विविधा एव संशय के चक्र में फँसे हुए अर्जुन को —महाभारत युद्ध में लड़ने के लिए यही सन्देश दिया था, उसी प्रकार तिलक ने अपनी लेखनी और करनी से भारतीयों की सोयी आत्मा को जगाया।

सन्शयात्मा विनस्यति

गीता की इस अमर वाणी को युवक तिलक ने जीवन में रूपान्तरित किया और अपने समकालीन युवकों को आत्मपीड़न और आत्महीनता के बोध से उद्धार करने के लिए धार्मिक पूजनों, उत्सवों और कृत्यों का सहारा लेते हुए उन्हें अन्धकार से प्रकाश की ओर, अज्ञान से ज्ञान की ओर उन्मुख किया। आज भारत के युवकों और किशोरों में भी पश्चिमी जीवन और सस्कृति की ओर जो भीड़ मूलक दौड़ लग रही है, उसका निवारण लोकमान्य तिलक के अपने देश की धार्मिक और आध्यात्मिक मान्यताओं के प्रति सच्ची लगन से ही हो सकता है।

कर्मयोगी तिलक ने 'गीता रहस्य' और 'आर्यन' आदि अप्रतिम ग्रन्थों के प्रणयन द्वारा नहीं, अपितु राष्ट्र के प्रति अपना सारा जीवन अर्पित करते हुए भारत के अनुपम, अतुलनीय और आदर्श मनीषियों में अपना महत्वपूर्ण स्थान सुरक्षित कर रखा है। देश की परतन्त्रता और गुलामी से पराभूत राष्ट्र में जड़ता दैन्य तथा गर्हित और अर्ध जीवन को देखकर ही उस 'नर केसरी ने इस अमोघ मन्त्र का उद्‌घोष किया था, "स्वतन्त्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है और हम इसे लेकर रहेंगे।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सचमुच निडर होकर सिंह की तरह यह दहाड़ा था तिलक ने ब्रिटिश साम्राज्य के दानवी और पैशाचिक प्रभुसत्ताधारियों के समक्ष, सीधे सामने न कि लुकछिपकर। कितने अजेय थे तिलक, उनका साहस और बल कितना गम्भीर था यह सोचकर हम उस स्वतन्त्रता के अजेय प्रहरी के सम्मुख श्रद्धा और गौरव से नतमस्तक हो जाते हैं, साथ ही यह कल्पना चरितार्थ हो जाती है,

'चलते हों शीश उठाकर भारत के सब नर-नारी'

देश की जिस स्वतन्त्रता का आह्वान लोकमान्य ने किया था वह दुर्लभ है, इतिहास इस बात का साक्षी है। बीमार पत्नी को छोड़कर मांडले (बर्मा) जेल में, छ वर्षों तक निर्वासन और अपार पीड़ा सहते हुए भी कर्मयोगी तिलक स्वतन्त्रता का अमर सन्देश देशवासियों को सुनाते रहे। कर्म करने की अमूल्य भावनाओं से उद्वेलित करते रहे। आज भारत के स्वतन्त्र नागरिकों के लिए स्वतन्त्रता का कोई मूल्य नहीं, न उसकी वे कल्पना करते हैं। परन्तु उस स्वतन्त्रता की प्राप्ति में तिलक जैसे लोगों को कितना त्याग और बलिदान करना पड़ा है। इसकी कल्पना मात्र से शरीर रोमांचित हो उठता है। आज हम कर्मयोगी तिलक से निश्चय ही निःस्वार्थ कर्म करने की भावना ग्रहण कर देश को समुन्नत और उत्कृष्ट करने की सुन्दर और स्वस्थ प्रेरणा ले सकते हैं।

"ज्ञान-तरंगिणी" के लोकमान्य तिलक' अंक का प्रकाशन हमारे सहयोगी और सुयोग्य सम्पादक डा० अनिल कुमार 'आंजनेय' की सुन्दर और मान्य सम्मति से हो रहा है। इसलिए मैं उस महामानव और महाप्राण लोकमान्य तिलक की स्मृति में अपने दो-चार शब्दों द्वारा उनके प्रति अपना हार्दिक उद्‌गार प्रकट कर अपने को गौरवान्वित अभिभूत करता हूँ।

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लोकमान्य बालगंगाधर तिलक

☐ राजीव रजन प्रसाद
सप्तम् (अ)

अग्रत: सकल शास्त्रं पृष्ठत: सशरं धनु
(सम्मुख सारे शास्त्र पीठ पर धनुष बाण रखता हूँ)

लोकमान्य तिलक का जन्म सोमवार 23 जुलाई 1856 ई० में रत्नागिरि जिले के दापोली तहसील के चिखन नामक गाँव में हुआ था। इनके पिता का नाम गंगाधर पंत और माता का नाम रुक्मिणी बाई था। कुल देवता के नाम पर इनका नाम केशव रखा गया तथा लोगों ने इनका नाम प्रथम पुत्र के नाम से न पुकारने की रुढ़ि के कारण बाल रखा था। इनका यही बाल नाम विख्यात हो गया। जिस रूक्मिणी बाई ने व्रत-उपवास के अनन्तर ऐसे मनोहर पुत्र का मुँह देखा था वे भी बहुत दिनों तक संसार में नहीं रह सकीं। तिलक के पितामह अच्छे गणितज्ञ एवं संस्कृतज्ञ थे। उनके साथ रहने के कारण तिलक आठ वर्ष की अवस्था तक गणित के बहुत से अंश, रूपावली समासचक्र तथा आधा अमर कोश कण्ठस्थ कर चुके थे। गायत्री मंत्र के अतिरिक्त वे दैनिक ब्रह्मकर्म का भी ज्ञान रखते थे। पिता ने एक श्लोक कण्ठस्थ करने पर एक पाई देने का वचन दिया था। इसलिए इन्होंने बचपन में ही न मालूम कितने श्लोक कण्ठस्थ कर लिये थे। तिलक के पिता गंगाधर पंत रत्नागिरि में शिक्षक थे। वहाँ वे १७ वर्ष तक रहे थे और उन्होंने शिक्षा दान में बड़ा नाम कमाया था। जब उनकी बदली 1866 ई० में सहायक शिक्षा निरीक्षक के पद पर हुई तो उनके सम्मान में अनेक सभाएँ आयोजित हुईं उनका अभिनन्दन करते हुए डॉ० रामकृष्ण गोपाल भंडारकर ने कहा "गंगाधर पंत ने अपने चरित्र से सिद्ध कर दिया है कि पुराने शिक्षक वर्ग के बारे में मेरे तथा मेरे मित्रों में से बहुतों के मन में जो विचार थे वे सब भ्रम थे।" ऐसे सुयोग्य पिता की छत्रछाया में पलने के कारण बालगंगाधर तिलक का विकास बड़े ही अनुकूल ढंग से हुआ। तिलक पहले पूना के मराठी स्कूल में भरती कराये गये। ये बालकपन में हठीले स्वभाव के थे। एक बार इनके सहपाठियों ने दोपहर की छुट्टी में मुँगफली खायी और कक्षा में ही छिलके बिखेर दिये। जब अध्यापक कक्षा में आये और उन्होंने इन्हें छिलके साफ करने को कहा तो इन्होंने तुरत जबाब दिया "मैंने मुँ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

फल्ली नहीं ग्रायी है इसलिये छिलके नहीं उठाउँगा।" इतना ही नहीं जब शिक्षक इनसे गणित के प्रश्न ब्लैकबोर्ड पर हल करने को कहते तो ये उन्हे मौखिक ही हल कर देते और कह देते चॉक से हाथ कौन बिगाड़े। 1869 ई० की दीपावली के बाद पूना हाई स्कूल में पाँचवे दरजे में इनका नाम लिखाया गया। ये जब इण्ट्रेंस में ही पढ़ते थे तभी इनका विवाह तापीबाई से हुआ। इसी अवधि में इनके पिता गंगाधर पंत का देहान्त हो गया। एक ही साथ कई आपत्तियाँ आयीं; किन्तु सबका इन्होंने बड़े ही साहस से सामना किया। इण्ट्रेंस पास करने के बाद ये डेक्कन कॉलेज पूना के छात्र हुए। जब ये कॉलेज में दाखिल हुए तो बड़े दुबले-पतले थे। आँखें निस्तेज और शरीर पर पीतिमा। इन्होंने अपना स्वास्थ्य सुधारना आरम्भ किया और सूखी लकड़ी से लगने वाले बिना थकावट महसूस किये आठ-आठ सौ दण्ड-बैठक लगा लेते थे। शारीरिक स्वास्थ्य के बारे में लोकमान्य ने बाद के जीवन में कहा था जिस प्रकार हमलोग स्कूल में अन्य विषयों का अध्ययन करते हैं। उसी प्रकार सोलह से पचीस वर्ष की आयु के बीच शरीर को कसने का भी अभ्यास करें तो इसमें सन्देह नहीं कि इस उम्र में प्राप्त की गयी शक्ति बाद में व्यायाम की आदत छूट जाने पर भी पचास वर्ष की आयु तक काम देगी। केवल एक शर्त्त है-खान पान और आचरण में अत्याचार या अतिरेक नहीं होना चाहिए। व्यायाम का इन्हें ऐसा शौक था कि इन्होंने अपने कई दुर्बल तथा फैशन परस्त विद्यार्थियों को कुश्ती लड़ाकर उनका स्वास्थ्य सुधार दिया। 1876 ई० में इन्होंने प्रथम श्रेणी में बी० ए० की परीक्षा उत्तीर्ण की। 1879 ई० में इन्होंने एल० एल० बी० की परीक्षा भी उत्तीर्ण की। लोकमान्य ने देश में नयी विचारधारा को फैलाने के लिए न्यू इंगलिश स्कूल की स्थापना की। इस कार्य में इनकी सहायता करनेवाले श्री आगरकर तथा विष्णु शास्त्री चिपलूणकर महोदय थे। लोकमान्य शिक्षा के महत्त्व को अच्छी तरह जानते थे। शिक्षा से जनजागरण सम्भव है। इसलिए इन्होंने न्यू इंगलिश स्कूल की स्थापना की थी। इस स्कूल की प्रगति देखकर शिक्षा आयोग के अध्यक्ष सर विलयम हण्टर ने कहा था—'इस स्कूल की प्रगति देखते हुए मैं यह निश्चय पूर्वक कह सकता हूँ कि सारे हिन्दुस्तान में इसकी बराबरी करने वाला एक भी स्कूल मेरे देखने में नहीं आया। बिना किसी प्रकार का सरकारी अनुदान लिये यह सरकारी हाईस्कूल की बराबरी ही नहीं बल्कि इससे होड़ भी कर सकता है। दूसरे देशों के स्कूलों से तुलना करने पर भी इसी का नम्बर ऊपर आयगा।' न्यू इंगलिश स्कूल की स्थापना के बाद लोकमान्य ने मराठी में 'केसरी' तथा अंग्रेजी में 'मराठा' नामक पत्र निकालना आरम्भ किया। केसरी के मुख पृष्ठ पर पंडितराज जगन्नाथ का एक श्लोक छपता था जिसका अनुवाद यह है—

स्वामी कुंजर वृन्द के इस घने कान्तर के भीतर
रे एक क्षण भी न तू ठहरना उन्माद में आकर
हाथी जान शिला विदीर्ण करके पैने नखों से
सोता है गिरि गर्भ में यह यहीं भीमाकृति केसरी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भारत के निर्माता

□ अशोक कुमार
दशम् 'अ'

महात्मा गाँधी ने लोकमान्य का सही मूल्यांकन करके ही तो उन्हें 'अजेय सागर' कहा था। सागर की गहराई और अजेयता मे दोनो ही लोकमान्य थीं। उनका ज्ञान बहुत गंभीर था और वे बहुत ही तेजस्वी और दूरदर्शी थे। उनका जीवन उपदेशमय और मनुष्य में विद्या का प्रेम, देशभक्ति, धैर्य और उत्साह बढ़ानेवाला है। भर्तृहरि का नीचे लिखा प्रसिद्ध कथन उनके विषय में प्रचुर अंश मे घटता है :—

विपदि धैर्यमथाभ्युदये क्षमा सदसि वाक्पटुता युधिविक्रमः।
यशसि चाभिरुचिर्व्यसनं श्रुतौ प्रकृतिसिद्धमिदं हि महात्मनाम्॥

तिलक ने 'गीता-रहस्य' और 'आरियन' लिखकर अपनी विद्वत्ता का परिचय दिया था। उन्होंने त्याग, तपस्या, तेजस्विता एवं दूरदर्शिता से देश की ढुलमुल राजनीति को सही दिशा और गति प्रदान की। सोए हुए देश और उसके स्वाभिमान को जगाया और नव जागृति का मंत्र फूंका। दासता की बेड़ियो को तोड़ा नहीं तो उसे अपने उत्कट प्रहारों से ढीला अवश्य कर दिया और उसके खोलने की कुंजी भी वे देशवासियों को दे गए।

चन्द्रशेखर आजाद, भगत सिंह, सुभाषचन्द्र बोस, सरदार पटेल आदि उन्हीं की ओज से दीप्त थे और उन्हीं की परंपरा में आते हैं। तिलक में एक ही साथ शंकराचार्य की ज्ञान—गरिमा, प्रताप-शिवाजी का शौर्य एवं स्वतंत्रता-प्रेम तथा विवेकानन्द का भारत गौरव तरंगायित हुआ था। तिलक वास्तव में शक्तिधर थे और थे शौर्य एवं शक्ति के प्रतीक। तभी तो ब्रिटिश सरकार उनसे भय खाती थी। वे रॉलेट समिति की दृष्टि में सबसे खतरनाक थे। किन्तु जनता के वे हृदय-सम्राट थे जो उन्हें 'महाराष्ट्र-केसरी' के उच्च आसन से उठाकर 'लोकमान्य' के सर्वोच्च आसन पर बिठाकर गर्व अनुभव करती थी।

देश के इस महान् मनीषी का जन्म १८५७ के भारतीय महाक्रांति के एक वर्ष पूर्व जब हमारे देश का भाग्याकाश बादलों से ढंका हुआ था १३ जुलाई, १८५६ ई० को महाराष्ट्र के कोंकण प्रदेश में, भारत के ऐतिहासिक पेशवावंश से संबद्ध

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रखने वाले परिवार में हुआ था। इनका प्रारंभिक नाम केशव था। उस समय कौन जानता था कि यही बालक किसी दिन 'गीता रहस्य' जैसे गौरव ग्रन्थ लिखकर संसार के विद्वानों में नाम पायेगा ? किसने कल्पना की थी कि यह बालक परतन्त्र देश के करोड़ों नर-नारियों को "स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है' (Home Rule is our birthright.) के महामन्त्र से दीक्षित करेगा ? कौन जानता था कि यही बालक आगे चलकर ब्रिटिश सरकार की प्रबल शक्ति को चुनौती देगा और भारत के वर्तमान निर्माताओं में अपना नाम लिखाएगा ?

केशव के पिता का नाम पं० गंगाधर रामचन्द्र तिलक और माता का नाम पार्वतीबाई था। केशव बचपन से ही अत्यन्त मेधावी थे। अभी इनकी शिक्षा अधूरी ही थी कि पिता उन्हें सर्वथा अकेला छोड़कर चल बसे। पिता की मृत्यु के समय तिलक १०वीं की परीक्षा दे रहे थे। और माता तो इन्हें बहुत पहले ही, जब ये दस वर्ष के थे, अपनी स्नेहिल छाया से वंचित कर चुकी थीं। तिलक का विवाह १४ वर्ष की आयु में तापीबाई से हुआ था।

तिलक का मन गणित और संस्कृत में अति रमता था। तिलक ने १८७६ ई० में बी० ए० और १८७९ ई० में एल० एल० बी० की परीक्षा उत्तीर्ण की। उन्होंने निश्चय किया था कि आजीवन सरकारी नौकरी नहीं करेंगे जिसे उन्हें ने निभाया भी। उन्होंने अपने मित्रों के संग मिलकर एक विद्यालय का निर्माण किया जो बाद में बहुत फला-फूला। उन्होंने १८८१ ई० में 'केसरी' पत्रिका निकालनी शुरू की। उन्होंने इस पत्र के माध्यम से अपनी निर्भीक और ओजस्वी वाणी से जनता के प्राणों में नव-जागृति का मंत्र फूंका। १८९६ ई० में महाराष्ट्र में भयकर दुर्भिक्ष पड़ा। तिलक ने अपने समाचार-पत्रों के माध्यम से पीड़ित जनता की पुकार सरकार के कानों तक पहुँचाने का प्रयत्न किया, परन्तु सरकार इसे अनसुनी कर जाती। इससे तिलक ने अपने पत्रों में उसकी कड़ी आलोचना की। फलतः सरकार इनके पीछे पड़ गई और उन्हें जेल में डालने में सफल हो गई। जेल से आने के बाद तिलक सक्रिय आंदोलन में कूद पड़े। उन्होंने कांग्रेस और देश को एक नई दिशा दी। आंदोलन के दौरान ये तीन बार जेल गए। इनका स्वास्थ्य गिरता गया और एक बीमारी के दौरान अगस्त १९२० को दोपहर में १२ बजकर ५० मिनट पर भारत का महाप्राण तिलक देश को अनाथ करके चल गये। उस समय वे ६४ वर्ष के थे।

लोकमान्य तिलक संयोग से ही राजनीति में आ पड़े थे अन्यथा उनका जन्म संभवः विद्वतापूर्ण अध्ययन और लेखन के लिए हुआ था। राजनीतिक नेता

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

की अपेक्षा एक प्रकांड विद्वान और उत्कृष्ट लेखक के रूप में लोकमान्य तिलक का महत्व सम्भवत. कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण और चिरस्थायी है।

यदि तिलक अपने प्रकृत क्षेत्र को छोड़कर राजनीति में न कूदते, तो निश्चय ही स्वतंत्रता की मंजिल इतनी करीब न होती 'स्वतंत्रता हमारा जन्म-सिद्ध अधिकार है और उसे हम लेकर ही रहेंगे।" – लोकमान्य का केवल यह उद्घोष युग-युग तक मानवमात्र को पथ-निर्देश करता रहेगा और स्वतंत्रता की रक्षा के लिए सर्वस्व न्योछावर करने की प्रेरणा सदा देता रहेगा।

लोकमान्य का हृदय कभी भय से दुर्बल नहीं हुआ। उनके धैर्य को विपत्ति का प्रबल से प्रबल पवन भी विचलित नहीं कर सका। लोकमान्य को पुत्र का वियोग हुआ, स्त्री का वियोग हुआ, ग्रहण का झंझट हुआ, तीन बार जेल गए किन्तु धैर्य नहीं टूटा।

पुत्रदारैर्वियुक्तस्य वियुक्तस्य धनेन वा।
मग्नस्य व्यसने कृच्छ्रे धृतिः श्रेयस्करोन्त॥
चलन्ति गिरयः कामं युगान्तपवनाहत।
कृच्छ्रेऽपि न चलत्येव धीराणां निश्चलंमनः॥

तिलक के अध्ययन की यह विशेषता थी कि वे अधीर विद्यार्थियों की तरह कुसमय पढ़कर रात को दिन नहीं बनाया करते थे, किन्तु जब वे पढ़ते थे तो उस समय कोई उनके कान के पास नगाड़ा भी पीटने लगता तो वे उधर ध्यान भी न देते थे। तिलक का पठन-पाठन का व्यक्तित्व अनोखा था। वे अपने पठन-पाठन में दुरदर्शी, प्रणेता और प्रकाश पुंज साबित हुए। इनकी विद्वता की डंका भारत में ही नहीं दुनिया के हर कोने में बजी। उन्हें सराहा गया, उनकी विद्वता सम्मानित हुई।

तिलक का जीवन हम विद्यार्थियों को हमेशा प्रेरणा देता रहेगा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक का राजनीतिक स्वरूप

□ राजेश कुमार सिंह

आज की भारतीय राजनीतिक चेतना मूल्य निष्ठा विहीन, दृष्टि शून्य और पथभ्रमित होकर जिस तरह व्यक्तिगत अहं के विस्फोटों और स्वार्थ परता के कुचक्रों से ग्रसित हो गई है, उसे देखते-समझते हुए लोकमान्य बालगंगाधर तिलक के तेजोद्दीप्त, वर्चस्वी और निस्पृह व्यक्तित्व का स्मरण करना अत्यन्त ही प्रेरणा प्रद है। आज के देशव्यापी-और दिवसव्यापी अन्धकार को देखते हुए लगता है कि एक नये रामचरितमानस और नये गीता रहस्य की पुनर्रचना का समय आ गया है। परतन्त्रता की शक्तियों से जूझते हुए इस्पात की आरियों से अन्धकार को चीरते हुए, अपनी अस्मिता को भारतीयता से एकाकार करते हुए - वे राजनीतिक आज नहीं रहे, वे प्रकाशपुञ्ज आज नहीं रहे और हम स्वतन्त्र होकर भी सम्मोहन काल, आपतकाल, और विपद् काल से घिरकर छटपटाते रहे। लोक चेतना वोट के नाम पर कुचल दी गई। जनभावनाओं को प्रचार तंत्र ने पैसे से खरीद लिया। टोपियाँ, और थैलियाँ बोलने लगीं, कुर्सियों का महाभारत प्रान्त-प्रान्त, जिले-जिले और गाँव-गाँव में रचा जाने लगा। ऐसी स्थिति को लोकमान्य बालगंगाधर तिलक के सन्दर्भ में अनुस्यूत करने से अनायास ही कवियित्री महादेवी वर्मा का यह गीत स्मरण आ जाता है --

'अन्तहीन विभावरी है, पास अंगारक तरी है
तिमिर की तरिनी क्षितिज की, कुल रेख डूबा भरी है
शिथिल कर से सुभग सुधि, पतवार आज बिछल चुका है !
अब कहो संदेश है क्या ? और ज्वाल विशेष है क्या ?
अग्नि पथ के पार चंदन-चांदनी का, देश है क्या ?
एक इंगित के लिए, शतबार प्राण मचल चुका है !

लोकमान्य बालगंगाधर तिलक जिस परतन्त्रता के काल में पैदा हुए और जिस विवश देश में पैदा हुए- उस देश और उस काल की राजनीतिक चेतना बहुत दिनों तक मूर्च्छित रहने के बाद जागृत हो रही थी। उस काल में अन्धकार का

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बोध और प्रकाश की पुकार ये दोनों परस्पर एक दूसरे से युगनद्ध होकर राष्ट्रीय चेतना को पीड़ित कर रहे थे, झकझोर रहे थे। उस काल में नींद की खुमारी और सपने का आलोक कलेजे की हूक बनकर बोली की गोली और पत्रकारिता की तलवार से देश की जड़ता को काट रहे थे। अंग्रेजी शासन के कूटनीतिक और निर्मम पाश की स्वार्थपरता को पहचान कर देश के तत्कालीन समझदार राजनीतिकों ने भारत की प्रथम राजनीतिक संस्था कांग्रेस को जन्म दिया था। यह संस्था उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम चरण तक भारतीय राजनीति के उदारतावादी आशय को ही अंग्रेजी शासन के विरुद्ध व्यक्त करती रही। यह उदारतावादी आशय विपक्ष का समर्थक नहीं था—जैसा कि आजकल बहुत लोग कहते हैं, यह पक्ष का ही एक सुनियोजित तरल-सरल किन्तु दृढ़ आग्रह था। उस समय के प्रसिद्ध राजनीतिक समाज सेवी रनाडे, फिरोजशाह, गोपाल कृष्ण गोखले आदि यह चाहते थे कि इस प्रारम्भिक काल में राजनीति को ऐसा स्वरूप दिया जाय कि वह ब्रिटिश सरकार से सीधी टक्कर न ले। लोकमान्य बालगंगाधर तिलक द्विजकुल की अयाची तेजस्वी परम्परा में उत्पन्न हुए थे, और बचपन से ही अन्याय के विरुद्ध अदभ्र मुद्रा रखते थे, अतः वे स्वभाव से ही उदग्र ढंग से उद्घोष करने के आग्रही थे। अस्तु लोकमान्य तिलक की तेजस्विनी चमक से उस काल के सत्ताधारी प्रभुओं की आँखें चौंधिया गईं। तिलक इस तथ्य को अच्छी तरह समझते थे कि आजादी माँगी नहीं जाती है, छीन ली जाती है। अतः उन्होंने उदारतावादी पक्ष को स्वीकार नहीं किया—और मानवीय चेतना के चिरन्तन मनोवैज्ञानिक सत्य— 'भय विनु होई न प्रीति' को समझकर सिंहनाद किया— 'स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है, और इस स्वतंत्रता को किसी भी ढंग से अर्जित करना होगा।' इस तरह तिलक एक सक्रिय और यथार्थवादी विचारक के रूप में आये और देश की राजनीतिक चेतना पर अप्रयक्ष और प्रत्यक्ष दोनों ढंगों से छा गये।

राजनीतिक चेतना के जागरण की दृष्टि से तिलक अपने समय के नेताओं के अग्रणी थे। तिलक ने स्वतन्त्रता आन्दोलन को सभाओं, गोष्ठियों और कमरे की राजनीति से निकाल कर देश की जनता के मध्य प्रतिष्ठित करने का बहुत बड़ा प्रयास किया। इन्होंने अपने देश की उदात्त मनीषा के वैचारिक पक्ष को व्यक्त करने के लिए सनातनता के स्तर पर 'गीता रहस्य' नामक महान् भाष्य लिखकर प्रस्तुत किया। इस भाष्य में निर्भयता और कर्मठता को पीठिका बनाकर तिलक ने संघर्ष और साधना को जगा दिया। समायिकता के स्तर पर तिलक ने पत्रकारिता को वह तेजस्वी स्वरूप दिया, जिससे अंग्रेज थर्राने लगे—और भारतीय जनता की

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उसी नक्षत्र पर आता है तो इस काल को नाक्षत्रवर्ष कहते हैं तथा वसन्तऋतु से वसंतऋतु तक के वर्ष को सम्पात वर्ष या सायन वर्ष कहते हैं। यह सायन वर्ष नाक्षत्रवर्ष से २०.४ मिनट छोटा है। अतः सायन वर्ष प्रत्येक दो सहस्र वर्ष में एक मास पीछे खिसक जाता है। पृथ्वी के एक स्थान से चलकर उसी स्थान में आने का जो समय है, वही वास्तविक वर्ष है। उसी का नाम सायन वर्ष है। सायनवर्ष को आरंभ करनेवाले वर्ष में चार स्थान हैं। रात का बढ़ जाना, दिन का बढ़ जाना, दो बार रात दिन का बराबर होना। इन चारों म से किस स्थान से वर्ष का आरंभ करना चाहिए, इस सन्दर्भ में पूर्वजों ने प्रकृति के प्रफुल्लित होने तथा वृक्षावली आदि में नूतनता आने से वर्षारम्भ माना था। यह सब घटना वसन्त सम्पात से आरम्भ होती है। इसलिए कहा गया है कि --'मुखं वा एतत् ऋतुनां यद्वसन्त.' अर्थात् वसत ही सब ऋतुओं का मुख है। जब सूर्य वसत-सम्पात् मे आवे तभी से वर्ष आरम्भ हो। तिलक ने सारी पुस्तक में तीन प्रकार के वसन्त सम्पात् को माना है। वे पञ्चागों पर विचार करते हुए आगे कहते हैं कि --हमने तीन प्रकार के पञ्चागों का विचार किया है। इन में सबसे प्रथम पञ्चाङ्ग के समय को हम अदिति काल अथवा मृगशीर्ष-पूर्व काल कहेंगे। इसकी मर्यादा अनुमानतः इ० स० पूर्व ६००० से ४००० वर्ष तक जाती है। इस समय तक वैदिक ऋचाओं की उत्पत्ति नहीं हुई थी। दूसरा मृगशीर्ष काल है। इसकी मर्यादा मूल परिमाण स ई० स० पूर्व ४००० वर्ष से २५०० वर्ष पर्यन्त है। यह वसन्त सम्पात् के आर्द्रा नक्षत्र से कृतिका नक्षत्र मे आने तक का है और बड़े महत्व का है। क्योंकि इसी काल म ऋग्वेद के बहुत से सूक्त निर्माण हुए थे और अनेक कथायें लिखी जा चुकी थी। इसी से ऋग्वेद में कृतिका काल के विषय का कुछ भी प्रमाण नहीं मिलता। यह काल विशेषतः सूक्त रचना काल था। तृतीय कृतिका काल है। इसकी मर्यादा ई० स० पूर्व २५०० से १४०० वर्ष तक है। अर्थात् जबसे वसन्त सम्पात् कृतिका में आया, तब से लेकर वेदाङ्ग ज्योतिप पर्यन्त इसकी मर्यादा है। इस प्रकार तिलक जी के विचार से नाक्षत्रवर्ष से सायन वर्ष २०.४ मिनट छोटा है। ये मिनट बढ़कर दो हजार वर्ष में एक मास के बराबर हो जाते हैं। अतः प्रत्येक दो हजार वर्ष में वसन्त सम्पात् नाक्षत्र वर्ष से एक महिने पीछे हो जाता है।

जैसा कि हम जानते हैं तिलक जी के विचार से इनमें से पहला कृतिका काल है जिसके लिए तिलक जी इसकाल का वर्णन वेदों में नहीं पाते हैं। दूसरा मृगशीर्ष काल का उल्लेख है जिसके लिए तिलक जी के प्रमाणों की परीक्षा आवश्यक प्रतीत होती है। यद्यपि तिलक जी ने यह स्वीकार किया है कि रिग्ग्वेद में वसंत

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सम्पात् को मृगशीर्ष में बतानेवाले स्पष्ट प्रमाण नहीं हैं। तथापि उन्होंने अपने ग्रंथ मृगशीर्ष में जिन प्रमाणों को अपने सिद्धान्त का आधार बनाया है उसकी विवेचना 'आवश्यक है।

तिलक जी के मतानुसार आकाश में जहाँ आकाशगंगा है, वहीं पर श्वान नामक दो तारे हैं। तीसरा नौका, चौथा मृगशीर्ष और पांचवां नमुचि नामी तारा भी है। उनका कथन है कि किसी समय वर्षारम्भ पर यह समस्त तारासमूह सूर्य के उदय काल में रहता था, और उस समय मृगशीर्ष मे बसंत सम्पात् होता था। यदि यह मान लिया जाय तो यह विचारणीय हो जाता है कि ऐसी अवस्था का वर्णन वेदों में कहाँ आता है। इस मौके पर आकाशगंगा, नौकापुंज, मृगशिरा, नमुचि और श्वान तारे बतलाये गये हैं। यह विचारणीय है कि इन पांचो में से कौन-सा स्थान मनुष्यों की दृष्टि में प्रायः आता है। मेरी राय मे इनमें सबसे प्रसिद्ध चीज आकाशगंगा है, जिसको यहाँ के लोग इन्द्र के हाथी का रास्ता कहते हैं। यह विचित्र चीज खरीफ बादल सी प्रतीत होती है अतः इस पर दृष्टि जाना स्वाभाविक है। किन्तु श्वान नौका आदि नक्षत्र तो इतने दबे हुए हैं कि बड़े-बड़े ज्योतिषियों के बतलाने पर भी दृष्टि में नहीं आते। ऐसी सूरत में उन अप्रसिद्ध तारों का वर्णन न होना चाहिए और आकाशगंगा का वर्णन अवश्य होना चाहिए। किन्तु ऐसा नहीं है। तिलक जी के अनुसार आकाशगंगा का उस समय का कोई नाम देखने में नहीं आता, पारसी, ग्रीक और भारतीय इन तीनों आर्मि की भाषाओ में आकाशगंगा का कोई नाम नहीं है। ऐसी साफ प्रत्यक्ष चीज का जब नाम नहीं है तो क्या अन्य अप्रसिद्ध ताराओं के साथ वसंत सम्पात् का वर्णन हो सकता है? नौका तारा का वर्णन आता है, पर यह कहीं नहीं कहा गया है कि नौका तारा पर वसंत ऋतु का आरम्भ होता है। या उस स्थान में सूर्यदय होता है। अब नमुचि, मृगशीर्ष और श्वान पर विचार करना चाहिए। नमुचि कोई तारा नहीं है। यह बादल का नाम है। तथा इन्द्र नाम सूर्य और विद्युत का है। यह ज्ञात है कि सूर्य या विद्युत बादलों को छिन्न-भिन्न करके पानी बरसाता है। अमरकोश में एक श्लोक में इन्द्र को नमुचिसूदन कहा गया है।

सुत्रामा गोत्रभिद्वज्री वासवो वृत्रहा वृषा।
जम्भ भेदी हरिहयः स्वाराण्नमुचिसूदनः ॥

इससे सिद्ध है कि नमुचि वे बादल हैं जो प्रहार के बिना नहीं बरसते। यह स्मरणीय है कि शम्बर बादलों को कहते हैं। पञ्चतन्त्र में आया है कि 'शम्बरस्य चया माया या माया नमुचेरपि' यहाँ की नमुचि माया करने वाले बादल ही सिद्ध होते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मृगशीर्ष शब्द के साथ "ऋग्वेद में कहीं भी सूर्यका नाम नहीं आता, प्रत्युत मृग शब्द बादलों के ही लिए आता है। एक मंत्र में मृग का प्रयोग हुआ है—

निरीन्द्र बृहतीभ्यो वृत्रं धनुभ्यो अस्फुरः।
निरर्बुदस्य मृगयस्य मायिनो निः पर्वतस्य गा आजः ॥ ऋ० ८।३।१९

इस मंत्र में इन्द्र, वृत्र और मृग का वर्णन है। यहाँ मृग को मायिनः माया करनेवाला कहा गया है। वृत्र भी माया करनेवाला है। निरुक्त २।१६ में लिखा है कि 'तत्को वृत्र। मेघ इतिनै रुक्ता: अर्थात् वृत्र किसे कहते हैं ? निरुक्तवाले मेघ को वृत्र कहते हैं। अतः स्पष्ट है कि वृत्र मेघ है, और वृत्र रूपी मृग भी मेघ ही है। वेदों मे बादल के लिए जितने नाम आये हैं। उनमें वृषभ, महिष, मृग और कपि शब्द भी बादल के लिए प्रयुक्त हुए हैं। ऋग्वेद १०-१२ ३-४ में आया है कि मृगस्य घोषं अर्थात् मृग का घोष। पृथ्वी पर विचरनेवाले मृगों की आवाज ऐसी नहीं होती, जिसको घोष कहा जाय। परन्तु यहाँ मृग का घोष कहा गया है। इससे प्रकट होता है कि मृग मेघ है। 'मृगस्य घोष" का अर्थ बादल की गर्जना है। दूसरी जगह ऋग्वेद १-८०-७ में 'मायिनं मृगं' कहा गया है। यह भी बादलों के लिए ही आया है क्योंकि पृथ्वी के मृग कोई माया नहीं करते, पर बादल क्षण क्षण में बदल-बदल कर नाना प्रकार की माया करते हैं और अनेक प्रकार के रूप धारण करते हैं। अतः स्पष्ट है कि मृग बादल है।

अब श्वान शब्द पर विचार करना चाहिए। मैं ज्योतिष का ज्ञाता नहीं हूँ किन्तु अनेक ज्योतिषियों से पूछने पर यह ज्ञात होता है कि आकाश में श्वान नामी दो तारे हैं। इनको ग्रीक भाषा में 'क्वान' और 'प्रक्वान' कहा गया है। अंग्रेजी में दोनों कनिस मायनर और कनिस मेयर के नाम से प्रसिद्ध हैं। इन्हीं दोनों को ऋग्वेद १०-१४-११ में 'यौ ते श्वानौ यमरक्षि-तोरो चपुरक्षौ पथिरक्षी' कहा गया है। ये श्वान सदैव द्विवचन में कहे गये हैं, जिससे ज्ञात होता है कि वे दो हैं पर तिलक जी श्वान के बारे में जो चार प्रमाण देते हैं उनमें सर्वत्र एक ही वचनवाला श्वान कहा गया है। इससे ज्ञात होता है कि एकवचन वाले श्वान से अभिप्राय दूसरा है। यहाँ जिस स्थान को वे वसन्त सम्पात् बतलाना चाहते हैं उस स्थान के लिए एक वचन श्वान का वर्णन उचित नहीं हैं क्योंकि वहाँ दो श्वान हैं और उनके लिए वेदों में सदैव द्वि-वचन ही आता है।

मृगशीर्ष में वसन्त सम्पात् सिद्ध करने के लिए तिलक जी ने ऋग्वेद से जितने प्रमाण दिये हैं, उन सब में यह बहुत प्रबल माना जाता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सुषुप्वांस ऋभवस्तदपृच्छतागोह्य क इदं नो अबूबुधत्।
श्वानं बस्तो बोधयितारमब्रवीत्संवत्सर इदमद्या व्यख्यत ।।

—ऋग्वेद १ १६१-१३

इसका तात्पर्य यह है कि हे ऋतुओं ! तुमने जब पूछा कि हमको इस समय किसने जगाया तब वस्ता – सूर्य ने कहा कि जगानेवाला श्वान है, क्योंकि आज सम्वत्सर का अन्त है। तिलक जी का कथन है कि 'ऋभु नाम ऋतु का है। ये ऋतुएं १२ दिन तक अगोह्य सूर्य के घर निद्रा लेती हैं अर्थात् चान्द्रवर्ष और सौर वर्ष का मेल मिलाती हैं। तब श्वान इनको जगाता है। यह वही श्वान है जो मृगशीर्ष के पास है। इससे स्पष्ट होता है कि मृगशीर्ष में वसन्त-सम्पात् होता था।

जैसा कि हम जानते हैं, मृगशीर्ष के पासवाला एक श्वान नहीं प्रत्युत दो श्वान हैं। अतः यह वर्णन उस स्थान का नहीं लगता। ऐसा लगता है कि वैदिक काल में वर्षा-ऋतु की बड़ी महिमा थी। वर्षा का आरम्भ और अन्त बड़ा आमोदवर्धक था। इसलिए वर्षा के आरम्भ और अन्त दोनों से वर्ष का आरम्भ होता था। जिस प्रकार वेद में सम्वत्सर के अन्त में ऋतुओं को कुत्ते जगाते हैं उसी प्रकार वर्षारूपी सम्वत्सर के आदि को मण्डूक सूचित करते हैं।

संवत्सर शशयाना ब्राह्मण व्रतचारिणः।
वाचं पर्जन्यजिन्वितां प्रमण्डूका अवादिषुः ।।

—ऋग० १०३।१

यहाँ स्पष्ट कहा गया है। सम्वत्सर भर सोये हुए मण्डूक पर्जन्य पड़ते ही बोलने लगे, क्योंकि संवत्सरस्य तदहः अर्थात् सम्वत्सर का वही दिन है। कहने का तात्पर्य यह है कि जिस प्रकार सम्वत्सर के आदि में वर्षा को मण्डूक जगा हैं उसी प्रकार सम्वत् के अन्त में वर्षाऋतु के समाप्त हो जाने पर ऋतुओं को कुत्ते जगाते हैं। किन्तु तिलक जी इसे वसंत सम्पात् का श्वान समझते हैं। ब्राह्मण ग्रन्थों के आधार पर जो वेदों का काल निर्धारण होता है वह तिलक जी द्वारा निर्धारित काल से बहुत आगे चला जाता है। पं० बालशंकर दीक्षित ने अपने ग्रंथ 'भारतीय ज्योतिष' में शतपथ ब्राह्मण का यह वाक्य उधृत किया है—

कृतिका स्वादधीत। एता ह वै प्राच्यै दिशो न च्यवन्ते।
सर्वाणि ह वा अन्यानि नक्षत्राणि प्राच्यै दिशश्च्यवन्ते ।।

—शतपथ २।१।२।१

इसमें कहा गया है कि कृतिका में अग्न्याधान करना चाहिए क्योंकि कृतिका ही पूर्व दिशा से नहीं हटती, दूसरे सब नक्षत्र हट जाते हैं। दीक्षित जी के मतानुसार 'च्यवन्ते' और न च्यवन्ते आदि वर्तमानकालिका किया से स्पष्ट ज्ञात होता है कि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जिस समय उक्त वाक्य लिखा गया, उस समय कृतिका-सम्बन्ध यह घटना वर्तमान थी। इस घटना से यह अभिप्राय है कि जिस समय की यह घटना है, उस समय कृत्तिका ठीक विषुववृत्त पर दिखायी पड़ती थी। किन्तु जब सन् ई १९०० में जब दीक्षित जी ने कृतिका का वर्तमान स्थान देखा तो वह विषुववृत्त के ऊपर ६८ अंश पर स्थित दिखाई दी। एक अंश को तय करने में ७२ वर्ष लगते हैं। इसलिए आज तक इस घटना को हुए ६८×७+७९=४९६९ वर्ष हुए। अर्थात् आज से लगभग पांच हजार वर्ष पूर्व शतपथ ब्राह्मण का उक्त वाक्य लिखा गया सिद्ध होता है।

श्री तिलक जी के मत के विरुद्ध एक अन्य प्रमाण तैत्तरीय ब्राह्मण में प्राप्त होता है। तैत्तरीय ब्राह्मण में कहा गया है कि—

वृहस्पतिः प्रथमं जायमानः तिष्यं नक्षत्रमभिसंभूव। तैत्ति० ३-१-१५

इससे स्पष्ट होता है कि वृहस्पत्ति को तिष्यं अर्थात् पुष्प नक्षत्र का अधिक्रमण किये ई० पू० ४६५० वर्ष होगये थे। आजतक इसका समय ४६५०+१९८१ =६६३१ वर्ष होता है। इससे स्पष्ट होता है कि तिलक जी द्वारा निर्धारित तिथि से ब्राह्मण ग्रंथों का काल ही अधिक है। अतः वेदों का काल और पूर्व होना चाहिए।

तिलक जी के ऐतिहासिक विचार उनके दूसरे ग्रन्थ 'आर्यों का उत्तरध्रुव निवास' नामक ग्रन्थ में प्राप्त होता है।

तिलक जी ने अपने ग्रन्थ ओरायन (मृगशीर्ष) लिखने के पांच वर्ष वाद ई० सन् १८९८ में 'उत्तर ध्रुव-निवासी' लिखा और उसका सारांश एक पत्र द्वारा मैक्समूलर के पास भेजा। पत्र के उत्तर में मैक्समूलर ने लिखा कि कितने ही वेद वाक्यों का अर्थ जैसा आप लिखते हैं वैसा हो सकता है, तथापि मुझे शंका है कि आपका सिद्धान्त भूगर्भ शास्त्र के साथ न मिल सकेगा। मैक्समूलर के ऐसा लिखने का कारण यह था कि उस समय तक भूगर्भ शास्त्र ने हिमपात का समय ८० हजार वर्ष से ऊपर का माना था। तिलक जी इस बात से सचेत हुये और उस ग्रन्थ को पाँच वर्ष तक छपने से रोक रखा। इतने में 'इन्साइक्लोपिडिया ब्रिटानिका' की दशवीं आवृत्ति छपकर बाहर निकली। उसमें कुछ अमेरिकन भूशास्त्रियों ने हिमपात का समय आठ हजार वर्ष ही पूर्व माना। इसे देखते ही तिलक जी ने सन् १९०३ मे इस ग्रंथ को प्रकाशित कर दिया।

तिलक जी के ग्रंथ 'उत्तरध्रुव-निवास' का मूल विषय आर्यो का उत्तर ध्रुव में निवास और हिमवर्षा के कारण वहाँ से भागकर भारत में आकर वसना है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रधानतदा उत्तरध्रुव के निवास ही का इसमें वर्णन है। और हिमवर्षा के कारणों तथा उनके पड़ने का काल निश्चित किया गया है।

तिलक जी का यह ग्रंथ वारन नामी एक पाश्चात्य विद्वान के Paradise Found in the north pole नामी ग्रंथ के बाद लिखा गया है। उस ग्रंथ में वारन महोदय ने दिखलाया है कि मनुष्य जाति उत्तर ध्रुव में ही उत्पन्न हुई। परन्तु 'उत्तर ध्रुव निवास' में तिलक जी ने दिखलाया है कि किसी समय आर्यलोग वहाँ रहते थे। और आज से करीब दश हजार वर्ष पूर्व उत्तरध्रुव में बर्फ की महान वर्षा हुई। जिससे आर्य वहाँ से निकल भागे और भारत, ईरान, यूरोप आदि में फैल गये। वेदों से तिलक जी ने यह सिद्ध करना चाहा है कि उत्तरध्रुव छः महिने की रात का वर्णन है। उत्तर ध्रुव में सप्तर्षि नक्षत्र सिर के ऊपर घूमते हैं, अतः वेदों में इस घटना का वर्णन है। उत्तरध्रुव में महीनों तक सुहावनी उषा होती है। अतः वेदों में भी इस उषा का वर्णन है। उत्तरध्रुव में सूर्य दक्षिण की ओर से उदित होता हुआ दिखता है अतः वेदों में सूर्य को दक्षिण-पुत्र कहा गया है। इस प्रकार के अनेक अन्य प्रमाणों का उल्लेख तिलक जी ने किया है जिससे यह प्रमाणित किया जा सके कि आर्य उत्तर ध्रुव के निवासी थे।

तिलक जी के इस सिद्धान्त के विपरीत अनेक विद्वानों ने अपने-अपने तर्क दिये हैं। श्रीनारायण भवानराय पावगी ने 'आर्यवर्तांतिल आर्यांची जन्मभूमि' नामक ग्रंथ में लिखा है कि आर्य लोग भारत देश से उत्तर ध्रुव को गये। वहाँ यह सब दृश्य देखा और लौटकर वेदों की रचना की। बाबू अविनाश चन्द्र दास ने अपने ग्रंथ 'ऋग्वेदिक इण्डिया' में उक्त वर्णनों का अर्थ बदलकर यह दिखलाने की कोशिश की है कि यह सब घटना पंजाब प्रान्त की है। उमेशचन्द्र विद्यारत्न ने 'मानेवर आदि जन्मभूमि' में लिखा है कि तिलक जी ने वेदों का अर्थ पाश्चात्यों के अनुसार किया है। तिलक जी के मतों की समीक्षा करते हुए कहा जा सकता है कि यद्यपि आर्य उत्तर ध्रुव के निवासी न होकर भारत के मूलनिवासी थे, तथापि तिलक जी का गणितीय सिद्धान्त उनकी अपनी सूझ थी। उन्होंने जो सिद्धान्त स्थापित किया है वह विद्वानों द्वारा मान्य है, यद्यपि उनके मत की मान्यता नहीं है तथापि यह तो कहा ही जा सकता है कि तिलक जी ने ऐतिहासिक जगत में एक स्वतंत्र विचारधारा स्थापित की है। जहाँ तक आर्यों के उत्तर ध्रुव निवास का सिद्धान्त है तिलकजी ने उत्तरध्रुव में अतिरात्र यज्ञ के समय रात्रि में सोमरस निकाल कर साफ करने का उल्लेख किया है, किन्तु उत्तर ध्रुव में सोम नहीं होती, वह हिमालय में मुञ्जवान पर्वत पर होने वाली वस्तु है। अतः तिलक जी का सिद्धान्त

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मान्य नहीं हो सकता। वेदों के रचना काल के सन्दर्भ में कहा जा सकता है कि वेद उस समय निर्मित हुए जिस समय सरस्वती नदी हिमालय से बहकर सीधी समुद्र को जाती थी। उस समय राजपूताने का मरुस्थल समुद्र हो रहा था। इस समय सरस्वती नदी का पता भी नहीं है। वह जब बहती थी उस समय इस ऋचा के कहने वाले उस नदी को देखते थे। सरस्वती नदी की समाप्त धारा तथा समुद्र का मरुस्थल में परिवर्तित हुए मात्र पाँच छः हजार वर्ष ही नहीं हो सकता, अतः तिलक जी का मत परिवर्तनीय है।

—शोध सहायक
प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं
पुरातत्व विभाग, का हि० वि० वि०
वाराणसी-५

जातियों में ऊँच नीच की भावना हिन्दू-धर्म के प्रतिकूल है। एक जाति की दूसरी जाति पर श्रेष्ठता का कोई इंगित भी पवित्र ग्रन्थों में नहीं मिलता और जातियों में उँच-नीच मानने का कोई आधार वेदों में भी नही है। जाति श्रेष्ठता मानना शास्त्र सम्मत नहीं है। सामाजिक असमानता के वर्तमान विचार बड़ा अहित कर रहे हैं और यदि उन्हें रोका नहीं गया तो वे ही हिन्दुओं के सर्वनाश का कारण बनेंगे। यह संकट टालना हिन्दुओं के ही हाथ में है।

—लोकमान्य तिलक

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रकाशपुञ्ज व्यक्तित्व

□ रा

तिलक मरहठों के सामान्य वर्ण से कुछ अधिक साँवले थे। उ
आर्यों जैसी ऊँची थी और नेत्र देदीप्यमान थे। जब वे गहरे लाल रंग
पहनते तो उनका रंग और निखर आता।

वे कुशल वक्ता नहीं थे। उनकी आवाज भारी थी। इसलिए
उठ पाती थी। किन्तु वे बहुत ही प्रभावशाली ढंग से बोलते थे। उनके
एक सीधे-सादे ब्राह्मण की भाँति होते थे—ओजस्वी, स्पष्ट व सुबोध,
और जिस बात पर जोर देना होता उस बात से इधर-उधर न जाने वाले।

सादगी और मितव्ययिता बरतने वाले तिलक प्रदर्शनों से बचना
पर वे अपनी इच्छा के प्रतिकूल ही उनसे घिरे रहे। उनका जीवन खलबली
पुथल, सरकार के विरुद्ध संघर्षों, राजनीतिक प्रतिद्वन्द्वियों से विवादों
राजनीतिक सहयोगियों के विरोध से घिरा रहा। उनके जीवन में एक के
यातना आती ही रही।

जब कभी वे कठिनाई में भी होते तब भी मानसिक संतुलन नहीं खोते
जीवन के सामान्य कार्य नियमित और अविचलित रूप से करते रहते थे। घोर नि
के क्षणों में भी न केवल वे स्वयं प्रसन्नचित्त रहते बल्कि दूसरों के लिए प्रे
स्रोत बने रहते थे। गहन चिन्ताओं के बीच भी वे मानसिक रूप से अनासक्त
एकाग्रचित्त हो कार्य करते रहते थे।

संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान होने पर भी वे अपनी मातृभाषा में
बोलते और दूसरों से भी मातृभाषा का ही प्रयोग करने के लिए कहते।
अनुयायियों को वे जनता में भाषण देने का ढंग समझाया करते थे।

मराठी पत्रकारिता को उन्होंने नयी शैली प्रदान की। नए पर्यायवाची
की खोज भी की। 'ब्यूरोक्रेसी' के लिए 'नौकरशाही' शब्द उन्हीं की देन है।
लाइनो टाइप मशीन में काम आ सकने के लिए मराठी वर्णमाला को नए
में ढलवाने के भी प्रयोग किए। उनकी प्रतिभा सचमुच बहुमुखी थी।

सचमुच एक श्रेष्ठ नेता होने के नाते वे तीक्ष्ण दृष्टि से आगे की घ
की ठीक ठीक कल्पना कर लेते थे। प्रगतिशील विचारों की उनपर अनुकूल प्रति
होती थी। वे अपने आदर्श और सिद्धान्तों के अनुकूल ही आचरण करते
अपनी चीजें निर्धनों एवं जरूरतमन्द लोगों में बाँटते रहते थे। उनका जीवन
और देवोपम था। तिलक घने घिरे अन्धकार में अपने हाथ में प्रकाश ले
तीर्ण हुए थे। उनके देशवासियों ने उनका आदर लोकमान्य की भाँति नहीं
भगवान की भाँति किया। □

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalg

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0: In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant
Jangamwadi Math, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon